MARSHMAN'S BRIEF SURVEY

OF

Ancient History.

TRANSLATED INTO HINDUI FOR THE AGRA SCHOOL-BOOK SOCIETY,

BY

PUNDIT RUTTUN LAL.

EDITED BY THE REVEREND J. J. MOORE.

A.S.B.S.

AGRA:

PRINTED BY W. GREENWAY,

PRINTER TO THE AGRA SCHOOL-BOOK SOCIETY.

MDCCCXXXIX.

1839.

NOTE.

It is necessary to state, that about fifty pages of this translation had been printed off, when the manuscript was put into the hands of the writer for his revision: and that the duties of Editor had not devolved upon him, until nearly the whole of the work had passed through the press. The most important errors, however, have been corrected in the Errata: the merely typographical ones, will in a future edition, should it be called for. Whether the second volume, embracing a survey of Modern History, will ever be translated into Hindui, by the Society, must, in a great measure, depend upon the amount of support, this first attempt meets with, from the public.

Agra, December 1839. J. J. M.

कथा सार

पंडित रतनलाल ने
आगरा स्कूल बुक सोसइटी के लिये
मार्शमन साहब के प्राचीन इतिहास का हिंदी
भाषा में उलथा कर कथासार नाम धरा
औ पादरी मोर साहब ने उस
पुस्तक की पुनः
परीक्षा की

दिसंबर सन् ईसवी १८ ३९
मार्गशिर संबत् १८ ९६

यह पुस्तक आगरे में आगरा स्कूल बुक सोसइटी के
छापे खाने में छपी

॥ अनुक्रमणिका ॥

आ. अर्थात् आगे

ई. अर्थात्. ईसामसीह के

॥ कथा सार ॥

॥ १ अध्याय ॥

जगत् की रचना से ले प्रलय तक का वर्णन

जगत् औ मनुष्य की रचना—प्रथम की निर्दोषता—मनुष्य का घटाव—इडिन नाम उपवन से उनका निकाल देना—केन औ एबेल—मनुष्य जाति की आयु का प्रमाण—दुष्टता की वृद्धि—नूह की नौका—प्रलय—इन सब बातों का वर्णन इस अध्याय में करेंगे।

ईश्वर ने प्रथम आकाश औ पृथ्वी को बनाया; तिस पीछे मनुष्य को पृथ्वी की धूल से बनाकर उस की प्राण प्रतिष्ठा की, अर्थात् उसे ज्ञान आत्मा दी, इसलिये कि वह आत्मसंबंधी भोग करै औ अपने कर्त्ता की सेवा में रहै* ईश्वर ने पहले मनुष्य आदम से पहली स्त्री ईव को उत्पन्न करा; ये प्रसन्न औ निर्दोष रहे जबलग इन्हीं ने अपने कर्त्ता की आज्ञा भंग न करी; आज्ञा के भंग होतेही ईश्वर ने अपना अनुग्रह उन पर से उठा लिया औ वे अपनी संतान सहित उसी समय से दुखी औ दरिद्री हुए। ऐसें पाप संसार मे आया और धर्म्म उठ

गया। मनुष्यों का पहला काल पवित्रता का था, ऐसा परंपरा से कहते आवते हैं; औ यूनानी लोग उसेही सुवर्ण काल।

धर्म्म पुस्तक से ऐसा जाना जाता है कि आदम औ ईव को इडिन नाम उद्यान से निकालदिया औ उनके पूर्ब्ब काल का भोग ले लिया; औ आज्ञा दी की तुम अपने हाथ पाओं से परिश्रम करकै अपना पालन करो; उसी आज्ञा के अनुसार आजलग उन की संतान भी चलती है। हमारे पूर्ब्ब-जनक औ जननी के केन औ एवल् नाम दो पुत्र उत्पन्न ऊए; पहला अभिमानी दुराचारी औ ईश्वर से प्रतिकूल रहता, औ दूसरा नम्र औ मनलगा कै अपने कर्त्ता की पूजा किया कर्त्ता। एक समें विनदोनों ने परमेश्वर के निमित्त बलिदान किवा; तब ईश्वरने एवल् के बलिदान को अंगिकार किया औ केन के को निषेध। यह वात देख कै केनने अत्यन्त क्रोध किया औ अपने भाई को मार डाला औ ऐसें मनुष्य जाति के आदि जनक औ आदि जननी के प्रथम पुत्र ने मनुष्यके रुधिर से पृथ्वी को अपवित्र किया। इस के पीछे आदम औ ईवके औार लडके लडकी उत्पन्न ऊए, औ मनुष्य कुलकी वृद्धि होने लगी। लोगों की वृद्धि करने के लिये ईश्वरने पूर्ब्ब काल में उन की सहस्र वर्ष की आयुर्दा करी थी, परंतु तभी से क्रम करकै घटते घटते अबतोडी सत्तर बरस की रही है। जैसें जैसें मनुष्य कुल बढा, अधर्म औ अन्याय भी विशेष ऊआ। ईश्वरनें कईसै बरस तक अपने दुराचारी जीवोंकी दशादेख सहन किया परंतु अंत में पृथ्वी परके सब जीवों का नाश करने की इच्छा की, नूह औ उसके कुनबेको बचाया इसलिये कि इन से फिर मनुष्य कुल की उत्पत्ति होगी

नूह सत् पुरुष धर्मात्मा औ ईश्वर का सच्चा पुजारी था, इसे छांट लिया इस लिये कि यह उस के अच्छेपन का एक चिन्ह था, औ आज्ञा दी कि तुम एक नाव बनाओ, जिस के बना ने में एकसौ बीस बरस लगे।

जब यह नाव बन चुकी तौ ईश्वर ने उसे आज्ञा की कि तुम अपने कुटुंब को अर्थात् आठजने तुम्हारी स्त्री तुम्हारे तीनौ पुत्र औ उन की स्त्रियां, औ एक एक जोडा सब जीवों का इस में रख के बचाओ। जब वे सब इस में बैठचुके, तब बडे बडे गहरे स्रोत पृथ्वी में से उमगे, औ आकाशसे मेह मूसला धार चालीस दिन औ रात लगातार बरस ता रहा, जबतक सब से बडे पहाड जल में न डूबे औ सब जीव जंतु न मरे। तिस पीछे ईश्वर प्रसन्न ज़ए मेह थंभा, औ जल अपने ठिकाने खिरलगा औ नूहने अपने कुटुंब समेत उसमें से निकल पृथ्वी पर आ ईश्वरके निमित्त बलिदान दिया, औ कहा कि हे ईश्वर धन्य है तुम नें इस प्रलय से हमें बचा लिया। इस प्रलय का होना हम इन तीन बातों से निश्चय कहते हैं, प्रथम तौ यह है कि धर्मपुस्तक में कहा है दूसरे यह है कि सब जातों में परंपरा से ऐसा कहते आवते हैं, तीसरे यह है कि निस्संदेह इस के चिन्ह अबतक पृथ्वी के सब भागों में प्रत्यक्ष देखे जाते हैं। यह प्रलय पृथ्वी की रचना के १६५६ बरस पीछे ज़ई थी।

॥ २ अध्याय ॥

॥ भूमि का ॥

कथा की उत्पत्ति के स्थान; परंपरा की बातें; स्तंभ, मंदर आदि, मुद्रा, लिखी ऊई कथा; सात काल कर कै कथा का विभाग औा उन सातैं का अलग अलग वर्णन, ये सब बातें इसअध्याय में कहें गे. ॥

प्रलय के पीछे अब हम मनुष्य जाति की कथा का आरंभ करते हैं, औा नाना देशोंमें मनुष्य जाति के जुदे जुदे घराने के वास स्थान औा उन के बढने की रीतैं का वर्णन करैं गे परंतु इस कथाके वर्णन करने के पहले थोडीसी भूमि का कहैं गे।

धर्म पुस्तक को छोड कर तीन बातैं हैं जिन से हम भूत वाथाओं को जानते हैं, वे ये हैं प्रथम तो यह हैकि कितनी बातें ऐसी हैं कि परंपरा से कहते आवते हैं, दूसरै मुद्रा, समाधि मंदिर आदि, औा तीसरै लिखे अथवा मुद्रित पत्र।

सब बातैं की कथा परंपरा की कही बातैं से आरंभ होती हैं। जैसें हिंदु स्थान में श्रुत अर्थात् सुनी ऊई बातैं।

इससे हम सहज ही अनुमान करते हैं कि वे पुस्तकैं जिन में धर्म औा कथा संबंधी परंपरा की बातें हैं, उनके अनुसार उसकाल में चलते थे जब वे बनी थीं। जो कुछ हम परंपरा की बातें से पावते हैं वह बऊधा अद्भुत

श्री सदा अनिश्चित है; जैसें कोई कहानी अनेक कुलें में फैलते ऊए प्रत्येक चरण में ऐसी पलटती जाती है कि एहात सच नष्ट हो जाता है श्री कल्पना की बातें से भर जाती है। इससे जाना जाता है कि सब जातें की पहली बात इतिहास पुर्वक हैं, जिन में झूट विशेष कर की है। यह भी ठीक है, कि पहली सब कथा छंद में लिखी हैं, क्योंकि बातों से परिमित पंक्ति शीघ्र श्री सहज ही स्मर्ण हो जाती हैं। स्तंभ मंदिर आदिका यह बडा फल है कि उनसे कथाके काल ठहरावते हैं। कोइ चमत्कारी वृत्तांत स्मरण करने के लिये स्तंभ, मंदिर आदि बनाये गये थे, श्री उन वृत्तांतें की कहांनियां भी उन में खोदी गईं थीं।

बऊत बेर ऐसा होता है कि, जब स्तंभ मंदिर आदि बिनाश हो जाते हैं, तौ भी लिखे ऊए अक्षर रहते हैं, श्री ऐसें हम सामर्थ पावते हैं, उन कई प्रधान वृत्तांतें का काल निश्चै करने को जो कथा में ऊए थे। अज्ञान काल में मुद्रा कोई नहीं जानता था, परंतु जब से मनुष्य जाति सभ्य ऊई तब वे व्यवहार में आने लगे। थोडी मुद्रा बडे बडे वृत्तांतो के स्मरण करने को बनाई गई हैं; और उन्हो की सहायता से हम वृत्तांत की तिथि भी ठहरा लेते हैं; श्री उन्हें में बडे कर्म कर्त्ताओं की मूर्तें नाम, आयुर्दा हैं; श्री उनही से हम तिथि निश्चय करते हैं; श्री लिखी ऊई कथा की भूलेंको शुद्ध करते हैं। परंतु भूतकाल के वृत्तांत सबसे निश्चय करके कथा चिताती हैं, जो अक्षरें के बनने से लिखीगईं हैं। येकथा छापा निर्म्माण होनेके पीछे और भी यथार्थ होगई हैं।

प्रलय के पीछे मनुष्य जाति की सामान्य कथा का सुपष्ट औ मिला ऊआ संबंध रहनेके लिये, ऐसी रीत है कि उसे कई संवतों में विभाग करते हैं। इसीलिये हम इस कथाको सात संवतों में विभाग करते हैं, हम पहले संवत का अंत ट्रोजन नाम युद्धको ठहराते हैं, जो बारहसै बरस पहले ईसामसीहके ऊआ था, इसके ठहराने का एक तो यह कारण है कि उसका कथा में यह वृत्तांत सबसे प्रधान है, औ दूसरा यह है, कि यूरपीय लोगोंकी यह स्मरण करने योग्य पहली चढाई एशिया नाम खंड पर ऊई थी। इस संवत में प्रलय से ले इस युद्ध तक १२०० सै बरस के वृत्तांत हैं, औ इसका सके सब वृत्तांत अच्छे प्रकार से नही जाने गये हैं।

दूसरा संवत ट्रोजन नाम युद्धसेले सइरस नाम महाराजके समय तक, जो ईसामसीहके पांचसै ५०० बरस आगे था; यह संवत् छहसो ६०० बरस का है; प्रथम ही इस महा राज ने पश्चिमी एशिया में अतिबडा राज्य स्थापित किया तीसरा संवत् २३० बरस का, इस बरस से ले श्रीयुत सिकंदर तक जिसने फारस का महाराज्य उलटा दिया, औ यूरपकी बडाई प्रथम ही एशिया खंड में स्थापित की जो आजतक चली जाती है। चौथा संवत् सिकंदर के समें से ले ईसा मसीह के जन्मतक, इस संवत् में ३३० बरस के वृत्तांत हैं, इसी में ईसाई मत प्रकाशित ऊआ, औ रूमदेशने पश्चिमके देशों में राज्य किया। पांचवां संवत् ईसा मसीह के जन्म से ले रूमके महाराज्य के उलटाव तक इसी संवत् में अबके यूरपीय लोगों का अंकुर प्रकाश होनेलगा। यह संवत् लगभग ४०० बरस का है, औ बऊधा इस संवत् के अंत तक की

कथाओं को प्राचीन अर्थात् पुरानी कथा कहते हैं; छठा संवत् अंधेर काल कहावता है, क्योंकि इसमें सभ्यता की विद्या जिन्हे यूनानियों औ रूमके लोगों ने सुधारी थीं सो बन्य लोगोंकी चढाइयों के कारण नष्टहुई, औ अशास्त्रीय कर्म औ अज्ञानता यूरप में प्रबल हुई। यह संवत् रूमके महाराज्यके उलटाव से ले, कलंबस के दिनोंतक, जिस चमत्कारी मनुष्यनें ईसाई चौदह सौ बाण वै १४९२ संवत् में नवीन जगत अर्थात् आमेरिका महाद्वीपको प्रकाश करके यूरपीय लोगों के पराक्रम को जगादिया। सातवां या अंतका संवत् आमेरिका के प्रकाश होने से ले वर्त्तमान तिथितक। पहले संवत् की कथा से हमें ज्ञान होता है, कि उस काल के मनुष्य बन्य औ अज्ञान दशा में थे परंतु इस अंतके शककी कथासे जानाजाता है कि मनुष्य कुल सब प्रकार के विद्यारूपी बल औ सभ्यता से भराहुआ है।

॥ ३ अध्याय ॥

॥ २३४४ सेले ११८४ बरस. आ. ई. ॥

पहला—संवत् प्रलय से ले ट्रोजन नाम युद्धतक

आर्क नाम नौका का टिकाव, नूह—बैबेलका मुरहला—निमरूद—निनवह—बेलस—भाषाओं की उलट पुलट—असीरिया का राज्य—सिमि रैमिस, औ उनकी चढाई हिंदुस्तान पर

बैबीलन—मिसर—हरमीश—अक्षरोंका निकास—मतके बनाव—यहूदियोंका निकास—पहले ठहराव युनान में—पूर्व्व मिसर देश में सभ्यता—मिसर देश से इस्राएल के वंश की विदा—सिसाष्ट्रिस—सीक्रास—कैडमस—डेनास—यूनान के देवादि विषयक कल्पना किये हुए वाक्य—आर्गोनाटिक नाम चढाई—क्रीट—मइनास—हरक्यूलीस थिसिअस—इनसबों का वर्णन इस अध्याय में करेंगे*

नूहकी नौका आरारात पर्वत पर टिकी, कोई कोई भूगोल वेत्ता इस पर्वत को आरमनिया देश में ठहराते हैं। तौ भी ऐसा अनुमान करते हैं कि यह अधिक संभव है कि नौका बैक्ट्रिया देश में ठिकी, जो देश हिंदुस्थान के उत्तर पश्चिम कोण में है; एकतौ यह कारण है कि यह देश विशेष करके इस महाद्वीप के मध्य में है जिसपर यूरप, एशिया औ आफ्रिका हैं; औ दुसरा यह है कि धर्मपुस्तक में कहा है कि मनुष्य जाति के कुटुंब की याचा प्रथम पूरब से बैबीलन के चौगानों में हुई। परंतु आरमिनिया बैबिलन के उत्तर को है। जब नौका ठिक गई, तब परमेश्वर की आज्ञा से, नूहने सकुटुंब उसमे से बाहर आजीवों को छोडदिया जो उस में बचे थे। पृथ्वी उर्वरा हुई; प्रलय के कारण भूमि बहुत अच्छी होगई, औ सब पदार्थ असाधारण रूप से उगे; भूगोल सघन वन से ढका, औ भयानक पशुओं से भरा, परंतु मनुष्यों का निर्बल समूह तब तोडी केवल एक ही स्थान में रहा। क्रम क्रम उनकी संख्या ऐसी बढीकि वे आपस में उसी स्थानपर आनंद

से न रह सके। ऐसा अनुमान करते हैं, कि तब पांचेक सहस्र मनुष्य पिता नूह की ठांव छोड नवीन वास स्थानों के ढूंढने को निकले। वे पश्चिम दिशा को हौले हौले यात्रा करते हुए निदान शिनार अर्थात् बैबीलन के चौगान में पहुंचे। बडा गोत्र जनक अर्थात् नूह उन के संग न गया; सब रीति से ऐसा संभव दीख पडता है, कि वह उसी स्थान के निकट रहता रहा जहां नौका टिकी थी, औ यह अटकलते हैं कि उस की संतान जहां तहां, हिंदुस्थान, चीन, औ आस पास के देशों में फैल गई। इन लोगों ने जो बैबिलन को गयेथे, इस चौगान में पहुंच कर यहां ही अपनी ठांव बना ने का मता किया, औ वहां घर बनने की सामग्री का बडासा ढेर देखकर एक नगर औ ऐसा ऊंचा मरहला बनाने का प्रारंभ किया कि जो आकाश तक पहुंचे, परंतु ईश्वरेच्छा करकै उनका अभिमान शीघ्र ही रुक गया औ उन की बोली जो पहलै एक ही थी सो जुदी जुदी होगई। ये परिश्रमी आपस की बात चीत न समझने के कारण, घबरा, बनाने का उद्योग तज तू कहीं, मैं कहीं, इस रीति से जहां तहां बिखर गये, औ इसी कारण से पश्चिमके देशों में आगे को राज्य, औ महाराज्य, होने की नीम रक्खी गई।

तौ भी थोडे बहुत लोग बैबीलन में रहे और निमरूद नाम एक बडा उद्योगी मनुष्य, संभव है कि पहलै यही जन नगर निवासियों को शिनार में लाया, औ उन पर आज्ञा करता रहा। धर्मपुस्तक में कहा है कि निमरूद ईश्वर के अगाडी पराक्रमी अहेरी था; इस का अर्थ यह है कि वह अपने अनुचरों को बन्य पशु जिन से चारों ओर के बन उपबन भरे हुए थे चढाकर लेजाता, इसलिये कि केवल तिन का

विनाश करकै मनुष्य जाति के वासस्थान की सीमा को बढावैं; इसके पीछे प्रथम उसी ने अपने महाराज्य की नीम बैबीलन में रक्खी, औ तिस पीछै और नगर बनाये; इसके राज्य का प्रारंभ २२१३ आ. इ. हुआ, इस ने १४८ बरस राज्य किया, औ अटकलते हैं २०६५ बरस आगे ई. मरा। यह बात संभव है, कि अशर नाम एक मनुष्य ने निमरूद के समय में बैबीलन नगर से स्वदेशत्यागियों का जथा ले टइग्रस नदी उतर कर ऐस्सिरिया के राज्य की नीम धरी जिस की राज्यधानी निनिवह है।

निमरूद के पीछै बेलस राज गद्दीपर बैठा, जो कुछ उस का संबंधी न था; पूर्वकाल में यह रीत नहीं थी कि पैटक अधिकारी ही सिंहासन पर बैठै, परंतु जो सब से बलवान या योग्य होता था सोही अधिकार पावता था। बेलस बडा गंभीर औ बहुत पढा लिखा था; इस ने साठ ६० बरस राज्य किया, औ इस राजा ने अपना काल कृषी कर्म सुधारने औ ज्योतिष शास्त्र के पढने औ चमकाने में लगाया, औ ऐसा कहते हैं कि यह इस विद्या का आचार्य था, कैलडिया के ज्योतिषियों की पाठशाला बैबीलन में थी, जो कई सौ बरस तक प्रशंसा में अद्वितीय रही। एशर औ निमरूद की मृत्यु बहुधा एक ही काल में हुई। एशर के पीछे सूरबीर उच्चपदाभिलाषी नइनस नाम मनुष्य सिंहासन पर बैठा। औ कथाओं में लिखा है कि पहले पहल इसी ने युद्ध करने का प्रारंभ किया। इस ने अपना महाराज्य बढाने के लिये अपनी सेना की चढाई निमरूद के राज्य पर कर उसे जीत लिया। तिस पीछै बैबीलन के पूरब में और जो छोटे छोटे देश थे उन को भी अपने आधीन किया, औ ऐसें प्रथम ही ऐस्सिरिया का राज्य जय के कारण बढा। जब वह इन बातों से भी तृप्त न हुआ, तब बैकट्रिया पर चढाई

करी, जिसदेश को हम अनुमान करते हैं कि प्रलय के पीछे मनुष्य जाति का पहला स्थान वही था; पीछे बहुत हार जीत करके, निदान नइनस ने अपने सेनापति की सिमिरैमिस नाम स्त्री की सहायता से इस देश को जीत लिया औ पीछे आप ही उस स्त्री से विवाह कर लिया। उस के मरने के अनंतर वह स्त्री सिंहासन पर बैठी, औ उस ने अपने महा राज्य की राजधानी निनिवह को छोड बैबीलन को किया, जिसै उस ने अच्छे अच्छे शोभायमान घर बना कै सुधारा, औ दृढ भींत उसके चारों ओर बनवाकर बडा पराक्रमी किया; अपने पति से जय करने की रीति जान जो प्रथम उसी ने बनाई थी, सिंधु नदी के पश्चिम में कोई शत्रु न देख, बडी पराक्रमी सेना इकट्ठी करी, औ उस नदी को पारकर हिंदुस्थान पर चढाई की; कथा कारकों ने उस के दल की ऐसी अति संख्या कही है कि जो किसी के मन में नहीं आवती; परंतु चाहै यह बात हो कि यह चढाई इतनी सहायता करकै सहित थी कि जो उस काल में कभी नहीं हुई थी; तौ भी सिमिरैमिस अपने सब दल समेत हारगई; कोई कोई तौ ऐसा निश्चय करते हैं कि वह इसी युद्ध में मारीगई, औ कोई यह कहते हैं कि जब वह लज्जित हो फिर अपने लोगों में गई तौ उन्हों ने सिंहासन से उतार दी। परंतु यह अनुमान संभव है कि हिंदुओं की पोथियों में लिखा है कि देवता औ असुरों मे संग्राम हुआ, सो यही था हम अभी अटकल चुके हैं कि जब मनुष्य जाति के कुटुंब का एक भाग बैकट्रिया में रहा औ क्रम क्रम से पूरब ओर फैला तब दूसरा बैबीलन को गया। ऐसें सिंदुनदी बीचमें देकर इस बस्ती के आपस में दो प्रधान भाग हो गये, औार इन दोनों मुख्य कुलोंके बीच यही प्रथम संग्राम हुआ। यह अटकल असंभव नहीं है कि हिंदू लडे जैसे देवता, क्योंकि उन की जय

ऊई; औ जो इन के साम्हने ऊए वे थे जैसे बलवान राक्षस, जिन्हों ने ऐसा युद्ध किया कि रुधिर की नदियां बह निकलीं।

सिमिरैमिस की मौत या राजगद्दी से उतरने के पीछे उस का निनयास नाम पुत्र सिंहासन पर बैठा, तिस पीछै अनेक राजा ऊए, उन के राज्य करने का लेख अच्छी रीत से नहीं जानते हैं। इसकुल में सब से पिछला सार्डेनेपेलस नाम राजा ऊआ जो बडा रसिक औ सुखभोगी था, ऐसा जान जब उस पर शत्रू चढे तब उस ने देखा कि मैं इन के सनमुख युद्ध करने योग्य नहीं ऊं, तब एक बडी चिता बनाय वह अपनी सब संपति कुटुंब समेत उस में बैठ आग लगाकर जलमरा। ऐसिरिया के महाराज्य के नष्ट होने का वर्णन इस कथा के दूसरे संवत में करैंगे।

अब हम भाषाओं के उलट पुलट होने के काल का वर्णन करते हैं, जिस कारण से बऊधा लोग अपने अपने स्थान छोड इधर उधर चलेगये, औ विशेष करकै ऐसा बैबीलन से पश्चिम के देशों में ऊआ। मिसराइम ने एक झुंड मनुष्यों का लेकर मिसर देश का पंथ लिया, औ वहां पहुंचा, ऐसा अटकलते हैं कि निमरूद ने जिस दिन से अपना राज्य बैबीलन में स्थापित किया उस के पंद रह बरस पीछै यह मिसराइम इस देश में आया। इस ने मिसर को बऊत अच्छा औ जलयुक्त देश देख वहां ही अपनी बस्ती की, औ उस देस का पहला महाराजा कहाया। इसी मनुष्य के नाम के कारण उस देश को मिसर कहते हैं। बऊत दिनों पीछे वहां के बासी उसे ईश्वर जान उस का आसिरिस नाम रख उस की पूजा करने लगे; उस के सात पुत्र थे जिन्हों ने उस के राज्य के सात विभाग कर, आपस में भोग किया। इस में पेडयूसिम या थियाथ सबसे बडा नामी था, जिस को कहते हैं कि वह अपने

बाप का मंत्री था उस ने आप ही आप परिश्रम करके सब प्रकार के गुण औा विद्या बढाईं औा चमकाईं, औा उसी ने अक्षर भी निर्माण किये जो मिसर देश में चलते हैं। उस ने व्यवस्था स्थापित कीं, उस देशकी भाषा सुधारी, धर्म की रीत बनाईं जो मिसर देश की बस्तियेंा में बढती रहीं; औा इस ने बडा परिश्रम कर ज्योतिष बिद्या भी पढी। कहां तक कहैं कि वह मनुष्य अत्यन्त बुद्धवान औा सुशील था, कि उस ने अपनी चतुराई से सब प्रकार के उपकारी गुण निर्माण किये; उस के नाम में एक भेद था, औा कोई कोई कथाकार अनुमान करते हैं, कि इसी नाम के जुदे जुदे काल में कई एक लोग थे। युनानी उसे हर्मीस कहते थे, औा अब के लोग उसे हर्मीस ट्रिस मे जिसटस नाम से बोलते थे, उस का यश बहुत फैला पर गुप्त रहा।

इसी समय में जो लोग बैबिलन छोड छोड कर गये उन से और और देश बस गये। कुछ केनान देश में बसे, कुछ अरब में, कुछ फारस में औा रहे सहे एशिया मैनर में; परंतु बैबिलन के पूरब अर्थात् चीन आदि देशेंा में जैसें लोग बसे उन का समाचार हम नहीं जानते।

अक्षरेंा की उत्पत्ति जानने के लिये जो अनुमान करैं तो अनगिनत हैं। हमारे अक्षर देवनागर हैं, जो चीनियेंा को छोड कर, सिंधुनदी के पूरब में जितने प्रकार की वर्णमाला हैं सब इन्ही से निकली हैं, देवताओं ने कृपा करके इन अक्षरेंा का दान दिया है; इसलिये हम इन अक्षरेंा का उत्पत्ति स्थान नहीं जानते। हम देखते हैं कि सिंधुनदी के पश्चिम में, निमरूद के पीछे बेलस जब राज गद्दी पर बैठा, तब उसी ने ज्योतिष में प्रथम ही गणित करने की रीति बैबिलन नगर में निकाली।

जो जो बिषय आकाश के देखकर ठीक ठीक लिखे थे, वे सब श्रीयुत सिकंदर को दिखाये, जब उस ने इस नगर को जीतकर इस में प्रबेश किया। यद्यपि कोई कोई मनुष्य का विचार जुदा जुदा है, तौ भी हम यह पहला ही समाचार अक्षरों के चलने का देख सहज ही ठहरावते हैं कि वर्ण प्रथम ही बैबिलन में निर्माण ऊए थे। यह भी अनुमान होता है कि वेही अक्षर अरब, फारस, यह्नदा, औ फिनिशिया देश के लोगों में फैले। ये अक्षर था यह्नदीयों के अथवा और कोई वर्ण जो इस में मिलते ऊये हैं, ये सब दाहने हाथ से बांये को लिखे गये थे। फिनिशिया देश से ये अक्षर यूनान में आये, औ वहां इन में कुछ बनावट ऊई; औ यूनान से इटली में, तहां इन में बऊत सी नई अदल बदल ऊई; औ इटली से जैसें जैसें रूम के लोगों की जय ऊई, सब यूरप में फैल गये। ऐसें यह संभव है, कि जिन अक्षरों से यूरप की सब अनुमति संपुर्ण पृथ्वी में जाती हैं, ये वे ही अक्षर हैं जो पहलै पहल बैबीलन नगर में निर्माण ऊये थे, ऐसा हम जानते हैं, परंतु, अभीतक इसबात पर झगडा चला जाता है। वे वर्णमाला जो मिसर औ और और कई देश में चलती हैं वे मूर्त्ति द्वारा लिखी गई हैं; इन अक्षरों का इतना ही विषय हम जानते हैं; औ यह नहीं निश्चय ऊआ कि कब वे निर्माण ऊए औ कैसें फैले।

जगत् के प्रारंभ में जैसें धर्म की रीत प्रबल ऊई, हमारे पास उन का लेख है परंतु स्पष्ट रूपसे नहीं जानते हैं। पहले मनुष्य जाति निर्दोष थी, तिस पीछें शीघ्र ही पाप में चित्त देने लगी, बलिदान करना स्थापित ऊआ, प्रथम ही जो कुटुंब में प्रधान था, तिसने बलिदान ईश्वर के निमित्त अर्पण किये, तिस पीछे उस ने जो ग्रात में मुख्य था, औ अंत में यहांतक ऊआ, कि, जो

कोई लोग प्रतिष्ठित ङए उन्हों ने भी किये, औ तभी से उन के कुनवे में पुरोहित पना पीढ़ी पीढ़ी से होता चला आया। ऐसे पुरोहित लोगों की उत्पत्ति है; औ यह सब देश औ सब जातों में दृष्ट आती है। प्रलय के कुछेक काल पीछे साकार औ निराकार ब्रम्ह की आराधना प्रबल ङई; परंतु धर्म विषयक विद्या परंपरा से चली आई, औ क्रम क्रम से ऐसी घटी, कि मनुष्य परब्रह्म की आराधना में अपनी अपनी कल्पना करनें लगे, औ क्रम क्रम से देव पुजक ङए। हिंदुस्थान में कौन कालसे प्रतिमाओं के पूजने का प्रारंभ ङआ, सो हम कुछ नहीं जानते, ऐसा अनुमान करते हैं कि पूरव के ज्ञानी लोगों ने पंडिताई की रीतें रचना कीं, अब देव पूजा सब स्थानों में फैली, परंतु हिंदुस्थान की बीरता अथवा पंडिताई के काल में अज्ञात थी। पर सिंधुनदी के पश्चिम में जैसें जैसें धर्म चला, उस का वर्णन ओर देशों से अच्छा जानते हैं; बैबिलन बासी, जो पहले ही पहल ज्योतिषी थे, प्रथम वे ही देव पूजक ङए। उन्हो नें यह नक्षत्रादिकों की चाल की गणना कर संभव जान, उन में ईश्वर संबंधी सामर्थ आरोपण कर, उन की ईश्वर तुल्य प्रतिष्ठा करी। तभी से वहां सूर्य, चंद्रमा, औ तारों की पूजा का प्रारंभ ङआ। और ऐसें ही सब बातों से संभव है कि सूरबीर, ज्ञानी, औ राजाओं की पूजा होने लगी; पहला उदाहरण यह है कि एक वेलस नाम मनुष्य जो कैलडिया देश में ज्योतिष बिद्या का आचार्य था, वहां के लोगों ने उसे देवता समान जाना वहां के बासियों ने उसे ईश्वर वेलस समझ, उस की प्रतिष्ठा के लिये एक लाठ बना, उसकी पूजा करने लगे। तिष पीछे, पांचों तत्व, बड़े बड़े पर्वत, औ महा नदीयों की पूजा चली औ अंत में अनेक अधर्म के देवताओं की। ऐसे मनुष्य परब्रह्म का स्मरण

ऋौर धर्म विषय छोड, क्रम क्रम अशास्त्रीय व्यवहार में लगे, यहांतक कि छोटे छोटे पदार्थ को अपना धर्म समझ ने लगे।

जब लोग अनित्य मनुष्य को परमेश्वर तुल्य जानने लगे, तब थोड़े ही काल में ईश्वर ने प्रसन्न हो अबराहीम को बुलाया, जो बैबिलोनिया में रहता था, ऋौर उस काल में उसे ऋौ उस की संतान ही को अपनी सच्ची आराधना करने की विद्या दी थी। कोई कोई ऐसा कहते हैं, कि अबराहीम कैलडियावालों के मत का विरोधी था, इसलिये उन्हो ने उसे अपने देश से निकाल दिया। तब ईश्वर ने उसे केनान देश मे जाने की आज्ञा दी, ऋौ वही देश उस के बंश के बसने को दिया। ऋौर भी उसे बचन दिया कि बक्कत दिनों पीछे, ईसामसीह अर्थात् ईश्वरका अवतार तुम्हारे ही वंश में ले आप ही बलिदान होकर पापी मनुष्यों को मुक्त देंगे। अबराहीम के इसहाक उत्पन्न ऊए; ऋो इसहाक से याकूब; ऋौ याकूब के बारह पुत्र, जिन से यह्रदियों की बारह जाति ऊई। याकूब अपने कुटुंब समेत, दुर्भिक्ष के समे में, मिसर देश को गया, ऋौ उस का पुत्र यूसफ नाम वहां के राजा का प्रधान मंत्री था। उस ने उन्हे गोशन नाम देश में ठहराया। आस पास के देशों के लोग बक्कत करकै देव पुजक थे, ऋौ ब्रह्म की आराधना करने की बिद्या केवल इशराइल के बंश में रही थी।

अंत में वैबिलन से एक बिभाग देश त्यागियों के ने उस समद्र का मारग लिया, जो एशिया की पश्चिम सीमा है, ऋौर वहां से छोटी छोटी नैाकाओं पर चढ, उस देशका अधिकार किया जो यूनान के साम्हने है। ऐसा भी अनुमान होता है, कि थोड़े से लोग थलही थल गोल परिभ्रमण कर ग्रेस देश में हो युनान में पक्कचे। विन्हो नें वहां एक बडा आरण्य

मय देश देखा, जिस को जिन्हों ने क्रम क्रम से काटकर सुधारा। यूनान के दक्षिण के प्रथम बासी पीलासजी कहावते थे, और उत्तर के हेलनीस। अनुमान है कि अबराहीम के समैं में इनैकस नाम पुरुष ने पिलासजी का पहला बास स्थान आरगस नगर स्थापित किया; इसी कारण यूनानियों में आरगस पूर्व नगर कहाया गया। हेलेनीस अंत में पिलासजी पर प्रवल हुए, और उन्हें उन की बस्तियों में से निकाल सब देश को अपना नाम दिया।

हेलेनिक जाति जब इस देश में अच्छी रीत से जमगई, तब उस का चार गोत्र में विभाग हुआ, जिन के नाम डारिक, अइ-ओनिक, ईओलिअन, औ ऐटिक, इन के जुदे होने के पीछे यद्यपि राज्य में अदल बदल बहुत होतीरही; तौ भी इन के नाम औ गुण अलग अलग वनेरहे। परंतु इन से और विशेष सभ्य देशत्यागियों ने क्रम क्रम से हेलेनीस के पराक्रम का नाश किया, जिन का हम थोडासा वर्णन करैंगे।

अब हम मिसर देश का विषय कहते हैं, कि पूर्व काल की कथा इस देश की अच्छे रूप से नहीं जानीगई हैं; परंतु अनेक प्रमाण हैं कि यह पहला देश है, तिस में पढना लिखना अतिशय करकै हुआ; सब रीत के औ सभ्यता औ सब प्रकार के गुण विशेष रूप से बढ़े। जिन वस्तुओं से मनुष्य जाति का जीवन सुधरता है, उन का मा बाप, औ सिच्छक जगत के प्रारंभ में यही देश था; मिसर देश के पूर्व काल की सभ्यता उस के स्वाभाविक फल से बढी थी। आफिरिका में यही केवल एक देश जिस में दूर लग नौका चलने योग्य नदी है। यह नईल नाम धारा है, जो गंगा के समान प्रति वर्ष अपने तटपै उमड कर आती है, तिस के कारण वहां की भूमि बडी उर्वरा होती है।

आफिरिका औ एशिया को मिसर देश मिलाता है; और बडा काल हुआ कि इस देश का वाणिज्य दूर के देशों में होताथा, जिस के कारण उस की बडाई सब देशों में फैल गई। मिसर में लोगों की बस्ती दक्षिण से उत्तर को है; औ वहां के गुरु लोग ब्राह्मणों के समान जुदी औ प्रतिष्ठित ज्ञाति हैं; जो वहां के लोगों को शिक्षा करतीरहती हैं। मिसर के उत्तर का भाग अत्यन्त उर्वरा है, जिस के बीच में होकर नईल नदी समुद्र में प्रवेश करती है।

ऐसा अनुमान करते हैं, कि मिसर देश में मिसराइम के पहले ठहराव से ले सोलह सौ १६०० बरस आ. ई. तक पचीस राजाओं ने राज्य किया। कोई कोई अनुमान करते हैं, कि बिडोइन नाम अरब के लोगों का दल मिसर के उत्तर-वर्त्ती उर्वरा प्रदेशों पर टूटा, औ उस के नगर गामों को जलाया, औ वहां के वासीयों की बडी कटा कर सब देश का नाश किया। मिसराइम की संतान जो गोशन नाम भूमि में बसी थी, जो भूमि मिसर के उत्तर दक्षिण कोण में है, उन्होंने इस जयवंत अरब के कुल से अत्यन्त दुख सहा। निदान ईश्वर ने प्रसन्न हो, इन्हें इस भूमि से केनान देश में लेजाने की मूसा को प्रेरणा की, छह लक्ष मनुष्य, इशराईल के वंश के, बालक स्त्री रहित, मूसा की मार्ग दर्शकता औ ईश्वर के बचाव से, मिसर देश को छोड भागे, औ उस देश के फिरोह नाम मोहित राजा ने उन का पीछा किया, जिस की सेना दुखी रूप से अरब के उपसागर में विनाश हुई; औ यह अद्भुत कर्म हुआ, कि इशराईल का वंश इस समुद्र को पांओं पाओं उतर गया। वे चले चले सेनाई नाम पर्वत के तले पहुंचे, बहुधा जो स्थान यूरप, एशिया, औ आफिरिका के बीचोंबीच है; वहां ईश्वर ने

प्रसन्न हो, बडी आंधी, घटा, बिजली, कडकने के समैं, अपनी इच्छा मूसा से प्रकाश की; जिस से भविष्यत काल में राज्य की व्यवस्था हुई, औ मनुष्य जाति के लिये उसे अपनी दश आज्ञा दीं। तिस पीछे जब इस्राईल का वंश ईश्वर से प्रतिकूल हुआ, तब उन्हें ईश्वर ने चालीस बरस तोडी बन में भ्रमण करने को दण्ड दिया। मूसा की मीच के पीछे, योशुआ नाम मनुष्य जो बडा चतुर योद्धा था, उन्हें वहां से केनान देश को लेगया, औ पीछे कई बडे बडे कठिन युद्ध करके उन्हों ने उस देश को अपने बस किया।

धर्मपुस्तक में इसी देश को केनान कहा है, जो पुराने फिनिशिया का एक भाग है, अगले दिनों में यह देश पृथ्वी भर में अत्यन्त सभ्य था। हैम नाम मनुष्य की संतान जो बेबीलन को छोडकर आई थी उस ने इस देश को पहलेहीपहल बसाया था। यह देश भूमध्यस्थ समुद्र के पूर्वी तट पर बडा लंबा है, इस की दक्षिण सीमा मिसर देश है। जो जो विद्या गुण मिसर देश में थे, वे सब तुरंत फिनिशिया में आये; और यह भी संभव है कि वे यहां और भी सुधर गये। इस फिनिशिया देश में विशेष परिश्रम करके लिखने की विद्या बहुत सुधरी, जिस के सुधरने का एक तो यह कारण है, कि फिनिशिया के लोगों ने बडा बडा वाणिज्य किया, जिस के कारण उन्हें लिखने का काम आवश्यक हुआ; क्योंकि उन्हों ने समुद्र के तीर दूरतक अधिकार करके समुद्र विषयक बडा ब्यौपार किया, और दूर दूर के देश ढूंढ मारे; इसी के कारण उन की विद्या औ धन बढा, औ बड़े साहसी उद्योग का अभ्यास हुआ। इन सब बातों से फिनिशिया के लोग नामी औ प्रशंसनीय थे, और भीतरी देशों के लोगों को कोई

जानता न था; उन का प्रधान नगर टयर, जिस को उस काल में महा सागर की राणी कहते थे।

अरब के लोग जिन्हों ने मिसर में प्रवेश किया था, वहां के बासियों ने उन्हें दबाया; थोड़ेही काल पीछे, इस राज्य के दक्षिण भाग का एक राजा था, उस ने निकाल दिया, जिस का राजस्थान थीवस नगर था। मिसर में थोड़ेही बरसों के बीच एक सिसाष्ट्रिस नाम ऐसा अत्यन्त पराक्रमी राजा सिंहासन पर बैठा, जैसा कभी न बैठा था। जो जो उस के विषय में लिखा गया है सो ऐसा अचंभे का है, कि कोई उस में विश्वास नहीं लाता; परंतु मिसर की कथा से जाना जाता है, कि इस राजा के राज्य में यहां के लोग अत्यन्त अभिमानी थे, इस में कुछ संदेह नहीं है। उस ने उन अत्यन्त दूर देशों तक राज्य किया, जो उस काल में, समुद्र अथवा थल के पंथ करके जाने गये थे। उस ने अत्यन्त बड़े बड़े स्तंभ मंदिर आदि बनवाए, और अपनी प्रजा के ऐसे गुण औ स्वभाव सुधारे, जो उस के मरने के पीछे भी बहुत काल तक बनेरहे।

सिसाष्ट्रिस के पूर्व गामी जो थे, उन्हों ने जब अरब के लोगों को निकाला, तो उस के कई इस देश से अत्यन्त बड़े नगर निवासी निकले, उन के चलने से अनेक उन के अनुचर भी साथ हुए, और इन्हों ने देशों देशों में अपने रहने की नई ठांव ढूंढी, परंतु तित्तर बित्तर होकर बसे। ऐसें मिसर की बडी सभ्यता और और देश जो उस काल में बन्य थे, उन में फैली; और इन देशों में विद्या ऐसे चमत्कार से बढी, कि मिसर की विद्या औ गुण इन देशों के अगाडी अस्त होगये। इन स्वदेशत्यागियों में सीक्राप्स नाम मनुष्य सब से पहला था। वह और उस के अनुचर यूनान में गये, और ऐटिका देश में

बसकर, मिसर की विद्या वहां की बन्य जातों में फैलाई, वहां के लोगों को हल चलाना सिखाया, व्यवस्था स्थापित कीं, और अटिका की ऐसी शुभ नीम रक्खी कि जिस से पिछले दिनों में उस की शोभा औ बडाई बहुत हुई।

सीक्राप्स के, तरेसटेक बरस पीछे कैडमस एक झुंड देश-त्यागियों का लेकर थीबस में पहुंचा, जो अटिका के बहुत निकट है। कैडमस के बाप औ सीक्रापस ने मिसर को एक-ही काल में छोडा, परंतु उस का बाप फिनिशिया में बसा, इसी कारण से कैडमस ने मिसर औ फिनिशिया दोनो स्थान की विद्या ली। इस ने बोशिया में आतेही वहां के अनाडी बासी-यों को जीतकर थीबस नगर की नीम रक्खी, जो नगर उस प्रदेश में, हौले हौले अत्यन्त बसा, और नामी हुआ। वह फिनिशिया की वर्णमाला यूनान में लाया।

हौले हौले यह वर्णमाला यूनानियों के डौल में बन गई, और कुछेक काल में इसे बांये हाथ से दाहने को लिखने लगे; वे येही वर्ण हैं जिन में यूनान के कवि, कथाकारक, औ पंडित, जिन्हों ने अपने ग्रंथ इन्ही अक्षरों में लिखे हैं; यद्यपि अब के लोगों ने विद्या बहुत बढाई है, तौ भी उन की ऐसी ठीक रचना हैं कि जिन को देख, लोग अबतक बना बना सीखते हैं।

डेनास नाम एक पुरुष भी इसी काल के लगभग मिसर से आकर आर्गस नाम देश में रहा, और उस ने वहां के राज्य करने की रीत ठीक ठीक बांधी। यह बात बहुत करके संभव है कि उसी काल में अथवा कुछ थोड़े काल पीछे यूनान के और भागों में राजनीति ठीक ठीक हुई; और ऐसे जो प्रधान प्रधान पढ़े लिखे लोग मिसर से आये, उन्हों ने इस बन्य देश

यूनान को इस की अनाडीपन की दशा से निकाल हौले हौले सभ्य किया; और सीक्राप्स के दोसौक बरस पीछे से इस की सभ्यता औ प्रशंसा का प्रारंभ हुआ। जब इस देश में विद्या की थोडी थोडी चर्चा होने लगी, तब एक ऐंफिक्टियानिक नाम सभा स्थापित हुई थरमापिली में, औ स्थापन करनेवाले का नाम भी यही था, इस सभा में सब यूनान के लोग मिले औ एक सर्व्व साधारण उपकार में उद्योग करने को उपस्थित हुए।

कोई कोई इतिहास वेत्ता अनुमान करते हैं, कि यूनान के देवादिविषयवाक्य बने हैं, और यूनानियों का ब्रह्मा, अर्थात् उन के देवतों का पिता, उस काल में जीवता था, जब ये मिसर के लोग यीस में बसे थे; यह ब्रह्मा क्रीट नाम उपद्वीप का राजा था, जिस काल में यह जीता था, उस काल के उस के बड़े बड़े चमत्कारी कर्म हैं; उस ने यूनान की यात्रा की, पहले उस के आधे सभ्य गंवार लोगों ने उसे महा बीर जाना उस की अति प्रशंसा की, और पीछे उसे ईश्वर समझ उस की पूजा की। यह बात चाहै सच हो या झूठ हो, परंतु इस में कुछ संदेह नहीं, यूनानियों के देव मंदिर उन मनुष्यों के लिये बने हैं, जिन को उन्हों ने पराक्रमी, ज्ञानी, सूरमा सत्पुरुष जाना, बहुत काल बितीत होने से उन की कथा नष्ट होगई हैं, तौ भी कवियों ने उन के वर्णन देवताओं के से किये हैं।

धर्मपुस्तक में लिखा है, कि मिसर के ब्राह्मणों की भूमि कर रहित है; यही व्यवस्था हिंदुस्थान की है, और जो हमारे पास कोई कैलडिया का लेख होता, हम संभव जानते हैं कि वहां की भी यही रीत देखते। बहुधा याजक लोगों ने अक्षरों की जुदी जुदी विद्या पढी, और इसी कारण से उस देश में इन की

अतिशय प्रतिष्ठा हुई। और बिना पढ़ी लिखी जो और जाति हैं उन्हों ने इन को देवता जाने, और जितने पुराने इतिहास उन में हैं इनही की लाभ की बातें हैं। धर्म की रीति और देश का व्यवहार यह नक्षत्रादि के उदय अस्त के आधीन बना है, और ज्योतिष विद्या को केवल याजक लोग जानते हैं, इस कारण वहां के लोग और भी इन के आधीन हुए। अनेक प्रमाण हैं, कि पवित्र जातों ने हिंदुस्थान, मिसर, यूनान, कैलडिया इन में धर्म की रीतें बनाईं, इस दृढ आशय से धर्म की रीति गूढ बनाई, कि हमी उन का वर्णन करैं, इस कारण से हमारा अधिकार प्रजा के ऊपर बना रहै। इसलिये सामान्य लोगों में अशास्त्रीय व्यवहार औ अज्ञानता है; औ याजक लोग स्वाधीन, सब के ऊपर आज्ञा के करता हैं।

यूनान में मिसर देश के लोगों की बस्तियां स्थित होने के पीछे, वहां के लोग हौले हौले सभ्य हुए। इस काल के और ट्रोजन नाम युद्ध के बीच जो वृत्तांत हुए, उन की कथा अच्छे रूप से नही जानी है। तौ भी इस काल में जाना गया कि एक चढाई हुई, जो उस काल के इतिहास में प्रधान है; इस चढाई का नाम आर्गोनाटिक। थेसली देश के निवासी पूर्व काल में जहाज संबंधी कर्मों में लगे थे, औ समुद्र विषयक भ्रमण उन को साधारण हुआ था।

पीछै बहुत भ्रमण करकै बहुत अपने संगियों सहित काल-किन राजा की मीडिया नाम लडकी को बल करकै हर लाया। फिरती बेर जिन्हों ने अनेक देश देखे, जो अच्छे रूप से नहीं जाने गये थे, और बहुत संकट युक्त औ आश्चर्य भरे हुए उद्योग किये। यह चढाई उस काल में अत्यन्त बीरता का कर्म था, औ कबियों ने बढ़ाकर उस उद्योग का ऐसा झूटा झूटा वर्णन किया

है, कि उस में कितना सच है यह जानना असंभव हुआ है। जेसन और उस के मित्रों को देवताओं के संबंधी जान, और यूनान के वीरों में उन की गणना की; जो यूनान के कवि लोग कलंबस और उस के साहसी संगियों का वर्णन करते, जिन्हों ने महा उद्योग कर आमेरिका माहाद्वीप को प्रकाश किया; हम ठीक अनुमान करें कि वे उन की भी देवताओं में गणना करते।

आरगोनाटिक नाम चढाई के थोड़े काल पीछे, बोशिया का प्रधान नगर थीवस, यूनान के सब देशों की दृष्ट तले आया। कोई कारण से, जिस का कुछ अच्छा वर्णन नहीं जाना गया, सात राज्य अथवा नगरों के लोग आपस में मिले और उस नगर से युद्ध किया। इस चढाई में कोई बडा भारी फल न हुआ, परन्तु बहुत से देशवालों का योग केवल एकही काम करने का था इसलिये परस्पर बातचीत करने से सभ्यता विशेष हुई।

इस अंधेर काल में, क्रीट नाम उपद्वीप और उस का मई-नास नाम नामी राजा, जिस ने यूनान में व्यवस्था बनाकर चलाई, अब हम उन का वर्णन करते हैं। यूनान से थोड़ीही दूर क्रीट है, जो मिसर औ फिनिशिया के बहुत निकट है, जिन के वर्णन में हम अभी कहचुके हैं, कि इन में पहलेहीपहल सभ्यता की वृद्धी हुई। संभव है कि क्रीट का उपकार इन दोनों देशों से हुआ; परंतु यह उपद्वीप मइनास के समैं तक कथा में प्रसिद्ध नहीं हुआ। यह राजा वंश के अधिकार से या जयकरकै राज गद्दी पर बैठतेही बडा परिश्रम कर अपनी प्रजा को सुधारने सुख देने लगा, और यूनान में आशीर्वाद फैलाने। इस काल में यूनान के समुद्रों में डकैती हुआ करती थी;

उस ने भयानक जहाज समूह बनाकर डकैतों का सत्यानाश किया। उस के लोग आधे बन्य थे, देश व्यवहार विधि, विद्या, औ गुण रहित था; उस ने विद्या पढने का चाव बढाया, और राज-नीति का ग्रंथ बनाया, जिस का यूनानियों ने बहुत काल बीते ऐसा आदर किया, जैसा हिंदू मनु के बाक्य को मानते हैं, औ इस उपद्वीप में उस ने जो जो राजनीति विधान स्थापन करे, उन के चिरकाल रखने में बहुत उद्योग किये; औ यूनानियों ने मइनास की इन व्यवस्थाओं का बड़ा आदर करकै सदा अवलोकन करतेरहे। कवियों ने उस का ऐसा सुधार सुधारकै वर्णन किया है कि वह हहस्पति का पुत्र था, और नरक का न्यायकर्ता था।

मइनास के पीछे यूनान में वीरता का काल आया। उस काल में थोडी व्यवस्था थीं, वे भी बलरहित; औ देश के राज नियम अपक्व थे, इसीलिये बीर पुरुषों ने बीरता प्रकाश करने का उपाय किया; और यूनान के कुलीन लोगों में, महत् औ संकट युक्त उद्योग करने के लिये उत्साह उत्पन्न हुआ। कभी कभी तौ वे इन कामों में प्रजा का भला विचारकै उपकार के लिये लगे, परन्तु बहुधा अपनी धाक बांधने के लिये। भाट लोगों ने उन के बड़े बड़े कर्म्मों का बखान किया, औ इस तरह बीरता की अग्नि बढी। सब बीरों के मध्य में हरक्यूलीस अत्यन्त नामी था। जो हम उस के कर्मों का बिश्वास करकै वर्णन करते, तौ यह छोटा ग्रंथ बहुत बढजाता। क्रम से गिनती में दूसरा थी सिअस, जिस ने क्रीट में जाकर मइनास के वाक्य पढे, और उन को ऐटिका नाम निज राज्य में लाया, इसलिये पीछे से उस की औ उस के राज्य की बडी बडाई हुई। कवि जनों ने उस के युद्ध के अनेक अद्‌भुत कर्म लिखे हैं, परंतु सब का निचोड यह

है कि वह ऐसा हितकारी राजा था, जो स्मरण करने योग्य है। तिस पीछे और बीर उत्पन्न ऊए, जिन की शारीरिक औ मानसिक सक्ति अद्‌भुत थी, और यह यूनानी लोगों के अनुकूल करने अथवा व्याकुल करने में लगा था इन बीरों से, ऊंचे कुल के लोगों में बडे बडे उद्योग करने में चित्त बढ़ा। देश के लोगों की बुद्धि औ चतुराई बिशेष होने लगी। जैसें जैसें सभ्यता बढ़ी तैसें तैसें देश के अनेक विभागों में जो नित्य लड़ाई झगड़े रहा करते थे सो मिटे; साधारण धर्म्म औ साधारण काव्य औ साधारण समाज हुई, जिस के कारण से सर्व्व साधारण मङ्गलीक विषय में एक मता हुआ; औ कोई एक महा उद्योग में यूनानी उपस्थित हुए जिस में सब हेलेनीक जाति मिलीं। यह कर्म ट्रोजन नाम युद्ध से उपजा, जिस का वर्णन कथा सार के अगले अध्याय में होगा।

॥ ४ अध्याय ॥

॥ ६२४ बरस का वर्णन ॥

॥ अर्थात् ११८४ बरस से ले ५६० तक. ख्रा. ई. ॥

॥ दूसरा संवत् ट्रोजन नाम युद्ध से ले सइरस के समैं तक ॥

एशिया मइनर—ट्राय—ट्रोजन नाम युद्ध—ओलिंपिक नाम खेल—प्रजा प्रभुता संबंधी व्यवहार विधि—स्पार्टा—लाइकर्गस—ऐथेंस—सोलन. इन सब बातों का बर्णन इस अध्याय में करैंगे—

हम इस दूसरे संबत् में मिसर, जूडिया, ऐस्सिरिया, औ बैबीलन इन की कथा तब तोडी की कहेंगे, जबलग ये सइरस के महा राज्य में मिले; यूनान के प्रदेशों की सभ्यता औ पराक्रम की वृद्धि; फारस के राज्य की उत्पत्ति; रूम, कार्थेज, सिसिली औ स्पेन का उदय; इन सवों का बर्णन इस में करेंगे।

एशिया माइनर, अर्थात् पश्चिमी एशिया का वह भाग जो यूनान के सन्मुख है, इस में यूनान के प्रज्ञात लोगों से मनुष्य जाति उत्पन्न ऊई। यह देश पृथ्वी भर में मनोहर है, इस में डारडेनस नाम एक जन ने इदा नाम पर्व्वत के एक टीले पर ट्राय नगर की नीम धरी, पहलेहीपहल यही वस्ती ऊई, जिस का कथा में वर्णन है। तिस पीछे इस नगर के चारों ओर ऐसी दृढ, पक्की, अभेद्य भीतें बनीं हैं, जो अनुमान करते हैं कि देवताओं की बनाई होयगीं। डारडेनस से पांच पीढी पीछे, प्रइअम अधिकारी हो राजगद्दी पर बैठा, संभव है कि उस का पैरिस नाम पुत्र डकैती के डौल-में, जहाज में चढ यूनान को गया, और स्पारटा देश के मिनेलास नाम राजा से उस के राजद्वार में भेट करी, उस ने इस की बडी आव भगत करके अपने यहां रक्खा। पैरिस ने फिरतेऊए उस की कृपा का यह फल दिया, कि उस की हेलेन नाम अति सुन्दरि स्त्री को बडे धन समेत हर लाया। इस बात पर मेनेलास, औ उस के भाई ऐगेमेमनन ने इस अपमान का पलटा लेने के लिये अपने देश के लोगों का चित्त प्रशंसा करकै बीर किया। वे लोग इस झगड़े में बड़ी चौकसी से लगे, ऐगेमेमनन ने एक लक्ष मनुष्य औ यूनान के सब घोड़ों की सेना ले जहाज पर चढ ट्राय नगर को आ घेरा। दस बरस के घेरे के पीछे यह नगर छल करकै हाथ आया, और ट्राय का

पराक्रम संपूर्ण नष्ट हुआ, और कोई कोई इतिहास वेत्ता ऐसा कहते हैं, कि जबलग यूनानी लोग एशिया मइनर में न बसे थे, तबतक उन के संपूर्ण बल का विनाश नही ऊआ था। ये मुखिया जयवंत होकर यूनान को गये, परन्तु विन्हों ने देखा कि हमारे पीछे निरधिकारी लोगों ने राजगद्दी लेली; और विन्हें राजाओं कैसी बड़ी धूम धाम से उस देश में रहना चाहिये था, परन्तु उन्हें कई बातें ऐसी सूझी कि जिन के कारण निज स्थान छोड़ भागे, और दूर देश में जा अपना रचा स्थान ढूंढा, ऐसें ट्रोजन युद्ध के कारण महा शोक ऊआ, और बडा दुख भुगतना पडा। ट्राय नगर का घेरा ११८४ बरस आ. ई. ऊआ था। होमर नाम कवीश्वर ने अपनी इलिअड नाम पुस्तक में इस युद्ध का बऊत अच्छा वर्णन किया है, ऐसा सब लोगों का संमत है, कि यह यूनानियों में केवल सब से अच्छाही कवि नहीं है, परन्तु अबतक जितने कवि ऊए उन सबों में अद्वितीय है।

ट्राय के विनाश होने से अस्सी ८० बरस पीछे हिरैक्लिडी अर्थात् हर्क्यूलीस की सन्तान की चढ़ाई ऊई। वे अपने आर्गस नाम स्वदेश से बऊत काल के निकालेगये थे, औ डारिस देश के साहसी पर्व्वतियों में पाऊने से हो बसे थे, यह देश कारिंथ आखत के उत्तर तट पर है। अन्त में इस कुटुंब के एक प्रधान जन ने डारिस के राजा की कोई उत्तराधि कारिणी से विवाह करके निज पराक्रम बढ़ाया, और अपने बाप दादे के देश को फिर जीतने का उद्योग किया, पूर्व्व काल में इस देश के लेने में उस का कुटुंब निरास होगया था। संपूर्ण समूह हिरैक्लिडी का अपनी सेना सहित पेलोपोनिसस् अर्थात् यूनान के दक्षिण भाग पर चढ़ा, और एकेइआ, औ आर्की-

डिआ को छोड़ इस देश का प्रत्येक विभाग जीत लिया। इस देश को कभी कभी डोरियन देशत्याग कहते हैं। इन के आने से पेलोपोनिसस् में राज्य की संपूर्ण उलट पुलट हुई। इन्हों ने पहले राजाओं को उन की बहुतसी प्रजा समेत् निकाल दिया, और देश का विभाग आपस में करलिया, और यहां के पहले लोग जो रहे थे, उन को दास पदवी में रक्खा। यद्यपि उस काल में यह बड़ा भारी उपद्रव हुआ, परन्तु परिणाम में इस से अत्यन्त मंगल दायक फल उत्पन्न हुए। पेलोपोनिसस् के निवासी जब अपनी जनम भूमि से निकाले गये, तब ये उन देशों में गये जिन को इन्हों ने ट्रोजन युद्ध में जाते हुए देखा था, और एशिया मइनर में बस्ती डाली, तिस पीछे अनेक बड़े बड़े नामी नगर बसे।

इसी बीच पेलोपोनिसस् फिर दुख पाने लगा जैसा पहले पाता था; वहां के पहले बासी जो दास पदवी में रहे थे, बहुधा आज्ञा रहित हुए; जयवंत डोरिअन के प्रधान लोगों की सीमा अच्छे प्रकार से नहीं बंधी थी, इसलिये आपस में दृढ झगड़ा हुआ, और यूनान के संपूर्ण दक्षिण भाग में फूट औ आपत्ति फैली। ऐसी दशा में, यूनान के पश्चिम तट पर इलिस नाम एक क्षुद्र प्रदेस, जिस के इफटीस नाम राजा ने पेलोपोनिसस् में संधी कराने की इच्छा कर एक मनुष्य को डेल्फी नाम देव मंदिर में भेजा, यह पूछने के लिये कि देवताओं का क्रोध कैसें मिटै; इस मंदिर में देववाणी हुआकरती थी, यूनानी इस मंदिर की अत्यन्त श्रद्धा औ विश्वास करते थे। वहां की पूजारिणियें। ने उत्तर दिया कि जो सब यूनानी लोग मिलके भीतरी झगड़े छोड़ कर उलिम्पिअक नाम खेल फिर ठहरावें। इफिटिस ने तुरंत सब लड़ाई छोड़ दीं।

इफिटिस ने सबों का मेल मिलाप कराने के लिये यूनान के राजाओं कुलीनों को उलिंपिया नाम स्थान में इकट्ठे किये, और ऐसी रीत के उत्सव स्थापन किये, कि जिस में सब मनुष्य आनंद जनक कर्म करैं। इस नियम से शीघ्रही बड़े चमत्कारी फल उत्पन्न हुए, आपस में मिलाप हुआ, सभ्यता औ विद्या की वृद्धि होने लगी। ओलिंपिया कोई कोई बात में यूनान की राजधानी हुआ, और यह बात ठहरी कि चार बरस में यहां एकही मेला हुआ करैगा, और देश का भला जिस में होय ऐसी बातों का विचार इस में हुआ करैगा, जिन जिन प्रदेशों में विरोध रहता था उन में इस रीत करकै मन से मित्रताई हुई।

यूनान की कथा में इस से अगला प्रधान वृत्तांत यह है, कि क्रम क्रम से राजसंबंधी नियम नष्ट हुए, और प्रजा संबंधी आज्ञा प्रबल हुई। प्रत्येक देशों में जो यह अदल बदल हुई, इस की ठीक मिती संवत् कहने की हम में सामर्थ नहीं, क्योंकि उस काल का लेख अशुद्धसा है; परंतु सामान्य अनुमान यह है कि ई. आ. १५०० औ ९०० बरस के बीच यह वृत्तांत हुआ प्रजा प्रभुत्व अर्थात् देश की स्वाधीनता का अनुराग यूनानियों में उपजा, जिस कारण से आगे को देश की कीर्ति औ माम्बा अतिशय रूप से हुई।

इस समैं यूनान में अनेक छोटे छोटे राज्य होगये; प्राय प्रत्येक नगर अपने चारों ओर की निकट वर्त्ती भूमी में स्वाधीन हुआ। परंतु ऐसी रीति बहुत काल तक न रही; यद्यपि कुछेक काल पीछे एक एक प्रदेश में एक एक नगर मुख्य हुआ, जैसा बोओशिआ देश में थीबस नगर, ऐटिका में एथेंस, लेकोनिआ में स्पार्टा; तौ भी स्वाधीनता जड़ समेत

कभी न नष्ट हुई। जो हम यूनान की कथा का और अगाड़ी वर्णन करैं तो इष्ट आता है, इस प्रजा प्रभुत्व काल में यूनान के बीच दो महा प्रतिष्ठित नगर अर्थात् स्पार्टा औ एथेंस थे। ये दो नगर संपूर्ण राज कार्य के मूल थे अर्थात् इनहीं नगरों से राज की बुरी भली आज्ञा निकल कर संपूर्ण देशों में व्याप्त होती थी, इसलिये इन का कुछ विशेष वर्णन करना उचित है।

स्पार्टा के राज कर्म्म अतिशय करके बिगड़ गये थे; प्रजा-गण व्याकुल और अवज्ञाकारी हुए थे, और प्रधान लोगों की आज्ञाशक्ति नष्ट हुई थी। इस अति कठिनता के बीच सबों की दृष्टि में राज वंशी लइकर्गस आया, जो इस काल में अत्यन्त बुद्धिवान् औ बड़ा बिवेकी था, इसलिये उस के देशस्थों ने यह दशा सुधरवाने औ अच्छे अच्छे डौल स्थापन करने के लिये उस से प्रार्थना करी। इस ने क्रीट उपद्वीप की यात्रा करकै, मइनास राजा के देश की राजकर्म्म विषयक मूल व्यवस्था पढ़ी थीं, वह झट पट अपने देशवालों की इच्छा का अनुयायी हुआ, औ संपूर्ण रूप से व्यवस्था फिर सुधारीं।

पूर्व काल में इस की स्थापित व्यवस्था अति अद्भुत औ चमत्कारी हैं। इस कथा सार में हम सब बातों का विस्तार पूर्वक वर्णन करने को असमर्थ हैं, हम केवल इतना लिखैंगे कि उन व्यवस्थाओं के आश्रय करकै सब की दशा समान हुई, कुव्यसन नष्ट हुआ, औ सब लोग आपस का भला करने में प्रवृत्त हुऐ; इस मनुष्य ने स्पार्टा देश के लोगों के गुण चाल स्वभाव ऐसे परिवर्त्तन करदिये कि जैसा कोई व्यवस्था कारक अपनी संपूर्ण आयु के मध्य में न करै। इस की व्यवस्था के प्रभाव से स्पार्टा के लोगों में अति कठिन औ सौजन्य गुण दे दीप्यमान हुऐ, औ दृढ़ प्रतिज्ञा फैली, जिन के कारण चारों

ओर के लोग उन का सनमान और उन से भय करने लगे। ऐसेंही राजकाज में और नवीन पराक्रम हुआ, जिस के कारण और और देशों का जय करना अति शीघ्र दृष्ट आया। प्रथम इन का बैर मेस्सीनिआ देश से हुआ। यह देश विस्तार में स्पार्टा के समान परंतु उर्वरापने में बडा था, और यह देश स्पार्टा के साम्हने तट पर अति निकट था, इसलिये इस से प्रथम झगड़ा हुआ। स्पार्टा वासियों ने दो महा भयानक युद्धों में इस देश को संपूर्ण रूप से जय करकै अपने अधिकार में मिलालिया, और यद्यपि मेस्सिनिया के बासी कुलीनता में स्पार्टास्थ लोगों के समान थे, तौ भी इन्हों ने उन को दास बनाकै रक्खा। परंतु मेस्सिनिया के लोग अत्यन्त रूप से कधी नही हारे थे; और यद्यपि स्पार्टा बासी इस जय के कारण कोई कोई बातों में पराक्रमी हो, यूनान भर में अपनी आज्ञा स्थापन करने के लिये, बड़ी अभिलाषा करने लगे, तथापि मेस्सिनिया के लोग सदैव उन को चिन्तारूपी शूल बने रहे, और इन्हों ने अपने देश में एक दल राज द्रोहियों का बनाया, और अपने कुटुंब को ऐसे दृष्ट आते रहे जैसे उदर में शत्रू हो। मेस्सिनिया का प्रथम युद्ध ७२२ वें औ दूसरा ६६८ वें बरस में ई. आ. हुआ था।

इस काल की एथेंस की कथा कुछ बहुत स्मरण करने योग्य नहीं है। १३०० बरस ई. आ. से लेकर १०६८ तक अर्थात् २३२ बरस इस देश में राजा राज्य करते रहे। तिस पीछे ३१६ बरस काद्रस नाम राजा के कुल से उत्पन्न जो प्रधान विचारकर्त्ता तिन्हों ने राज्य किया, इन की संज्ञा आरकन थी। परन्तु जैसें जैसें विद्या बढ़ी, प्रजागण ने प्रधान लोग जो छांटे थे तिन का यावत् जीवन रखने का निशेध किया, और

अवध बांधी कि वह दस बरस तक राज्य किया करैं; तिस पीछे सत्तर बरस प्रजा प्रभुत्व की वृद्धि हुई, औ आर्कन लोग बरस बेंदिन छटने लगे। थोड़े दिनो पीछे और राजकार्य्य में परिवर्त्तन हुआ, प्रधान लोगों की संख्या नौ तक बढ़ी; इसी से कुलीनों का प्रभुत्व बढ़ा, और जिन्हों ने राजकाज औ धरम करम में एकाधिपत्य होकर प्रजागण को दुख दिया।

इन उत्पातों को मिटाने के लिये, ६२२ बरस आ. ई. ड्रेको नाम जन को छांटा, औ उसे नवीन व्यवस्थाओं के बनाने की सामर्थ दी; परन्तु उस ने अपने राजनीत विषयक ग्रंथ में बड़े बड़े कठिन दण्ड रक्खे, इसलिये वह बहुत न चला। कुलीनों में दो धड़े ऊए, आपस में ऐसा वैर बंधा, एक दूसरे को सताने लगा, यहां तक कि बलि भूमि भी अपवित्र ऊई। जब देश में भारी भारी उपद्रव ऊए, और भूस्वामी, और प्रजा लोग, और उत्तमर्ण औ अधिमर्ण लड़ते थे, तब ५९४ पांसे चौराणवेंक बरस आ. ई. स्वदेश की हित सूचक व्यवस्था स्थापन करने के अर्थ सोलन को बुलाया। यह मनुष्य इस काल में पण्डित गण, औ राजनीतज्ञ लोगों में वृहस्पति के समान था। उस ने अच्छे हितकारी कर्म्मों का प्रारंभ किया, प्रथमं उसने मुद्रा का मौल्य औ व्याज घटाया, जिस से परिणाम में अधमर्ण लोगों को बड़ी सहायता ऊई। तदनन्तर उसने कुलीनों की कुछेक सामर्थ घटाने की इच्छा की, इसलिये नगर निवासियों में उन के विभव के अनुसार चार संप्रदाय कीं, इस रीत से संपत्ति मूलक नवीन कुलीनता की उत्पत्ति ऊई। उस ने कुलीन जनों के लिये अनेक अच्छी अच्छी लाभ रक्खीं, पर प्रजागण में से चारसौ मनुष्यों की एक सभा स्थापन की, जिस के लोग बरसबेंदिन बदलते रहते। इस

सभा के कारण कुलीन लोगों की सामर्थ बकी रही, औ प्रजा के लोगों का राजकर्म में अधिकार रहा, इसलिये वे इस नवीन नियम से बड़ा दृढ़ पक्षपात करते रहे, अन्त में सोलन ने कुलीनो औ प्रजावर्ग को यह शपथ दिलाई, कि हम इन तुम्हारी रीतों में दश वर्ष पर्यन्त किंचित परिवर्त्तन नहीं करेंगे।

परन्तु सोलन की इन अत्युत्तम व्यवस्थाओं से विरोध भंजन न हुआ; पक्षपातियों के मन का क्रोध न गया, फिर कुलीनो में उपद्रव मचा, और इसलिये प्रजा की सहायता से पिसिस ट्रेटस नाम पुरुष सबों पर पराक्रमी हुआ, इस ने सब उपाधि यों को दबाकर ऐसा निष्कंठक राज्य किया कि जिस के कारण वह अनाचारी कहाया, तथापि वह उस काल में दूरदर्शी औ बुद्धिवानों में अग्रगण्य था। उस ने सोलन की व्यवस्था बल करके चलाई, और सबों के चित्त में उत्तम ज्योतिष आदि नाना प्रकार की विद्याओं के पढ़ने में अनुराग उपजाया, जब यह अनुराग सबों के मन में दृढ़ हुआ, तिस पीछे इस के कारण एथेंस को अमर यश प्राप्त हुआ। केवल उस की इतनी निन्दा थी कि उस ने प्रजा के पराक्रम से अधिकार पाया था। उस के मरने के अनन्तर हिपिअस औ हिपार्कस नाम उस के दो पुत्र राजगद्दी पर बैठ उसी की चाल से राज्य करने लगे, परन्तु कोई ने भीतरी पलटा लेनेके अर्थ हिपार्कस को मार डाला, औ हिपिअस एसिया को भाग गया। फिर कुलीनों में कलह हुआ। और इतर लोगों को इन के मध्य में रहना आवश्यक हुआ।

हिपिअस के देश निकाले से चार बरस पीछे, क्लिस्थेनीज़ ने अपने पक्षवालों को दृढ़ रखने के लिये सोलन की व्यवस्था में कुछ रूपांतर किया, औ अपनी औ प्रजावर्ग की सामर्थ

मिलाके उन की अन्त की जय करने के लिये अनुकूल हुआ, कुलीनों के एक दलवालों ने स्पार्टास्थ लोगों की सहायता मांगी, जो उस काल अंशधारी थे; और इस कारण दूसरों ने फारस के राजा से सहायता करने के लिये प्रार्थना की, परन्तु इन के दूतों का वहां के राजा ने बड़ा अपमान किया, औ वे बड़े भारी क्रोध से जलते बलते घर को फिरे। स्पार्टा बासियों ने कोई अपना अवलंबन ढूंढ़ने के लिये और उद्योग किया, परन्तु वह व्यर्थ हुआ, और इस कारण प्रजा प्रभुत्व अतिशय दृढ़रूप से स्थापित हुआ। यूनान में दोनो प्रधान दलों की ऐसी दशा थी। इस महा क्षुद्र मुष्टि परिमित यूनान के प्रजा प्रभुत्व पर फारस के महा राज्य का भार पड़ा, जो उस काल में अत्यन्त बर्द्धमान था। यूनान के और प्रदेशों का वर्णन इस पुस्तक में थोड़ा है, क्योंकि जो विस्तार करके लिखें तो कथासार बहुत बढ़ जायगा।

॥ यूनान की बस्ती ॥

यूनानियों की बस्ती, जिन का पूर्व्व इस संवत में प्रारंभ हुआ था, अब उन का विषय कहना हम को उचि है।

पूर्व्व काल में ऐसे उत्साह पूर्व्वक कोई राजा ने देशांतर में बस्ती नहीं बसाई जैसी यूनानियों ने। उन के वानिज्य संबधी उद्योग के बढ़ने से, अन्य अन्य देशों में लोगों के टिकाव हुए; परन्तु और विशेष कारण यह हुआ, कि जब भीतरी झगड़े हुए, जिस लिये यूनान हल उठी; जो दुर्बल दल था, सो हारकर कोई दूर देश में जावसा; इस प्रकार की अनेक बस्तियों

का विषय कहने को है। यूनानी लोगों को अन्य देशों में बस्ती बसाने का उत्साह ऐसा दृढ़ हुआ था, कि जहां आपस में कुछेक कहासुनी हुई तभी स्वदेश छोड़ और और कहीं नवीन स्थान में जा बसते थे।

इन बस्तियों के मध्य में सबों की अपेक्षा यूनान के सन्मुख तटवर्त्ती, एशिया मइनर में प्रथम बस्ती स्थापित हुई। यूनानियों ने ट्रोजन युद्ध के कारण इस रमणीय देश को देखा था, जब उन के देश में प्रथम ही कुछ उपद्रव अर्थात् राज्य की अदल बदल हुई, तब वहां के लोग बस्ती बनाने के अभिप्राय से यहां चले आए। हिरैक्लिडी की सन्तान ने पेलेपोनीशिअस अर्थात् ईओलिअन नाम लोगों के महा दल को देश से निकाल दिया; और इन पराजित प्रधान लोगों ने अपनी प्रजा सहित जहाज में चढ़कर नवीन स्थान के ढूंढ़ने में बड़ा परिश्रम किया। जिन्हों ने एशिया मइनर के तट पर पहुंच, ट्रोजन राज्य का जो कुछ शेष भाग रहा था, उस का समूल नाश करके, महाद्वीप औ निकटवर्त्ती उपद्वीपों में अधिकार किया। इस के अस्सीक बरस पीछे जब एथेंस नगर में राजद्वार नष्ट हुआ तौ वहां से आइओनिअन लोग निकाले गए, औ इस महाद्वीप में आने को लुभाए, तब अपने ईओलिअन भाईयों के दक्षिण में स्थितहो, बारह नगर बसाए; यद्यपि ये नगर सब स्वाधीन थे, तौ भी एक सामान्य सभा स्थापित हुई जहां सबों के साधारण धरम का विचार होता था। उस काल इन नगरों के बीच मिलिटस पृथ्वी भर में, वाणिज्य के नगरों की गणना में दूसरा था। इस नगर के निवासियों का व्योपार कालसागर के तटतक होता था, औ इसी कारण से इस का तट यहां के लोगों से भरगया;

कोई कोई ने गणना करके कहा है कि सौ बस्तियां बसी थीं। मिलीशिअन लोग अपने वाणिज्य की इध थल के मार्ग करके एशिया के भीतर लेजाते थे। फोशिआ नगर पदवी में मिलीटस से दूसरा था; फोसिआ का वाणिज्य पश्चिम में होता था, और ऐसें ही मिलिटस के उत्तर और पूरव में। इस नगर के नाविक लोगों ने जिब्राल्तर मुहाना देखा, औ इटली औ फरांस में बस्ती स्थापित कीं। इन सब छोटी बस्तीयों में अति प्रसिद्ध मार्सैलीस, जो फरांस की दक्षिण सीमा पर है। दो सहस्र बरस से विशेष हुए फोशिआ के लोगों ने इस नगर की नीम रक्खी थी; अब भी यह पृथ्वी भर के बड़े बसे हुए औ वाणिज्य के नगरों की गणना में हैं। एशिया मइनर के तट पर बसनेहारों की तृतीय श्रेणी डोरिअन लोग, जिन्हों ने उस देश का अधिकार किया, जो अइओनिआ के दक्षिण है, और कोस औ रोडस उपद्वीप में भी अधिकार किया। इस रीत से साहसी, और महा उद्योगी यूनानियों ने एशिया मइनर के संपूर्ण तीर को बसाया, जो लोग यूनान में झगड़ों रगड़ों के कारण उसे छोड़ चले आए, औ मनुष्य जाति के सभ्य होने की विद्याओं को सुधारा, वाणिज्य अतिशय बढ़ाया, औ युद्ध करने के अपूर्व जहाज निर्माण किये। इसी रमणीय भूमि में प्रथम ज्योतिष आदि उत्तम विद्या, कविता, नीतिशास्त्र का उदय हुआ। होमर जो सब कवियों में शिरोमणि सो इसी देश का बासी था; आलसीअस, औ सेफो इन दोनों कवियों ने इस विद्या का बड़ा चमत्कार फैलाया। इन हीं बस्तियों से उत्तम ज्योतिष आदि विद्याओं के पढ़ने का अनुराग फिर उन के बाप दादे के देश में हुआ; और ऐसें वे

लोग जो यूनान से निकाले गये थे, प्रथम उन्हींही ने खदेश में विद्या की वृद्धि की।

प्रोपांटस औ कालसागर के तट मिलीटस की बस्ती से बसे थे; औ यह मिलीटस नगर बड़ी दूर दूर तक महा वाणिज्य का स्थान हुआ; सब दक्षिण रूशिया इसी में गिना जाता था, औ पूरब में बड़े बुखारे तक था। संभव है कि ये बस्तियां ईसामसीह के जन्म से आगे छठे औ आठवें सैंकड़े के मध्य में बसी थीं।

कारिंथ औ आर्गस की बस्तियों से थ्रेस औ मैसीडन में लोग बसे, ईसवीशक के पूर्व ७५० और ६५० बरस के अन्तर में यूनान से और बस्तियां बसीं; औ इटली के दक्षिण में पड़ाव डाला, और थोड़ेही काल में यह प्रदेश ऐसा बढ़ा, कि जिस के कारण इस का नाम महा यूनान हुआ। इन बस्तियों के बीच अति सूक्ष्म काल में टारेंटम् क्रोटन्, सइबेरिस बड़े चमत्कारी, औ प्रशंसनीय हुए; यह बात निश्चित है, कि सइबेरीस नगर जब क्रोटन से लड़ा तब तीन लाख सेना चढ़ाके ले गया; परंतु विशेष करके यह नगर इस से कारण प्रसिद्ध है, कि पूर्व काल के पंडितों में सब से श्रेष्ठ पिथेगोरस पंडित इसी नगर का निवासी था। इसी समैं के लगभग कारिंथ से और बस्तियां सिसली द्वीप में बसीं; और इस द्वीप के तटपर अति प्रशंसनीय औ चमत्कारी सिरेक्यूज़ नगर बसा। इस रीत से यूनानियों के चित्त में बस्तियां बसाने का अनुराग और भी विशेष हुआ, यहां तक कि दूर दूर देश स्पेन, सिरीन जो आफिरिका में है वहां भी बसे; इस प्रकार करकै ट्रोजन युद्ध के थोड़े ही काल पीछे,

यूनानीयों में स्वाधीन होने का उत्साह उपजा; राज्य शासन बहुत श्रेष्ट हुआ, औ अति कठिन, महा साहसिक कर्म करने को चित्त उमगने लगा। जब आस पास चारों ओर उन की बस्तियां हो गईं, तब अपने नवीन महा राज्य बनाने की नीम डाली। यूनानी लोग ऐसे समैं में जब उन का अपने देश में भी बड़ा ऐश्वर्य था, औ बाहर भी बड़ा नाम औ प्रताप था, तब पश्चिम के एशियावालों से मिलाप किया। अब हम पृथ्वी के और और देशों का वृत्तांत औ इतिहास इस काल तक का कहेंगे।

॥ मिस्र देस ॥

ट्रोजन युद्ध के समैं, श्रीयुत सिसाष्ट्रिस के बंश का एक राजा, तिस के आधीन सब मिसर देश था। एक राजा की पीढ़ीयों के आधीन रहा; जिन का राज्य ईसाई शक के पूर्व १५०० बरस से ले ९०० बरस तक चला गया; मिसर देश में पिरैमिद औ बहुत स्तंभ मंदिर आदि बने, जो २५०० बरस से कुछ नहीं बिगड़े, औ उन के कारण वह देश अति मनोहर पथिक लोगों को दृष्ट आता है। इन ६०० बरस के मध्य औरों की आपेक्षा इस देश की बड़ी अच्छी दशा थी; देश में राजनियम अति दृढ़ थे, सब ज्ञाति बलवान थीं; राजा धर्म संबंधी रीतों के आधीन था, और पर देशियों को धर्म भेद नही कहते थे; इस बात में बड़ी सावधानी रखते थे; ये धर्म की रीति हइरोग्लिफ़िक नाम अक्षरों में लिखी हैं, इसलिये कि बहुधा नष्ट न होंय, और इन का भेद भाव पढ़ना लिखना केवल पुरोहित लोग जानते हैं; हम इन सब बातों से सिद्धांत करते हैं, कि यह बड़ी अचंभे की

बात है, कि मिसर की चाल रीत, भांति हिंदुस्थान से मिलती हुई हैं, जिस काल में यह देश अपने राजाओं के आधीन था।

ईसाई शक के ६०० बरस पूर्व, एथीओपिया के सबेको नाम जन ने मिसर को जय किया। और इस के इस देश से बिदा होने के पीछे, इसी देश का सींथास नाम ब्राह्मण आप ही आप सिंहासन पर बैठा। इस देश का राज्य जो एकाधिपत्य था सो थोड़े ही काल में खंड विखंड हो गया, और बारह १२ प्रधान जनों ने इस के बारह विभाग करके राज्य किया। पहलेही से लोग अनुमान करते थे कि इन में विवाद होगा सो हुआ; और उन में के सिमैटीकस नाम एक मनुष्य को देश निकाला हुआ। इसवी शक के ६५० बरस आगे, इस राजकुमार ने, जिस को देश निकाला हुआ था, अइओनिआ, कैरिआ, औ यूनान की ठेके की सेना रख, उन की सहायता से उस संपूर्ण देश को जय कर अपने आधीन किया। उस ने उन सबों को मिसर में भूमिका भाग करके देदिया, औ अपनी चौकी के लिये उन्हें रक्खा। ऐसें मिसर में परदेशी लोगों का प्रवेश हुआ, औ इस नवीन रीति का फल राज्याचरण के विषय में शीघ्र दृष्ट आया। ऐसें मिसर के सभी लोग विरक्तसे होकर वहां से बहुतसे एथीओपिआ को चले गये; औ पुरोहित लोगों की प्रतिष्ठा डामा डोल हुई; राजा ने नौका समूह बनाने की इच्छा की, औ एशिया खंड के नवीन नवीन राजाओं से युद्ध करने का प्रारंभ किया। सैमैटिकस के पीछे उस का नीको नाम पुत्र राजगद्दी पर बैठा; यह राजकुमार नौका समूह उपस्थित करकै, अपनी जयकारी सेना को ले अफरात नदी तक जीतता हुआ चला गया; परंतु उसे सरसीसिभ्रम की लड़ाई

में हारते ही घर को फिरना पड़ा। इस ने एक नहर बनाकर भूमध्यस्थ समुद्र औ अरब के उपसागर को मिलाने की चेष्टा करी, पर वह सफल न हुई। औ ऐसा कहते हैं कि इसी के शुभ राज्य में इस नवीन नौका समूह द्वारा आफ्रिका का भ्रमण किया था; सबों की अपेक्षा यह कर्म अत्यन्त साहसिक था, जिस को उस समैं में राजा अथवा प्रजा कोई न कर सका। उस के पोते अपरीस ने एशिया को जय करने के यत्न किये, समुद्र तीरवर्त्ती सिडन नगर को घेर लिया, औ टयर नगर जय किया; जो उस काल में पृथ्वी भर के बीच नौका संबंधी पराक्रम में एक ही था। तिस पीछे यूनानियों की सइ-रीन नाम बस्ती जो आफ्रिका में थी, उस पर चढ़ाई की; पर वहां वह आप ही हार गया; और उस ही की प्रजा ने उस का सिंहासन छीन उसे मारडाला; इसलिये वे सब उस की महा तृष्णा देख दुखी हुए, क्योंकि सौ बरस आगे यूनानियों की ठेके की सेना की सहायता से इस के कुनबे ने जय पाई थी, अब उन ही से युद्ध करने की इच्छा की। अपरीस के मरने से समेटिकस का घराना लुप्त हुआ।

एमैसिस नाम एक जन, जो अति क्षुद्र कुल में उत्पन्न हुआ, परंतु बड़ा बुद्धिवान था; उसी ने यह छिपे छिपे लड़ाई की आग सुलगा कर राज्य का परिवर्त्तन किया था; और अब आप ही राजगद्दी पर जा बैठा। इस ने अति ज्ञानी यूनानी, जो इस देश में बड़े दृढ़ रूप से जम गये थे, तिन के प्रताप से मिसर देश का अत्यन्त सौभाग्य अतिशय रूप से बढ़ाया; परंतु यह चमत्कारी उस देश की केवल उस के मरने ही तक रही। उस ने सइरस से भी युद्ध किया था; फारस के लोग उस की बढ़ती देख अपने मन में जल, मिसर के राजा को दंड देने का

उद्योग किया। परंतु सइरस औ एमैसिस दोनो एक ही काल में मरे; औ सइरस का पुत्र कैंबइसस, फारस की सेना ले एमैसिस के पुत्र संमेनीटस से लड़ने को गया। पेल्यूशिअम पर युद्ध हुआ, तहां फारस वालों की जय हुई; तब उन्हों ने मिसर को जीत कर फारस के महाराज्य में मिलालिया; यह-युद्ध ईसवी शक के ५२५ बरस पूर्ब हुआ था। इस रीति से सबों की अपेक्षा जो जगतभर में प्राचीन राज्य था सो नष्ट हुआ। इस से अगले काल में यह देश फारस के राज्य का एक प्रदेश होगया।

॥ फिनिशिआ ॥

यह छोटासा देश भूमध्यस्थ समुद्र के तट पर है, औ इस काल की कथा में अपने अतिशय वाणिज्य के कारण अद्भुत पराक्रमी हुआ। यह एक ही प्रदेश नहीं था, परन्तु कई नगर अपनी अपनी आधीन भूमी सहित मिलेहुए थे। औ इन सबों में मेल मिलाप था। टयर नगर के राजाओं की केवल हमारे पास गणना है, औ कुछ उन का विस्तृत वर्णन नहीं जानते। इस नगर का हिरम नाम राजा जो ईसाई शक के पूर्व ग्यारवें शतक में था; उस ने जूड़िया के दाऊद नाम भूपति की सहायता की; इस के कारण वह प्रसिद्ध हुआ। ईसा-मसीह के जन्म से ५८६ बरस पूर्व नेब्यूकड्नेज़र ने इस नगर को लूटा, जिस कारण से दूसरा नवीन टयर बसा।

पूर्व काल में यूनानी लोगों का नाम नैाका संबंधी कर्म में बड़ा था, औ केवल उन ही के अच्छे नाविक भूमध्यस्थ समुद्र

में जाते आवते थे; सो फिनिशियावालों के हस्ताधीन हुआ, औा लैवान्ट समुद्र के तट पर बैापार किया । हिंदुऔां के समान मिसर बासी भी समुद्र में आवा गमन कुछ नहीं करते, और फिनिशियावाले सदा समुद्र में आने जाने का उद्योग करते रहे। इन लोगें ने बड़े बड़े दूर देशों तक अपना बैापार फैलाया, जिस के कारण उन का सर्वच भारी जस हुआ। यद्यपि कोई कोई बात से ऐसा चित्त में आता है, कि वे अपने जहाज हिंदुस्थान तक लाये, तथाप्रि यह विशेष करकै संभव है कि अरब के निवासी पूरब के देशों से अनेक पदार्थ अपने बंदर स्थानो में ले गये, वहां फिनिशियावालों ने अनेक बैापार के पदार्थ उन से क्रय किये, और आप जो जो भूमध्यस्थ समुद्र तीरवर्त्ती नाना देशों की वाणिज्य द्रव्य ले जाते थे सो उन के हाथ बेचते। उन का देशवर्त्ती वाणिज्य, पालमहूरा के मार्ग हो कर पश्चिम एशिया के अनेक देशों में फैला। एक दृढ प्रमाण है कि ये लोग अपने जहाजों सहित जिब्रालतर मुहाने को गये, औा वहां उन्हों ने केवल स्पेन ही को नहीं देखा, परन्तु ग्रेटब्रिटन द्वीप में भी पहुंचे; औा वहां से रांग क्रय करकें लाते थे; और वे घर में भी हाथ के काम अनेक बनाते थे, जिन के कारण उन का बड़ा नाम था; औा विशेष करकै टयर का लाल रंग अति प्रसिद्ध था। उन्हों ने स्पेन, सिसली, औा आफिरिका में अपनी बस्तियां बसाईं; परन्तु कारथेज को छोड़कर और कोई बस्ती का बड़ा नाम न हुआ, इस का वर्णन अगले संवत् में करेंगे, जब यह रूम से लड़ती रही। फिनिशिआ के लोग केवल बैापार में बहुत चित्त देते थे, परन्तु यूनानी लोग ऐसे नहीं थे; इन्हों में नवीन नवीन बातदेखीं या बनाईं उन्हैं किसी को न बताया, औा

अपने वानिज्य का भेद और कोई देश के लोगें का न दिखा या। इसी कारण से फिनिशियावालों की हमारे पास एक भी पुस्तक नही है, और जो कुछ हम ने उन के व्योपार का वर्णन लिखा, सो और और देशें की कथाओं में देखकर जाना।

॥ पेलेस टइन ॥

ईसवी सन के चौदह सै। पंचासेक बरस १४५० वर्ष आगे, यहूदी लोग केनान की भूमि में बसने लगे, औ तीन सै पंचास बरस तक ईश्वर ही की, औ वे मनुष्य जिन का उस ने स्थापित किया उन की, आज्ञा के अनुसार चलेगए।

जब ये कुछेक देब पूजक हुए, तब आस पास के लोगें ने यद्यपि बहुधा उन पर चढाइयां कीं, तौ भी ये सदा उन के हाथ से बचकर स्वाधीन रहे। अन्त में इसराईल के वंश ने ईश्वर की आज्ञा छोड़ राजा होने की इच्छा की, इसलिये कि वे भी और जातें के तुल्य होंय। ईसाई शक के पूर्व्व ग्यारवें शतक में अगगम ज्ञानी सैम्यूअल ने साल को राज्याभिषेक किया; यद्यपि यह साल मनुष्य छोटी जात का था, परन्तु कुलीनसा दृष्ट आता था। यह नित्य अपने निकट के देशवालें से महा कठिन युद्ध करता रहा, औ अन्त में संग्रामही के बीच अपने संपूर्ण पुत्रों सहित देव लोक का गया, केवल एक पुत्र बचा। बहुधा यहूदी लोग साल नरपति के राज्य तक किसान थे; और उन के यहां द्रव्य बहुत थोडा था,

परन्तु क्रम क्रम से बड़े तेजस्वी हुए। भूपति राजमन्दिर रहित था, श्रौ देश राजधानी नगर करके शून्य। साल के पीछे दाऊद सिंहासन पर बैठा; इस को ईश्वर ने अपनी प्रजा पालने के लिये छांट लिया; तौ भी यहूदियों की बारह जातों में से केवल एक ने तो दाऊद को माना, श्रौर ग्यारह साल राजा के घराने से मिली रहीं। साल के पुत्र की मृत्यु के अनन्तर, दाऊद के सिंहासन पर बैठ ने के सात बरस पीछे सब इसराईल का वंश उस के कहने में हुआ। तिस पीछे उस ने जैबूसैइट के हाथ से योर्शलीम को छीन कर अपने महा राज्य की राजधानी बनाया; श्रौर अपने संपूर्ण शत्रुश्रों को लगातार जीतता रहा, जिस के कारण उस के देश का ऐसा प्रताप श्रौ तेज बढ़ा, जैसा कभी हुआ न होगा; दाऊद के राज्य की सीमा फिनिशिया से ले रेडसी अर्थात् सूफ समुद्र तक, श्रौ भूमध्यस्थ समुद्र से ले उफरात नदी तक थी। उस ने इडोमइट्स को जय किया, श्रौर ईजीओंजीबर, श्रौर ईलोथ नाम बड़े आवश्यक व्यौपार स्थान को अपने अधिकार में लाया; जो पूरब के वाणिज्य को बड़े उपकारी थे; परन्तु उस ने बड़े बड़े कठिन युद्ध किए जिन के कारण इन व्यौपार स्थानों की कुछ फल सिद्धि उसे न हुई। उस के स्वर्ग लोक जाने के अनन्तर उस का सालोमन नाम पुत्र राजा हुआ; यह राज कुमार अत्यन्त सुशील, श्रौ सबों की अपेक्षा बड़ा चतुर श्रौ बुद्धिवान था। उस ने सच्चे ईश्वर की पूजा के लिये एक श्रौर ऐसा चटकीला मन्दिर बनवाया, जिस के समान कोई श्रौर पृथ्वी में न था; श्रौ योर्शलीम में अच्छे अच्छे मनोहर स्थान बनवा बनवा कर ऐसा सुधारा कि जिस की टक्कर संभाल ने को कोई नगर न रहा। उस ने टयर के लोगों से मिलकर व्यौपार

करने का उद्योग किया; अनुमान करते हैं कि ये लोग उस के जहाज लेकर दूर पूरब तक जाते थे। उस ने थल के ब्यापार निमित्त, मरुभूमि में पालमयरा नाम नगर बसाया, जिसे ऐसा मनोहर औ सुशोभित किया, कि अबतक भी पथिक लोग उस के टूटे फूटे गिरे पड़े स्थान देख अचंभा करते हैं। इस के अनन्तर उस ने अपने पिछले बरसें में निज उपपत्नियें की बहकाया सिखाई से ईश्वर की सेवा करने का त्यागकिया, और परमेश्वर की पूजा करने में और और देशें की रीति मिलाई।

और वह ऐसा राणियें के बस हुआ, कि सब राज्य लगा दुख पाने, औ प्रजा भारी दण्ड के मारे मरने। उस के मरने के पीछे रीहोबोअम नाम उस का पुत्र राजा हुआ; परन्तु यहां से यहूदियें का प्रताप रूपी सूर्य अस्त हुआ। दस जातों ने चुङ्गी न देने की छुट्टी मांगी, औ उस ने बड़े अभिमान पूर्व्वक उत्तर दिया कि नहीं तुम्हें देनी होगी; तब तौ उन्हें ने आज्ञा माननी त्याग करी, औ जीरोबोअम की आज्ञा में हो कर एक अलग राज्य बनाया। इन दशें जाति के राज्य का इस्रराईल का राज्य बोलते थे; और दे जातों का देश जूडिया का राज्य कहलावता था; ईसवी शक के ९७५ बरस पूर्व ये अलग अलग हुए इस्रराईल का वंश २५२ बरस तक राज्य करता रहा; जिस काल में कई कुल के १९ उन्नीस राजा हुए, जिन्हें ने बड़ी दुष्टता पूर्वक पाप रूपसे राज्य किया, औ बहुत थोड़े हैं जिन्हें ने कुछेक धर्म सहित प्रजा की रक्षा की, इस निर्मित समैं के अन्त में असीरिया के सैलमैनीज़र राजा ने उस देश के जीत वहां के सब बासियें के बंदुआ करकै कुछेक दूर के द्वीप में ले गया; अनेक कथावालें ने उन का ठीक स्थान जान ने के लिये यत्नकिया, पर वह

अबतक सफल न भया; सब से अच्छा अनुमान यह है कि वे अफगानिस्थान में स्थित हुए।

जूडाह का राज उस के शत्रुओं के राज्य से १३५ बरस विशेष रहा। राजवंशी दाऊद के घराने के बीस राजाओं ने ईसवी शक के पूर्व ९७५ बरस से ले पांच सौ अट्ठासी ५८८ तक अर्थात् ३८७ बरस राज्य किया। वे अपने चारों ओर के लोगों से युद्ध करने में प्रवृत्त हुए; यद्यपि कभी कभी हार गये, तौ भी फिर फिर अनुकूलता प्राप्त करी अन्त में एशिया के बीच दो महाराज्य हुए, औ बैबिलन के नेब्यूकैडनेज़र नाम राजा ने जूडीया का छोटासा राज्य छीनकर अपने राज्य का एक प्रदेश बना लिया। अब हम उन राज्य की उत्पत्ति औ उपद्रव का विशय कहते हैं जो पढ़नेवालों का चित्त आकर्षण करता है, उन का विषय ठीक कहने में हमें धर्म पुस्तक की कुछ सहायता नहीं है, और जो कुछ उन का वर्णन कोई इतिहास में हुआ है सो अनिश्चित है, औ उस पर भी बहुतसा झगड़ा है।

॥ असिरिआ. मीडिआ. बैबीलन. फारस. ॥

इतिहास वेत्ता निश्चय करते हैं कि असिरिया का महाराज्य अति प्राचीन है। साधारण बात यह है कि निमरूद या नइनस ने इस राज्य को स्थापन किया, और ऐसा अनुमान करते हैं कि ईसवी शक के पूर्व दो सहस्र २००० बरस से ले ७४३ तक यह राज्य बना रहा, अर्थात् सार्डेनेपेलस के समैं में इस राज्य का विनाश हुआ। और लोग इस विषय

पर झगड़ा करते हैं; औ जो कुछ हम इस विषय पर लिखेंगे, सो केवल अनुमान पूर्वक है, इसलिये हम यहां कुछ और अधिक नहीं लिखते हैं। परंतु इन सब बातों का दृढ़ सिद्धांत यह है, कि सार्डैनेपोलस के समैं में असीरिया का महा राज्य नष्ट हुआ। यह भूपति महा रसिक औ बड़ा सुख भोग किया करता; रात दिन रणवास में पड़ा रहता, और राजकर्म में कभी किंचित चित्त लगाता। कथाओं में लिखा है कि पूर्वकाल के राजा बड़े रसिक औ सुखभोगी थे, खाना, पीना, औ आनन्द में रहना, यही जानते थे, औ ऐसा ही सार्डैनेपोलस था। जो ऐसा राजाधिराज होवै तौ उस का राज्य शीघ्र ही उसी के बलवान औ बुद्धिवान देशाध्यक्ष अपने अधिकार में करलेते हैं। मीडिया देश का आरबेसीस नाम अधिपति अपने स्वामी की नपुंनकता देख बड़ा तृष्णालु हुआ, और कई असंतोषी प्रधान जनों से मेलकर, विशेष करकै बैबीलोनिआ निवासी बिलोसस् से, अपने महा राजा को सिंहासन से गिराने का उद्योग किया। सार्डैनेपोलस ने अपनी नपुंसकता झूठी करने के लिये ऐसा महा परा क्रम किया कि जब जब आरबेसीस ने चढ़ाई करी तभी रोक रोक दिया; परन्तु बिलोसस ने बैबीलोनिआ की सहायता सा रात्रि में छलकर उसे हरा दिया, और आप शीघ्र इस सुरक्षित नगर निनवह का आश्रय लिया। तब आरबेसीसने इस नगर को दो बरस घेरेरक्खा। यह भविष्य बात लोग बाग परंपरा से कहते आवते थे, कि निनवह नगर के लैने की सामर्थ किसी में नही जबलग टाईग्रस नदी इस का शत्रू न होगी। इस भविष्यत बाणी के भरोसे से सार्डैनेपोलस इस नगर के द्वार बंद करकै रहा; परंतु घेरे के दूसरे बरस में यह नदी ऐसी चढ़ी कि नगर की अति अभेद्य

भीतों को गिरा दिया, औ नगर का भी कुछेक भाग बहा ले गई, इस भविष्यत वाक्य से शत्रु को आने का खुला मार्ग मिला किसी की रोक टोक न रही। सार्डेनेपोलस ने अपने मन में बिचारा कि मेरे राज्य का अंत आ चुका, तब अपने राजमन्दिर को मूंद, तहां एक बड़ी सी चिता बना उस में आप, अपनी स्त्री, कोश औ क्लीव जनो समेत बैठ अग्नि लगा जल मरा। इस रीत से असीरिया का महा राज्य लुप्त ऊआ।

जयवंत आर्बेसस ने मीड़िया औ आस पास के प्रदेश आप रक्खे, औ बिलोसस को बैबीलन का प्रदेश दिया। अब कथा-सार में इस स्थल के बीच कुछ दुबधासी है। धर्म पुस्तक से तो ऐसा जाना जाता है कि इसी काल में असीरिया के फल नाम राजा ने पैलेष्टइन पर चढ़ाई करी। इसलिये कोई कोई ग्रंथ कार तो यह कहते हैं कि सार्डेनेपोलस के महा राज्य में से बैबीलोनिआ, असीरिआ, औ मीडिया नाम तीन राज्य हुए; दूसरे ऐसा बोलते हैं, कि टइग्रस औ उफरात नदी के निकट जो देश उस का साधारण नाम असीरिआ था, और बिलोससही का दूसरा नाम फल था। इस विषय का अच्छा निसकर्ष करने के लिये हम बऊत प्रमाण नहीं जानते, और इस का बहुत ठीकठाक करना भी कुछ बड़ा आवश्यक नहीं है; क्योंकि जो असीरिआ का कोई और राज्य उत्पन्न हुआ, तो वह अस्सी बरस से अधिक न रहा। इसी काल के बीच बैबीलोनिआ का नवीन राज्य औरों की अपेक्षा प्रबल औ प्रति-ष्ठित होने लगा। नेब्यूकैडनेज़र बहुत दूरतक जय करता हुआ चला गया, औ उसी काल में पश्चिम एशिआ के बीच बैबीलन नगर को प्रधान बनाया, धर्म पुस्तक में वर्णन किया है कि इस राजा का शीस सुवर्ण का था। इस ने जूडाह देश के राज्य को

अपने आधीन कर, ईसवी शक के पूर्व ५८६ वें बरस में टयर नगर को जय किया; वहां उस काल में बड़ा भारी बैापार होता था। तिस पीछै वह मिसर को जीत, अपना प्रताप देख बड़ा अभिमानी हुआ, औ डूरा देश के मंडल में एक हाथ चैाड़ी साठ हाथ उंची सुवर्ण की प्रतिमा बनवा अपनी प्रजा को आज्ञा दी, कि तुम सब साष्टाङ्ग पड़कै इस देव की पूजा कियाकरो। उस के मरन के अनन्तर, उस के उत्तराधिकारी इस महा राज्य को पा, औ भरपूर कोश देख पूरब के राजाओं की समान, बड़े रसिक औ सुखर्ची ऊए; और रात दिन आनन्द करने में रहने लगे, तब पड़ोस ही के अति उद्योगी औ परिश्रमी लोगों ने उन को पराजित कर अपने बस किया।

जिस काल में राजसंबंधी नेब्यूकेडनेज़र का घर घटने की अवस्थामें था, तब पर्व्वत मय फारस देश में जहां बड़े बीर उत्पन्न होते हैं, एक सइरस नाम राजकुमार वर्द्धित होता था; उस ने पश्चिम एशिया के घटते हुए राज्यों को उजाड कर अपना ऐसा बड़ा राज्य बनाया कि जैसा आज तक पृथ्वी भर में न हुआ था। यह राजकुमार अपने पर्वती लोगों में अति साहसी औ पराक्रमी था; औ परमेश्वर ने उसे ऐसे ऐसे गुण दिये थे कि जिन के कारण वह महा प्रतापी औ यशस्वी हुआ, औ मीडिया देश उस को पैहकाधिकार करके प्राप्त हुआ। पश्चिम एशिया के सब नपुंसक राजा इस राजकुंवर के आधीन होने को तुरत उपस्थित हुऐ सइरस मीडिया को प्राप्त करने के पीछै अपनी सेना को असिरिया पर चढ़ा ले गया; परंतु पूर्व उस को लिडिआ के क्रोसस नाम राजा को जय करना इष्ट पड़ा। लिडिआ का राज्य द्वाय देश के पूर्व में है; इस देश की पूर्व कथा मिथ्या है। सइरस के प्रताप के

उदय होने से थोड़े से बरस पहले, क्रोसस ने इस देश को पैटकाधिकार द्वारा प्राप्त किया। और इस ने अपना अति बड़ा राज्य स्थापित करने के लिये पहले तो एशिया मइनर में जो यूनानियों की बस्तियां थीं तिन को जीता, तिस पीछे हैलिस नदी के पश्चिम ओर जो देश थे तिन को अपने अधिकार में लाया। उस की प्रजा बड़ी उद्योगी औ परिश्रमी थी; उस काल में सबों की अपेक्षा, वही अत्यन्त धनाढ्य राजा था; परन्तु उस का इस बात में बड़ा घमण्ड था, कि मुझे धन की अपेक्षा विद्या में अति प्रेम है। उस की राजसभा में यूनानी बड़े भारी भारी चमत्कारी औ कुशाग्रबुद्धी पण्डित थे; वे उस को अपना अति उदार प्रतिपालक, और प्रसन्न सहवासी जानते थे। वह डेलफी नाम मन्दिर के पुजारियों को अत्यन्त दान देता था, इसलिये कि जब में यूनानियों से प्रतिकूल होके उन से लडूं तो वे मेरे ऊपर अनुकूल होकर कृपा रखते रहें। परन्तु उसी काल में सइरस ने एका एकी अपनी सेना लाकर क्रोसस को ऐसा दबाया, कि उसे कुछ उपाय न सूझा औ कांप उठा, औ उस का मार्ग रोकने के लिये अपनी सब सहायता औस्सिरिआ के राजा को दे तब सइरस ने चढ़ इस नवीन शत्रु की ओर सेना भेजने का यत्न किया, और अति शीघ्रता से सबों को दबाता हुआ लिडिआ पर आन पहुंचा। सइरस ने एकही युद्ध में इस बर्द्धित होतेहुए लिडिया के राज्य को संपूर्ण रूप से जय किया, और सब एशिया मइनर को फ़ारस के महा राज्य में मिलालिया। तिस पीछे सइरस एकचित्त होकर बड़ी सावधानी से श्रीयुत बैबीलन पै चढ़ा; और अतिकष्ट औ महा परिश्रम से उसे लिया; ऐसें बैबीलन का महा राज्य लुप्तहुआ। जब सइ-रस ने अपनी बीरता, परिश्रम औ बुद्धिवानी से ऐसा महा

विस्तृत राज्य प्राप्त किया, जैसा कभी पृथ्वी भर में न ज्ञआ था, तब उस के ऐक्य करने औ सुधारने में उद्योग किया।

यह राजाधिराज जैसा युद्ध के बीच सूरवीर औ पराक्रमी था ऐसा ही विचार करने में बड़ा कुशाग्रबुद्धि औ कुशल था; सब देशों के लोग उस के राज्य में ऐसे सुखी थे, कि कभी उन के चित्त में यह न आया, कि हम इस ज्ञानी औ पराक्रमशाली भूपति को छोड़ अपने नपुंसक राजाओं की सहायता में रहें, और यह नरेश सदा अपनी प्रजा के पालने औ सुधार ने की चिन्ता में लगारहा। अब हम कथा के दूसरे काल में आन पक्कंचे, जिस में कई बड़े बड़े राज्यों का स्पष्ट वर्णन कथा में किया है; बक्कधा फ़ारस के संपूर्ण राज्य में असिरिआ, बैबीलन, मीडिआ, पेलेष्टाईन, औ फिनिशिआ मिलकै एकसे होगये। ईसवी शक के पूर्व ५३० वें वर्ष में सइरस मरगया।

॥ कार्थेज ॥

प्रथम ही प्राचीन काल में कार्थेज के बीच बड़ा प्रजा प्रभुत्व था; और यह ही नगर युद्ध औ वैापार के उद्योग में लगा। हम उदास हैं कि कार्थेज वालों की कथा कहीं नही है, केवल रूम के लोगों की लिखी भई है जो उन के अति कठोर शत्रु थे, पर अब हम को परवस होकर उनही का लिखा मानना पड़ा ईसवी शक के ८०० बरस पूर्व टयर के देश त्यागियों ने इस नगर की नीम डाली। वे कोई झगड़े से अपने बड़ों का देश छोड़ आफिरिका के तटपर आए, और एक बड़ा नगर वसाने के

लिये अति प्रशंसनीय भूभाग देख वहां टिके, इस भूमि में ऐसे गुण थे कि जैसे यहां के निवासी उद्योगी औ परिश्रमी होंय वैसाही फल उपजै। यद्यपि यह बस्ती मन्द गति से बढ़ी, पर अति दृढ ऊई; समुद्रतीर संबंधी व्यौपार चतुराई से होनेलगा, और क्रम क्रम से उस नगर का अधिकार आफिरिका में फैलगया। तिस पीछे कार्थेज निवासियों ने इस तट का बऊत बड़ा भाग जय करके निकटवर्त्ती उपद्वीपों को अपनी आज्ञाधीन किया; और दूर जाकर सार्डिनिआ को अपने बस में किया। यह भी संभव है कि उन्हों ने जिब्रालतर मुहाने के पारजा, कनेरी औ मदेरा उपद्वीपों को जय करके, ब्रिटन के तट तक अपना व्यौपार फैलाया। उन्हों ने स्पेन में भी पड़ाव डाला औ कई नगर बसाए, जिन में से आजतक एक नगर उन के बड़ों के नाम से कार्थेजीना ख्यात है।

कार्थेज के अधिकार का विस्तार करने में विशेष करके मेगो के वंश का बड़ा यश है जिस समैं सइरस औ उस के सद्य उत्तराधिकारी फ़ारस के राज्य की नीम डालते थे, तिसी काल में मेगो ने अपने दो पुत्र औ छह पौत्रों सहित सिसली, सार्डिनिआ, औ आफिरिका में प्रजा प्रभुत्व स्थापन किया। इसी काल के लगभग उन्हों ने रूमवालों से वाणिज्य संबंधी संधि करी, इस से यह निश्चय होता है, कि वेभी सार्डिनिआ, आफिरिका, औ सिसिली के एक भाग के अधिपति थे। विन्हों ने इन जय करेऊए देशों को देखकर मन में विचारा कि जहाज़ औ सेना रखनी आवश्यक है; तब यूरप औ आफिरिका से ठेके की सेना भरती करी। उन के युद्ध विषक जहाजों पर दास लोगों का समूह मल्लाह पने का काम किया करता था; ये दास लोग उस काल में राजा का साधारण धन थे।

इस दूसरे काल के अन्त में, भूमध्यस्थ समुद्र के बीच, कार्थेज का समुद्र संबंधी पराक्रम सब से अधिक था; यहां तक कि टयर भी जो उस के वड़ों का देश, सो भी इस से न्यून था।

॥ रूम ॥

इसी काल में रूम का भी उदय ऊआ, ईसवी शक के पूर्व्व ७५४ वें वर्ष में इस नगर की नीम धरीगई। तहां से ले २४५ वरस तक राजाओं ने राज्य किया, तिस पीछे प्रजा प्रभुत्व स्थापित ऊआ। परन्तु रूम अति शीघ्र पृथ्वी भर में पराक्रम-शाली ऊआ, औ जिन देशों का अभी हम ने वर्णन किया वे सब इस में मिलगये; पर इस नगर की उत्पत्ति, वृद्धि आदि का विशेष वर्णन कथा सार के अगले अध्याय में करैंगे।

॥ सिसिली ॥

यूनानिओं ने भी इसी काल के वीच सिसिली उपद्वीप पर एक बड़ा भारी पड़ाव डाला। ये बस्तियां कोई एक प्रधान राज्य से स्थापित नहीं भई, परन्तु बहुधा यूनान के समुद्र तीर वर्त्ती लोगों ने कीं, औ कोई कोई एशिआ मइनर के लोगों ने, इन सबों ने वहुत से व्यौपारी लोगों को इस उर्व्वरा उपद्वीप के

ऊपर वस्ती बसाने के लिये भेजा; इन में कारिंथवालों ने सिरैक्यूज़ की नीम धरी, कुछ काल पीछे यह नगर सब से पराक्रमी हुआ। सइरस के समैं में सिसली का संपूर्ण तट यूनानियों की बस्तियों से परिपूर्ण हुआ; इन में से अधिक भाग ने पैतृक देश का नाममात्र अधिकार स्वीकार किया।

यूनानियों और कार्थेजवालों ने भी सप्पेन के तट पर सगंटम में वस्तियां स्थापन करीं, इस देश में सुवर्ण की अच्छी अच्छी आकर थीं, जिन्हों से उन्हों ने बड़ा द्रव्य उपार्जन करा।

॥ ५ अध्याय ॥

॥ ईसवी शक के पूर्व्व ५६० से ले ३३० तक ॥

॥ अर्थात् २३० वरस तक का विषय. ॥

॥ सइरस से ले श्रीयुत सिकन्दर तक ॥

फारस का महा राज्य—सइरस—कम्बइसीज़—दारा—यूनान का प्रजा प्रभुत्व—हिपिअस, और हिपार्कस—सार्डिस का जलना—फ़ारस वालों की चढ़ाई यूनान पर—मैरेथन का युद्ध—ज़रक्सीज़ का युद्ध विषयक उद्योग—थरमापिली—सैलेमिस—प्लेटिआ—यूनान का सुधरना—पेरीक्लीज़—पेलेपोनिसस का युद्ध—आलसी वएडीज़—सिसिलीवालों का युद्ध बिष

यक उद्योग—ईगासपोटैमस की लड़ाई—एथेंस की लूट—छोटा सइरस—एजीसीलास—ऐंतलसीदास की संधि—थीव्ज़—इपैमीनान्दस औ पीलोपीदास—मैंटिनिआ—यूनान के प्रजा प्रभुत्व का शुभाशुभ काल—मैसीडोनिआ का निवासी फिलिप्। इन सबों का वर्णन इस अध्याय में करैंगे *

पूर्व अध्याय में हम वर्णन कर्चुके हैं, कि फारस का महा राज्य जो सइरस की बुद्धिवानी से बना, उस में पश्चिम एज़िआ का प्राचीन महा राज्य अर्थात् ऐस्सिरिआ, बैबीलोनिआ, मीडिया औ पैलेस्टइन औ एशिया मइनर के राज्य मिलगये। इस अध्याय में अत्यन्त प्रधान वृत्तान्त हैं, फारस वालों के संग्राम, यूनान के क्षुद्र पराक्रमी प्रजा प्रभुत्व से। जब श्रीयुत सिकन्दर ने फारस के महा राज्य का विनाश किया तब से इन के आपस का संग्राम मिटा। श्रीयुत सिकन्दर सइरस से युद्ध विषयक विक्रम औ गौरव में कुछ विशेष न था। इसी काल में रूम के चक्रवर्त्ती महा राज्य में पराक्रम प्राप्त करने के अर्थ जो जो नवीन उद्योग हुए तिन का विषय कहैंगे; औ अगले दो काल में रूमियों का पृथ्वी भर में अधिकार प्राप्त करने का वर्णन विशेष करकै प्रधान होयगा। कई राज्य जो पढ़ने वालों का चित्त आकर्षण करते हैं, वे हैं जो देश अथवा राज्य क्रम क्रम से स्वाधीनता छोड़ अज्ञानता में गिरे, औ पूर्व काल में जो देश अथवा राज्य वन्य औ अज्ञात थे, उनका उदय हुआ; औ जिस जिस रीत से उन्हों ने औरों के राज्य लेने में युद्ध किये, सो वर्णन करैंगे।

सइरस ने अपनी बुद्धिवानी से, औा अपने खदेशीय कठोर फारसवालों की सहायता से अतिविस्तृत राज्य स्थापित करके विशेष जय करने की तृष्णा का त्याग किया; औा अपनी आयु का शेष भाग इसी को एकत्र करने औा अच्छी अच्छी बुद्धिवानी की रीति, व्यवस्था बनाकर सुधारने, और अनमिनत मनुष्यों के परिपालन करने में लगाया। इस के राज्य की पूर्व्व सीमा सिंधुनदी; पश्चिम सीमा यूनान के समुद्र; दक्षिण में फारस का खाल; औा उत्तर में सिधिआ के पर्व्वत थे। उस की वृद्धावस्था में सिधिआ के अस्थिर उत्तर निवासियों ने उस पर चढ़ाई की; तब उसे भी फिर उन के साथ संग्राम करना आवश्यक ऊआ; परंतु टिसिअस की रीत से हारकर मारा गया।

सइरस के मरण काल पीछे उस का पुत्र कांबइसिज़ राजगद्दी पर बैठा। इस राजकुमार ने सौ देशों को भी अपने आधीन देखकर संतोष न किया; तब फारस के महा राज्य में मिसर देश को मिलाने का प्रयत्न किया। उस ने अपने राज्य के पहलेही बरस में एक बड़ी भारी सेना लेजाकर उस देश में प्रवेश किया; औा पेल्यूशिअम स्थान पर एक ही ऐसी लड़ाइ लड़ी, कि फैरोज़ का महा राज्य उलटा दिया; औा मिसर को फारस का एक प्रदेश बनाया; यह वृत्तांत ईसवी शक के पूर्व ५२५ वें बरस में ऊआ था। उस ने मरुभूमि को पार करने औा ऐमोनिअम नाम महा वाणिज्य स्थान को लेने की चेष्टा की, पर वह निष्फल ऊई; और उस ने कार्थेज को भी लेने की मन में कामना करी थीं, पर वे भी सफल न भईं; क्योंकि फिनिशिआ के नाविकों ने अपनी वस्ती के उजाड़ करने का निषेध किया। इसी बीच मेगी नाम एक जन ने

कुमता कर मीडिश्रा के कुल के स्मर्डिस नाम मनुष्य को, झूठे-
ही यह कहकर कि यह कंबइसिज़ का बड़ा भाई है, राज
गद्दी पर बैठाया। इस बात के मारे कंबइसिज़ ने साढ़ेसात
बरस राज्य करके अपने प्राणत्याग किये। इस झूठे स्मर्डिस ने
आठ माहीने राज्य किया। परंतु फारस निवासी मीडिश्रा
के राजा का सहन न करसके; तब सात कुलीन लोगों ने
कुमता करके उसे मारडाला। पीछै इन सातों कमतवालों ने,
बड़ा परामर्श कर दारा को राज्याभिषेक करकै सिंहासन पर
बैठाया; इस ने सइरस की एक एटोसा नाम लड़की से विवाह
करके अपने पराक्रम का विस्तार किया। डेरायस ने छत्तीस
बरस राज्य किया। उस ने अपने राज्य की सीमा का अत्यन्त
विस्तार किया; औ नाना प्रकार के उपकारी नियम स्थापित
करके देश को सुधारा; औ कई नगर बसाये, जिन में बड़े
बड़े चमत्कारी स्थान बनवाकर राजद्वार करने की आज्ञा
की; सइरस ने एशिया को जय किया था; औ कंबइसिज़ नें
मिसर को; दारा ने यूरप के बीच थेरेस औ मैसीडन पर
चढ़ाई करी, जो देश अब टरकी के महाराज्य में हैं।
इसी बीच बैबीलन ने आज्ञाभङ्ग करी, परन्तु यह नगर
इक्कीस महींने तक घेरा डालने से वशीभूत ऊआ। तिस
पीछै डारा सिधिश्रा के अस्थिर औ अजेय लोगों से युद्ध
करने को गया, परंतु वहां अपने पुरखे सइरस की न्याईं
उन से हारकर अति लज्जित हो घर को फिरा। पूरब में
उस की अधिक जय ऊई थी; एक यूनानी उसी का दास
नौका द्वारा सिंधुनदी में आया; और उस नदी के उत्तर
ओर जो ऊंची भूमि थीं उन को उस के महाराज्य में
मिलाया। और इसी समैं के निकट उस के एक सेनापति ने

आफ्रिका में जाकर बारका नाम नगर पर चढ़ाई करके उस का सत्यानाश किया।

जब दारा डेन्यूब औ सिंधुनदी पर और आफ्रीका में विजयी ज़ुआ; तब उस में औ यूनानियों में झगड़ा उठा, यह संपूर्ण अतिक्षुद्र यूनान देश फ़ारस के महा राज्य का पंचासवां भाग भी न था। और सबों के मन में ऐसा आवता था, कि यूनान एक ही युद्ध में मिसर के समान वशीभूत हो कर फ़ारस के महाराज्य का एक प्रदेश हो जायगा; परंतु उस देश में सब लोग खाधीन थे, इसलिये वहां के निवासी बड़े सूरबीर औ युद्ध में बड़ा उत्साह मानते थे।

हम अभी वर्णन करचुके हैं कि एशिया मइनर में यूनानियों के नगर फ़ारसवालों के आधीन थे; औ एशिया मइनर इस काल में सभ्यता का मुख्य स्थान था। थेरेस औ मैसीडन जो यूनान के अति निकट हैं वहां भी फ़ारसवालों ही का अधिकार था। तब यूनान के प्रजा प्रभुत्व ने देखा कि हम चारों ओर फ़ारस के अधिकार से घिरेज़ुए हैं, औ उन का राज्य पृथ्वी के सब अच्छे अच्छे देशों में है जो इस काल में ज्ञात हैं; पर हम इन से बिना युद्ध किये अपनी खाधीनता त्याग न करेंगे। एशिया मइनर के नगर बड़ी अधीरता से फ़ारसवालों के आधीन ज़ुए। निदान मिलिटस जो उन सब नगरों में अतिपराक्रमी औ मुख्य था, वहां के ऐरिसटेगोरस नाम एक प्रधान जन ने फ़ारस के सूबेदार को क्रोधित करके उस की आज्ञा मानना छोड़ दिया; औ मन में विचार किया कि यूनानियों से मेल करके इन उपद्रवियों के साथ बैर करावैं। यह उस का मत सिद्ध ज़ुआ; यूनान के नगरवालों ने फ़ारसवालों की प्रधानता छोड़ प्रजा प्रभुत्व स्थापित किया। तब यह बखेड़िया यूनान को

गया इस विचार में, कि मैं अपने खदेशीय भाइयों के चित्त में भी इस फ़ारस के महाराज्य से वैर कराऊं। इस बात से लैसीडीमन में उस का उपहास ऊआ। परन्तु दैवगत से एथेंस में उसी के मन की सी बातें ऊईं। पिसिसट्रेटस का पुत्र हिपिअस, जिसे देश निकाला हुआ था; वह अपना राज्य फिर पाने के लिये एशिआ मइनर में फारस के सूबेदार की विनती करता था। एथेंस के लोगों ने उस की अभिलाषा रोकने के लिये राजदूत भेजे; परन्तु फारस के सूबेदार ने बड़े अभिमान पूर्व्वक उत्तर दिया, कि जो तुम अपना भला चाहतेहो तौ हिपिअस को फिर लेजाकर राजा करो। वे इस क्रोध जनक उत्तर को सुनतेही एथेंस को फिर गए; और यहां इसी समैं ऐरिसटेगोरस फारस वालों से विरोध करकै एशिआ संबंधी यूनानियों के अर्थ सहायता मांगता था। एथेंस के लोग जो फारस के आधीन थे उन के मन में अति क्रोध उपजा। उन्हों ने अत्यन्त शीघ्रता से जहाज समूह बनाया; औ एशिआ मइनर में सेना को चढ़ालाये। एथेंस का कटक उतरतेही झटपट सार्डिस पर चढ़ उसे जलादिया; वह नगर उस देश की राज्यधानी था। जब फारसवलों ने दल इकट्ठा किया, तब एथेंसवाले भागे, औ विन्होंं ने उन का पीछा करके समुद्र के तट पर पकड़ हरादिया। इस कुत्सित छेड़ छाड़ से यूनानियों औ फारसवालों में ऐसा भारी कोप उपजा जो बड़े काल तक चला गया।

अब दारा ने एकचित्त होकर यूनानियों के प्रदेश जो आज्ञा रहित हुऐ थे, उन को फिर अधिकार में लाने के लिये प्रयत्न किया; यूनानियों ने फारसवालों का गौरव यत्नद्वारा संपूर्ण रूप से जान, अपने जहाज समूह को सुधार

ने का परिश्रम किया। तौ भी फारस निवासियों ने एशिआ संबंधी यूनानियों को जय करना दुरूह जाना क्योंकि मिलिटस नगर से छह बरस लडाई रही तौ भी आधीन न हुआ; औ यूनानियों ने बड़े जहाज़ समूह का संग्रह किया। निदान फारस के सेनापतियों ने अपने स्वाधीन समुद्र तटवर्त्ती प्रदेशों से जहाज समूह इकट्ठा किया; इन जहाजों पर फारस के नाविक न थे, इसलिये उन्हें जयपाने का थोड़ा भरोसा था। तौ भी एक बड़े भारी जहाज़ संबंधी युद्ध में उन की जय हुई, औ समस्त रूप से एशिआ संबंधी यूनानियों औ यूनान के द्वीपों को दबागेरा। अब सार्डिस के जलाने का बदला लेने के अर्थ, केवल ऐथेन्स के लोगों को दण्डकरना रहा था। दारा ने बडी भारी सेना जोड़कर अपने जमाई मारड़ोनिअस को उस का अधिपति बनाया; उस ने हेलेसपांट मुहना, जो यूरप में है, उसे पार करके यूनान की मिट्टी औ पानी जो आधीन होनेका चिन्ह था मांगने के लिये अग्रदूत भेजे। छोटे छोटे औ डरपोकने देशों ने उन की आज्ञा को मान लिया, और स्पार्टा औ एथेंसवालों ने केवल उन की आज्ञा ही का निशेध न किया, परन्तु उन के राजदूतों का भी बड़ा अपमान किया। फारसवालों का कटक उत्तर ओर से थेरेस औ मैसीडन की घाटियों में हो कर चला; परंतु यह उन का पहला वार्षिक युद्ध निष्फल हुआ; क्योंकि एक आंधी चली, जिस में उन के जहाज़ तित्तर वित्तर हो गये, औ तभी थेरेस के पर्वतियों ने उन की सेना को छिन्न भिन्न किया; यह वृत्तान्त ईसवी शक के ४९२ बरस पूर्व हुआ था। अगले बरष और विशेष बुद्धवान सेनापति बना कर दूसरा कटक भेजा। अनुमान है कि ये सेनापति हिपिअस की सभा के

थे। सेनापतियों ने उत्तर के पर्वतों का मार्ग जो पूर्व युद्ध में नाश कारक ऊआ था, उसे छोड, सिसिलिआ में अपने आधीन यूनानियों औा दूसरे देशवालों से बड़ा भारी जहाज समूह इकट्ठा कर, एका एकी कटक को यूनान के मध्य में लाकर अैटिका देश के मंडल में उतार दिया। यूनानी ऐसे पराक्रमी दल से टक्कर लेने को असामर्थ थे। यूनान को बचाने के अर्थ आपस के सब छोटे छोटे प्रदेशों में मिलाप न ऊआ था; और यह एथेंस नाम प्रदेश जो विस्तार में वर्द्धमान देश के भी समान न था, सो सहायता रहित होकर लड़ाई का दुःख झेलने को रहा। एथेंस के लोगों ने स्पार्टावालों से बिनती कर कहा, कि तुम हमारी सहायता करो; तब उन्हों ने कहा, कि अभी पूर्णमा में पांच दिन घटते हैं, तब तोड़ी हम यहां से सरक भी नहीं सकते। इस महा संकट के बीच मिलटाइडिज़ नाम एक जन अपने देश को बचाने में विश्वम्भर का शस्त्ररूप ऊआ। फ़ारसवाले एक लाख दश सहस्र सेना लेकर मैरेथन के मंडल में उतरे। मिलटईडीज़ नौ सहस्र एथेनीअन औा एक सहस्र पेलेटिअन लोग लेकर उन के साम्हने ऊआ; औा संपूर्ण रूप से फ़ारसवालों को हरा दिया। एथेंस के जयवंत लोगों ने यह अनपेक्षित लाभ देख प्रगल्भ हो, जिन उपद्वीपों ने फ़ारस वालों की सहायता करी थी, उन के दंड करने में उद्योग किया। एथेंस के लोगों ने मिलटाइडीज़ को जहाज़ समूह देकर उन से युद्ध करने को भेजा; परंतु वह नाकसस स्थान में हारा, औा इसलिये उसे घर को फिरना आवश्यक ऊआ; औा एथेंस के लोग, जिन का उस ने परित्राण किया था, उन्हों ही ने उसे यह कहकर दंड किया, कि तुम इस की चढ़ाई में हारगए और यह हार केवल उन ही की जड़ता से ऊई थी। वह जब

दंड न देसका तो उसे बंदीग्रह में भेजा; और वह वहां ही मर गया; यह एथेंस के लोगों का कृतघ्नीपना स्मर्ण करने योग्य है।

फारसवालों का जो मैरेथन पर बड़ा अपमान हुआ था, इसलिये वे पलटा लेने को बड़े जाज्वल्यमान हुए; औ तीन बरस लग एशिया में बड़ी धूम धाम पड़ी रही, कि फिर नवीन युद्ध होयगा, इसी बीच दारा मरगया; और उस का ज़रकसीज़ नाम पुत्र, जो तरुणाई की उमंग में था राज गद्दीपर बैठा। उस ने सिंहासन पर बैठतेही केवल यूनान ही को जय करने का उद्योग न किया पर मन में बिचारा कि उन देशों को भी विजय करूंगा जिन को लोग उनके उस ओर अपरिमित औ अज्ञात अट कलते हैं। उस ने एक ऐसा भारी अनगिनत दल इकट्ठा किया जो कभी न सुनपड़ा था; औ उस ने सेना के टिकने का स्थान साडिंस ठहराया; वहां वह आप गया, औ इस चढ़ाई में मुख्यवानों की समाधानी अपने हाथ रक्खी। जब यह कटक समुद्र के तट को जाता था, लोग कहते हैं, मार्ग में कई नदियां रीती होगई थीं। इस महा भीड़ को एशिआ से यूरप में लेजाने के लिये हेलेसपांट मुहाने को उतरने के अर्थ नौकाओं के दो सेतु बांधे थे, तौ भी बड़ी कठिनाई से सात दिन औ सात रात्र में सब सेना उतरी थी। यूरप में जाकर जब दल की गणना की तौ निश्चय हुआ कि बीस लक्ष सेना है। ज़रकसीज़ ने इस अपरिमित दल को देख कहा कि मैसीडन औ थेसली में चैतन्य हो, जहां तक बने तहां तक समुद्र के तीर तीर चलो, औ उसी समैं समुद्र के तटही तठ जाने की जहाज समूह को आज्ञा की। जब यह टीडी दल उत्तर में इकट्ठा होकर यूनानियों पर गिरने को उपस्थित था, तब वे घबराकर अपनी सभा में ऐसे अज्ञान हुए, कि

काम की एक भी बात न बिचारसके; औ देश का बचाव ईश्वर नाम पर छोड़ दिया। निदान बहुत सोच बिचार करने के पीछे, थेसली के पर्वतों के बीच थरमापिले नाम घाटा जो यही एक मार्ग यूनान में आने का था, तहां शत्रु के रोकने के लिये थोड़ी सी भीड़ भेजी। स्पार्टा निवासी लिओनीडास ने तीन सौ ३०० खदेशीय मनुष्य औ सात सौ ७०० थेस्पिआ के लोग लेकर तीन दिन तक जब लग वह औ उस का एक एक सिपाही न मरा तब तक ऐसी अति वीरता से शत्रु का मार्ग रोका जो वीरता कोई के मन में भी न आवै; यह वृत्तांत ईसवी शक के ४८० बरष पूर्व हुआ था। इस महा साहस के कर्म को देख यूनानीयों को बड़ा मंगल हुआ; औ इसी कार्य से फारसवालों को तुच्छ जाना, औ निज मन को अत्यन्त साहसी किया।

ज़रकसीज़ अैटिका में चला आया; जब एथेनवालों ने कोई उपाय अपने नगर बचाने का न देखा, तो उसे छोड़ भागे। यह एथेन्स नगर अपने निवासियों करके सूना रहा; ज़रकसीज़ ने इस नगर को लेकर जला दिया। औ सार्डिस के दाह करने का पलटा लिया। तिस पीछे फारस के जहाज़ सैलैमिस नाम आखात में यूनानी जहाजों के पीछे २ गये, तहां एथेंस का थिमिष्टोक्लीज़ नाम निवासी जो उस काल में सब से बुद्धिवान था, उस की बुद्धिवानी से नौका संबंधी युद्ध हुआ, जिस में उस ने संपूर्ण रूप से फारसवालों को हरा दिया। ज़रकसीज़ हारमान, औ बड़ी भारी सेना के लिये खाने पीने का तोडा देख, डरकर, अपने दल सहित फारस को फिरा, और कुछेक भाग अपने कटक का यूनान में छोड़ आया; सो भी अगले बरस पेलेटिआ में यूनानियों से लड़ा औ अत्यंत रूप से पराजित हुआ,। और उसी दिन मइकेल स्थान में नौका संबंधी युद्ध

के बीच भी फारसवालों का पराभव ज़ुआ, और यूनानियों ने एक ही बेर बड़ी बीरता दिखा कर फारस वालों की चढ़ाईयां जो सदैव रहाकरती थीं उन से छुट्टी पाई *

अंत में इस युद्ध के बीच जय होने के कारण, संपूर्ण रूप से यूनान की दशा पलट गई। क्या तो यूनानियों पर और लोग चढ़ चढ़ के आवते थे, कै अब ये औरों पर चढ़ के जानेयोग्य हो गये। यूनानी अपने एशिया संबंधी भाइयों को फारसवालों की आधीनता से छुड़ाने के अर्थ, प्रथम तो स्पार्टावालों की आज्ञा में होकर लड़ते रहे, पीछे जब स्पार्टा के सेनापति ने घमंडी औ विश्वासघाती होकर अपने सहायक औ संगियों का अपमान किया, तब से एथेंसवालों की शरण लेकर उन से युद्ध किया। पेलोपोनिसस की सीमा के उत्तर ओर जो देश, औ आस पास के उपद्वीप उन्हों में दृढ़ मिलाप ज़ुआ, प्रत्येक देशवालों ने आपस में यह बचन किया, कि हम इतने इतने जहाज लाकर एथेंस की आज्ञा पूर्व्वक, फारसवाला जो सबों का सत्रु है उस से संग्राम करैंगे; पीछे इन जहाजों की संख्या के पलटे कुछ रुपया देना ठहरा, जो रुपया सबों की डीलास नाम कोठी में धरोहड़ रहा।

जब फारसवाले अपने देश को फिरे, तो एथेंस निवासी अपने नगर में आए जिस को फारसवालों ने जलाकर भस्म किया था, थिमिष्टोक्लीज़ ने अपनी ज्ञान शक्ति से उस को दृढ़ बनाकर ऐसा सुरक्षित किया, कि सबों के मन में आया कि अब कोई इस पर चढ़ाई करकै एका एकी न ले सकैगा। थिमिष्टोक्लीज़ ने पूर्व्वगत अनुभव से निश्चय किया कि जो नौका संबंधी पराक्रम होगा, तो एथेंस की रक्षा भी रहैगी, औ तेज प्रताप भी बढैगा। उस ने अपने मन में विचारा कि इस नगर को

यूनान में मुख्य बनावें, इसलिये अपने बुद्धिबल से उस का समुद्र संबंधी पराक्रम बढ़ाया। उस ने अत्यन्त बड़े बड़े उपकार इस एथेंस नगर के लिये करे, तैाभी वहां के मूर्ख कृतघ्नी नगरनिवासियों ने उसे देश निकाला दिया, और वह विचारा हार मान फारसवालों की शरण में गया, और वहां ही मर-गया। तदनन्तर लगातार अनेक अति विज्ञ मंत्रियों के हाथ में राजकर्म्म रहा, इसलिये उन्हों ने थिमिष्टोक्लीज़ की सब कल्प-ना सिद्ध कीं, और थोड़े ही बरसों में यूनान के बीच एथेंस नगर की महा प्रतिष्ठा हुई। इसलिये एथेंस की जययुक्त औ अच्छी दशा ४० बरस रही, अर्थात् फारसवालों की लड़ाई की समाप्ति से ले पेलेपोनिसस के युद्ध के प्रारंभ तक। यूनान के बीच एथेंस योद्धा हुआ औ प्रत्येक राजसंबंधी रीति वहां ही से निकल सब देश में व्याप्त होनेलगीं। सब नगरनिवासियों के चित्त में बड़े बड़े कार्य्य करने का उत्साह उपजा। जो कुछ अच्छे अच्छे औ उत्तम पदार्थ थे अतिशय रूप से उत्पन्न हुए; अनेक प्रकार के गुण ऐसे सुधरे कि जिन की टक्कर का कोई न रहा; काव्यरचना करने की बिधि अवध पै पहुंच गई; नाना प्रकार की विद्याओं के पढ़ने की उमंग सबों के मन में अत्यन्त हुई; प्रजा प्रभुत्व में वार्त्ता-लाभ करने का गुण साधारण रूप से घरघर फैल गया; शिल्प कारी, प्रतिमा बनाना, औ गृहादि निर्म्माण विद्या एका एकी सुधर कर इस स्थान में अग्रगण्य हुई; एथेंस में यह रीत थी कि जो कोई नगर निवासी संपूर्ण स्थान भुगतकर सब से बड़ा पद्धती होता था, उसे सदैव देश निकाला देते थे, यद्यपि ऐसा दुष्ट कर्म होता था तथापि वहां के जन अत्यन्त ज्ञानवान औ विद्यावान होते थे। स्पार्टा की दशा एथेंस से बड़ी विपरीत थी, वहां के निवासियों की अज्ञान पूर्व्वक चाल ने उन की बढ़ती

हुई बुद्धि को रोक दिया; बहां मनुष्य अपने देश के अर्थ मरना सीखे थे; एथेंस नगर निवासी अपने देश का उपकार करने में निज काल वितीत करते थे।

ईसवी शक के सूर्व्व ४४९ वें बर्ष में, एथेंसवालों ने फारस के राजा को कई वेर लगातार पराजय करके दवाया, तब उस ने हारमान संधिपत्र बनाकर उन को दिया, और उस में यह लिखदिया कि आज से मैंने एशिया मइनर के नगर छोड़े औ ईजिअन समुद्र में नौकाद्वारा गमना गमन न करूंगा। ऐसें तीस बरस की लड़ाई के पीछे फारस के महाराज का अभिमान न्यून हुआ। परन्तु इस महाराज्य का तेज औ प्रताप घटने लगा। क्योंकि फारस की राजसभा सइरस की शिक्षा रहित हुई। सब बड़े बड़े पूर्व्व दिशा के राज्यों के समान, थोड़े से महाशय मनुष्यों के पीछे, जिन्हों ने उस की उत्पत्ति डाली थी, उन में परिवर्तन होकर रणवास की आज्ञा राजकर्मों में प्रवल हुई, राजा पराक्रम हीन नपुंसकवत् हुआ, औ अधिपति लोग दूर दूर प्रदेशों में पराक्रमशाली औ प्रतिकूल भये।

जब एथेंस नगर में विद्या औ नाना प्रकार के गुण अतिशय रूप से देदीप्यमान हुए, और उस नगर का पराक्रम केवल यूनान ही में नहीं प्रसिद्ध हुआ, परन्तु फारस का महाराज भी अच्छे प्रकार से जानता था, तब एथेंस निवासी यूनान के बीच अपने मिलापियों से अति निर्दयता औ प्रगल्भता करने लगे। जिन लोगों ने आपस में चन्दाकरके प्रसन्नता पूर्व्वक फारसवालों से युद्ध करने के अर्थ दिया था, अब उन से बल करके दण्डसा लेनेलगे, औ मिलापी नगरों को अपनी प्रजासी समझ ने लगे। एथेंस में पेरीक्लीज़ मुख्य पराक्रम प्राप्त करके निज उत्साह औ बलद्वारा अनेक वर्ष पर्यन्त राजद्रोहियों

को धमकावता रहा, परंतु उस के मरने से थोड़े से काल पहले यूनान के बीच ईसवी शक के ४३० वर्ष आगे एथेंस के लोग असंतोषी हुए औा उन में फूट पड़ी। यूनान के बीच एक बड़ी द्वेषकारक लड़ाई उठी, जिस में बहुधा सब यूनानी कुछ स्पार्टा की ओर कुछ एथेंस की ओर होगए, औा जबलग यूनान का प्रताप नष्ट न भया था, तबलग यह युद्ध बना रहा। एथेंस निवासी यूनान की संपूर्ण समुद्र संबंधी सहायता लेकर युद्ध के लिये उपस्थित हुए, औा स्पार्टा के लोग थल संबंधी गौरव से चढ़े। पहले तीन वर्ष में एथेंस के लोग अपनी रक्षा करते रहे; परंतु दैवगत से चौथे वर्ष में एथेंस के बीच ऐसी महा मारी फैली, कि जिस ने शत्रु से भी विशेष अपकार किया; औा पैरीक्लीज़ भी इसी संताप से मरगया। तदन्तर एक कीलीआन नाम चर्मकार की आज्ञा में प्रजा प्रभुत्व हुआ और युद्ध बड़ी असावधानी औा निर्दयता पूर्वक भया। स्पार्टावालों के बीच अति निपुण ब्रैसीडैस नाम एक जन प्रतापवान हुआ, और वह अपने देश का भला करने के लिये, प्रतिष्ठा पूर्वक युद्ध परिसमाप्त करता, जो उसी काल अपनी यौवनावस्था में बीरता पूर्वक न मरता। तिस पीछे शीघ्र ही दोनों ओर के युद्धकारी लोगों में संधी भई, कि अब पचास वत्सर पर्यन्त युद्ध न करेंगे, परंतु वह जैसे तैसे पांच बरस निभी। आल्सिबियेडीज़ नाम एक युवा पुरुष निर्विवेकी जिस का भयानक सुभाव, औा अति चंचल बुद्धि थी, उस ने अयश पूर्वक अति दृढ़ प्रताप एथेंस में प्राप्त किया, औा उन से संधी तुडवा कर युद्ध कराने के लिये यह समझाकर उन्हें स्थित किया, कि इस में बड़ी नाम्रा होगी उस ने सिसिली को जय करने की कल्पना करके शीघ्रता से

एथेंसवालों को युद्ध करने में प्रयुक्त किया, औ इस दूरस्थ औ निरर्थक युद्ध के लिये प्रजा प्रभुत्व की सेना भिजवाई। थोड़े ही काल पीछे उस ने कोई देवालय की लुट खसोट की, जिस अपराध से उसे देश निकाला हुआ, तब स्पार्टावालों से जा मिला, उन्हों ने सिसिली में सिरैक्यूज़वालों की सहायता करने के लिये अपनी बड़ी भारी सेना भेज एथेंस के दल औ नौकाओं का सत्यानाश किया।

एथेंसवाले इस भारी चोट से फिर कभी न उभरे; तोभी जब लोगों ने देखा कि एक ही युद्ध में हमारे सेनापति, हमारा दल, और युद्ध विषयक जहाज़ नष्ट हुए; तब उन के चित्त में अत्यन्त उद्वेग उपजा, उन्हों ने ऐसी शीघ्रता से युद्ध विषयक नवीन जहाज़, औ सेना के बनाने में एसी शीघता करी जो किसी के मन में न आवे, औ उन के युद्ध के संगी उन के वशीभूत रहे। इसी बीच स्पार्टानिवासी बड़े परिश्रम पूर्वक नौका समूह रचने में उपस्थित हुए, यद्यपि यह बात लईकर्गस की व्यवस्था से बिपरीत थी; और जब इस के संभालने को उन के पास द्रव्य न रहा तब फारसवालों की सहायता मांगी। यूनान के अर्थ यह वृत्तान्त नवीन औ दुःख जनक हुआ। फारस के राजा ने जब यह अपने हित की बात देखी तौ उस की आंख खुलगई, औ विचारा कि यूनानियों को घूंस देने से वे आपस में लड़कर पराक्रम रहित हो जांयगे। देखो जो कार्य पूर्व काल में फारसवालों की वीरता औ प्रताप से नही प्राप्त हुआ था, सो अब अनायास ही उन के द्रव्य कर के परिपूर्ण हुआ। पहले ही पहल जब यूनानियों ने फारसवालों के धन का स्पर्श किया, तभी से उन की

स्वाभाविक साधुता नष्ट ऊई, और साधुता के नष्ट होते ही उन की बीरता भी बिदा भई।

किंचित काल पीछे आलसीवयेडीज़ ने स्पार्टावालों का त्याग किया, और अपनी तीक्ष्ण बुद्धि औ अच्छे गुणों करके स्वदेश का उपकार कर, नाना युद्धों में शत्रु को पराजय किया। तथापि स्पार्टा के लईसेंडर नाम सेनापति ने उसे हरा दिया; और दूसरी जय भी स्पार्टावालों ही की भई; परंतु एथेंस निवासियों ने अपनी सकल सेना इकट्ठी कर काल समुद्र में स्पार्टावालों का संपूर्ण रूप से पराभव किया; एथेंसवालों को अपने युद्ध विषयक जहाज के सेनापतियों का धन्यवाद करना चाहिये था, सो उन्हों ने निर्दईपने से उन्हें मार डाला। इस निर्दयता के कर्म से अति शीघ्र एथेंस देश का सत्यानाश हुआ। लईसेंडर नाम एक जन ने एगासपोटेमस स्थान में एथेंस के युद्धोपयोगी जहाजों पर आक्रमण कर प्रत्येक नौका का हरण किया। एथेंसवालों की समुद्र संबंधी आज्ञा जाती रही, उन के सहायक लोग स्पार्टावालों के अनुयायी ऊए, एथेंस को घेर लिया औ वह फिर शत्रु के हस्तगत हुआ; उस की भींत औ पईरीअस नाम बड़े प्रसिद्ध बंदर स्थान को ढाकर धरती के समान करदिया, और तीस अति कठोर निर्दई मनुष्य उसपर आज्ञा करने को स्थापित हुए। इस रीत करके एथेंस के विनाश होने से पेलोपोनिशिअन नाम युद्ध की परिसमाप्ति ऊई, इस युद्ध से यूनान के संपूर्ण सत्कर्म एक ही बेर लुप्त होगए, देश भरके हित की बातें जाती रहीं, अपना अपना स्वार्थ सब लोग देखने लगे, औ परस्पर की जलन औ द्वेष ने देश भर के उत्साह, बीरता, औ पराक्रम को

सोखलिया। इस युद्ध की समाप्ति से चार बरस पीछे, फारस के भूपति के सइरस नाम कनिष्ट भ्राता ने उसे सिंहासन से उतारने का विचार किया, औ इसलिये उस ने दस सहस्र यूनानियों की सेना अपनी बेतन से बुलाई। कनक्सा नाम स्थान पर लड़ाई ऊई, जिस में सइरस हारा, औ मर-गया। तथापि यूनानी लोगों ने अपने अस्त्र शस्त्र त्यागने का निषेध कर, ज़ेनोफन नाम सेनापति की आज्ञा में हो फारस के बीचोंबीच से अपनी विपक्ष जातियों के सङ्ग लड़ते ऊए स्वदेश को फिरे, औ फारसवालों की सेना ने इस अज्ञात पर्व्वतमय देश के बीच प्रतिदिन अति कष्ट दिया, पर तौभी वे कभी न हारे। जब ये दसों सहस्र मनुष्य विजयी हो अपने देश में पऊंचे, तौ यूनानियों को अपने महा शत्रु फारसवालों की आन्तरिक दुर्ब्बलता अच्छे अच्छे रूप से दृष्ट पड़ी; उन की इस दुर्ब्बलता से इन को फल प्राप्त होता जो इन की सभा के बीच आपस में फूट न होती।

पीछे एथेंस की लूट से स्पार्टा यूनान के बीच मुख्य ऊआ, औ देश को अति कठिन रूप से शासन किया। स्पर्टा की प्रभुता पैंतीस बरस लग रही। थोड़े ही दिनों पीछे एशिया संबंधी यूनानी जिन्हों ने सइरस की सहायता करी थी, उन पर फारसवाले एशिया मइनर के सूबेदार क्रुद्ध ऊए, औ इस कारण स्पार्टा को फारस से युद्ध करना आवश्यक ऊआ। स्पार्टा के अत्यन्त निपुण एजीसीलास राजा ने ईसवी शक के पूर्व्व ३९६ औ ३९४ बरष के मध्य फारस के बीचों बीच कुछेक सेना लेजाकर, वहां के राजा को उस के सिंहा सन पर कंपायमान किया। उस की जयवन्त यात्रा से उस के मन का संदेह गया, औ उस राज्य की आन्तरिक दुर्ब्बलता

ठीक दृष्ट पड़ी तब उस ने एका एकी वीरता पूर्व्वक फारस के राज्य को उलटादेने का विचार किया, तिसीकाल फारस वालें ने द्रव्य देकर यूनान के बीच उस के शत्रु उत्पन्न करे, इसलिये उसे यह प्रयत्न छोड़ निज देश को जाना आवश्यक हुआ।

इसी बीच एथेंस नगर ने स्पार्टा की आज्ञा मानना छोड़ दिया, औ क्रम क्रम से फिर पराक्रमी होने लगा। फारस वालें ने एजीसीलास की बीरता युक्त प्रयत्न व्यर्थ करने के लिये स्पार्टा औ एथेंसवालें में लड़ाई की अग्नि सुलगाई, इस युद्ध के बीच कारिंथ, थीबज़, और आर्गस नगर एथेंस के सङ्ग मिले। स्पार्टावालें ने इन मिलापियों को कोरोनिआ स्थान पर मारा; परन्तु कोनन ने एथेंस औ फारस के युद्ध विषयक जहाज़ लेकर स्पार्टावालें के नौका समूह को पराजय किया। तब स्पार्टावालें ने फारसवालें को उन के नूतन सहायकों से भिन्न करके अपनी ओर मिलाने के अर्थ उद्योग किया, और अपने उपकार के लिये उन के अर्थ बहुतसी वातें की हानि करी। अंतैल्कीडैस ने एक प्रसिद्ध संधि करवाकर देश का आंतरिक विवाद मिटाया, यह संधि अबलग उसी के नाम से ख्यात है। फारस के राजा ने इस संधि में अभिमानी औ जयवंत यूनानियें को निर्बल किया, जिन्हें ने एशिया मइनर के यूनानी नगरें को फारस के राजा को समर्पण किया। यूनान के बीच स्पार्टा मुख्य हुआ; परन्तु उस के स्वेच्छाचारी कर्म उस के सत्यानाश करने में मूल होते थे।

ईसवी शक के ३८२ बरष पूर्व, स्पार्टा के फोबीडास नाम सेनापति ने बिश्वासघात करके थीब्ज़ नगर का दुर्ग लेलिया, और उस के निवासियें को ऐसा रखता जैसा अपने सेवकें

को तथापि इस काल में थीब्ज़ के बीच पिलापिडास और ईपामीनांदस नाम दो जन अप्रसिद्ध थे, परंतु उन की बुद्धि औ सौजन्यता पंडितों की सी औ साहस बीर पुरुषों कासा था। जिन्हों ने एक वीरता युक्त महा उद्योग करके थीब्ज़ को स्पार्टा की आज्ञा में से छुड़ालिया, औ लैसीडीमन देश के संग युद्ध करने का निश्चय किया। ईसवी शक के ३७१ बरष पूर्व ल्यूकूट्रा स्थान के बीच थीब्ज़ औ स्पार्टा की सेना रणभूमि में आकर लड़ी, इस में ईपामीनांदस की जय हुई, औ स्पार्टावालों की शक्ति गई। इस दुर्दशा में अभिमानी स्पार्टावालों ने अपनी सहायता के अर्थ एथेंसवालों से प्रार्थना करी, इस कारण से यह नवीन शत्रु कुछ काल तक दबा-रहा। इसी बीच पिलापिडास ने थीब्ज़ का राज्य उत्तर में बढ़ाने के अर्थ प्रयत्न किया, औ जब वह थेसली को थीब्ज़ में मिलाने का विचार करता था, तभी ईसवी शक के पूर्व ३६४ वें बरस में युद्ध के बीच मारागया। ईपामीनांदस ने स्पार्टावालों के देश पर एक नवीन चढ़ाई करी, जिस में मेस्सिना को स्वाधीन करदिया, यह नगर चिर काल से स्पार्टा के आधीन था; और ईसवी शक के ३६२ वरस पूर्व उस ने फिर मैंटिनियां के मण्डल में स्पार्टावालों से संग्राम किया। उस की संपूर्ण रूप से जय हुई, परन्तु इसी रण के बीच काम आया; इस प्रकार से इन दोनों सूरबीरों ने स्पार्टा का अभिमान दूरकर उस के गौरव का मलमेट किया औ अपने क्षुद्र नगर को यूनान के बीच प्रधान किया। परन्तु थीब्ज़ का ऐश्वर्य अति सूक्ष्म काल पर्यन्त रहा; इन दोनों यशस्वी औ नीतज्ञ पुरुषों के कारण उस की कीर्त्ति फैली; औ इन के मरजाने से लुप्त भई।

ईसवी शक के पूर्व ३६२ बरष से ले ३३६ तक अर्थात् मैसीडन देश के सिंहासन पर श्रीयुत सिकन्दर के बैठने तक, इन छब्बीस बरष के अन्तर में यूनान के बीच कोई राज्य ऐसा प्रतापी न हुआ जैसे स्पार्टा, एथेंस, औ थीब्ज़ के थे। यूनान की अब अज्ञान दशा आई; प्रत्येक राज्य निकटवर्त्ती लोगों को देख ईर्षा करने लगा, साधारण उपकार की चेष्टा नष्ट भई, औ दुष्टता, अन्याय फैलगया। यूनान की इस दुर्दशा में ऐंफिकटियानिक नाम सभा जो पूर्व काल में सब का भला करने को स्थापित हुई थी, उस ने साधारण लोगों में युद्ध रूपी अग्नि सुलगाई जो दश बरष पर्यन्त रही। यह दृष्ट आता है कि ईसवी शक के २५७ बरष पूर्व फोकीशीअन लोगों ने डेल्फी नाम पवित्र मंदिर की भूमि को जोता, तब उसी सभा ने उन्हें दण्ड दिया। परन्तु उन्हों ने एका एकी डेल्फी पर चढ़ औ उस अति धनाढ्य मन्दिर का संपूर्ण द्रव्य लूट, यूनान के सब भागों में से ठेके की सेना रख उस द्रव्य में से बेतन दे औ थीब्ज़ निवासी औ उन के सहायक लोगों से लड़ने की आज्ञा दी, इसलिये कि ये दोनों चिरकाल से एपालो नाम तीर्थ स्थान के रक्षक थे। यूनान में इस अतिशय द्रव्य के फैलने के कारण फारसवालों की घूंस से जा यूनानियों का जो कुछ सुव्रत शेष रहा था सोभी नष्ट होगया।

अब यूनान के प्रजा प्रभुत्व नष्ट होने का वर्णन आता है। इस महा कठिन काल में फिलिप नाम परम निपुण राजकुमार जो ईपामीनांदस का शिष्य था, मैसीडन के सिंहासन पर बैठा। वह दो बरष के बीच संपूर्ण संकट से पार होकर, यूनान को पराजय करने के व्यापार में लगा, और थोड़ेही काल पीछे ईसवी शक के ३३८ बरष पूर्व चीरोनिया स्थान की लड़ाई

जीततेही यूनान का प्रभू हुआ। जब वह यूनान में साम, दाम, दण्ड, भेद करके अपनी सामर्थ स्थापित करता था, उसी काल उस के सेनापतियों ने उस के राज्य के उत्तर ओर पर्वत मय थेरेस देश पर चढ़ाई की, औ यूनानियों ने थेरेस के तट पर जो बस्तियां बसाईं थीं उन को जीत लिया, औ उन बस्तियों के कारण जो यूनान का बड़े काल से अभिमान चला आता था सो जाता रहा। पीछे उस ने अपने संपूर्ण कार्य पूरे करके फ़ारस के महा राज्य पर चढ़ाई करने का मन में बिचार किया, परंतु ईसवी शक के ३३६ बरष आगे किसी मनुष्य ने उसे छिपकर मारडाला, तब उस का पुत्र श्रीयुत सिकन्दर सिंहासन पर बैठा, उस ने बारह बरष के बीच भूमि के पश्चिम भाग में सब व्यापारों का परिवर्त्तन किया। उस की जय होने के प्रताप से यूनान के व्यापार ऐसे अत्यन्त रूप से पलट गये कि जिन का फिर कभी उदय न भया। अब हम उस के अद्‌भुत कर्मों का प्रसंग कहेंगे।

॥ ६ अध्याय ॥

॥ श्रीयुत सिकन्दर का ॥

॥ विषय ॥

सिकन्दर की विद्याभ्यास करने का विषय—
उस की वृद्धि—पहला वार्षिक युद्ध डेन्यूब
नदी पर—यूनान में वार्षिक युद्ध—
चढ़ाई फारस पर—ग्रैनाईकस की लड़ाई—

एशिआ मइनर का जीतलेना—इसस की लड़ाई—टयर का घेरना औ लूटना—मिसर को जय करना—ऐलेकजें़ड्रिआ की नीम—आरवेला की लड़ाई—फारस को जय करना—दारा की मृत्यु—बैक्ट्रिआ और ड्रेनसाक्सीआना के कर्म—क्लईटस का बध, हिन्दुस्थान पर की चढ़ाई—पोरस की हार—सिकन्दर का फिरना—औ उस की मृत्यु—अब इन सबों का वर्णन करेंगे*

फिलिप ने श्रीयुत सिकन्दर को अरस्तू नाम पण्डित से विद्या पढ़वाई, उस काल अरस्तू सब विद्वज्जनों के बीच शिरोमणि था, सिकन्दर की यही अति प्रशंसा है कि शिष्य गुरू के योग्य था औ गुरू छात्र के योग्य थे, इसलिये इन दोनों की बड़ी महिमा थी। श्रीयुत सिकन्दर बीस वरष की अवस्था में सिंहासन पर बैठा।

जिस दिन सिकन्दर सिंहासन पर बैठा तो देखा कि हमारे भण्डार में द्रव्य हमारे ऋण से अष्टगुणित न्यून है। चारों ओर से ऐसे ऐसे महा संकट औ आपत्ति पड़ती थीं कि जिन के बोझ से सामान्य राजा दबजाता। उस के पिता के नवीन महाराज्य के प्रजागण जो उत्तर पूरब, और पश्चिम में थे उस की आज्ञा भङ्ग करने में उद्यत हुए। और यूनानियों ने अति ज्ञानी औ बड़े परामर्श करनेवाले फिलिप के सिंहासन पर छोटेसे बालक को देख चित्त में विचारा कि हम भी फिर स्वाधीन होजांय। परन्तु यह युवा पुरुष जो अब

राजगद्दी पर बैठा था, उस की बुद्धि इन कठिनताओं के दूर करने से विशेष थी, औ उस के राज्य के पहले ही कर्मों से उस की बुद्धिवानी औ प्रताप ऐसा दृष्ट पड़ा, कि सब मन में कहने लगे कि यह निस्सन्देह दिग बिजय करेगा। वह पह लेही बड़ी छटैवां सेना लेकर यूनान के दक्षिण ओर चढ़गया, और वहां अपनी संपूर्ण बुद्धवानी से सब प्रकार के झगड़े रगड़े तोड़दिए, औ सबों की मति सुधार के एकसी करदी, औ लैसीडीमन को छोड़कर सबों ने स्वीकार किया कि यह फिलिप के सिंहासन पर बैठने योग्य, यूनान का प्रधान सेनापति, औ फारसवालों का प्रभु है। वह फिर मैसीडोनिआ में आकर शीत काल में युद्ध विषयक सामग्री बनाता रहा, औ वसन्त काल आतेही उत्तर निवासी वन्य लोगों पर चढ़ाई की, ये लोग थोड़ेही दिनों से उस के पिता के आधीन ऊए थे औ अपूर्व्व निपुनता करके सैन्य सहित हीमस नाम पर्व्वत जिस को अब बलकान कहते हैं उस से पार होकर शत्रु के सन्मुख जा उपस्थित ऊआ। और जब सिकन्दर उस मण्डल में पऊंचा जो बल्कान के उत्तर से ले डेन्यूव तक है, तभी वहां के उपद्रवियों का अधिपति उस नदी के एक उपद्वीप में जा छिपा, इसीं बीच श्रीयुत सिकन्दर ने अपने जहाज मगाकर उस उपद्वीप में जाने का उद्योग किया परन्तु वह सफल न भया। तिस पीछे उस ने सुना कि मेरे पिता के जीठी नाम प्राचीन बैरी बडी भारी सेना लाकर नदी के साम्हने तट पर इकट्ठे ऊए हैं वह उन को अपनी बुद्धि का चमत्कार दिखाने के लिये रातही में बेड़े पर चढ़ निजसेना सहित इस महा नदी डेन्यूब के पारगया; बिना सेतु उस दिनलग कोई इस नदी के पार न ऊआ था। वह शत्रु के सन्मुख ऊआ, औ उन्हें हरादिया, और फिर उसी

विजय की रात में उस धारा को पारकर अपनी सेना सहित पड़ाव मे आपहुंचा। यह उस का बीरता युक्त अद्भुत चरित्र देख आस पास के सब देशवाले भयभीत हो आपही आप उस के आधीन हुए। जब वह वहां से अपने घर को फिरा आता था, तब मैसीडन के उत्तर पर्व्वतमय छोटे से इल्लिरिआ देश के दो अधिपति लोगों ने अस्त्र शस्त्र लेकर घाटियों में आ उस का मार्ग रोकने के लिये धमकाया। अब एका एकी ऐसा भारी संकट आया कि जिस को उस ने आज तक न देखा था, तथापि निज बुद्धिबल से शत्रुओं को संपूर्ण रूप से पराजय किया, औ फिर मैसीडन का बड़ा मार्ग लिया। जब उस के रुकने के समाचार यूनान में पहुंचे और सर्व्वत्र चर्चा फैल गई कि वह वहां संपूर्ण रूप से कटमरा, इस संवाद को सुनते ही थीब्ज़ के लोग मन में बड़े फूले, और झट सिकन्दर की आज्ञा छोड़ दी, और जो सेनापति सिकंदर की ओर से उस नगर पर आज्ञा करते थे, उन की कटा करडाली। जब आज्ञा भङ्ग होने के समाचार इस महा बीर को पहुंचे, तो उस ने बिचारा कि अब ढील करना अनुचित है, तो ऐसी शीघ्रता पूर्वक इल्लिरिअन पर्वतों से उतरा कि जो किसी के मन में भी न आवे, औ यूनान के उत्तरभाग को पारकर चट थीब्ज़ के अगाड़ी आ चमका, तिस काल नगर निवासी ऐसा विचार कर प्रसन्न होते थे कि याती वह अबतक डेन्यूब के तट पर रुक गया, अथवा कहीं पर्वतों में मारा गया। उस काल प्राचीर वेष्टित नगर को जय करने में कई बरष लगते थे; औ एथेंस वालों ने जब इस नगर को लिया था तब उसे तीन बरष तक घेर रक्खा था। जब थीब्ज़ लोगों को सिकन्दर ने अपने आधीन होने के कारण कहा तो उन्हों ने देखा कि हम को

बऊत काल से कोई दण्ड नहीं दे सका, इसलिये उन्हों ने बड़े अपमान पूर्वक सिकन्दर के कहने का निषेध किया। परंतु सबों की आशा के विपरीत पहली ही चढ़ाई में नगर उस के हस्त गत ऊआ। सिकन्दर ने इस पराजित नगर के संग ऐसा काम किया कि जिस से उस के नाम को कलंक लगगया। आज्ञा दी कि वृद्धि बालक आदि जो कोई को देखो काठा करो; प्राचीर को ढाकर धरती के समान की; और जयवन्त के पक्ष-वालों को छोड़कर जो जन शस्त्रमुख से बचे थे उन को दासों की न्याईं बेचगेरा। कोई २ इतिहासवेत्ता कहते हैं कि यह अत्यन्त क्रूरता उस के संगी यूनानी योद्धाओं ने करवाई, इन लोगों ने इस नगर को प्रधान देख ईर्षा मान उस का विनाश किया; तथापि आज्ञा देने के कारण निस्संदेह सिकन्दर ही का दोष था; क्योंकि वह उस काल में बड़ा विद्वान था; इस-लिये उसे योग्य था कि ऐसा असत्कर्म न करता। उस के शीघ्रता पूर्वक आगमन ने, औ इस चढ़ाई में जय होने से जो कोई के मन में भी न आवती थी, इन दोनों कर्मों ने सब यूनानियों के हृदय कंपायमान करदिये, और उन के चित्त में निश्चय करादिया कि आज लग पृथ्वी के बीच सिक-न्दर के समान युद्ध विषयक कर्म में कोई उत्पन्न न ऊआ था। मैसीडोनिआ के राजा का यह प्रथम युद्ध जो नैपोलिअन बोनापार्त्त ने इटली में प्रथम युद्ध किया उस का स्मर्ण कराता है, जो इस काल का सिकन्दर था।

इस प्रकार से यूनानी लोग डरकर बशीभूत ऊए, तिस पीछे सिकन्दर ने फारस पर चढ़ने का उद्योग किया, इस महाराज्य का सत्यानाश करदेना, यही मुख्य कार्य उस के जन्म का था। फारस के भूपति ने अपने महाराज्य की रक्षा के

खिये खदेशीय सेना भिन्न श्रीर पचास सहस्र यूनानियें। की ठेके की सेना रक्खी थी; ये मनुष्य सिकन्दर की सेना के समान साहसी थे, केवल इतनीही न्यूनता थी कि कोई उस के समान उन का प्रेरक न था। यह महावीर सिकन्दर दिगविजय करने के लिये, श्रौ फारस के महाराज्य का मलमेट करने के अर्थ, केवल तीस सहस्र ३०००० पदचारी श्रीर ४५०० अश्वारोही सैन्य लेकर चढ़ा, परंतु ये सब मनुष्य छटेंवां, श्रौ युद्ध संबंधी सब कष्ट सहनेवाले थे, श्रौ इस दल के सेनापति ऐसे कुशल, बुद्धिवान, श्रौ साहसी थे, कि जिन के तुल्य आजतक कोई फिर पृथ्वी में न उत्पन्न भया।

ईसवी शक के पूर्व ३३४ वर्ष के बीच वसन्त काल में, सिकन्दर अपने बाईसवें वर्ष की अवस्था में, आप ही अपनी सेना का अधिपति होकर हेलेसपांट के मुहाने को गया, जो यूरप से एशिआ को अलग करता है, इस स्थान में उस का जहाज़ समूह उस के आने से पूर्व आ पहुंचा था, वहां से सेना जहाजों पर बैठ चली, श्रौ सिकन्दर अपना जहाज आप ही खेताजाता था, श्रौ बड़े उत्साह पूर्वक अपने मन में अनेक विचार करता जाता था, श्रौ जब चलते चलते एशिआ के तट पर पहुंचा, झट जहाज से कूद थलपर आ कहा कि आज से यह मेरा खण्ड है। इस पीछे जब उस की सब सेना उतर आई तब अत्यन्त शीघ्रता करके येनाईकस नदी के तट पर उसे ले आया, इस के साम्हने के तटपर सिकन्दर का मार्ग रोकने के लिये फारस के सेनापति निज दल सहित इकट्ठे हुए थे। फारसवालों को योग्य था कि हेलेसपांट मुहाने पर आके सिकन्दर के आगमन का अवरोध करते, श्रौ संभव है कि जो यहां के नरपति का महा निपुण यूनानी मेंटार नाम मुख्य

सेनापति होता तो यह बात होती, परंतु थोड़े ही दिनों पहले वह मरगया था। जब ग्रैनाईकस के तट पर थे, तब सिकन्दर के परमीनियो नाम मुख्य सेनापति ने अति संकट देख सिकन्दर को कुमति दी, कि इस नदी को मत पार हो परंतु महावीर श्रीयुत सिकन्दर ने बुद्धवानी से कहा, कि सुनो अति कठिन हेलेसपांट मुहाने को पार कर यहां तक आये, अब क्या इस क्षुद्र नदी से रुक कर अपना सब यह महा उद्योग व्यर्थ कर देंगे। तिस पीछे जहां फारसवालों की मुख्य अश्वारोही सेना औ सब अरिदल इकट्ठा हो रहा था, सिकंदर उन के सन्मुख ही नदी को पांवों पांवों उतर गया, और अपने कटक को अनेक सूरता की बातें सुना बैरी के सन्मुख होते ही उसे संपूर्ण रूप से हरादिया। कई फारस के सेनापति औ इस राज्य के अनेक महाजन इस युद्ध में खेत रहे; परंतु महासय औ दयावन्त सिकन्दर ने बड़े आदर मान से उन की मर्णक्रिया करी। अब ग्रीष्म ऋतु का अन्त होते ही उस ने अपनी सेना का प्रधान भाग शीतकाल के बीच सार्डिस उप द्वीप में भेजदिया, औ कटक के अध्यक्ष लोग औ और जन जिन के तुरन्त ही विवाह हुए थे उन को घर जाने की छुट्टी दी, औ अपने मन में विचारा कि इस उदारता के कर्म से बहुत से नवीन योद्धा मेरे निकट आवेंगे; परन्तु आप किंचित भी विश्राम न लिया, औ थोड़ासा छटैवां दल लेकर, एशिआ मइनर में समुद्र के तीरही तीर बहुत दूरतक चलागया, औ एशिआ संबंधी यूनानियों ने जो देश बसाया था, उस संपूर्ण को जीत लिया, इस रीत से फारसवालों के नौका संबंधी आश्रय घट गये। तिस पीछे उस ने एशिआ मइनर की दक्षिण सीमा पर दूरतक जा टारस नाम पर्व्वत में प्रवेश किया, यद्यपि इस काल

में पृथ्वी पर बड़ा भारी हिम था, तथापि फ्रिरिजिया को संपूर्ण प्रदेश को जय किया। यद्यपि इस शीतकाल के युद्ध में कोई बड़ा चमत्कारी कर्म नहीं हुआ, परन्तु इस युद्ध से महा संकट के बीच उस का स्वर्मापन, पराक्रम, औ अच्छे अच्छे उपाय दृष्ट पड़े जिन से सबों ने उस को सच्चा बीर जाना। बसन्त काल के आते ही जो सैन्य घर को गई थी बहुत से पराक्रमी नवीन कटक सहित फिरी, औ सिकन्दर पर्व्वतों पर चढ़ गार्डिअम नगर में पहुंच, पारमीनिओ को सार्डिस से इस स्थान में कटक लाने की आज्ञा दी।

जब दल फिर इकट्ठा होगया, तब सिकन्दर ने दूसरे बरष के युद्ध करने का प्रारंभ किया। केपेडोशिआ औ पफ्लेगोनिआ को जीतलिया। तब उस ने टारस पर्व्वत की घाटियों में आकर, सिलिशिआ के समुद्रतीर वर्त्ती प्रदेश को प्रस्थान किया, और वह वहां उष्णता में आ सिडनस नाम नदी में न्हाते ही रोगार्त्त हुआ, औ बड़ी कठिनता से उस का जीव बचा। जब वह अच्छा हुआ तब यह प्रसन्नता सुनी कि जिन सेनापतियों को उस ने अपने पीछे छोड़ा था, उन्हों ने सब शत्रुओं को पराजित किया, औ इस वर्ष के आश्विन महीने में संपूर्ण एशिआ भी उन के आधीन होगया। फारस के राजा का यूनानी मेमनन नाम ठेके के दल का सेनापति जो महा निपुण था इसीकाल में मरगया। इसी बीच दारा ने अपने युवा बैरी का विनाश करने का विचार कर असंख्य दलले वनको पार-कर प्रस्थान किया। फारस के राजा ने तीस सहस्र यूनानियों को ठेका देकर उन के स्वदेशीय लोगों के सङ्ग लड़ने के अर्थ रक्खा था, जिन के कारण से उन की सेना का प्रधान बल विशेष हुआ औ ये सिलिशिआ के मण्डल में उत्तरे हुए थे। दारा

ने अच्छे अच्छे उपाय करके सिकन्दर की सेना की पिछाड़ी ली, और उस के औ उस के नवीन पराजित एशिआ मइनर के बीच अपना पड़ाव डाला, जिस के कारण सब को निश्चय करके सिकन्दर की हार का बोध हुआ। दोनों ओर की सेना इसस नाम स्थान में मिली, यह स्थान एक धजीरसी है जिस के एक ओर समुद्र औ दूसरी ओर चट्टान हैं। दारा का कटक संख्या में एक लक्ष पैंतालीस सहस्र १४५००० था; औ सिकन्दर की सेना तृतीयांश अर्थात् चालीसेक सहस्र थी; थोड़ेसे काल तक युद्ध में दुवधासी रही कि नजानिये किस की जय होगी; निदान सिकन्दर ने अपनी अश्वारोही सेना का अधिपति हो बड़ा शरीर संबंधी परिश्रम कर जय प्राप्त करी; फारसवाले हार रणभूमि को छोड़ भागे, औ लोग ऐसा कहते हैं कि एक लक्ष दस सहस्र मनुष्य खेतरहे। राजा ने सब से पहले भाग कर अपना जीव बचाया, औ उस की माता स्त्री औ सब परिवार प्रतापी सूरबीर प्रारब्धी सिकन्दर के हस्त गत हुए। जो जो देश सिकन्दर से मिलने में दुवधासी करते थे वे सब इस महा जय को देख उस के आधीन हुए, औ अगाड़ी को देश जय करने का मार्ग सुगम हुआ। सिकन्दर ने पारमीनियो को आज्ञा दी कि तुम शीघ्र डेमास्कस नगर को जाओ, उस ने आज्ञा पाते ही झट जाकर फारस के राजा का भण्डार औ राजद्वार ले लिया; परन्तु इस भगोरे राजा ने अपने पीछा करनेवालों से बचकर फिर फारस के राजधानी नगर में प्रवेश किया।

सिकन्दर ने इसस स्थान से चल भूमध्यस्थ समुद्र के तीर ही तीर होकर फिनिशिआ देश, जो यूनानियों की विद्या की आकर था उस में प्रवेश किया। उस ने इस संपूर्ण विस्तृत

देश के बीच टयर नगर को छोड़ और कोई अपना विरोधी न देखा, यह नगर सब समुद्र तीरवर्त्ती नगरों की गणना में मुख्य था। यह अभिमानी नगर फिनिशिआ से थोड़ी दूर एक उपद्वीप पर बसा था, और उस काल में पृथ्वी भर के बीच व्योपार में मुख्य था, औ जैसा इस में अतिशय द्रव्य तैसा ही यह अत्यन्त अहंकारी था। सिकन्दर ने नगर निवासियों से इस में प्रवेश करने की आज्ञा माङ्गी, इसलिये कि मैं यहां बलिदान करूंगा; परन्तु उन्हों ने इस बात को न माना, तब सिकन्दर ने उस के घेरने का उद्योग किया। टयर नगर का घेरना केवल सिकन्दर ही की आयु का अत्यन्त आवश्य वृत्तान्त न था, परन्तु प्राचीन इतिहासों में भी यह अत्यन्त स्मर्ण करने योग्य वृत्तान्त था, यह नगर तो आप ही से बड़ा दृढ़ था, पर अनेक गुणों करकै आश्चर्य पूर्व्वक पक्का किया, औ बड़े हठीले पन से उस की रक्षा की। सिकन्दर ने आगे और नगरों के घेरने में जो जो संकट देखे थे यहां उन से भी विशेष दृष्ट आये; परन्तु उस ने अपनी बुद्धिवानी की महा शक्ति से सब का मलमेट कर पांच महीने के पीछे उस पर चढ़ाई कर ले लिया, टयर की समुद्र संबंधी आज्ञा नष्ट होते ही तुच्छसा होगया। परंतु जैसा उस काल में व्यवहार था, सिकंदर ने भी पराजित लोगों पर वैसाही क्रूरता से किया, इस कारण उस के महा कर्म का यश नष्ट होगया। टयर के विगड़ने से फारस की भी समुद्र संबंधी शक्ति जातीरही। थोड़े दिनों पीछे दारा ने अपना कुटुंब छुड़ाने के लिये दूत के सङ्ग सिकन्दर को असंख्य द्रव्य भेजा, और यह कहाया, जो हमारे साथ संधि करो, तो हम तुम्हारे सङ्ग अपनी एक कन्या का विवाह करदें, औ उफरात नदी के पश्चिम जो एशिआ के भाग हैं, वे सब तुम्हारे अर्थ

अर्पण करैं; परन्तु सिकन्दर ने यह कहकर उस का निषेध किया, कि मैं संपूर्ण एशिआ को अपना समझता हूं, तो किस लिये संपूर्ण का त्याग कर एक भाग को अङ्गीकार करूंगा।

सिकन्दर ने टयर को वशीभूत करकै पैलेष्टइन को प्रस्थान किया, जो तुरन्त उस के आधीन हुआ। वहां से मिसर को गया, औ सात दिन के बीच गेज़ा स्थान से पेल्यूज़िअम में आया, यद्यपि मिसर निवासी दो सौ २०० बरस से अप्रसन्नता पूर्व्वक फारसवालों के आधीन हुए थे, उन्हों ने इस जयवन्त के आते ही अतिप्रसन्न हो द्वार खोल दिये। सिकन्दर ने नइल नदी के मुहाने पर पहुंच, बड़े बड़े चमत्कारी कर्म्म किये, औ इस की जीत सदा सब प्रजा को परम उपकारी होती थी, सो वहां भी व्यौपार हुआ, औ तुरन्त एक नगर बसाने की आज्ञा की। सिकन्दर ने ग्रहनिर्म्माण आदि विद्या जाननेवाले डीमैरेटस नाम जन को नगर बनाने की आज्ञा दी; इस जन को उस ने ऐसे काल में प्राप्त किया था जब वह एफीसस के मन्दिर को बनाता था औ इस बात के लिये असंख्य द्रव्य स्थापन किया, औ भूमध्यस्थ समुद्र के तीर एक बड़ा पराक्रमी नगर बसा, और टयर नगर का व्यौपार घटकर यहां विशेष हुआ। इस नगर के बसने से सिकन्दर की कीर्त्ति अनेक वर्षों तक चली-गई। यद्यपि इस काल में इस नगर की दशा घटती हुई है, परन्तु यह अपने प्राचीन गौरव को शीघ्र ही प्राप्त करता, जो स्वयेज़ नाम डमरूमध्य कट कर बाणिज्य वस्तु इस मार्ग होकर आवागमन करती। तिस पीछे सिकन्दर ने मिसर के बीच पूरब ओर मरुभूमि को पार कर जूपीटर ऐम्मन के मन्दिर के दरशन करने को गया, जिस के चारों ओर अनादि औ बंझड़ रेत के थल हैं परन्तु मन्दिर के निकट हरित भूमि औ फल

वान हुए हैं। वह नईल नदी के भरनों तक जाता, परन्तु दारा अपने महा अपरिमित राज्य में से पुनर वार युद्ध करने के लिये पूरव का संपूर्ण दल इकट्ठा करता था। इसलिये सिकन्दर काम काम के पदार्थों को देखने लगा, औ फिर टयर नगर में आया।

तिस पीछे टयर में बहुतसी जौनारैं औ बलि दानादि करकै, सिकन्दर ने सेना सहित बैबीलन की ओर प्रस्थान किया। वह भूमध्यस्थ समुद्र के तट से उफरात के तीर पर आ वहां सेतु बांध सेना को उतार मेसेपोटेमिआ में लेगया, यह देश उफरात औ टाइग्रिस नदी के बीच में है। मेसेपोटेमिआ में जाते हुए पांच महीने लगे; उस की सदैव के चलने की शीघ्रता देख, इस याचा में इतना विलंब हुआ, कि जिस का विश्वास नहीं हो सकता; और यहां के उस के प्रतिदिन के चलने की पुस्तक का वर्णन नष्ट होगया है, इस लिये अब तक उस विलंब का आशय नहीं निश्चय भया। इसी बीच दारा ने असंख्य दल सहित टाइग्रस नदी के बांये तट से आरवेला स्थान को प्रस्थान किया, जहां युद्ध संबंधी वस्तु इकट्ठी कर रक्खी थीं, वहां से ऊपर को बीस कोस चलके एक बड़े चौड़े मण्डल में छांवनी गेरी, इस के पश्चिम भाग में टाइग्रस नदी, पूरव में लाइकस नाम सरिता, औ उत्तर में पर्व्वत हैं। यहां उस ने एशिआ का अधिकार प्राप्त करने के लिये अन्तका संग्राम स्थापन किया। सिकन्दर निर्व्विघ्न टाइग्रस नदी को पार कर पांच दिवस में अरि के सन्मुख आ पहुंचा, जिस के अनगिनत कटक से वह मण्डल ऐसा आच्छादित होरहा था, कि जहां तक देख सको तहां तक टीडीदलसा दृष्ट आता था। एक इतिहास वेत्ता ने इस दल की संख्या दश लक्ष १००००००

कही है परन्तु सदा की यह चाल है कि एशिआ संबंधी सेना की संपूर्ण संख्या में से युद्ध करनेवालों की आधी संख्या रक्खैं हैं। मेसीडोनिआ के राजा की सेना केवल सैंतालीस सहस्र ४७००० थी। फारस की सेना में नाना देश के लोग थे, औ एशिआ के संपूर्ण अच्छे अच्छे योद्धा भी इकट्ठे थे; केवल इतनी ही न्यूनता थी कि कोई एक ऐसा बुद्धिमान सेनापति न था कि जिस के कहने से सकल कटक युद्ध विषयक कर्म्मों में उपस्थित रहै। सिकन्दर ने शत्रु की सेना के बीचों बीच से जहां राजा का झण्डा गड़ा हुआ था, युद्ध का प्रारम्भ किया, पीछे श्रीयुत साहसी सिकन्दर ने बड़े भारी आश्चर्य पूर्व्वक वीरता के कर्म कर अरि के इस भाग को हरा, जब ही राजा के पकड़ने को था, तभी पारमीनिओ नाम सेनापति ने जो बाईं ओर संग्राम करता था प्रतिपक्षी से दबाव पाकर सहाय करने के लिये महाशय सिकन्दर से प्रार्थना करी। झट सिकन्दर ने जयकारी अश्वारूढ़ सेना ले उस की सहायता कर जय प्राप्त करी, परन्तु इसी बीच फारस का राजा भागकर जैसें तैसें बचा। एशिआ खण्ड की सेनाओं में यहीरीत है कि राजा के भागते या-मरते ही लड़ाई हार जाते हैं, जैसें राजधानी को लेने से सब देश आधीन होता है। इसीलिये जब इस अनगिनत दलने दारा को न देखा, तब सब के पैर उखड़े, औ तू कहीं, मैं कहीं तित्तर वित्तर हो भागकर बचे। इस युद्ध में फारसवालों की ओर के तीन लक्ष मनुष्य खेत रहे, औ इतनें ही बंदुए हुए। सिकन्दर ने दारा का पीछा करने में किंचित काल भी न खोया, परन्तु जब वह पारमीनिओ की सहायता करता था, तभी दारा अपना जीव ले भागा था। यद्यपि यह स्थान आरबेला से बीस कोस दूर है तथापि इस युद्ध को आरबेला की लड़ाई

कहरते हैं। इस युद्ध से एशिआ की दशा एका एकी स्थिरता को प्राप्त हुई।

सिकन्दर ने इस समर भूमि से बैबीलन को प्रस्थान किया, प्रलय के पीछे पहले ही पहल यही राजधानी नगर हुआ, औ बहुत काल तक एशिआ में मुख्य रहा, परन्तु अब घटने की दशा में था। वहां उस ने पुराने अवशिष्ट मन्दिर आदि पदार्थ देखे, औ बीलस का मन्दिर जो पृथ्वी भर में प्राचीन था, उस के फिर सुधारने की आज्ञा की। बैबीलन से वह स्पूसा नगर में आया, जो स्थान फारस के राजा का बड़ा प्रिय था, औ एशिआ का बचाखुचा संपूर्ण द्रव्य यहां ही धरा रहता था; यह कोश सिकंदर के हाथ लगा, और इधर उधर के देशों के जय करने में बड़ा उपकारी हुआ। उस ने स्पूसा को तज परसैपोलिस में प्रवेश किया, जिस को फारस के नरेश ने पूरब का द्रव्य लूट खसोट कर सुसोभित किया था। कुछेक काल पीछे उस ने फारस के महा राजाधिराज के सिंहासन पर बैठ जो जो अद्भुत औ अच्छे अच्छे पदार्थ उस नगर में थे, उन का अवलोकन कर उसे लुटवाया, औ यह कहकर फिर जला दिया, कि दोसो वर्ष आगे जो फारसवालों ने एथेंस को दग्ध किया था, उस का पलटा अब हमने लिया; प्रत्येक जयवन्त लोगों का यह अनुचित कर्म है, औ सिकन्दर ने अति-विद्वान होकर ऐसा कर्म किया, इसलिये उस का यह महा अपराध क्षमा करने योग्य न था। चौथे वर्ष का युद्ध परसिपोलिस नगर में समाप्त हुआ। सिकंदर अब दारा के पकड़ने में लगा, और यह राजा आरबेला की लड़ाई से ले चार महीने तक एकबैटना नगर में निरुद्योगी औ आलस्पीसा बनारहा, और मन में ऐसी झठी झूठी बातें विचारता रहा, कि दैव

इच्छा से मेरी सुदशा आवै तो मेरा शत्रु हारकर कहीं मारा जाय।

दारा सिकन्दर का आगमन सुनतेही अटूट द्रव्य औ नौ सहस्र सेना ले उत्तर ओर भागा। इस जयवन्त ने एकबेटना जिस को अब इस्पाहान कहते हैं वह नगर फारस के महा राज्य की मनोहर राजधानी थी, उस में पहुंच कर अपनी थोड़ीसी अश्वारूढ़ सेना को उदारता पूर्व्वक दान दे बिदा किया, इसलिये कि वे फिर अपने घरवालों से जाकर मिलें; तिस पर भी अनेक मनुष्यों ने घरजाने का निषेध करके कहा कि हम अभी तुम्हारी सेनाही में बने रहैंगे। तिस पीछे सिकंदर ने दारा राजा का पीछा किया, औ अति शीघ्रता करके भाजिय नाम स्थान में आया, जो पर्व्वतों की घाटियों के निकट है, औ जिस से कास्पिअन सागर दिखाई देता है। पीछे वहां सेना को विश्राम देने के अर्थ पांच दिन ठहर फिर गमन किया; और जब चलते २ दो दिन हुए, तब उस ने सुना कि दारा पकड़ा गया, औ बेसुस, सेटीबारजेनीज़ औ कोई और उस के प्रधान दास उसे बांधकर लिये जाते हैं। सिकंदर ने घोड़ों की छटेंवां सेना ले आप ही प्रेरक बन, एक क्षणमात्र भी ढील न कर दारा की रक्षक सेना का पीछा किया, और इसी परिश्रम में लग न आप न अपनी सेना को दिन में कुछ सुख दिया, न रात को सोने दिया। निदान सिकंदर ने प्रसन्नता की बात देखी, कि प्रदेशाध्यक्षों की सेना मेरे अगाड़ी अगाड़ी मंदगति से तित्तर बित्तर हो चली जाती है। जब इन विश्वास घातियों ने सुना कि सिकंदर हमारे निकट आ चुका, तब वे झट दारा के शरीर में बहुत से मृत्यु जनक घावकर, उसे मरता हुआ मार्ग में पटक भाग गये। दारा

सिकन्दर के आने से पहले ही मरगया था, इस बात को देख कर जयबन्त बड़ा शोकाकुल ऊआ औा आज्ञा दी, कि इन की महाराजाओं की सी मर्णक्रिया करो। इस रीत से सइरस राजा का घराना डूब गया, औा फ़ारस का महाराज्य नष्ट ऊआ, पूर्व के राजाओं की रीत से सइरस ने अपनी बुद्धवानी से इस राज्य को स्थापित किया था, सो राज्य उस के उत्त-राधिकारियों के हाथ में जाने से क्रम करके निर्बल होते होते अब नष्टता को प्राप्त ऊआ।

सिकन्दर ने दारा को पकड़ने के अर्थ इस देश में आकर अपने फिरने से प्रथम हिरकैनिआ देश को जय करने का निश्चय किया, यह देश पर्वतों और कास्पिअन समुद्र के बीच में है। यह प्रदेश फारस के अत्यन्त प्राचीन रुस्तम नाम वीर पुरुस के भ्रमण करने का स्थान था। यह सिकंदर की युद्ध याचा संपूर्ण रूप से सफल भई। वहां से फिरती बेर वे यूनानी जो फारस से वेतन पाते थे, औा दारा के प्रधान जन थे सिकं-दर से मिले, औा उन्हों ने उसे अब एशिआ खंड का अधिपति जान डण्डवत् की। तिस पीछे सिकंदर पूर्व ओर पार्थिआ के बीच याचा करके स्पूसा स्थान में पऊंचा, जो अब के खुरासान में है, वहां दारा के घात करनेवालों में से सेढीबारजेनीज़ नाम एक जन मन क्रम बचन से इस जयवन्त के आधीन हुआ, तब सिकंदर ने उस का राज्य उसे फिर दे डाला। इसी बीच वेसस ने राजसंबंधी मुकट पहर डोंडी फिरवा दी, कि आज से मैं दारा के स्थान में महाराजाधिराज हुआ। इस बात के सुनते ही सिकंदर ने बिचारा कि प्रथम इस को पराजय करना हमें आवश्यक है, यह सोचते ही झट उस को पकड़ने के अर्थ बैकट्रिआ देश का मार्ग लिया। इधर जब सैटीवारजेनीज़ ने

जयवन्त को इस महा उद्योग में लगा देखा, तब फिर अपने छल युक्त कर्म प्रगट कर उस के पास जो मैसीडोनिश्रां के लोग थे उन्हें मारडाला, श्रोर बड़ा सिर उठाया। तब सिकंदर ने बिचार किया कि अब इस बखेड़िये प्रदेश को पीछे छोड़ना अच्छा नहीं, तब अपना पूर्व प्रयत्न छोड़, बड़ी फुर्ती से दक्षिण दिशा को चल अकस्मात् राजद्रोही को आ लिया, श्री सिर उठानेवाले प्रदेशों को लेकर फिर अपना अधिकार स्थापित किया।

इसी बीच फारस के प्रदेशाध्यक्षों की बाधा करने की अपेक्षा, आपस का कुमता विशेष रूप से भय जनक हुआ था। इस कर्म में उस के दो प्रिय सेनापति मुख्य थे, एक तो पारमीनीश्रो जो सदा युद्धों में सिकंदर का संगी रहा श्री दूसरा पारमीनिश्रो का फिलोटस नाम पुत्र। पीछे उन को सेनापतियों की पंचायत में भेजा, श्री जब उन्हों ने बड़े पक्के प्रमाणों से निश्चय किया कि ये दोषी हैं, तब उन्हें श्रीयुत सिकंदर ने गल दिवादिया। तिस पीछे सिकंदर पूर्व दिशा को चलागया, श्री अत्यन्त शीतकाल में कंदहार के प्रदेश को पार किया। उस ने पैरोपैमीसन नाम पर्वत के तले पहुंच कर पांच वें वर्ष का युद्ध परिसमाप्त किया, और अपनी थकी हुई सेना का श्रम निबारण करने के अर्थ उस को दो महीने का अवकाश दिया।

तिस पीछे अगले वर्ष के आतेही उस ने सेनासहित पर्व्वतों से पारहो बैकट्रिया देश में प्रवेश कर छटे वत्सर के युद्ध का प्रारंभ किया। उस के धार्मिक इतिहास वेत्ता ने कहा है, कि सिकंदर ने अति जाड़े पाले के बीच, जब अनेक पदार्थों का अभाव था तोभी ऐसे संकट के बीच यात्रा की। जब ही वह बैकट्रिश्रा जिस को अब बल्क कहते हैं उस में पहुंचा, तभी

बेसस ने आक्सस् नदी जिस को इन दिनों में जिह्न बोलते हैं, उसे पारकर उस मनोहर देश में प्रवेश किया, जो जिह्न औ सिह्न के बीच पर्व्वत स्थली है, इस स्थान को कभी इंसा क्सिआना औ अब के लोग मावुलुलनेअर कहते हैं, इस के प्रधान प्रदेश को सागडिआना बोलते थे। जब जिह्न के तट पर पहुंचे तब सिकंदर के एक पक्के अश्वारूढ़ ने कुड़ कुड़ा के कहा कि हम शीत, क्षुधा, तृषा के मारे अति थकित होगये हैं, तब सिकंदर ने उन को बहुतसा द्रव्यदे और जो लोग लड़ने में असामर्थ थे उन सबों को उन के साथ कर घर जाने की विदा दी। आक्सस नदी की धार अति चौड़ी औ महा वेगवती थी, औ उस के तट ऐसे बालूमय थे कि जिनपर सेतु नहीं बंध सकता था। तब सिकंदर महा परिश्रम करके एक प्रकार की मसक इकट्ठी कर उस पर चढ़ा अपने कटक को पार उतार लाया। ज्योंही वह साम्हने के तट पर पहुंचा था, त्योंही बेसस के सङ्गियों ने उसे पकड़ जयवन्त के हाथों में पकड़ा दिया, जिस ने उस को अपमान पूर्व्वक कोरडे मार करके बैक्ट्रिआ को भेज दिया। और वहां से सिकंदर ने उत्तर ओर हो कर सिह्न नदी के तट को प्रस्थान किया, परन्तु उस के पीछे सागडिआना नाम प्रदेश में लोगों ने आज्ञा माननी छोड़ दी, इसलिये फिर वहां से फिरा औ यहां सिह्न के उत्तर तट पर टारटरी के लोगों ने सागडिआनावालों की सहायता करने का मता किया था। इस महा संकट के बीच सिकंदर बड़ा जाज्वल्यमान हुआ। इन राजद्रोही लोगों ने सात नगरों की शरण ली, जिन के चारों ओर अति अभेद्य भींत थीं। सिकंदर ने पांच दिवस में इन दुर्गों को ले लिया, तिस पीछे सइरोपोलिस नगर पर चढ़गया, जिस को उस के

क्रोटेरस नाम सेनापति ने उस के आने के पूर्व ही घेररक्खा था। उस ने एक छोटीसी नदी के मार्ग होकर सइरोपोलिस में प्रवेश किया, तब नगर और दुर्ग जयवन्त के हस्तगत हुए; यह नदी नगर की भींत के नीचे ही बहती थी, परंतु ग्रीष्म काल में सूख जाती थी। इन सब कामों को अतिशीघ्रता से कार ने के कारण उस की शक्ति द्विगुणित हुई, जब उस ने देखा कि राजद्रोहियों की सहायता करने के लिये सिथिआवालों की अश्वारूढ़ सेना सिह्हन के उत्तर तट पर ठायरही है; तब झट सेना सहित उन के सम्मुख होने को चला। ये सिथिआ या टार टर के लोग सदा उन देशों को दुखदाई थे, जो उन के दक्षिण पूरब एशिया में थे उन्हों ही ने महात्मा सइरस को हराकर मारडाला, जिस ने पूरब दिशा को जय किया था। इसी अशुभ स्थान के निकट जब सिकंदर पहुंचा, तब उस के सेना-पतियों ने झूटे झूटे भय से डरकार भविष्यत वाक्य कहनेवालों को समझाया कि तुम सिकंदर से कहो कि अब यात्रा में अश कुन होते हैं, तो सिकंदर डरकार इस मृत्युजनक नदी को पार न करैगा। परंतु जिस प्रतापी ने हेलेसपांट मुहने, उफरात, और टइग्रस नदी को पार किया, वह क्यों ऐसी छलयुक्त बनावट की बातों से डरैगा। सिकंदर बेड़े, घडनाई, और मसक और अन्य वस्तु जो जो प्राप्त करसका, इकट्ठी कर उन पै चढ़ मङ्गल दायक शकुनों के अर्थ ठहरा रहा। निदान दैवज्ञ लोग उसे न हरा सके, और उन की एक युक्ति भी न चली, तव हारमान चुप होरहे। उस ने नदी की धार पर कल जमा कर बाजा बजाने का प्रारंभ किया; अन्य लोग जो साम्हने के तट पर थे, उन्हों ने कभी कल के शस्त्रों का कर्म न देखा था, और जब ये कलैं

चलने लगीं तब वे भय खाकर पीछे को सरकने लगे। तब झट सिकंदर भोंपू बजवा घडनाई घेड़े धकेल धकाल सेना को पार कर उतरतेही टारटर लोगों के सन्मुख हुआ, तिस पीछे एक सूक्ष्म लड़ाई में हार कर ये भाग गये। परंतु सिकंदर ने आश्चर्यमान होकर उन का पीछा किया, तब अति उष्णता से व्याकुल हो शीतल जल पिया; त्योंही पसीने रुक गये औ मृतक तुल्य हो फिर अपने तंबू में आया। थोड़े काल पीछे उस का रोग गया, और प्रसन्न इस बात से हुआ कि शत्रु ने एक दूत के हाथ कहला भेजा कि हम आप की बिनती करते हैं कि अब लड़ाई मत करो औ हम से संधि कर लो, तब उस ने झट उस बात को स्वीकार किया। सिकंदर की इस जय के समाचार बन्य लोगों में फैल गये, औ जिन आस पास के टारटरियों को सिकंदर ने नहीं जीता था, अब तक उन का चित्त डामाडोल था सो वे भी अब उस के सहायक हो गये।

परंतु सिकंदर की इस महा कीर्ति के समैं में मैसीडोनिअन की सेना जो चिरकाल से जयवन्त थी अब वह भी एक कारण पाकर बड़ी लज्जित हुई। फारसवालों में स्पइटेमेनीज़ नाम परम निपुण सेनापति ने साग्डिआना प्रदेश में राजद्रोहपना किया था, तब सिकंदर ने उस के पराजय करने को कुछ कटक भेजा। यद्यपि यह सेना सदा जयवन्त रही थी, परंतु इस स्थान में अपने प्रभू से अलग होने के कारण धूर्त्त फारस वालों से हारकर बहुधा नष्ट हो गई। सिकंदर इस विपरीत समाचार के सुनते ही झट किंचित सेना ले बड़ा धावाकर चार दिन में समर कंद के बीच पहुंचा, जहां बखेड़ा हुआ था। तब स्पइटेमेनीज़ ने वन में भाग अपना जीव बचाया औ

जयवन्त ने जहां तक आवश्यक देखा तहांतक उस का पीछा किया, और आस पास विरोधी औ बखेड़िये गामवालों को बड़ी क्रूरता पूर्वक दंड दिया।

छटे बर्ष के युद्ध की समाप्ति में जब सेना शीतकाल के बीच विश्राम में थी तब एक ऐसा अत्यन्त क्लेश जनक वृत्तान्त हुआ, जैसा कभी सिकंदर की आयु में न भया था। संपूर्ण एशिआ के अधिपति अर्थात् सिकंदर ने उस में एक नवीन महाराज्य स्थापन करने की इच्छा की, औ एशिआ की रीत के वस्त्रादि पहरने का प्रारंभ किया, औ पूरब के राजाओं की रीत से अपनी सभा में नमस्कार बंदनादि करवाने की आज्ञा की खर्खरे औ सूरमा मैसीडोनिअन निवासी जो सब परिश्रमों में उस के संगी थे, निज रीत औ व्यवहारों के परिबर्त्तन का सहन न करसके और कभी कभी अपमान पूर्वक बुड़ बुड़ा के शब्द कहने से अपनी अप्रसन्नता जनाई। सिकंदर मन करके मद्य पान करने से घिन करता था परंतु कभी कभी कोई कारण बस से उसे करनी पड़ती थी। एक दिन सिकंदर सहित सब लोग एक भारी ज्योंनार में मदिरा पी मत्त हो खुली खुली बातें करने लगे। सिकंदर की प्रतिपालक दाई का क्लाइटस नाम भाई जिस ने ग्रैनाईकस की लड़ाई में उस का जीव बचाया था, वह भी मत्त हो कर प्रसन्नताई में अत्यन्त क्रोध जनक वार्त्ता करने लगा। जब उस ने फिर अधिक अधिक बातें कहीं तब तो सिकंदर न सह सका औ अपना क्रोध भी न रोक सका, झट बर्छी हाथ में ले ऐसी उस के मारी कि लगते ही वह मर कर उस के चरणोंपर आ पड़ा। सिकंदर ने अपने अतिप्रिय मित्र का रुधिर निज हाथ से बहाहुआ देख अपना महा पाप जान अति व्याकुल हो, तीन दिन तक किसी को

अपना मुख न दिखाया। निदान उस के सेनापतियों ने अनेक समाधान कर कर उस का दुःख मिटाया, औ कार्य करने में फिर जैसें तैसें लगाया।

सातवें वर्ष का युद्ध केवल सागडिआना औ बैकट्रिआ के सिर उठानेवाले लोगों के दमन करने में हुआ। इस युद्ध में अति क्लेश जनक परिश्रम हुआ, परंतु फल अति लघु। सबों की अपेक्षा यह युद्ध अप्रसिद्ध औ कीर्त्ति हीन है। इसलिये अब हम आठवें वर्ष के युद्ध का प्रसङ्ग कहते हैं। जब वह एक अभेद्य गढ़ी को जय करता था, तब वहां के अधिपति की राक्सेना नाम पुत्री उस के हस्तगत हुई। सिकन्दर ने उस की अति सुंदरता से मोहित हो उस से विवाह किया, जिस के कारण वहां के लोग अंत तक उस के विश्वासी औ मित्र भी रहे। तिस पीछे सिकंदर ने हिंदुस्थान के जय करने का प्रयत्न किया। इस महा उद्योग के पूर्व्व, उस ने अपनी प्रसन्नता के अर्थ फारस के महा राजा के आखेटस्थान में जा अपना शारीरिक अद्भुत पराक्रम दिखाने के लिये एक सिंह को निज हाथ से मारडाला। इसीबीच एक कर्म हुआ, कि उस का एक राज सेवक अहेर की रीत से भिन्न हो उस के औ सिंह के बीच में आया, तब उस की अज्ञानता के अर्थ उस को कोड़े लगवाये। इस बात से उस ने अति लज्जायमान हो सिकंदर का जीव लेने में महा कठिन उद्योग किया, औ इस दुष्ट-कर्म में औरों को भी मिलालिया। निदान यह बात प्रगट हुई, तब विश्वासघातियों को मारडालने की आज्ञा दी; परंतु उन्हों ने अपने मरण के पूर्व्व कैलिस्थीनीज़ नाम जन को भी दोष लगाया कि यह भी इस कुमते में था। वह एक असभ्य औ अव्यवस्थित पण्डित जो यूनान से जयवन्त के सङ्ग आया था,

औ कभी कभी अपनी स्वाधीनता के कारण क्रोध किया करता। उस को रक्षास्थान में रक्खा, औ वह वहां ही मरगया; सिकंदर की सेना के अध्यक्ष ने लिखा है कि वह बंदीगृह में मरगया; औ सिकंदर के शत्रुओं ने कहा है कि उस ने उस को अनेक प्रकार की पीड़ा दे गल दिवादिया; परंतु पढ़नेवाले बिचार करके आप ही जान लेंयगे कौन बात इन दोनों में ठीक है।

ग्रीष्म ऋतु का प्रारंभ होते ही सिकंदर ने झट काबुल में पहुंच हिंदुस्थान के जय करने का उद्योग किया, सबों की अपेक्षा यह कर्म पिछला औ अत्यन्त कीर्त्तिजनक था; संभव है कि इस नगर की नीम उसी ने रक्खी हो। वहां उस ने हिंदुस्थानी राजाओं को अपने वशीभूत करने के लिये बुलाया; तब टैक्सलीज़ नाम राजा जिस का राज्य सिंधुनदी के दोनों ओर था, उस ने उस का कहना झट मानलिया। तिस पीछे सिकंदर ने अपनी सेना के दो भाग किये; एक भागने तो सिंधु के तट पर जा सेतुरचने का प्रारंभ किया, औ दूसरा भाग आप ले उसी नदी के पश्चिम ओर के देशों को जय करने लगा। निदान उस ने सिंधु के आरण्यमय तीर पर पहुंच नौका बनवाय उस में बैठ उस स्थान को चला, जहां कल जाननेवाले उस की आज्ञा से सेतुबांधते थे। अपनी यात्रा के बीच वह निसा नाम नगर में ठहरा, तब वहां के निवासियों ने आकर कहा कि डइयोनिसस अथवा बैकस नाम राजा ने इस नगर की नीम धरी थी। इस बात के जानने से सिकंदर बड़ा प्रसन्न हुआ, औ अपनी आप ही प्रशंसा की, कि डइओनिसस महा बीर ने जो अति दूरतक जय करी थी उस की सीमा पर हम आ पहुंचे, औ अब मन में भरोसा होता है कि यहां से हिंदु

स्थान के बीचोंबीच पहुंचूंगा। निस्सा नगर से नौका समूह पुल की ओर गया, और उस ने सकल सेना सहित उस से पार हो हिन्दुस्थान के मण्डल में प्रवेश किया। सिंधु नदी के पार पूरव भाग में जो देश था सो तीन राजाओं के आधीन था; संभव है कि कश्मीर का अवीसीनीज़ राजा था; टैकसलीज़ नाम राजा जो तुरन्त सिकंदर के वशीभूत होगया; औ तीसरा पोरस जिस का राज्य हिडासपीज़ नदी के पूर्व भाग में था। इस पिछले राजा ने सिकंदर के आधीन होना बुराजान उस का मार्ग रोकने के लिये अपने दल को सजाया। सिकंदर ने सिंधु से टैकसिला स्थान को प्रस्थान किया, जहां पर्वती कठिन युद्ध के पीछे उस की सेना विश्राम लेने के लिये पड़ी थी। हिडासपीज़ नदी इस नगर के तलेही बहती थी; इस नदी के साम्हने तट पर सिकंदर के सब मार्ग रोकने के लिये पोरस की अश्वारूढ़ सेना पडी थी। इस नदी की बडी वेगवती धार आधकोस चौड़ी थी; इसलिये सिकंदर ने पोरस की सेना के सन्मुख हो नदी को पार करना असंभव जान छल किया। एक कोस ऊपर की ओर इस नदी के बीच अति क्षुद्र उपद्वीप जहां नदी की दो धार हो गई थीं। महा अंधेरी रात में आंधी के बीच जब उस की सेना का आवागमन न दृष्ट पड़ता था, न उन के चलने का शब्द सुन पड़ता था, ऐसे समय सिकंदर थोड़ी सी छटेंवां सेना लेचला। यद्यपि महा कठिनता थी तथापि जैसें तैसें करके सवेरे तक अपनी सेना को पार उतार लाया, औ अरिने जो आगा रोकने के लिये थोड़ासा दल भेजा था, उस से लड़ाई का प्रारंभ किया। जब वे हारकर पीछे को हटे, तो जाकर पोरस को चिताया, कि महाराज सिकंदर अपनी बलवान सेना सहित पार उतर आया। इस बात के

सुनते ही पोरस ने झट प्रधान दल ले बीरता पूर्वक अरि का सामना किया। इन दोनों में बड़े काल तक अति घोर युद्व ऊआ; निदान सिकंदर की प्राचीन साहसी सेना ने सब प्रकार के अबरोध दूर करके जय प्राप्त करी। तब हिंदुस्थानी सेना इधर उधर हो भागी, औा पोरस जयवन्त के हस्तगत ऊआ; तब सिकंदर ने बड़ी आवभगत से उदारता पूर्वक उस से व्यवहार किया। संपूर्ण उस का राज्य उसे फिर फेर दिया, और थोड़े बऊत जो नवीन देश जीते थे सो भी उसे दे दिये। वहां से भी सिकंदर चिनाव औा रावी नदी के पार ऊआ, वहां के लोग भी महा प्रतापी के आधीन ऊये, औा लडने के नाम कोई ने एक सींक भी न उठाई: केवल सिंगला के केथेअन लोगें। ने उसे दुख दिया, परंतु अन्त में वे भी आधीन हो गये।

तिस पीछे सिकंदर बेहा नदी के तट पर आया, यहां हिंदुस्थानियों का अति विस्तृत औा पराक्रमी राज्य था, जिस को उस दिन तक कोई यूरप के सेनापति ने न देखा था। इस महा देश का राजा चन्द्रगुप्त था, जो केवल पदचारी छह लाख ६००००० सेना रणभूमि में इकट्ठी कर सकता था, औा यह तेजस्वी सब प्रकार से सिकंदर के समान था। सिकंदर अपने पूर्वगत जयकारी कर्मों से प्रसन्न ऊआ, औा बड़े उत्साह पूर्वक अपनी सेना को पृथ्वी की सीमातक ले जाने का विचार कर, नदी पार हो, सेना सहित राजधानी नगर पाटलिपुत्र में जाने का उद्योग किया; परंतु तभी उस के कटक ने वहां से अगाड़ी जाने का निषेध किया। जो सेना लगातार नौ वर्ष पर्यन्त सिकंदर के संग रही थी, उस ने सिकंदर से कहा कि हमें ग्रीष्म की तपन से, औा पर्वतों के जाड़े पाले से, सदा रात दिन, ग्रीष्म औा शीतकाल में लडते लडते बडा परिश्रम ऊआ है। जैसा

कष्ट इस सेना ने सहा था ऐसा आगे पृथ्वी भर में कोई कटक ने सहन न किया था। लड़ते लड़ते जो शेष रहे थे वे घावों से परिपूर्ण थे, औ परिश्रम करने की सामर्थ न रही थी, तिन्हों ने अपने कुटुंब से मिलने की इच्छा की, औ आपस में कहा कि जो हम इस अनजाने हुए औ अपरिमित देश को जय करने के लिये सिकंदर के साथ जांयगे तौ बहुत थोड़े बचकर फिर घरवालों को देखेंगे। उन्हों ने बुड़ बुडा कर अपने अपने सेना पतियों से निवेदन किया, तब सिकंदर ने विचार कर देखा कि हमारा उद्योग रुका, तौ उस ने बहुतसी गर्जना तर्जना की, परन्तु अन्त में निज सेना से अगाड़ी चलने की यांचा की; उस ने अपने इस नवीन युद्ध का चमत्कार बढ़ाया, परन्तु निष्फल हुआ। औ देखा कि सेना का बड़ा दृढ़मता है कि हम अगाड़ी इस के साथ नहीं चलेंगे; तब अति अनिच्छा पूर्व्वक परवस हो रावी तक अपने आगमन की सीमा की, औ वहां से डेरे डण्डे उठा सेना को लौट चलने की आज्ञा की।

इस रीत से सिकंदर ने अपना महा उद्योग तज परवस हो सिंधु नदी को स्वराज्य की सीमा की। उस ने अब एक चित्त हो इस प्रतापी राज्य के दृढ़ीभूत करने औ वे संकल्प जो उस ने पूर्व किये थे उन के सुधारने में उद्योग किया। सिकंदर उत्तर दिशा में हो कर हिंदुस्थान पर आया था; औ अब घर-जाने की भिन्न मार्ग हो कर इच्छा की; इसलिये प्रथम सिंधु की सहायक नदी में प्रवेश किया, तहां से सिंधु में पहुंचा, तिस पीछे जहां इस नदी का समुद्र में संगम है वहां जा निकला। हम ने जहां तहां की युद्ध विषयक याचा का वर्णन किया, अब उस के शेष कर्मों का सूक्ष्म कर कै विषय कहैंगे। जब वह समुद्र में जाता था मुलतान के लोगों ने शत्रुभाव करकै उस का मार्ग

रोका, उन के संग युद्व करने में उसे ऐसी भारी शरीर की चिन्ता उपजी, जैसी कभी पूर्व काल में न ऊई थी, यहांतक कि जीवन का भी संशय ऊआ। वह तहां मुलतान का एक दृढ़ दुर्ग घेर उस की भींत पर कुलांच मार नगर में जाकूदा, वहां एक भींत से लगकर इकेला वहां के संपूर्ण योद्धाओं के सन्मुख ऊआ। यहां सिकन्दर कौ बऊत से घाव आये, औा उस के जीव बचने की भी दुवधासी हो गई। जब वह अच्छा ऊआ फिर अपने नौका समूह से मिला, औा सिंधु में होकर चला, मार्ग में तीन नगर बसाये औा दो में दुर्ग बनवाये। तहां से पटेला अर्थात् उस स्थान में पऊंचा जहां इस नदी की दो धार हो कर समुद्र में प्रवेश करती हैं, वहां एक दुर्ग, नगर औा बंदर स्थान स्थापन करने की आज्ञा दी। उस ने इस नदी के दोनों मुहानो की बड़ी निपुणता पूर्वक परीक्षा की; तिस पीछे बड़ा दृढ़ नौका समूह इकठ्ठा कर समुद्र में खड़ा रख नियार्कस नाम मनुष्य को उसे सोंप आज्ञा दी कि जहांतक बने तहां तक समुद्र की यात्रा कर टइयस नदी का मुहाना ढूंढो। सिकन्दर ने सूफ समुद्र, फारस की नदियां औा सिंधु इन तीन स्थानों में बड़ा बाणिज्य करने के लिये अति सुन्दर यत्न स्थापन किये थे, औा महा विस्तृत देश हिंदुस्थान को अपने नये स्थापित महाराज्य से बड़े उपकारी व्यौपारद्वारा मिलाने का विचार किया। जब वह नियार्कस को समुद्र में जाने की आज्ञा दे चुका, तिस पीछे अपनी बड़ी सेना को उत्तर दिशा के मार्ग को हो कैरैमानिआ में जाने को कहा, औा आप सबों की अपेक्षा अति वीर औा बड़े पराक्रमी थोड़े से जन ले समुद्र के तीर ही तीर दूरलग यात्रा कर नियार्कस के नौका समूह से मिलैं इसलिये कि जहां कहीं आवश्यक होय तो उस की सहायता करैं। इस

कारण उस ने सिंधु नदी पारकर गिडोशिया नाम मरुभूमि में प्रवेश किया, इस स्थान के पार करने में साठ ६० दिवस लगे। इस स्थान की याचा में जलते ऊए रेत, औ जल के अभाव से सेना ने ऐसा कष्ट सहा कि पहले परिश्रम औ खेद इस के अगाड़ी तुच्छ लगने लगे। सिकन्दर इस बंभड़ स्थान से निकल किर्मान को गया, इस में उस की अवशिष्ट सेना भी आकर मिली, औ थोड़े काल पीछे वहां उस ने सुना कि नियार्कस की समुद्र संबंधी यात्रा अति सफल भई, औ नौका समूह कुसल से टईयस नदी के मुहाने पर पक्कंच गया, इस के सुनते ही उसे ऐसा आनंद ऊआ कि जो वर्णन करने में नही आता। कथा-सार में समुद्र संबंधी याचाओं का अच्छा वर्णन ऊआ है उन के मध्य में सबों की अपेचा यह याचा अत्यन्त साहसिक औ सफल थी।

सिकन्दर ने अतिशीत काल के बीच कैरेमानिआ से फारस को गमन किया। वह पैसेगार्डा को जब जाता था तब फारस के राज्य की नीम रखनेवाले प्रतापी सइरस की ढई फूटी समाधि को देखने गया, औ पीछे उस का अवलोकन करके आज्ञा दी, कि इसे फिर सुधारकर बनाओ। थोड़ेही काल पीछे कैलेनस नाम विद्वान ब्राह्मण जो सिकन्दर के सङ्ग हिंदु-स्थान से गया था, उस ने जीवने से दुखी हो चिता बनाय उस में बैठ देहत्याग किया, परन्तु सिकन्दर इस बात को अनु-चित जान उस को देखने भी न आया। सिकन्दर ने जयी औ पराजित लोगों के बीच में मेल मिलाप रखने के लिये दारा की एक कन्या से अपना विवाह किया औ अस्सी ८० उस के प्रधान सेनापतियों ने उसी की रीत करके सबों की अपेचा फारसवालों के महा कुलीन कुनबों में विवाह करके

उन के सहायक हुए। ये बिवाह बड़ी भारी धूम धाम से हुए औा अति रस रहा औा सिकन्दर ने अपनी स्वाभाविक उदारता पूर्व्वक व्यय किया। उस की उदारता उस के सेनापतियों को निश्चित थी; बड़त से उस के भृत्य ऋणी थे। उन्हों ने एशिआ की लूटपाट कर धनांध हो अपरिमित द्रव्य उड़ाया, तब व्याजलेनेवालों की भीड़ सिकन्दर की सेना के पीछे हुई, औा सेना का बड़तसा भाग ऋण के मारे ऐसा कष्ट युक्त था जैसा एशिआ का कटक ऋण के मारे सदा दुखी रहता है। उस ने अपनी दान शीलता पूर्व्वक अपने भृत्यों के हाथ की लिखी हुई टीप लाने की आज्ञा की, औा जो जो लाया उसे टीप के अनुसार धन दे विदा किया।

तिस पीछे सिकन्दर ने अपने नौका समूह पर चढ़ फारस के खाल में हो उस के तट खोज ने का प्रयत्न किया, औा फिर टइग्रस नदी में आ निकला। उस ने अपने दल को आज्ञा दी थी, कि तुम थल ही थल होकर स्पूसा नगर को जाओ, औार आप वहां सबों से पहले पड़ंच उन्हों को इकट्ठा कर सबों से कहा जो जो वृद्ध, घायल रोगी औा काम करने योग्य नहीं हैं, उन सबों को घर जाने की छुट्टी है। परंतु इस अच्छी बात के सुनते ही सेना के आग लग उठी, औा महा बखेड़ा फैला, औा सब सेना ने एक मत हो बिनती कर बिदा मांगी। एशिआ खण्ड को जय करनेवाले के मन में इस बात के सुनने से कुछ सकपकाहट न ड़आ; उस ने झट अपने विचारस्थान से उठ तेरह प्रधान बखेड़िओं को पकड़ उसी स्थान में उन्हें गल दिखवा दिया। परंतु इस महा भयानक कर्म्म को देखकर भी उन के चित्त का परिवर्त्तन न भया, औा दो दिन तक विशेष ही विशेष बखेड़ा बढ़ता रहा। तीसरे दिन सिकन्दर ने आज्ञा

दी, कि हमारे नवीन जीते ऊए प्रजागण में से अत्यन्त साहसी औा निपुण लोगें। की भरती करकै नवीन कटक बनाओ, औा मन में बिचारा कि मैसीडोनिआ की सब पक्की सेना का एक साथ दूर करेंगे। इस उपाय को देखकर सकल सेना की आंख खुल गई, तब उन्हों ने अति घवराय अछताय पछताय कर अति गिड़गिड़ाय श्रीयुत सिकन्दर से बिनती कर कहा कि महाराज हम से बड़ी भारी भूल भई, तब उस ने छपा करकै उन का अपराध दूर किया; औा उस दिन से अगाड़ी की अपेक्षा उस की आज्ञा और भी ठीक औा दृढ़ ऊई। इस बीच सिकन्दर ने फारस की सेना भरी थी इसलिये दोनें कटक समान रहे, औा दोनें के परस्पर का भय बना रहा।

इस मेल मिलाप होने के पीछे उस ने अति जीर्ण दश सहस्र सेना को क्रेटरस नाम हृद्ध जन की आज्ञा में रख निज निज घर जाने की छुट्टी दी। सिकन्दर ने विदाहोते समैं तिन प्रति अपनी खाभाविक दान शीलता प्रकाश की औा चलते समैं आपस में बड़ा करुणा रस दृष्ट पड़ा। गमन करते समय एक एक भृत्य अपने राजा से बिदा होने का गया, तब वह अपनी इस साहसी औा निपुण सेना से जुदे होने के काल में अत्यन्त रोआ। यह कटक अनजाने ऊए देशें के बीच बारह बरस संग रहा औा बड़ी आपत्ति औा दुःख सहे, जिन को पृथ्वी भर में आज तक कोई सेना ने कभी देखा न सुना था।

अबतक हम ने अति विस्तार पूर्वक सिकन्दर का वर्णन किया, यहां से अति संक्षेप करकै उस की शेष आयु का विषय कहैंगे। अपनी प्राचीन सेना का बिदा करने के बरस दिन पीछे जो जो कल्पना अपने महाराज्य के लिये की थीं उन के स्थापन करने के अर्थ बेबीलन नगर को गया। उस ने अरब के वन्य

लोगें के जय करने का विचार मन में निश्चय किया, यह कार्य उस के राज्य के सुख देने के हेतु आवश्य करतव्य था। इसलिये अनेक जहाज बनवाये औ साथ ही थल पथ में लड़नेवाली सेना भी सजवाई। सिकन्दर इस उद्योग में ऐसा प्रसन्न था जैसा हेलेसपांट के पार करने के दिवस ऊआ था। उस ने प्रत्येक कर्म में आप सावधानी करी, औ जब अनेक प्रकार की बड़ी बडी आस्था करकै आनन्द मानता था, तभी बैबीलन के निकट मृत्युजनक झीलें में उसे ज्वर आया, औ वहां ही उस की यात्रा का अन्त ऊआ। बारह वर्ष राज्य करकै युवा अवस्था में अपनी आयु के तेतीस वें वर्ष के बीच श्रीयुत प्रतापी सिकन्दर मरगये। यद्यपि उन के मरण काल के अवतक बाईस शतक ऊए, तथापि उन का यश प्रतिदिन नवीन औ वर्द्धमान होता है। पृथ्वी की उत्पत्ति से उस काल तक मनुष्य जाति के कर्मों में उस की बुद्धिशक्ति अत्यन्त प्रबल थी; औ पूर्व राजाओं की अपेक्षा सिकन्दर के चरित्र अति अद्भुत औ कीर्त्ति जनक ऊए। उस ने एशिआ के प्राचीन राज्य जो प्रलय से ले उस काल तक नाना प्रकार के परिवर्तन सहकर जों के तों बने रहे थे, उन के एका एकी उलटा दिया; एशिआ में जो सदा भय बना रहता था उस का विनाश किया, औ पृथ्वी भरके बीच अपना प्रताप स्थापन करकै यूरपीय लोगें का पराक्रम जो छिपाभया था उस का प्रकाश करगया।

॥ ७ अध्याय ॥

॥ फारस के महाराज्य का ॥

॥ विषय ॥

सइरस—कंबइसीज़—दारा—उस की यूनान पर चढ़ाई—उस के राज्य का बनाव—ज़रकसीज़—यूनान में उस की हार—आरटैकज़रकसीज़—फारस के राजद्वार में ऊधम—दूसरा दारा—मिसर की हानि—दूसरा आरटैकज़रकसीज़—कूनाक्सा की लड़ाई—एजीसीलास की चढ़ाई फारस में—दारा काडोमैनस—फारस के महाराज्य का विनाश इन सब बातों का प्रसंग अब कहेंगे*

यद्यपि फारस के महाराज्य का इतिहास यूनान की कथा में संक्षेप करकै मिला भया है, तथापि उस राज्य का पहला नृप सइरस अंत का दारा इन के बीच में जो जो प्रधान वृत्तान्त ऊए उन का विशद विषय बर्णन करना आवश्यक है।

इस राज्य का स्थापन करनेवाला सइरस नाम राजा जिस का वर्णन अभी हम विस्तार पूर्वक करचुके हैं; इसलिये और भी इतना कहना बऊत है कि वह ईसवी शक के पूर्व ५२९ वें वर्ष में युद्ध के बीच बन्य टारटरी लोगों के हाथ से मारागया, और उस ने मरते समय अपने उत्तराधिकारी कंबइसीज़

नाम पुत्र के लिये ऐसा बडा राज्य छोडा जैसा कभी पृथ्वी भर में न देखा था। कंबइसीज़ ने आफिरिका पर चढ़ मिसर औ लिबिआ को जीत फारस के राज्य में इन दोनों देशों को मिला लिया। उस ने विशेष करकै मिसर देशीय ब्राह्मणों से वैर भाव किया, औ वे भी इस के प्रधान शत्रु ज़ए इसलिये कि उन्हों ने जाना कि कदाचित् यह हमारे अधिकार का विनाश करै। इतिहास की पुस्तक में उस का वर्णन किया है कि वह निर्दई राक्षस था; परंतु यह स्मरण करने योग्य है कि मिसर देश के पुरोहित लोगों ने जिस को उस ने गत दिवाया था उसी की आयु का विषय लिखा था, इसीलिये उस विषय का विश्वास थोडा करते हैं। मीडिआ निवासी मेजी नाम जन ने झूठ मूठ कहकर कि स्मर्डिस राजा का भाई है उसे सिंहासन पर बैठाया, इसीलिये कंबइसीज़ साढेसात वर्ष राज्य करकै दैवगत से मरगया। यह खुड़ो स्मर्डिस आठ महीने तोड़ी सिंहासन पर बैठा पीछै फारस के सात प्रधान कुलीन जन मीडिआ के राजा की आज्ञा का सहन न कर सके, इसलिये विन्हों ने आपस में मताकर उसे मारडाला। इसी काल में शिल्पविद्या औ सभ्यता मीडिआ से भ्रमण शील फारसवालों के बीच में आई, जिन्हों ने अब निज वासस्थान स्थापित करकै नगर बसाये, सो शीघ्र ही ऐसे चमत्कारी ज़ए कि पृथ्वी भर के उत्तम नगरों की गणना में आये।

उन सातों कुलीनों ने मिलकर कोई राजा को स्थापन करने की इच्छा की, पीछे बडा भारी विचार करकै हिसटैसपीज़ के दारा नाम पुत्र को राजगद्दी पर बैठाया, उस ने अपना पराक्रम बढ़ाने के लिये सइरस नाम भूपति की दो पुत्रियों से विवाह किया। उस का राज्य छत्तीस वर्ष रहा, उस ने बज़त से

देश जय कर उस को सुधारा, इस कारण से उस की बड़ी कीर्त्ति है। पहले ही पहल उस ने सब से बड़ी चढ़ाई सिथिआ पर की, यह देश काल सागर के उत्तर में है, परंतु वहां से वह हार मान लज्जित हो घर को फिरा। पीछे इस हानि को मिटाने के लिये अपनी सेना को यूरप पर चढ़ा लेगया, वहां जाकर थ्रेस औ मैसीडन में निज दृढ़ पराक्रम स्थापित किया। इसीबीच एक यूनानी फारस के राजा के किंकर ने यूरप से एक सहस्र कोस आकर सिंधु नदी की यात्रा करते ऊए उसी नदी के उत्तर ओर जो ऊंची भूमि थी उसे शीघ्र ही फारस के अधिकार में लाया, औ यही नदी उस राज्य की पूर्व्व सीमा ऊई।

दारा के राज्य का सब से भारी वृत्तान्त यह है, कि उस का झगड़ा यूनानियों से हुआ औ इन दोनों देशवालों के चित्त म द्वेष बनारहा, जबतक फारस का राज्य संपूर्ण रूप से नष्ट न ऊआ। एशिआ मइनर में यूनानियों की बस्तियों ने आज्ञा माननी छोड़ दी तब फारस के राजा ने उन्हें जय करने के लिये सेना भेजी। अइओनिआ का प्रधान नगर मइलीटस, जो पृथ्वी भर के वाणिज्य संबंधी नगरों की गणना में तीसरा था, औ टयर औ कार्थेज का द्वेषी, सो फारस वालों के हस्तगत ऊआ जिस प्रकार सार्डिस के जलाने का पलटा एथेंसवालों से लिया, औ दारा ने जिस रीत से उत्तर ओर या पर्व्वतमय मार्ग के बीच होकर यूनाम पर धावामारा, औ वहां उस का परिश्रम निष्फल हुआ; औ जैसें अगले बरस में वह नौका समूह ले कर यूनाम के तट पर पऊंचा औ उस की सेना मैरेथन के मण्डल में हारी, इत्यादि सब बातों का वर्णन अभी हम यूनान की कथा में कर चुके हैं। इस हारने के कलंक को दूर करने

के लिये उस ने अनेक प्रयत्न किये, परन्तु जब वह नवीन युद्ध करने के लिये सामग्री जोडता था तभीं मरगया।

उस के समय में फारस का आन्तरिक राज्य बज़त ठीक रहने लगा; उस ने फारस के राज्य के बीस भाग किये, औा उन में राजकर बज़त ठीक रूप से स्थापन किया। उन भागों के अधिपतों का पराक्रम रुका रहने के लिये युद्ध विषयक आज्ञा सेनापतियों के हाथ में रक्खी; औा प्रत्येक प्रदेश में राज मंत्रियों को भी नियुक्त किया था, जिन के द्वारा राजा की आज्ञा अधिपतियों को मिलती थी; राजा अथवा राजनियुक्त पुरूष कालानुसार प्रत्येक प्रदेश को देखने जाते थे। राजा औा राजप्रतिनिधियों को शीघ्र समाचार भेजने के लिये एक डाक भी स्थापन हुई थी। यद्यपि इन नियमों के करने से दूर दूर के प्रदेशों के अधिपति आधीन बनेरहते थे, तथापि जैसें जैसें ये राजस्थान से दूर थे, तिसी के अनुसार आज्ञा मानने में भी ढील करते थे,। राजकर अन्न करके इकट्ठा होता था, कभी कभी सोने चांदी के खण्ड लिये जाते थे। दारा के समैं में फारस का राज्य अच्छे प्रकार से सुधरगया था। वह ईसवी शक के पूर्व्व ४८६ वें वर्ष में मरा, औा उस की राजगद्दी पर उस का प्रथम ज़करसीज़ नाम पुत्र बैठा, उस ने केवल घर ही में सिक्षा पाई थी, इसलिये उस ने राजकर्म करना कुछ न जाना, परन्तु आलस्पीपने औा धूम धाम करने में उस ने अपनी काल क्षेपना करी।

उस के राज का प्रथम औा प्रसिद्ध वृत्तान्त है कि उस ने यूनान को निज बस में करने के लिये उस पर चढ़ाई की। तब यूनानियों ने बडा अच्छा प्रयत्न किया, निदान फारस के राजा को हरा दिया, जिस का वर्णन विस्तार पूर्व्वक पिछले

अध्याय में कर चुके हैं। ज़रकसीज़ का यह उद्योग निष्फल होने से, अगाडी को यूनान पर फारसवालों का चढ़ना मिट गया; परन्तु उस ने बहुतसी चढ़ाई की जिन के कारण फारस का राज्य निर्बल हुआ, औ उस का द्रव्य औ मनुष्य भी नष्ट हुए। ज़रकसीज़ की हार से तीस बरस तक यूनानी लोग स्वदेशीय स्वाधीन एशिआ महनरवालों की रक्षा करने के लिये फारसवालों की सामर्थ रोकते रहे। इस चिरकाल की लड़ाई ने फारसवालों को निर्बल करदिया, इसलिये उन्हें सेना इकट्ठी करके दूर दूर के प्रदेशों को बचाना आवश्यक हुआ। निदान फारस के राजाने सेना से यूनानियों को जय करना असंभव जान उन को द्रव्य देकर नष्ट करने का उद्योग किया, परन्तु धर्मशील सइमन नाम जन ने एक ही दिन में यूरीमिडन स्थान पर उस के जहाज समूह औ कटक का सत्यानाश किया, और थ्रेस के चरसोनीसस देश की जय होने से उस का यूरप में आवना बन्द हुआ। ज़रकसीज़ का समाचार बहुत नहीं जानते हैं परंतु इतना ज्ञात है कि वह इक्कीस बरस राज्य करके मारा गया।

ईसवी शकके पूर्व ४६५ वें वर्ष में उस का आरटैकज़रकसीज़ नाम पुत्र सिंहासन पर बैठा। उसी के चिरकाल स्थाई राज्य में फारस के राज्य के घटाव के चिन्ह दृष्ट पडे। मिसरवालों ने फारस के राजा की आज्ञा माननी छोड़ दी, औ पीछे उस की सब सामर्थ को व्यार्थ किया। यूनानी लोग सइमन नाम सेनापति की आज्ञा में रहकर जीतते रहे, निदान उन्हों ने आरटैकज़रकसीज़ को घबरा कर उस के राज्य के सोलवें वर्ष में उस से यह स्वीकार करवा लिया, कि हम ने तुम्हारे स्वाधीन एशिआ संबंधी यूनानियों को छोड़ा और ईजिन

सागर में नौका नही चलावेंगे, और अपनी सेना लेकर तीन दिन की याचा तक इस के तट को न आवेंगे। इस वृत्तान्त के दो बरस पीछे सिरिया के मेगैबिसस नाम अधिपति ने आज्ञा माननी छोड़ दी, औ राजा का अधिकार एका एकी तजदिया। इस मुख्य अधिपति की चाल से और भी अधिपति उस के अनुयायी होगये, औ राजा की दुर्बलता सबों को दृष्ट पड़गई। आरटैकज़रकसीज़ चालीस बरस राज्य करकै मरागया।

आरटैकजरकसीज़ के मरने से अनेक प्रकार के झगड़े रहे उठे; उस का दूसरा ज़रकसीज़ नाम पुत्र जो उस के पीछे गद्दी पर बैठा था, उस को उस का सागडिआनस नाम जारज भाई उस के राज्य के पैंतालीस वें दिन में मारकर आप सिंहासन पर बैठा। वह भी छह महीने राज्य करके अपने दूसरे ओकस नाम जारज भाई के हाथ करके मारागया। ओकस अपना दूसरा दारा या दारा नोथस नाम रखके सिंहासन पर बैठा। यद्यपि उस ने उन्नीस बर्ष राज्य किया परन्तु तीन क्लीवजनों ने संपूर्ण रूप से उस के देश को अपनी आज्ञा में रक्खा। इसी समैं से उस के राज्य की क्षय अधिक अधिक होनेलगी। नाना प्रदेश के अधिपतियों को युद्ध विषयक अधिकार दे दिया, यह बात पहले दारा की श्रेष्ट व्यवस्था से विपरीत थी, औ इस कारण से उन्हें स्वाधीन होने की सामर्थ भई। तिस पीछे कैवेर उन्हों ने आज्ञा माननी छोड़ दी, और राजमंत्रियों में उन का सामना करने की सामर्थ न रही, तब तिन्हों ने गुप्त रूप से उन के मरवाने के उपाय किये, जिस के कारण से राज्य की और भी निन्दा औ अपकीर्त्त हुई। तीसरी वेर मिसरवालों ने आज्ञा माननी तज दी, औ फारस की ओर के जो अधि-

कारबाले लोग थे, उन को अपनी भूमि से निकाल दिया। निश्चय है इस महाविस्तृत राज्य की राजनीति ऐसी बिगड़ गई थी, कि जो ऐसे काल में यूनानी अज्ञान से होकर पेलोपोनीशिआ की लड़ाई पर न जाते, औ परस्पर युद्ध न करते, तो निश्चय करके इस राज्य की निर्ब्बलता का फल प्राप्त करके फारस के राज्य का विनाश करते। दूसरा दारा ईसवी शक के ४०५ वें बर्ष में मरा तिस पीछे उस का पुत्र दूसरा आरटैकज़रकसीज़ राजा हुआ।

आरटैकज़रकसीज़ के सिंहासन पर बैठने से उस के छोटे भाई सइरस ने अपनी पैरीसेटीस नाम मा के कहने सुनने से औ यूनानी सेना की सहायता करके भूपति के संग झगड़ा किया। सइरस सेना सहित अपने भाई से लड़ने को चढ़ गया, ईसवी शक के पूर्व ४०१ वें बरस में हारकर क्यूनक्सा नाम स्थान पर मारागया। दस सहस्र यूनानी जो सइरस से वेतन पावते थे उन का घर को फिरजाना सदा स्मरण करने जोग्य है, जिस का वर्णन अभी कर चुके हैं। इस पीछे फारस के राजा ने यूनानी लोगों को घूंस देकर अपना उद्योग द्विगुणित किया, औ उन सभों में लड़ाई करवा दी; परंतु सपार्टा के एजीसीलेअस राजाने मन में जाना कि फारस के राज्य को उलटा देने में केवल एक ही उद्योग बहुत है, ऐसा विचारते ही अपने साहसी योद्धाओं को ले फारस के बीच आया; परंतु फारस की राजनीति इस काल में छल-युक्त थी, तब यहां के राजा ने बहुत सी घूंस देकर यूनानियों में लड़ाई की आग जलाई, औ एथेन के कोनन नाम सेनापति की सहायता करके उसे अपना मिलापी किया, इस प्रकार करके संपूर्ण रूप से यूनानियों का ऐसा चित्त फेर दिया,

कि जिस के कारण एजीसीलेअस को अपने देश में आवना आवश्यक हुआ; औा आरटैकज़रकसीज़ जो पूर्व्व अपने सिंहासन पर कंपायमान हुआ था, सो अब यूनानियों में मध्यस्थ हुआ, औा उस ने दवाकर लज्जाकारी अनतलसी दास नाम संधि उन से करवाई, जिस में उन्हों ने लिखदिया कि हम ने अपने एशिआ संबंधी भाईयों को छोड़ आप के आधीन किया, यह वृत्तान्त ईसवी शक के पूर्व्व ३८७ वें वर्ष में हुआ, औा जब ये स्वाधीन हुए थे उस से ठीक ६२ वर्ष पीछे फिर फारसवालों के अब आधीन हुए। इस के थोड़े ही काल पीछे फारसवालों में घरेलू झगड़े उठे, औा उन की वह दशा हुई जो विनाशकाल में बहुधा हिंदुस्थानी राजाओं की हुई थी। राजसंबंधी पराक्रम जाता रहा, प्रत्येक प्रदेश के अधिपति परस्पर लड़नेलगे, औा राजद्वार में अनेक प्रकार के छल औा हत्या होनेलगीं। इस काल के बीच राजा के उत्तराधिकारी औरस तीन पुत्रों में राजगद्दी पर बैठने के कारण विवाद हुआ, औा उस का दारा नाम ज्येष्ठ पुत्र इसी झगड़े में मारागया। इस राज्य के पश्चिम भागवालों ने आज्ञा माननी छोड़ दी, सब एशिआ मइनर औा स्पार्टा के अधिपति भी इसी बात में मिले; परन्तु ओरोंटीज़ नाम प्रधान सेनापति के छल करके उन की कल्पना विफल भई।

इन ही झगड़ों रखों के बीच आरटैकज़रकसीज़ ४३ बरस राज्य करकै मरगया, औा उस का तीसरा आरटैकज़रकसीज़ नाम पुत्र राजगद्दी पर बैठा, जिस ने ईसवी शक के पूर्व्व ३६२ वं वर्ष से ले ३३८ तक अर्थात् २४ वर्ष राज्य किया। यद्यपि उस ने राजकुल को नष्ट करकै अपने राज्य का प्रारंभ किया, उस ने राज्य का नियम पराक्रम पूर्व्वक रक्खा, देश

वर्ती सब झगड़े मिटादिये, मिसर देश को पुनि जीतलिया, और राज्य की प्राचीन सीमा फिर स्थापन की। इसी बीच बेगोअस नाम क्लीव ने उसे विष देकर मारडाला, औ राजा के आरसीज़ नाम सब से छोटे पुच को सिंहासन पर बैठा दिया, औ उस का नाम करकै आप राज्य करने की इच्छा की; परन्तु जब उस ने देखा कि यह राजा भी मेरा अनुयायी नही है, तब दूसरे वर्ष में उस को भी मारडाला, और एक दारा काड़ोमेनस नाम जन को जो राजा के संबंध में बहुत दूर था, उसे सिंहासन पर बैठाया; औ उस ने इसी दुष्ट दुराचारी को मार अपना प्रताप औ राज्य बढ़ाया।

दारा पूर्व्व राजाओं की न्याईं रणवास में आसक्त न था, औ अपना पराक्रम ऐसा बढ़ाया कि सब लोग कहने लगे कि बहुत काल से ऐसा राजा फारस के सिंहासन पर नहीं बैठा। परन्तु उस के राज्य के दूसरे ही वर्ष में श्रीयुत सिकन्दर उस पर चढ़आया; औ दारा ने देखा कि मुझ में इस शचु के सन्मुख होने की कुछ भी सामर्थ नही है, इस कारण से उस का राज्य संपूर्ण रूप से नष्ट हुआ। उस की शोकजनक मृत्यु का वर्णन सिकन्दर की कथा में हुआ है। आरबेला की लड़ाई और पर्सेपोलिस के जलने ने पूरब के देशों में प्रकाश करदिया कि फारस के राज्य का सूर्य अस्त होगया, औ इसी कारण से पूर्व्व के देशों में नवीन नवीन राजा होगये।

॥ कार्थेज औ सिसली का ॥

॥ विषय ॥

सइरैक्यूज़ की नीम—जीलो—कार्थेजीनावालों की सिसली पर चढ़ाई—उन की हार—स्वाधीन राज्य का स्थापन—सइरैक्यूज़ की प्रधानता—कार्थेजीना की दूसरी चढ़ाई—दुष्ट डइओनिसिअस—कार्थेजीनावालों की हार—पराजित आफिरिकावालों का युद्ध कार्थेज़ के लोगों से—कार्थेजीनावालों का फिर नवीन उद्योग सिसली पर—कारिंथ ने सइरैक्यूज़ की सहायता की—टइमोखिअन इन सब बातों का वर्णन अब करेंगे।

कार्थेज की उत्पत्ति औ वृद्धि पिछले काल में लिख चुके हैं। अब इस समैं और उस का विषय कहैंगे। इस नगर ने सिसली के जय करने के लिये अपना बल बढ़ाया; इस उपद्वीप पर प्रधान नगर सिरैक्यूज़ था, इस काल में उस नगर का ऐश्वर्य बढ़ता था औ उस का पहला आशय था कि यह उपद्वीप हमारे अधिकार में हो जाय, इसीलिये इन दोनों में महा द्वेष उठा। बहुत बेर की हार जीत के पीछे, पराक्रमी रोमवालों ने दोनों ओर के योद्धाओं का सत्यानाश किया। इस काल की कथा में कार्थेज़ औ सिसली के युद्ध का

वर्णन है। इसलिये इन दोनों की कथा एक संग ही कही जायगी।

ईसवी शक के ७३५ वरस पूर्व कारिंथ की वस्तीवालों ने सिरैक्यूज़ की नीम धरी। प्रथम ही २५० वरस यहां प्रजा प्रभुत्व रहा, औा क्रम क्रम से उस का पराक्रम औा गौरव वढ़ता रहा। ईसवी शक के पूर्व ४८४ वें वर्ष में इस नगर के वीच उपद्रव मचे, जिन के कारण पराजित लोगों ने जीलो नाम जन से सहायता के लिये प्रार्थना की जो इस नगर के निकट वर्त्ती जीलोन नगर का अधिपति था। उस ने पराक्रमी सेना ले सिरैक्यूज़ में आ विन लोगों को वसाया जिन को वहां से देश निकाला हुआ था, परंतु राज्य करने की सामर्थ निज हाथ में रक्खी। वह निश्चय करकै महात्मा था; यद्यपि उस का राज्य केवल सात वरस रहा, परन्तु लोग कहते हैं कि सिरैक्यूज़ की प्रतिष्ठा उसी ने वनाई, उस ने केवल इधर उधर के लोगों को बुलाकर नगर का विस्तार ही नही किया, परन्तु कृपा करकै दान दक्षिणा दे सवों का मन मोहित करलिया; औा अपने राजनीति विषयक ज्ञान से सिसली के सव नगरों के वीच सिरैक्यूज़ को प्रधान वानाया। इसी काल में ज़रकसीज़ ने जिस का वर्णन पिछले अध्याय में करचुके हैं, उस ने यूनानियों को जड़ से खोदेने की इच्छा की; इसलिये उस ने कार्थेजवालों को ललचा कर कहा, कि तुम यूनानियों को जय करो जो सिसली औा इटली में वसते हैं। कार्थेजवालों ने अपना औा ज़रकसीज़ का एक ही अभिप्राय जान उस की वात मान दो सहस्र युद्ध के जहाज़ वनवाये, औा तीन सहस्र ले चलनेवाले जहाज़ निर्माण करवाये हिमिलको नाम सेना पति ने उन में तीन लक्ष पदचारी सेना ले सिसली में उतर

हिमिरा नगर का घेरा किया, सिरैक्यूज़ का जीलो नाम नवीन राजा, घेरने के समाचार सुनते ही पचास सहस्र पैदल औा पांच सहस्र असवार ले उस नगर की सहायता करने को गया। पंथ में उस ने एक दूत को देखा, जो चिट्ठी लेकर सिलाईनस नगर से कार्थेजवालों की छावनी में जाता था, उस चिट्ठी के बीच उस ने देखा, कि सिलाईनस वालों ने लिखा था कि हम फलाने दिन इतने अश्व तुम्हारी सहायता करने को भेजेंगे। जीलो ने उसी निश्चित दिन में उतना ही अश्वारूढ दल अपनी सेना से ले शत्रु की छावनी में भेजा, औा उस ने छल न समझ मित्र जान उन को आने दिया। सिरैक्यूज़वालों की सेना ने झटपट आ हिमिलको नाम सेनापति को मार उस के सब जहाजों में आगलगा जला दिये। इसी हो हा के योग में जीलो ने अपनी सकल सेना सहित कार्थेज के कटक पर छापा मारा। प्रथम तो उन्हों ने बड़े साहस पूर्व्वक उन का निवारण किया, पर जब निज सेनापति की मृत्यु के समाचार सुने, औा अपने पीछे अपने ही जलते हुए जहाज़ देखे, इसलिये संपूर्ण रूप से घबरा जिधर तिधर भाग गये सिरैक्यूज़वालों ने अपने शत्रुओं की ऐसी महा भयानक काटा करी, लोग कहते हैं कि डेढ़ लाख मनुष्य खेत रक्खे। औा शेष जो बचे थे, वे ऐसे स्थान में जा कर छिपे, जहां कुछ भोजन करने को नथा, निदान वे भी हारमान शत्रु के आधीन हुए। यह लड़ाई जिस ने इस काल में कार्थेजवालों की आस्था का सत्यानास किया, सो उसी दिन हुई जिस दिन प्रसिद्ध युद्ध थरमापिली में हुआ था। जब ये सत्यानाशी समाचार हारने के कार्थेज में पहुंचे, तब वहां के लोग सुनते ही निराश हुए, औा कोई रीत से संधि करने के

लिये जीलो के पास अपना दूत भेजा। युद्ध के बीच साहसी औा जय के बीच मध्यम ऐसे जीलो नाम जन ने उस दूत से केवल इतना बचन कहा, कि जो वे हम से संधि करा चाहते हैं, तो चालीस लाख रुपैये दें औा आज से शनिग्रह के निमित्त बालकों का बलिदान करना छोड़ दें।

कार्थिजवालों ने इस पराभ होने से सत्तरेक वर्षतोड़ी फिर सिसली की ओर आंख भरकै भी न देखा। परन्तु सिरैक्यूज़ में इस काल के बीच कई वृत्तान्त हुए, जिन का विषय अगाड़ी आवता है। जय प्राप्त करने के पीछै जीलो प्रतापी राजा हुआ, तिस के मरण काल पीछै क्रम से उस के दो भाई सिंहासन पर बैठे, उन में सब से छोटा बड़ा उपाधी था, इसलिये लोगों ने ईसवी शक के पूर्व ४६६ वें वर्ष में उसे सिंहासन से उतार दिया। इस उपद्वीप में जो यूनानियों के नगर थे, उन में प्रजा प्रभुत्व स्थापित हुआ, यद्यपि इस यत्न से नगरों में पराक्रम बढ़ा, परन्तु इसी बीच ईर्षा भी सबों के मन में विशेष करके हुई। इस उपद्वीप का राज्य लेने के लिये, सब नगर आपस में लड़ने लगे। और बहुत काल तोडी अनेक लडाई होती रहीं; निदान सिरैक्यूज़ ने ऐग्रिजेंटम नगर को जय करकै सिसली के बीच अपना निष्कंटक अधिकार स्थापन कर, अन्याय करने का प्रारंभ किया। लिओंटिनीज़ नाम लोगों ने सिरैक्यूज़ का अनाचार देख एथेनवालों को बुलाकर सिरैक्यूज़वालों पर एक प्रसिद्ध चढ़ाई करवाई जिस के कारण एथेन निवासियों की संपूर्ण रूप से हार हुई, औा उन की शक्ति यूनान के बीच नष्ट होगई। ईसवी शक के पूर्व चारसो तेरवें ४१३ वर्ष के लग भग सिरैक्यूज़ की प्रशंसा अवध पर पहुंची थी। इस द्वीप के दो छोटे नगरों में विवाद हुआ, उन में से

एक ने सहायता मांगने के लिये एक दूत भेजकर कार्थेज-वालों की विनती की। तब उन्हों ने अपनी सभा में महापरामर्श करके उस उपद्वीप पर चढ़ाई करनी विचारी; वे चिर काल से उस धनाढ्य देश को अपने आधीन करा चाहते थे, इसलिये तो प्रथम धावा करना ठहराया, पर जब सोचा कि सइरैक्यूज़वालों ने अभी एथेंस के पराक्रमी दल का विनाश किया था, इस हेतु से उन का पराक्रम बढ़गया है, ऐसे विचार से चढाई करने का निषेध किया।

तो भी उस देश को जय करने की लालसा प्रबल ऊई तब उन्होंने हिमिल्को जिस की जीलो ने कटा की थी, उस के हैनीबेल नाम पौत्र के सङ्ग बऊत सी सेना ओ युद्ध विषयक जहाज़ कर सिसली को भेजा। उस ने लिलीबोअम स्थान में उत्तर हिमेरा औ सेलाइनस नगर को घेर निजवस किया; पीछे अनेक निर्दईपने के आचरण कर फिर आफिरिका को चला गया। कार्थेवालों ने इस जय से प्रसन्न चित्त हो तीनेक बरस पीछे पूर्व्व की अपेक्षा और बिशेष दल सजाकर हिमिल्को की आज्ञा में रख भेजा। सिसलीवालों ने अपना संपूर्ण दल इकट्ठा कर शत्रु का साम्हना करने की इच्छा की, जिस शत्रु ने उतरते ही ऐग्रिजेंटम को घेर लिया, जो नगर गणना में इस द्वीप के बीच दूसरा था, औ द्रव्य, लोक संख्या, ग्रह, प्रासाद आदि के कारण प्रसिद्ध था। पीछे आठ महीने के घेरे के नगर निवासियों ने खाने पीने आदि का अत्यन्त दुख पाया; निदान रात्रि में वे निज जन्म स्थान को छोड़, अति शोकाकुल हो, अपने बुढ़े औ घायल कुनबेवालों को तज चले गये। हिमिल्को ने दूसरे दिन ऐग्रिजेंटम में प्रवेश किया, औ जो दीन, दुखी, असामर्थ न भाग सके थे, उन सवों की कटा की; और

अपने जले भुने कटक को लूट पाट करने की आज्ञा दी। इस नगर के बिगड़ने से सब सिसली उपद्वीप कंपायमान ज्ञआ; कार्थेजवालों के सङ्ग कुछ भी सेना इकट्ठी होकर उन से हट न मिला सकी, औ जिस डइओनिशिअस ने अभी सिरैक्यूज़ के साधारण प्रभुत्व को उठा दिया था औ आपही राजा ज्ञआ था, उस ने उन से संधि की; जिस संधि में यह नियम ठहरा कि तुम अपना जीता ज्ञआ देश निज अधिकार में रक्खो। हिमिल्को विजयी होकर आफ़िरिका को गया, परन्तु उस ने खदेश में जाकर देखा तो महामारी ने इतनी बहुत हान करी, कि जितनी जय से फल सिद्धि न ज्ञई थी।

डइओनिशिअस अब सिरैक्यूज़ का एकाधिपति ज्ञआ, औ संपूर्ण उपद्वीप में अधिकार करने की इच्छा की, औ उस ने जो कार्थेजवावों से मिलाप किया था केवल इसलिये कि विरियां पाकर उन का जड़ समेत विनाश करूं। इसलिये उस ने यूनान औ इटली के सब भागों से युद्ध विषयक अस्त्र वनवाने के लिये कर्मकारों को बुलाया, औ सिरैक्यूज़ में एक काम करने की हाट वनाई; जिस में कर्मकारों की धूम धाम पड़ी रहती थी, औ आप जाकर उन्हें ढाडस बंधाता और बड़ी उदारता पूर्वक द्रव्य दे दे उन्हें साहस कराता। जब यह सर्व पदार्थ उपस्थित था; तब उस ने सब लोगों को इकट्ठा कर, कार्थेजवालों की ओर से, उन के मन में क्रोध उपजा कर समझाया, कि ये यूनानियों के सदा के शत्रु हैं; उस ने उन सबों को कटा करने के लिये उन्हें चितादिया। इस वात के सुनते ही नगर निवासी उन कार्थेजवालों के घरों पर दौड़े, जो संधि का विश्वास करके रहते थे, औ उन को तरवारों से काट कर मार डाला। इस उपद्वीप के और नगरवालों ने भी इसी रीत से

जो जो कार्थेज़वाले जहां तहां बसते थे, उन सबों की विश्वास घात करके कटा की। तिस पीछे डइओनिशिअस ने दूत के साथ कार्थेज़वालों से यह कहवा भेजा, कि सिसली के सब नगर तुम्हारी आज्ञा में नही; परंतु उस ने उन के उत्तर आने की भी अपेक्षा न की, औ झट मोटिआ नगर को घेर उसे लेलिया जहां उन की लड़ाई की संपूर्ण सामग्री रहती थी, औ सब वहां के निवासियों को मारडाला। दूसरे वर्ष कार्थेज़ वालों ने तीन लक्ष सेना समेट समाट, हिमिल्को के आधीन कर सिसली को भेजी, उस ने आकर केवल मोटिया ही को फिर न लिया, परन्तु उस उपद्वीप के सब नगरों की लूट पाट कर सिरैक्यूज़ को घेर लिया। इस अन्त की जय में उस ने उपद्वीप के आस पास के स्थान लूटने में तीस दिन लगाये; औ अच्छे अच्छे मनोहर गृह मन्दिर आदि, जिन से सिरैक्यूज़ सुशोभित था, उन सबों को जड़ से उखाड़गेरा। परंतु उस की यह वांछित जय थोड़े ही काल रही; पीछे तो क्लेश औ आपत्ति उप जी। उसी काल महामारी दृढ़ रूप होकर कार्थेज़वालों की सेना में फैली; औार ऐसी ग्रीष्म काल में सूरज की तपत ऊई कि जिस के कारण इतने मनुष्य मरे, कि कोई दवा भी न सका; औ रहे सहे मरी के भय से रोगी हो गए। जब हिमिल्को की सेना ऐसी महा आपत्ति के बीच कष्ट पाती थी, तभी डइओनिशिअस उन पर टूटा, औ सब सिरैक्यूज़वाले ऐसा अवसर पा, निज आत्मश्लाघी अरि का विनाश करने में उपस्थित हुए। तब तो हिमिल्को घबराया, औार देखा कि मुझ में सिरैक्यूज़वालों से सम्मुख होने की सामर्थ नही है, इसलिये उन से प्रार्थना कर घर जाने की विदा माङ्गी। तब उन्हों ने केवल उस के स्वदेशीय कार्थेज़वालों सहित

जाने की छुट्टी दी। उन की आज्ञा के अनुसार रात के बीच, अपनी आफ्रिरिकावालें की सहायता सिरैक्यूज़वालें का क्रोध मिटाने के अर्थ छोड आप भागगया। औ उन्हें ने वडी निठुरता से सब आफिरिकावालें को हनन किया। हिमिल्को कार्थेज में फिरकर गया, और इस बात से उस को औ उस के देश को इतनी लज्जा प्राप्त हुई, कि जिस का वह सहन न कर सका, निदान अपने तईं एक कोठे में मूंद आत्मघात कर मरगया।

परन्तु कार्थेजवालें की आपदा अब भी न मिटी। आफिरिका के लोग जो चिरकाल से अधीरता पूर्व्वक उन के आधीन थे, अब उन के चित्त में क्रोधरूपी अग्नि जली; इस कारण से कि उन के भाइयों को सिसली में छोड़कर कटवादिया; इसी हेतु करकै दो लाख से विषेष विशेष सेना ले कार्थेज की यात्रा कर उसे जड़ से उखाड़ ने का उद्योग किया। परंतु कार्थेजवालें की प्रारब्ध से उस बडी भारी सेना में कोई अधिपति न था; और अकाल भी उन में पड़ा; इस कारण को पाय वे क्रम क्रम से नष्ट हो गये। इस भय से छूट, कार्थेजवालें ने फिर सिसली पर चढ़ाई विचारी, औ मेगो नाम जन को बड़ी सेना सहित वहां भेजा; पर वह वहां हारा और मारा गया; पीछे उस के स्थान पर जो हुआ, उस ने संधि करने के लिये प्रार्थना की, और यह वचन दिया, कि हम इस उपद्वीप का त्याग करैंगे, औ जो लड़ाई में खरच पड़ा है, सो देंगे। जब संधि पत्र पै सही करने को कहा तब उस ने अटल मठल करकै कहा कि अभी घर से कुछ आज्ञा आये विना हम नगरें को। नही छोडैंगे, सो एक आध दिन में आने ही को है। इस रीत से अवकाश ढूंढ संधि करने की ओर कुछ ध्यान न रक्खा; परंतु भीतर

ही भीतर युद्ध का समान बनाता रहा; और कार्थेजवालों ने बड़ी सहायता सहित छोटे मेगो को अत्यन्त शीघ्रता करके सिसली को भेजा; उस ने आते ही संपूर्ण रूप से सब कामों को उलट पुलट कर, सिरैक्यूज़वालों को एक महा युद्ध में हरा दिया; औ उन्हें इस प्रकार से संधि करने के लिये दवाया, कि जिस में कार्थेजवालों की पद्धति बढै ऐसी कि जो देश उन्हों ने जय किया था सो उन्ही के अधिकार में रहै।

ईसवी शक के पूर्व ३६८ वें वर्ष में बड़े डइओनिशिअस को विष देके किसी ने मारडाला; औ उस का डईओनिसिअस नाम पुत्र सिंहासन पर बैठा; उस ने बडी निठुरता पूर्व्वक नगर को ताडना की; जिस के कारण उसे उपद्वीप से देश निकाला ऊआ; परंतु फिर छल करके आया औ सिरैक्यूज़ से पलटा लिया। इस बात से नगर निवासियों के एक भाग ने अइसिटस को बुलाकर उस की सहायता ली, औ इस रीत से वैरी दल करके नगर का नाश हुआ। इसी बीच कार्थेजवाले परा क्रमी जहांजसमूह लेकर इसी बंदरस्थान में आ उपस्थित ऊए, तब तो सिरैक्यूज़वालों ने निरास हो इस महा संकट के बीच अपने पूर्व्व नगर कारिंथबालों से सहायता के लिये प्रार्थना की। कारिंथवालों ने केवल एक सहस्र सेना सहित टिमोलि अन नाम जन को उन की सहायता के लिये भेजा, जो सबों की अपेक्षा बडा धर्म्मात्मा था। उस ने इस छोटे से कटक को ले साहस पूर्वक सिरैक्यूज़ को प्रस्थान किया; औ शीघ्रता पूर्वक आ डइओनिशिअस को ऐसा क्लेश दिया, कि उस ने जय की आस तज टिमोलिअन के हाथ में गढ का समर्पण किया, औ कारिंथ को भाग गया; वहां जाकर बालक सिखाने के लिये पाटक बना। यद्यपि टिमोलिअन की अति अल्प सेना

थी, परंतु उस की बुद्धि औ निपुणता बड़ी थी, उस ने निज भेद जाननेवालों को भेज कर कार्थेजवालों के मन में ऐसा संदेह उपजवाया, कि मेगो इस भयानक विश्वास घात से डर कर निरास हो अपना उद्योग तज युद्ध विषयक जहाज सहित कार्थेज को फिरा, औ वहां पऊंचतेही लोगों ने कपटी जान उसे समुद्र के तटपर सूली दी। थोड़े ही काल पीछे अइसिटस भी टिमोलिअन के आधीन ऊआ, औ सिरैक्यूज़ फिर स्वाधीन ऊआ। तो भी कार्थेजवालों ने फिर इस उपद्वीप पर चढ़ाई की, परंतु उसी कारिंथिअन के सेनापति ने संपूर्ण रूप से उन्हें हरा दिया, औ दवाकर संधि पत्र में लिखवा लिया कि आस पास के बऊत से जो हमारे जय किये ऊए नगर हैं उन को छोड़ा। टिमोलिअन ने अब परदेशी शत्रुओं के हाथ से उपद्वीप को छुड़ाकर उस के भीतरी सुधार के लिये नाना प्रयत्न किये, परंतु वै एक उन में से सिद्ध हुए औ आप पहले ही ईसवी शक के पूर्व ३३७ वें वर्ष में मरगया, औ प्राचीन सेना पतियों के बीच अपनी सुन्दर कीर्त्ति छोड़गया। सिकन्दर के संवत से पांच वरस पूर्व उस की मृत्यु हुई। इस उपद्वीप की कथा में अगाड़ी के गुरुतर वृतान्त हैं औ गोपालक एगेथोक्लीज़ के अद्भुत कर्म। परंतु उस का उद्योग औ अन्त में सिसली औ कार्थेज का रूम के वस होना यह सब विषय अगले संवत् में करैंगे।

॥ ८ अध्याय ॥

॥ चौथा काल सिकन्दर की मृत्यु से ॥
॥ ईसा के जन्म तक ॥

सिकन्दर के पुत्र का सिंहासन पर बैठना—महाराज्य के प्रथम विभाग—सिकन्दर की मर्णक्रिया—सिकन्दर के सेनापतियों का विवाद—इस महा राज्य के अन्त के विभाग जो टालेमी, कैसेण्डर—सैल्यूकस—औ लिसिमेकस में हुए इन सब बातों का विषय कहैंगे।

इस काल के प्रधान वृतान्त वे हैं, जिन से ज्ञात पृथ्वी में रूम के पराक्रम का स्थापन जाना जाता है॥ सिकन्दर के मरणे के पीछे उस के महाराज्य का बिभाग उस के सेनापतियों में हुआ, औ पीछे एक एक करकै वे छोटे छोटे राज्य रूम के अधिकार में मिल गये। इसलिये हमारे विचार में आता है कि उन राज्यों का पृथक पृथक कुछ वर्णन तब तक करैं जब लग वे स्वाधीन रहे। पीछे रूम की कथा कहने से उन सबों का विषय जाना जायगा; औ इसी में कार्थेज, सिसली, स्पेन, औ इटली के भी मुख्य मुख्य कर्म कहैंगे।

सिकन्दर ने मरते समय अपने अति विस्तृत राज्य पर किसी को उत्तराधिकारी न किया। उस के मरण काल पीछे उस के सेनापतियों ने अगाड़ी को परामर्श करने के लिये सभा

की, पर वहां दृष्ट पडा कि प्रत्येक जन अपनी अपनी दृद्धि मन में विचारता था, और एक प्रधान जन को इस नवीन महराज्य पर स्थापन करने के लिये अवरोध करता था। निदान उन्हों ने परडिकास को राजप्रतिनिधि करके सिकंदर के वैमात्रेय भ्राता औ अति शिशु पुत्र को सिंहासन पर बैठाय, नाना प्रदेशों का विभाग आपस में करलिया। मिसर देश टालोमी को दिया, फिरिजिआ, लिसिआ, और पैंफिलिआ, ऐंटिगोनस को मिले; थ्रेस, लिसिमेकस को; ऐंटिपेटर औ क्रेटरस को मैसिडोनिआं प्राप्त ऊआ; औ उस काल में कुछेक पराजित ऊआ कैपेडोशिआ देश यूमिनीज़ को दिया। ये सेनापति सिकन्दर की बुद्धि के बल से कुछ काल भी रुके न रहे, औ अपने अपने मण्डल में स्वाधीन होने की इच्छा करी, औ आस॰ पास के निकटवर्त्ती भागों के जय करने का लालच किया। इस विभाग होने के पीछे पहले ही पहल यूनानी प्रतिकूल ऊए, जिन को सिकन्दर ने एशिआ के नाना देशों का विभाग कर दिया था; परंतु पैथो नाम जन ने उन्हें झट जीत लिया। सिकंदर के मरण काल पीछे दो वरस तक उस की समाधि क्रिया योंही पडीरही, यह वृतान्त उस काल में वडी धूम धाम का औ अद्वितीय रूप से चमत्कारी था। उस के सङ्गी उस के मृतक शरीर को बेवीलन से मिसर को ले जाते हुए बडी सेना लेकर मार्ग में रक्षा करतेरहे, औ अन्त में ऐलैकजैंड्रिआ नगर में उस की समाधि वनाई, जो नगर उस की बुद्धिवानी का अत्यन्त मुख्य चिन्ह था, इस नगर को छोड करके और कोई ऐसा उत्तम स्थान न था जो इस मृतक शरीर को धारण करै। सिकन्दर ने मरते समय प्रथम ही कहदिया था, कि हमारी अंत्येष्टि क्रिया रक्तपात के कारण प्रसिद्ध होयगी, औ

उस के भविष्यत वाक्य कहने के अनुसार वैसाही हुआ। उस के मरण से बीस बरस तोडी उस के अनेक सेनापतियों में निज निज वृद्धि औ बडाई के कारण ऐसा कलह, खड बडी, औ रक्त पात हुआ, जैसा कभी आगे इतने सूक्ष्म काल में पृथ्वी भर के बीच न हुआ था।

राजप्रतिनिधि पर्डिकास ने उपाधी प्रदेश केपेडोशिआ में यूमिनीज़ को संस्थापन करने के लिये अैंटिगोनस नाम सेनापति को आज्ञा की; यह बात पहले ही पहल युद्ध का बीज हुई। अैंटिगोनस ने यह आज्ञा न मान यूमिनीज़, औ पर्डिकास से प्रतिकूल हो अैंटिपेटर, टालेमी, औ क्रेटरस नाम सेनापतियों से मेल किया; इसलिये हार कर पर्डिकास आपही उस प्रदेश में गया, औ संपूर्ण रूप से उसे जय करके विजयी हुआ। तिस पीछे उस ने एशिआ मइनर को यूमिनीज़ के हाथ में सोंप आप सेना सहित मिसर पर चढगया, परंतु नील नदी के उतरने में तीन वेर उद्योग किये परव्यर्थ ही हुए, पीछे उसी के कटक ने उसे मार डाला, इस रीत से यूमिनीज़ इकेला सहायता रहित एशिआ मइनर में अपने पूर्व्व कहे हुए चारों शत्रुओं से युद्ध करने के लिये रहगया। इसी बीच अैंटिगोनस औ क्रेटरस ने एशिआ मइनर पर धावा किया, परन्तु दोनों यूमिनीज़ से हारगये, सिकन्दर का परम प्रिय औ वृद्ध क्रेटरस नाम सेनापति इसी युद्ध में ठोड रहा।

पर्डिकास के मरने से मैसीडन का अैंटिपेटर नाम अधिपति राजप्रतिनिधि हुआ, परन्तु उस पद के पाने से उसे अति शंका थी, क्योंकि उस में बड़ा बल न था। नाना प्रदेशों में और भी नवीन बांट हुआ, बैबीलन की पूर्व्व ओर के देश सैल्यूकस को दिये गये थे, वह भी सिकन्दर का सेनापति था।

ऐंटिगोनस यूमिनीज़ के साथ पराक्रम पूर्व्वक युद्ध करता रहा निदान विश्वासघात कर उसे हरा दिया, औ सब एशिआ मइनर को ले लिया। टालेमी ने सिरिआ औ पेलेष्टइन को छीन कर अपना मिसर का राज्य बढाया; इन दोनों प्रदेशों को अधिकार में करना मिसर की रक्षा औ कल्याण के अर्थ अत्यन्त आवश्यक था। इस के थोड़ेही दिनों पीछे ऐंटिपेटर मरा, औ मरते समय राजप्रतिनिधि का कर्म पैलिसपर्कन नाम जन को दिया, औ निज पुत्र कैसेंडर को न सौंपा, पर उसे केवल सेना का अधिकारी किया। तो भी ऐंटिगोनस यूमिनीज़ के पीछे पड़ा रहा जिस ने सिकन्दर के कुनबे का स्वत्व औ राजप्रतिनिधि का कर्म संभाला था, उसे नौका संबंधी युद्ध में हरादिया, परंतु यूमीनिज़ ने झट ऊपर के एशिआ पर जा धावा मारा, औ जो लोग सैल्यूकस के विरोधी थे उन्हें इकट्ठा कर अपने में मिलालिया, क्योंकि अभी सैल्यूकस उस से प्रतिकूल होकर बैरीदल में जा मिला था। ऐंटिगोनस भी उस के पीछे ही पीछे लग चलागया, औ अति दारुण शीत काल के बीच उस पर चढाई कर अति साहसी औ श्रद्धालु यूमिनीज़ को हरा दिया, औ पीछे उसी की अबाध्य सेना ने उसे शत्रु के हाथ में पकड़ा दिया, उस ने निर्दईपने से उसे मारडाला। सिकन्दर के सब सेनापतियों में यूमिनीज़ युद्ध के बीच अतिनिपुण औ संधि करने में महा दक्ष था।

उस के मरने से बहुधा कोई ऐंटिगोनस का प्रतियोगी न रहा, पर शत्रुता बने रहे; यद्यपि उस की अवस्था अस्सी बरस से विशेष थी, पर मन युवा पुरुषों कासा था इसलिये इतना राज्य बढाने की इच्छा की, जितना उस के स्वामी का था। इसहेतु और चार सेनापतियों ने इस बृद्ध राजा औ उस के

वन्य परंतु अति साहसी डिमेट्रिअस नाम पुत्र की तृष्णा मिटाने के लिये आपस में मेल मिलाप किया। टालेमी ने युद्ध का प्रारंभ करके गेज़ा स्थान में डिमेट्रिअस को हरा दिया; परंतु इस जय का कुछ फल न हुआ, जैसे ही पैलेस्टाईन, औ सिरिआ प्रदेश हाथ से जाते रहे, क्योंकि पीछे ऐंटिगोनस ने जाकर उन्हें लूट लिया, औ टयर नगर को घेर लिया, सो भी चौदह मास पीछे उस के समर्पण हुआ। इन लड़ाईयों में चार बरस चलेगये, पीछे ऐंटिगोनस औ उस के सब शत्रुओं में सैल्यूकस को छोड़के संधि ठहरी, इस नियम से कि प्रत्येक जन अपने २ अधिकार में बना रहै, यूनानी नगर स्वाधीनहोजांय, औ सिकन्दर का सिकन्दर नाम पुत्र सिंहासन पर बैठ कर सबों के ऊपर आज्ञा कर्त्ता रहै। इस संधि से उस की दुर्दशा हुई, क्योंकि कैसेंडर ने अगले ही बरस में उसे औ उस की माता को मारडाला। इस बीच ऐंटिगोनस ने सिकन्दर की क्लीओपेट्रा नाम बहन को कटा करवाई; इस रीत से सबों की अपेक्षा पूर्वकाल में जो महावीर था, बीसही बरस के अन्तर में निर्दयाता पूर्वक उस का सब कुनबा मारागया।

समुद्र तट पर टालेमी के पराक्रम का उदय, औ सइप्रस उपद्वीप की लूट जो उस ने की थी, इन दोनों बातों को देख कर ऐंटिगोनस ने उस का महा पराक्रम रोकने के लिये, उस से फिर युद्ध करने का प्रारंभ किया, ऐंटिगोनस के डिमेट्रिअस नाम पुत्र ने सइप्रस उपद्वीप पर टालेमी को हराकर बड़ी जय प्राप्त करी, पर वह निष्फल थी। औ इस काल में सिकन्दर का सब परिवार नष्ट हो ही चुका था, इसलिये डिमेट्रिअस ने राजा की पदवी ली, औ उसी के अनुसार सब अधिपति अपने अपने प्रदेश में राजा कहलाने लगे। तिस

पीछे ऐंटिगोनस औ डिमेट्रिअस सेना सहित मिसर पर चढ़ गये, परंतु उन्हों ने इस उद्योग में निरास होकर रोड्ज़ नगर को घेर लिया, जो नगर टालेमी की ओर होगया था। यह नगर ब्योपार के गुण से धनाढ्य औ पराक्रमी हुआ था, औ उस काल में सब यूनानी नगरों के बीच अत्यंत प्रतिष्ठित था। रोड्ज़ नगर निवासियों ने ऐसी रीत से नगर की रक्षा की कि जिस में उन की बड़ी महिमा हुई, और डिमिट्रिअस की अद्वितीय बुद्धिवानी को भी व्यर्थ कर दिया, तब एथेनवालों ने उसे जोनार में बुलाया, वह जय की आस तज निरास हो प्रसन्नता पूर्वक वहां गया, इस छल से नगर का घेरा भी छूटा। यूनानी लोग बड़ी शिष्टाचारी पूर्वक उस से मिले, औ मैसीडोनिआ को जय करने के लिये उसे अपनी सेना का अधिपति किया। उस ने झट उन लोगों को ताड़ना की जिन को यूनान में नाना दुर्गों के बीच कैसेंडर ने स्थापित किया था, औ पीछे मैसीडन की ओर धावा किया, परंतु इसी बीच उस का वृद्ध पिता वैरियों से दवाया गया था, इसलिये उस ने अपनी सहायता के अर्थ उसे शीघ्र बुलाया। यहां ऐंटिगोनस औ उस के पुत्र का एक ही बेर विनाश करने के लिये, सैल्यूकस औ लिसिमेकस ने टालेमी औ कैसेंडर से मिलाप किया। ईसवी शक के पूर्व ३०१ वें वर्ष में फ्रिजिआ के बीच इप्सस स्थान पर दोनों ओर के दल का आमना सामना होते ही एक महा भारथ मचा, जिस के बीच ऐंटिगोनस खेत रहा, औ उस का महाराज्य लुप्त होगया। पीछे दो जयवन्त लिसिमेकस औ सैल्यूकस ने विना परामर्श किये अपने दूसरे सङ्गी योद्धाओं का अभाव जान जय किये हुए राज्य का आपस में भाग करलिया; एशिआ मइनर में

टारस पर्वत के पश्चिम का देश लिसिमेकस के बांट में आया, औ इस पर्वत के पूर्व का देश सैल्यूकस के भाग में गया। तब डिमेट्रिअस निज जहाजों की सहायता से कुशल पूर्वक यूनान को चलागया; वहां उस ने बड़े बड़े भारी कर्म किये, उन का वर्णन मैसीडन औ यूनान की कथा में करेंगे।

बीस वर्ष पीछे युद्ध के अनन्तर सिकन्दर के चार सेनापतियों ने उस के महाराज्य को फिर परस्पर बांट लिया। टालोमी को मिसर देश मिला; कैसेंडर को मैसीडोनिआ; सैल्यूकस के भाग में टारस पर्वत के पूर्व का एशिआ आया; औ लिसिमेकस को उसी पर्वत श्रेणी के पश्चिम ओर का एशिआ औ थ्रेस मिला। इस बीस बरस के बीच जिस जिस अभागे देश के मध्य युद्ध हुआ, उस का विनाश होगया, और लोगों ने परिश्रम करके जो जो उत्तम पदार्थ इकट्ठे किये थे, वे सब नष्ट हुए। ये जो महाराज्य के चार विभाग हुये, इन के बीच कभी कभी प्रजागण को सुख रहा, तो भी ये चारों राजा आपस में एक दूसरे पर चढ़ाई करते रहे, जब लग वे होले होले घट घटा कर रूम के पराक्रमी औ प्रतापी राज्य के वशीभूत न हुए। अब हम इन चारों राज्यों की तब तक की कथा कहेंगे जब लग वे रूम के राज्य में न मिलगये।

॥ सैल्यूकस का ॥
॥ राज्य ॥

सैल्यूकस के राज्य का स्थापन होना—उस की हिंदुस्थान पर चढ़ाई—चन्द्रगुप्त के सङ्ग संधि—राज्य का पूर्व स्थान छोड़ ऐंटिआक को राजधानी किया—सैल्यूकस का गुप्त रूप से मारा जाना—पहला ऐंटिओकस—ऐंटिओकस दूसरा—पार्थिआ औ बैकट्रिआ का प्रतिकूल होना— दूसरा सैल्यूकस—तीसरा सैल्यूकस—श्रीयुत ऐंटिओकस— उस के युद्ध विषयक अनेक उद्योग—एशिआ माइनर की हानि—इपीफेनीज़—उस का मत का पक्ष—यहूदियों का प्रतिकूल होना—यह राज्य रूम के महाराज्य में मिल गया इन सब बातों का वर्णन अब करेंगे।

सिकन्दर के मरने से ८ बरस पीछे ईश्वी शक के पूर्व ३१२ के वर्ष में ऊपर के एशिआ में सैल्यूकस ने सैल्यूकीय महाराज्य स्थापन किया। इस महाराज्य में जो देश थे उन को सिकन्दर भी संपूर्ण रूप से जय नही कर सका था, और उस के संभालने में बड़ा पराक्रमी औ गुणी प्रधान जन चहिये था। सैल्यूकस सत्यप्रतिज्ञ औ पराक्रमी इस राजवंश म केवल यही मनुष्य था जिस में ऐसे गुण थे। पांच ही वर्ष के वीच में सैल्यूकस उन देशों का स्वामी हो गया, जो उफरात औ सिंधुनदी के बीच, आकसस नदी औ फारस के खाल के मध्य मे हैं।

ईसवी शक के पूर्व ३०५ वें वर्ष में एक बड़ी सेना सहित चन्द्र-गुप्त पर चढ़ाई की, जो उस काल में हिंदुस्थान का पराक्रमी राजा था, और जब गङ्गा तक पहुंचा, तब चन्द्रगुप्त के संग संधि की; इस नियम से कि तुम हमें पांच से हाथी दो, औ हम तुम्हारे अर्थ सब हिंदुस्थान का राज्य छोड़ देंगे, जो हम ने जय किया है; इस बात का पक्का मता करके सिंधुनदी को अपने राज्य की पूर्व सीमा स्थापन की। इप्सस की लड़ाई में ऐंटिगनस का मरण होने से जिस का प्रसंग अभी कहचुके हैं सैल्यूकस ने निज राज्य का विस्तार दो गुणा किया; और टइ-ग्रस नदी के तट से अपने राज्य की राजधानी हटाकर ऐंटि-ओक नगर में स्थापन की, जो भूमध्यस्थ समुद्र के तट पर है। इस राजधानी के परिवर्त्तन करने से बड़े विघ्न हुए, उपरात औ सिंधु नदी के बीच जो देश था, उस में उस का पराक्रम निर्बल पड़ा, क्योंकि इस स्थान में ओरों की अपेक्षा उस का रहना आवश्यक था, औ पश्चिम के राजाओं के झगडों में आप भी प्राप्त हुआ, सैल्यूकस का राज्य उस की प्रजा को बड़ा उपकारी हुआ, अठारै बरस तोड़ी उस की आज्ञा में प्रजागण सुखी औ निडर रहा। उस ने अनेक नगर औ पत्तन बनाये, औ बेपार बढ़ाया, औ आक्सस नदी के तट पर पूर्व ओर विशेष करके विस्तृत किया। तीस बरस के राज्य करने के अनन्तर जब वह मैसीडन को जीतने के लिये विचारता था, तभी कोई ने छिप कर उसे मारडाला; औ उस के मरते ही राज्य का यश औ शोभा भी धूल में मिल गई।

उस के ऐंटिओकस नाम पुत्र ने पराक्रम सहित पर यश रहित उन्नीस वर्ष राज्य किया। उस ने विथिनिआ देश को जय करने का उद्योग किया, इस उद्योग के कारण उस देश के

राजा औ फ्रांसवालों को अपनी सहायता के लिये वुलाकर उन को एशिआ मइनर के वीच गैलोग्रीशिआ अर्थात् गैले-शिआ देश में वसाया; ऐंटिओकस ने यद्यपि उन को युद्ध में हरा दिया था, पर फिर उन्हें वहां से उखाड़ने की उस में सामर्थ न रही। सैल्यूकस के महाराज्य का किंचित् विनाश होने से फ्रांसवालों के नवीन स्थापित परगेमस नाम राज्य की वृद्धि होने लगी। ऐंटिओकस के मरने से उस का दूसरा ऐंटिओकस नाम पुत्र सिंहासन पर बैठा; उस के राज्य में रण वास की आज्ञा प्रधान ऊई। पार्थिआ औ वैकट्रिआवालों ने राजसभा के मनुष्यों को अत्यन्त राग रंग सुख भोग के वस जान राज्य की निर्वलता देख, ऐंटिओकस से प्रतिकूल होकर स्वाधीन होगये। उस के पंद्रह वरस के राज्य का यही एक केवल भारी वृतान्त था। तिस के पीछे दूसरा सैल्यूकस राज गद्दी पर वैठा, जिस ने वीस वरस राज्य किया; पर इस काल के वीच लगातार युद्ध होते रहे, औ राज्य क्षीण होगया। उस ने पार्थिआ को फिर निज महाराज्य में मिलाने के लिये उद्योग किया, पर वह वहां हारकर प्रतिकूल लोगों के हस्त गत हो जवतक जीया तवतक बंदी गृह में रहा। उस के ज्येष्ट पुत्र तीसरे सैल्यूकस ने बहुत थोड़े काल अर्थात् तीन वरस तक अयश पूर्व्वक राज्य किया, औ पीछे कोई ने विष देकर मार डाला; उस के पीछे उस का छोटा भाई श्रीयुत ऐंटिओकस राजा ऊआ। उस ने मीडिआ औ फारस के अधिपतियों को निजवस किया, जो प्रतिकूल हो गए थे; तिस पीछे सेना सहित मिसर के राजा पर चढ गया, जिस ने सिरिआ को उस से छीन लिया था; परंतु रैफिआ की लढाई में हारगया। तिस के पीछे ऊपर के एशिआ में जो प्रतिकूल प्रदेश थे उन

की ओर ध्यान किया, परंतु उन का फिर जय करना असंभव जान औ हार मान बैकट्रिआ औ पार्थिआ को उन्ही के आधीन रक्खा। इस बात से भी कुछ निरास न हुआ औ वह सेना सहित हिंदुस्थान को गया, यद्यपि इस देश में उस ने स्थिरता न पाई, पर पूर्व्व एशिआ में उन देशों को छोड़कर जिन की स्वाधीनता उस ने अङ्गीकार की थी, अपना अधिकार स्थापन किया। थोड़े ही काल पीछे, उस ने मैसीडन के फिलिप नाम राजा से मिलाप किया, औ मिसर के टालेमी नाम नरपति को लिखिआ, औ फिनिशिआ से निकाल दिया। इसी कारण से वह रूमवालों के सनमुख हुआ, जो पूर्व्व दिशा में निज अधिकार का विस्तार करते थे। श्रीयुत हैनीबल रूम वालों के शत्रु ने उस की राजसभा में आकर शरण ली; और उस ने एक प्रयत्नकर इटली के बीच रूमवालों से लड़ाई ले उन की वृद्धि रोक दी। परंतु अँटिओकस ने अपनी अज्ञानता पूर्व्वक उस का आशय समझ उस का कार्य्य घटाने में लगा। रूमवालों ने उसी बात के अनुसार उस के राज्य पर चढ़ाई कर उसे हरा दिया, औ दबा कर अपनी इच्छा पूर्व्वक उस से संधिपत्र लिखवा लिया, जिस मे संपूर्ण रूप से अँटिओकस ही की अपकीर्ति थी। उन्हों ने संपूर्ण एशिआ मइनर अर्थात् वह देश जो टारस पर्वत के पश्चिम ओर समुद्र तक है उस से ले लिया, औ यह ठहरालिया कि असंख्य द्रव्य दस बरस तोड़ी किस्त करकै दे, औ हैनीबल को अपने घर से निकाल दे, औ अपने पुत्र को ओल में दे। रोमवालों ने निज मित्र औ अँटिओकस के महा शत्रु परगेमस नाम राजा को एशिआ मइनर दिया। अँटिओकस ३७ बरस राज्य करकै मारागया।

उस के पुत्र का राज्य बारह बरस रहा उस काल के बीच

निर्वलता पूर्वक राज्य में शान्ति रही; क्योंकि रूमवालों के प्रबल प्रताप ने सब देशवालों के पराक्रम को दबा दिया। सैल्यूकस के पीछे उस का ईपीफेनीज़ नाम पुत्र जो रूम में पढ़ा था सो राजा हुआ। उस ने मिसर पर चढ़ाई की, पर इस बात में जो रूमवाले मध्यस्थ न होते तो इस देश को जीतता। उस ने अपना मत जो अशास्त्रीय विषय यूनान में देखा था सो स्वदेश में स्थापन करने का प्रयत्न किया, औ इस कार्य से यूनानी लोग राजा से प्रतिकूल हुए, औ जूड़िआ स्वाधीन हुआ। ईसवी शक के पूर्व १६५ वें वर्ष में ईपीफेनीज़ मरगया; सैल्यूकीय राज्य की शेष कथा का वर्णन करना अब आवश्यक नहीं है; केवल इतना विषय कहना योग्य है कि वहां आंतरिक युद्ध, घर घर में विवाद, औ ऐसे कुत्सित कर्म फैले, कि जिन का विषय कहने को चित्त नहीं चाहता है। सैल्यूकस के महाराज्य की सीमा क्रम क्रम से घटते घटते ऐसी होगई कि केवल सिरिआ, औ फिनिशिआ रह गये। यह राज्य इस निर्बल दशा में प्राप्त हुआ कि रोमवालों ने इस का जय करना अयोग्य समझा, परंतु ईसवी शक के पूर्व ६४ वें वर्ष में इस राज्य को लेकर निज राज्य का एक प्रदेश बनालिया।

॥ मिसर ॥

१ टालोमी—उस का मंगल दायक राज्य, औ बड़ी जीत—२ टालोमी—मिसर का वाणिज्य—राजद्वार का सुख भोग—३ टालोमी—उस की युद्ध विषयक चढ़ाई—उस के मरण काल पीछे राज्य का परिवर्तन—डेढ़सो १५०

वरस कलह औ हल चल रही—रूम के प्रताप की हृद्धि—क्लिओपेट्रा—मिसर रूम के राज्य का एक प्रदेश होगया इन सब का विषय अब कहेंगे।

पूर्व्व लिख चुके हैं कि सिकन्दर का महाराज्य बंटने के समय उस के अति विज्ञ टालेमी नाम सेनापति के भाग में मिसर देश आया। यह देश दोसो बरस तोडी फारस के राजा के आधीन रहा था औ उस की दुष्टता से क्षय को प्राप्त हुआ था, सो अब पराक्रमी टालेमी का राज्य हुआ, जिस ने उस को वडी दूर दूर के वाणिज्य का मध्यवर्त्ती औ विद्या औ गुण रूपी रत्न की आकर किया। १ टालेमी सिकन्दर की सतसंगति से राज्य के बनाने, रक्षा, सुशोभित करने में अति प्रशंसनीय हुआ था। उस ने मिसर देश को सुधारने के अर्थ बहुत उपाय किये, औ अपने श्रीयुत स्वामी के अनुसार चलता रहा, औ नवीन स्थापित अलैक्जैंड्रिआ नगर को निज अधिकार का राजधानी किया, औ इसे सब देशों के व्योपार की मण्डी बनाने के लिये परिश्रम में लगारहा। टालेमी का उद्योग ऐसा सफल भया कि अलैकजैंड्रिआ नगर बन्दर स्थान होगया, औ शीघ्र ही टयर नगर उस के अगाडी अस्त ऊआ औ क्रम क्रम से सब पश्चिम के देशों का व्योपार सकल रूप से उसी में होने लगा। मिसर के बीच टालेमी पर लोगों ने दो बेर चढ़ाई की, उस ने केवल धावा करनेवालों ही को नही हटा दिया, परन्तु फिनिशिआ, जूडिआ, औ सइप्रस देश को लेकर निज अधिकार में मिला लिया, इन देशों में जहाज के बनाने की सामग्री सब से अच्छी उत्पन्न होती है। ये देश डेढ़ सो वरस तोडी मिसर के राज्य में संयुक्त रहे।

टालेमी ने आफ्रिका के बीच भी सीरीन औ उस के निकट वर्त्ती लिबिआ देश को जीत निज अधिकार का विस्तार किया। उस का हितकारी राज्य उन्तालीस बरस रहा; उस के मरने के अनन्तर अविरोध पूर्व्वक उस का दूसरा टालेमी नाम पुत्र राजा हुआ, जिस का राज्य अडतीस वरस रहा।

उस के राज्य में सदा शांति रही। उस के समय में समुद्रतीर पर मिसर देश की आज्ञा रही, औ थलद्वारा भी उस के समान कोई राज्य न था; उसी काल में उस की आन्तरिक संपति औ मंगल अपूर्व्व रूप से उन्नति हुआ। औलैकजैंड्रिआ का वाणिज्य तीन दिशाओं में हुआ, औ सब पृथ्वी भर की मण्डियों से मेल हुआ; थलद्वारा एशिआ औ आफ्रिका में उस का वाणिज्य फैला; औ उत्तर में भूमध्यस्थ समुद्र के तीर तीर जो सब देश हैं, उन में फैला; औ दक्षिण में अरब के खाल में होकर एशिआ के धनाढ्य देशों तक चला गया। मिसर में नवीन नवीन वंदर स्थान औ लङ्गर स्थान हुए; औ नाले अनेक खुदगये, जिन के कारण वाणिज्य करना वड़ा सुगम होगया, औ एका एकी वाणिज्य के द्वारा चार करोड़ रूपैया कर का प्रतिवर्ष राज्य में प्राप्त होने लगा, जिस से राजा को संपूर्ण रूप से सहायता हुई, यह वृत्तांत जो दो सहस्र वर्ष पूर्व मिसर में था सो अब आमेरीका में देखा जाता है। पहले टालेमी ने घर में विचार करके खरच करना औ सांसारिक कर्मों में साधारण औ सचा रहना, ये सब वातें सिकन्दर से सीखी थीं; औ जिस दिन से सिंहासन पर बैठा इन सवों का अभ्यास करता रहा, परंतु उस के पुत्र की राजसभा में इन सवों की न्यूनता थी, औ राग रंग सुख भोग की अधिकाई हुई, जिस के कारण क्रम क्रम से राज्य की जड़ उखड़ी। ईसवी शक के पूर्व २४६

बं वर्ष में तीसरा टालेमी मिसर देश के सिंहासन पर बैठा, औ पचीस वरस राज्य किया। उस ने एकाएकी अपने पिता का शान्ति खभाव छोड़ आप सेना सहित जय करता ज़ुआ पूर्व में बैकट्रिआ तक पज़ंचा, औ ऐसेही आफ्रिका में एथीओपिआ के बीच तक चला गया। परंतु इन सब देशों का जय करना व्योपार को बड़ा गुण कारी ज़ुआ, जिस के कारण से थोड़े ही काल में ऐसा परिवर्त्तन ज़ुआ कि कोई राजा ने अपनी विवेचना, औ पराक्रम से किसी देश में न किया था; क्योंकि इस काल के सो वर्ष पूर्व मिसरवाले ऐसे निंघ थे कि व्योपार द्वारा किसी देश से उन का मेल मिलाप न था, सो मिसर देश तीनें टालेमिओं के राज्य में पृथ्वी भर के वाणिज्य का मुख्य स्थान होगया।

सो वरस तोड़ी तीन लगातार राज्य में मिसर देश का बड़ा सैभाग्य ज़ुआ, उस काल के बीच बुद्धि वानी में प्रथम तीन टालेमिओं के समान तीन भूपति हुए, परन्तु तीसरे टालेमी के मरते ही मिसर का प्रताप रूपी सूर्य्य अस्त ज़ुआ। राज्य नियम में सत्यानाशी परिवर्त्तन फैला, अपरिमित सुख भोग राग रङ्ग औ राजद्वार के अतिनिर्दई पन से अनेक महा पाप युक्त कर्म होने लगे। तीसरे टालेमी के मरने से डेढ़ सो बरस पीछे तक मिसर की कथा दुराचार, राज्य का उपप्लव, कटा, लड़ाई लंपट, आदि विषय से परिपूर्ण है, जिन का वर्णन पढ़नेवालें के मन को मनोहर नही है। जिस काल में मिसर का राज्य कुत्सित कर्मों के कारण निर्व्वल होता जाता था, तभी रूम नगर का अधिकार बढ़ता जाता था, निदान मिसर देश रूम के अधिकार में मिल गया।

तिस पीछे पराक्रम की आकांक्षा करनेवाले रूमियों ने मिसर के राज्य को ले अनेक स्वेच्छा पूर्व्वक व्यवहार करके रूम के कई प्रधान जनों ने परदेशियों को मिसर के अधिकार का प्रदान किया, परन्तु उस देश का शोभा विहीन मुकट अन्त की क्लीओपेट्रा नाम उसी देश की राणी के सिरपर रक्खा, यह स्त्री औरों की अपेक्षा उस काल में बडी सुशिक्षित औ सुरूपवान थी; पर उस की चाल धर्म युक्त न थी। तिस पीछे उस ने कैसर जो उस काल में सबों की अपेक्षा प्रधान मनुष्य औ ऐंटनी जो कुछ काल रूम का अधिपति रहा था, इन दोनों को अपने स्वरूप से मोहित किया, औ पीछे जब यह बात रूम के लोगों में प्रगट होने को हुई, तब उस ने इस लज्जा के मारे ईसवी शक के पूर्व्व ३० वें वर्ष में विष पान करके देह त्याग किया। अन्त में उस के मरने से मिसर रूम के राज्य का एक प्रदेश हुआ। इस पूर्व्वोक्त लगातार विवादास्पद काल में झगड़े रुक रुका कर राजधानी अलैकजेंड्रिआ नगर में रहे, औ अन्य प्रदेशों में संधि हो गई। इस बीच रूम नगर निज पराजित प्रदेशों से द्रव्य खैंच कर आप सुख भोग में स्वर्ग तुल्य होगया, औ अलैकजेंड्रिआ अपने स्वाभाविक गुणों से एक सरिता बनगया जिस के कारण यह सुख भोग भरपूर रहा, इन कारणों से और जो बन्दर स्थान रूम के अधिकार में प्राप्तहोने के पूर्व्व राजाओं के झगड़ों करके बंद होगये थे सो इस काल में स्वेच्छा पूर्व्वक ब्योपार करने लगे, इन बातों से भूमध्यस्थ समुद्र के बीच अलैकजेंड्रिआ तो नौका संबंधी व्यवहार में गणना द्वारा दूसरा औ रूम नगर प्रधान हुआ।

॥ मैसीडन औ यूनान ॥

—

ऐंटिपेटर—यूनानियों की प्रतिकूलता—डीमास्थेनीज़—यूनानियों की हार—ऐंटिपेटर का हितकारी राज्य—कैसेंडर औ पालिसपर्कन-डिमीड्रिअस फेलीरिअस—सिकन्दर के कुटुंब का वध—ऐंटिगोनस का पुत्र डीमीड्रिअस जिस को राज्य मिला—उस का मरण—लिसिमेकस औ पिरस—ऐंटिगोनस गोनेटस जो मैसीडन का राजा था—एकेईआ का मेल—दूसरा डीमिड्रिअस—ऐंटिगोनस डोसन—फिलिप—रूमवालों के संग उस का युद्ध—अपमान जनक संधि—फिलिप के डीमिड्रिअस नाम पुत्र की खेद युक्त मत्यु—परसीअस रूमियों के संग उस की हार—मैसीडन रूम के महाराज्य का एक प्रदेश होगया इन सबों का वर्णन अब करैंगे ॥

सिकन्दर के मरण समय ऐंटिपेटर प्रतिकूल मैसीडोनिआ देश का अधिपति हुआ, ईसी काल में यूनान के नाना प्रदेश प्रति कूल होने को उपस्थित थे इन सबों को रोकने का भार ऐंड्रिपेटर के सिर पर था। जब उस प्रधान वृतान्त अर्थात् सिकंदर के मरण के समाचार जानेगये, तब यूनानियों

ने साधारणता से औ एथेनवालों ने विशेष करके सुखरूपी समुद्र में मग्न हो मैसीडोनिआ की आज्ञा छोड़ स्वाधीन होने का प्रयत्न किया औ इसलिये उन्हों ने डिमास्थेनोज़ को अपने नगर में फिर बुलाया, जो उस काल में सबों की अपेक्षा सुवक्ता औ मैसीडोनीय राजवंश का अति कठोर शत्रु था। पीछे वक्रत से यूनानियों ने शीघ्र ही सेना संग्रह कर अति साहसी पर निर्विवेकी लियास्थेनीज़ नाम जन के आधीन की, उस ने झट ऐंटिपेटर के ढूंढ़ने का प्रस्थान किया, पीछे संपूर्ण रूप से उस के कटक को भगाकर उसे ऐसा दबाया कि जिस के कारण उस ने लैमिआ स्थान का आश्रय लिया। यहां वह चिरकाल तक घिरा रहा; निदान उस ने विचार किया कि जो मैं शीघ्र यहां से निकलूं तो बचूं। परन्तु इसी बीच घेरने-वालों की बड़ी भारी हानि ऊई कि उन का अधिपति लिया स्थेनीज़ मरगया। तिस पीछे लिओनेटस ने ऐंटिपेटर को अपने में मिला लिया, पर वहां भी वह फिर यूनानियों की मिली ऊई सेना से हारगया। यह जय यूनानियों को नाश कारक ऊई; क्योंकि वक्रत यूनानी निज जय का प्रकाश करने के लिये सेना को तज घरों को चले गये, और जो शेष रहे वे ऐसे संपूर्ण रूप से आलसी ऊए कि अच्छे प्रकार से शासन न करसके।

थोड़े ही काल पीछे अर्थात् ईसवी शक के पूर्व ३२२ वें वर्ष में ऐंटिपेटर की सहायता के लिले क्रेटरस नाम जन एशिआ से कटक लाया तब यूनानियों ने हार इन दोनों मिली ऊई सेनाओं के अगाड़ी मस्तक नवाया, औ यूनान के सब प्रदेश ऐसे दृढ़ रूप से मिले जैसे कभी न संयुक्त ऊए थे। ऐंटिपेटर ने उस काल में यूनान के और और नगरों के संग तो कुछेक

करुणा भी करी, पर एथेंस का तो ऐसा अपमान किया कि जो कहने में भी नही आवता; उस के अच्छे अच्छे प्रधान साध जनें को देश निकाला दिया, प्रजागण की प्रभुताई उलटा दी, औ मैसीडोनिआ का प्रभुत्व एथेंस में स्थापन किया; परन्तु एक बड़ा आश्चर्य है कि ऐंटिपेटर ने ऐसे राज नियम चलाये कि एथेंस और अन्य अन्य यूनान के प्रदेश ऐसे सुखी रहे कि जिस के कारण प्रजा ने ऐंटिपेटर को यूनान का पिता औ रक्षक कहा। एटोलिआवालें ने कुछेक काल थोड़ा सा खेद दिया, पर अन्त में वेभी वशीभूत हो गए। इस के किंचित काल पिछे ऐंटिपेटर ने एशिआ पर चढ़ाई की और वहां से आवते समय मार्ग ही में मरती विरियां निज महा राज्य का अधिकार पालिस्पर्कन को सोंपा, जो उस काल के बीच सिकन्दर के सेनापतियें में सब से वृद्ध था, औ स्वपुत्र कैसेंडर को केवल सेना का अध्यक्ष किया।

कैसेण्डर ने मन में विचारा कि पिता का राज्य प्राप्त करने में मेरा स्वत्व था, औ मैं उस से विमुख रहा, इसलिये बड़ा चिड़ चिड़ाया औ पालिस्पर्कन के संग अनेक वैरयुक्त आचरण किये। ऐंटिपेटर ने जो यूनान में राज नियम स्थापन किये थे, उन को उलटा देने के अर्थ यूनान के सब नगरों को स्वाधीन कर दिया। इस परिवर्तन से एथेंसवाले बड़े मगन हुए जिस ने उन को स्वेच्छा चारी करदिया, परन्तु वे उस परिवर्तन का भोग न करसके, औ उन्हें ने फोशिअन नाम जन के मारने में अपना क्षण मात्र भी न खोया, यह मनुष्य नगर निवासियें के बीच सबों से बड़ा धर्म्मात्मा, औ प्राचीन काल का भूषण था, तिस पीछे नीच औ कृतघ्नी पने के ऐसेकर्म बन्द हुए, जो सोलन के समय से एथेंसवाले प्रधान हितकारी

नगर निवासियों के सङ्ग करते रहे थे। अब कैसेंडर यूनान में आया; औ पालिस्पर्कन ने उस से संयाम करने के लिये कटक सजा कर अैटिका प्रदेश में प्रवेश किया, जहां उस की सेना ने झट देश को बिगाड़ कर शून्य किया, इसलिये उस ने सिकन्दर नाम निज पुत्र को किंचित कटक सहित कैसेंडर का आगमन तकने के लिये वहां छोड़ा। तिस पीछे वह आप पेलोपोनिसस देश पर गया, वहां के सब लोग उस के आधीन होगये, पर मेगोलोपोलिस नगर निवासियों ने उसे हरा दिया, इस कारण मैसीडन को फिरना उसे आवश्यक हुआ। इसहेतु को देख कर कैसेंडर यूनान का प्रभु हुआ, औ एथेंस नगर का अधिकार डिमेट्रिअस फेलेरीअस को दिया, जो उस काल में सब मनुष्य के बीच बड़ा कुशल था। उस का राज्य नगर निवासियों को बड़ा शुभ औ मंगल दायक हुआ। जिस के कारण वे सब उस की कृतज्ञता देख श्लाघी हुये। थोड़ेही काल पीछे सिकन्दर के वंश का वध हुआ। सिकन्दर की ओलिंपिआ नाम अहंकारी औ अशिष्ट माता ने उस के वैमात्रेय अैरीडीअस नाम भाई को उस राणी सहित अनेक प्रकार की वेदना करकै मरवा डाला। किंचित काल पीछे वह भी पिडना स्थान में घिरी औ वहां अश्व का मांस खाकर कुछ दिन काल क्षेपना की, निदान कैसेंडर के हस्तगत हुई जिस ने उस को झट मरवाडाला। कैसेंडर ने सिकन्दर की राक्सैना नाम रांड अैार उस के युवा पुत्र को भी वशीभूत कर कै मरवा गेरा। अैार उसी काल कैसेंडर ने पालिस्पर्कन को दवाकर उस से सिकन्दर के हरक्यूलीज़ नाम जारज पुत्र का सिर तरवार से कटवया। तिस पीछे कैसेंडर आस अैार निरास के कारण डामा डोल रहा, पर निदान शत्रु रहित होकर इप-

सस की लड़ाई के कारण दृढ़ रूप से यूनान के बीच स्थिर हुआ, यही इपसस की लड़ाई ऐंटिगोनस को मृत्यु जनक हुई थी।

कैसेंडर केवल दृढ़ रूप से तीन बरस यूनान औ मैसीडन के सिंहासन पर बैठा, पीछे मरते समैं राज्य निज तीन पुत्रों को सोंपा जिन में फिलिप ज्येष्ट था सो शीघ्र ही मरगया तिस पीछे दोनों पुत्रों ने परस्पर कलह कर अपना सत्यानाश किया। इस बात को देखकर ऐंटिगोनस का डिमिट्रिअस नाम पुत्र जो इपसस की लड़ाई में निज जहाज़ समूह की सहायता से बचा था, सो अब अवसर पा सिंहासन पर आ बैठा। इस रीत से ऐंटिपेटर के वंश का निपात हुआ, औ ऐंटिगोनस का कुल जिस का इपसस की लड़ाई में प्रजा को अनुमान हुआ था कि अब इन का उदय कभी नहीं होयगा, सो अब उसी का पुत्र ईसवी शक के पूर्व २९४ के वर्ष में श्रीयुत सिकन्दर के राज्य का अधिकारी हुआ। डिमिटिअस ने सात बरस राज्य का भोग किया, औ उसे अपने इस महाराज्य को जिस में मैसीडम थेस्सेली औ थेरेस का बहुत सा भाग था, सुधार कर एक सा करना चाहिये था; परन्तु वह और भी देशों को जय करने के कारण सदा युद्ध ही करने में युक्त रहा। निदान अपनी उच्च अभिलाषा के कारण एशिआ को भी जय करने के लिये चढ़ गया, परन्तु वहां बैबीलन के सैल्यूकस नाम राजा ने जो उस का खसुर था अपने इस जमांई को हरादिया औ उसे पकड़ कर जब तक जिया तब तक बन्दी गृह में रक्खा।

अब मैसीडन का सिंहासन सून्य देखकर दो जन उस के प्राप्त करने की आकांक्षा करके उपस्थित हुए; एक तो

लिसिमेकस जिस को सिकन्दर का महाराज्य बंटने के समय थ्रेस नाम प्रदेश मिला था; औ दूसरा इपिरस देश का पिरस नाम चंचल स्वभाव राजा जो सिकन्दर के कुटुंब का था; औ सिकन्दर ही के समान यश प्राप्त करने के लिये उत्कंठित था; परन्तु पिरस एशिआ के जय करनेवाले अर्थात् श्रीयुत सिकन्दर के समान न महानुभाव था, न जय करने में सत्य प्रतिज्ञ था। इन दोनों ने युद्ध किया जिस में लिसिमेकस ने जयवन्त हो सिंहासन पर बैठ चार बरस राज्य किया। निदान उस ने सैल्यूकस के संग द्वेष किया जिस के कारण लड़ाई हुई, उसी के बीच ईसवी शक के पूर्व २८२ वें बर्ष में अपना जीव खोया। इस जयवन्त सैल्यूकस एशिआ के भूपति ने डौंडी फिरवा दी की आज से मैं मैसीडन का राजा हुआ; परन्तु थोड़े ही दिनों पीछे वह यूरप को गया, जहां लिसिमेकस के एक संबंधी ने छिप कर उसे मरवाडाला, औ पीछे आप इस मरे हुए राजा का कोश औ कटक ले मैसीडन के सिंहासन पर बैठा। परन्तु जब ही उस ने बड़ा राज्य पाया तब ही फ्रांसवालों ने चढ़ाई कर उस का राज्य छीन उसे मार डाला। तिस पीछे फ्रांसवालों ने महा कोप कर धनाढ्य डेल्फी नाम मंदिर को लूटने के लिये धावा किया, परन्तु वह पर्वत मय देश था इस स्वाभाविक कठिनता के कारण उन का पराभव हुआ; तब वहां के अज्ञान लोगों ने अपने देवता में बिश्वास करके कहा कि जिस देव के मंदिर को फोड़ने के लिये उन्हों ने उद्योग किया था, उसी ईश्वर ने निज शक्ति से उन को पराजय किया।

मैसीडन का सिंहासन फिर शून्य रहा, तब डिमिट्रिअस का ऐंटिगोनस गोनेटस नाम पुत्र जो श्रीयुत ऐंटिगोनस

का पौत्र था, उस ने उस राज्य का अधिकार किया, परंतु उसे अपने राज्य की ओर देखने का कुछ सावकाश न था कि तभी पिरस जिस का आगे वर्णन हो चुका है उस ने इटली से आते हुए ऐंटिगोनस गोनेटस को सिंहासन से उतार डोण्डीफिरवाई कि मैं मैसीडन का राजा हुआ। किंचित काल पीछे पिरस पेलोपोनिसस पर गया, वहां आर्गस नगर में धसते हुए उस के सिर पर एक खपरा पड़ा जिस के कारण उस का जीव निकल गया। पिरस के मरने से ऐंटिगोनस फिर मैसीडन के सिंहासन पर बैठा, तिस पीछे अति सूक्ष्म काल अर्थात् १६ वर्ष के बीच इस सिंहासन पर बारह राजा स्थित हुए। ऐंटिगोनस ने इस देश में जो लड़ाई झगड़े रहे थे उन को तोड़ शांति औ स्थिरता की, और उस का वंश इस देश में राज्य करता रहा जब तक यह रूम के महा राज्य में न मिलगया।

यूनान के उत्तर में जब ये वृत्तांत हुए तब एकेईआ देश की समाज को मिलना आवश्यक होनेलगा। कारिंथ नाम आखात के दक्षिण में दरिद्री औ पर्वतमय एकेईआ देश के बारह नगरों ने परस्पर का बचाव करने के लिये रूम के प्रजा प्रभुत्व के घटते हुए काल में एक सभा स्थापन की। परंतु श्रीयुत सिकन्दर की युद्ध यात्रा औ मृत्यु के समय बड़े हुलड में इस सभा को दुबधासी रही, फिर ईसवी शक के पूर्व ३०१ के वर्ष में इपसस की लड़ाई के कारण भंग हो गई। परंतु ईसवी शक के पूर्व २८१ वें वर्ष में पूर्ववत् चार नगर स्वाधीन हुए औ फिर नवीन मेल किया औ पांच बरस पीछे रहे सहे भी नगर इन में मिलगये। काल क्रम करके सिसियन, कारिंथ औ आर्गस नाम तीनों नगरों में मिलाप

हुआ जिस के कारण आस पास के लोगों को भय उत्पन्न भया। आरेटस औ फिलोपीमेन नाम धर्मशील दोनों मनुष्यों ने इस एकेईअन नाम सभा को स्थापन करकै प्रतिष्ठा युक्त किया औ यूनान के कलियुग सदृश इन अन्त के दिवसों में सतयुग सा करदिया। ईसवी शक के पूर्व २८४ वें वर्ष में यूनान की उत्तर ओर ईटोलिआ नाम प्रदेशों ने मैसीडन के भूपति के दुराचार से कष्ट पाकर अपने तईं स्वाधीन करने के लिये एक सभा स्थापन की। ऐंटिगोनस अपने राज्य के अन्त में एकेईअन सभा का प्रताप बढाने के लिये लगा, औ इसी कारण से ईटोलिआ की सभा से प्रीत करने, जो उसी के विनाश करने के लिये स्थापित थी। तिस पीछे चिरकाल राज्य करकै ईसवी शक के पूर्व २४२ वें वरस में अति वृद्धा वस्था के बीच अस्सी वरस का होकर मरा।

उस के मरणानंतर उस का द्वितीय डिमिट्रिअस नाम पुत्र राजा हुआ जिस ने ईटोलिआ की सभा के संग युद्ध किया औ एकेईआ की समाज को पुष्ट। उस का राज्य बारह वर्ष रहा जिस के बीच कोई उपकारी कर्म न हुआ। वह ईसवी शक के पूर्व २३३ वें वर्ष में मरा, औ राज्य निज पुत्र को न दिया पर अपने भतीजे ऐंटिगोनस डोसन नाम को सिंहासन पर बैठाया। स्पार्टा की दशा जो अत्यंत सुख भोग के कारण बिगड़ी थी उस के फिर सुधारने में जो युद्ध ऊए तिस के बीच उस राजकुमार का अधिक काल लगा और उन का प्रछन्न रूप से प्रतिरोध करने के लिये एकेईआ की सभा से एका किया, पीछै ग्यारह वरस राज करकै मरते समैं राज्य फिलिप नाम निज पुत्र को सोंप आप मरगया, इस राज पुत्र की सोलह वर्ष की अवस्था थी औ स्वाभाविक अनेक

सद्गुण करकै संपन्न था परंतु वह अपने राज्य के पहले पांच वर्षों में एकेईश्रा श्री ईटोलिश्रा की सभा के बखेड़े करकै जो युद्ध ऊए तिन में लिप्त रहा। इन झगड़ों से जब छुट्टी पाई लोगों ने उस से उस की इच्छा से विपरीत अनेक कर्म ऐसे करवाये कि जिन के कारण वह अति निठुर होगया।

तब ही हैनीबल ने उसे रूमवालों के संग युद्ध का प्रारंभ करने के लिये बुलाया। फिलिप तुरन्त कार्थेज के सेनापति से मिला जिस का अभिप्राय रूम की शक्ति को जड़ से उखाड़ने का था। रूमवालों का सदैव यह आशय रहता था कि एक ही काल में दो के संग युद्ध न करना; इसी हेतु से हैनीबल के साथ जब संग्राम करते थे तब यूनान के बीच फिलिप के शत्रुओं को चमकाया; और इसी कारण यूनान के कई प्रदेशों से आप संधि कर ली। ईशवी शक के पूर्व २०४ के वर्ष में रूम वालों ने आप मध्यस्थ होकर मैसीडन श्री यूनान के नाना प्रदेशों में साधारण संधि करवाई। परन्तु जिन्हों ने पूर्व देश के कर्मों में लिप्त होकर निदान अपना पराक्रम वहां स्थापन करने के लिये निज प्रताप के विस्तार करने की तृष्णा न रोक सके, ऐसे कर्म में रूमियों का हाथ लगने से यूनान के बीच संपूर्ण राजसंबंधी कर्मों में विघ्न पड़ा, श्री अन्त में वे सब उच्छिन्न होगये श्री उसी कारण से मैसीडन के फिलिप नाम भूप के संग भी लड़ाई उठी, जिस की आग ईसवी शक के पूर्व २०० वें वर्ष में सुलगी पर पहले दो वर्ष में कुछ सिथल रही। रूमवालों ने देखा कि इस देश में हमारे भारी सहायक नही हैं, इसलिये यूनान के कई राजाओं को फिलिप के संग युद्ध कराने के अर्थ अपने में मिला कर उलिंपिश्रा नाम उत्सव के बीच डोंडी फिरवादी कि यूनान आज से स्वाधीन

हुआ । इस महोत्सव में इस देश के चारों ओर के मनुष्य इकट्ठे हुए थे, उस बात को सुनते ही प्रसन्न हो अति उच्चस्वर से जय जय कार किया । इन नवीन मिलापियों की सहायता से रूमवाले बड़े प्रबल हुए, और ईसवी शक के पूर्व १९७ के वर्षमें सैनासफैली की लड़ाई में उन्हों ने संपूर्ण रूप से फिलिप का मस्तक नमा दिया इसलिये उसे रूमवालों के संग संधि करनी पड़ी । जिस के कारण उस के सब यूनानी मित्र उस के हाथ से जाते रहे और अच्छी कटेवां सेना औ युद्ध संबंधी जहाज उस से छिन गये औ विशेष करकै धन प्राप्त होने के उपाय न्यून होगये । उस काल में यूनान के बीच रूमियों का मुख्य अधिकार हुआ, जिस हेतु उन के नाना राज्य में ईर्षा उत्पन्न हुई, औ वे एकेईआ की सभा का पराक्रम दबावने में लगे, जो वही केवल एक सभा उन का संपूर्ण गौरव प्राप्त करने में प्रतिबंधक थी । इस बात से रूमियों औ एकेईआ वालों में बड़ा द्वेष फैला, औ ऐंटिओकस उन से युद्ध करने के अर्थ ईटोलिआ की समाज से योग कर सिरिआ देश के सिंहासन पर दृढ़ रूप से बैठा; परंतु रूमवालों के कहे नेसु से ऐंटिओकस को देश निकाला हुआ, औ इसी हेतु से यूनान के नगर नत मस्तक होगये ।

रूमवालों ने अपनी शक्ति के अनुसार फिलिप का मान भंग करने में उद्योग किया; और वह भी उन के नाना प्रकार के दुराचार सहन न कर सका तब तो अधीर हो उन से पलटा लेने के लिये जाज्वल्य मान हुआ । उस ने स्वीय पराक्रम विस्तार करने के लिये भद्र औ अभद्र अनेक उपाय किये, जब शीघ्र ही ये बुरे समाचार रूमवालों के पास पहुंचे तो उन्हों ने अभिरुच पूर्वक सुने । फिलिप का

डिमिट्रिअस नाम पुत्र जब ओल में रहा, तब रूम के बीच विद्या पढ़ा था, औ उस ने सब प्रकार के ऐसे गुण प्राप्त करे, कि जिन से वह मनुष्य जाति का प्रिय पात्र औ अपनी प्रजा का हितकारी हुआ। परंतु उस के परसिअस नाम वैमात्रेय भ्राता के चित्त में घोर ईर्षा उपजी। इसलिये झूट ही पिता से जाकर लगाई कि डिमिट्रिअस ने तुम्हें सिंहासन से उतारने के लिये रूमवालों से कुमता किया है। उस ने निज मन में प्रथम ही जान लिया था कि इस अपराध को हमारा पिता कभी नही चमा करैगा। निदान परसिअस के हृदे में ऐसा वैरभाव वढ़ा कि फिलिप को दोनों पुत्रों का विचार करना पड़ा, औ डिमिट्रिअस के ऊपर जो अभियोग हुआ था उस का सच झूट निर्णय करने के लिये रूम में दूत को पठाया तब परसिअस ने इस दूत को घूंस देकर ऐसा कृत्रिम पत्र अपने भाई को दोष लगाने के अर्थ लिख दिया कि जिस के देखतेही फिलिप ने डिमिट्रिअस को अपराधी जान उसे मरवा गेरा। थोड़े ही काल पीछे जब यह कुमता प्रगट हुआ, औ फिलिप ने जाना कि मेरा सुशील औ निरपराधी पुत्र मेरे ही हाथ से मारागया, तो ईसवी शक के पूर्व १७९ के वर्ष में वियालीस बरस राज्य करके उसी पुत्र की शोकाग्नि से हृदे को दग्ध करकै अत्यंत कुदशा के वीच मरगया।

तदनन्तर उस का परसिअस नाम पुत्र मैसीडन के सिंहासन पर वैठा, यही वहां का अन्त का राजा था। जैसा उस के पिता का द्वेष रूमियों से था वैसाही उस ने भी रक्खा, और इसीलिये अपने राज्य के पहले सात वर्षों के वीच राज्य में से युद्ध विषयक सामग्री का संग्रह करकै अपने राज्य औ जीव की

छोड़ लगा कर रूमवालों से अन्त का युद्ध करने के लिये उद्योग किया। शीघ्र ही दोनों ओर के दल ने आमने साम्हने हो आनन्द पूर्वक युद्ध का प्रारंभ किया; तो भी परसिअस चार वरस तोड़ी संग्राम करता रहा। परंतु ईसवी शक के पूर्व १६८ के वरस में एक रूम के सेनापति ने पिडना स्थान पर संपूर्ण रूप से उसे हरादिया जिस के कारण वह उस के हस्तगत हुआ, तव उस सेनापति ने उसे रूम के वीच अपमान पूर्वक वंदी गृह में रक्खा, ओर वहां ही वह मरगया, तव मैसीडोनिआ के चार भाग हुए औ रूमवालों ने उन चारों प्रदेशों से कर लेने का प्रारंभ किया। उस काल में यूनान के वीच केवल एकोईआवाले वलवान थे परंतु वे भी रूम की अपेक्षा निर्वल; रूमवाले झट पृथ्वीभर के वीच वहुधा मुख्य पराक्रम शाली हुए थे। रूमवालों ने यूनान के सव प्रदेशों में अपने प्रति निधि स्थापन किये औ उन्हों ने प्रत्येक प्रदेश के आंतरिक कर्मों में हाथ लगाये जिस कारण वे प्रदेश भयभीत हुए औ उन का सव नाश हुआ। निदान एकोईआ के प्रधान प्रधान एक सहस्र निवासी वंदुवे होकर रूम नगर को आये इस आत्मश्लाघी और स्वाधीन नगर में वे सत्तरह वरस वन्दीगृह के वीच रहे। इस के थोड़ेही काल पीछे मैसीडन के वीच उपाधि औ वखेड़ा उठा, जिस को रूम वालों ने सहज ही दवादिया। इस के दो वरस पीछे उन्हों ने कारिंथ को लूटा, औ यूनान औ मैसीडन को रूम के महा राज्य के प्रदेश वनाये।

॥ यऊदा देश ॥

यऊदियों का वशीभूतपने से छूटना—फारस के राजा की आधीनी में यऊदा देश की दशा—श्रीयुत सिकन्दर ने योर्शलीम का दर्शन किया—यऊदियों का अैलैकजैंड्रिआ नगर में वास होना—सेपचूएजिंट—यऊदियों का सिरिआ के अैंटिओाकस नाम राजा के आधीन होना—एपीफेनीज़ का दुराचार—यऊदियों की प्रतिकूलता—मैकेबीज़ की संतान—हेराड—ईसामसीह का जन्म—इन सबों का विषय कहेंगे।

बैबीलन का राजा यऊदियों को उन के खदेश से लेगया और उन्हें दास बनाकर सत्तर बरस तोड़ी रक्खा; परन्तु ईसवी शक के पूर्व ५३६ के बर्ष में सइरस राजा ने बैबीलन को जय करके यऊदियों को घरजाने की छुट्टी दी, इस विषय का वर्णन धर्म पुस्तक में आगे से कहागया था। इस अनुमति के पातेही बऊत से तो अपने अपने घर को आये, परन्तु धनाढ्य लोग उफ्रात नदी के उस ओर जो देश था उस में रहगये। जो यऊदी फिर कर आये थे उन्हों ने झट पट ईश्वर का फिर मंदिर बनाने

के लिये मन में विचार किया; पर उन के निकटवर्ती सेमेरिआ नाम लोगों ने इस कर्म्म में अत्यन्त अवरोध किया। उन्हों ने ईसवी शक के पूर्व्व ५२० वें बर्ष तक मन्दिर बनाने के अर्थ फारस के दारा नाम राजा की संपूर्ण रूप करके अनुमति नही पाई थी। जब फारस का राज्य था तब पैलेष्टइन नाम प्रदेश सिरिआ के अधिपति की राज्य सीमा में था; परन्तु यह अनुमान होता है कि इस प्रदेश का अधिकार एकादि क्रम करके यहूदियों के प्रधान पुजारी के आधीन होता था। जब श्रीयुत सिकन्दर फारस का राज्य उलटाने के लिये आया, यहूदियों ने उस का प्रभुत्व स्वीकार न किया, औ अपने प्राचीन प्रभू अर्थात् फारसवालों ही की भक्ति का परिपालन किया। इसलिये जयवन्त ने जैसे टयर के लोग प्रतिकूल हुए थे औ उन को उस का प्रतिफल दिया था, तैसें ही यहूदियों को भी उन के विपरीत होने का फल देने के अर्थ आपही योरुशलीम की यात्रा की। परन्तु जबही वह इस पवित्र नगर के निकट पहुंचा तबही वहां का प्रधान पुजारी पुजारियों के से वस्त्र धारण कर और सब पुजारियों को संग ले उस से मिला। उस को देखते ही श्रीयुत सिकन्दर का क्रोध मिटगया, औ उस का बहुत आदर मान किया, औ सिकन्दर ने ईश्वर का नाम जो प्रधान पुजारी के मुकट पर साम्हने ही खुदा हुआ था केवल उसी को नमस्कार नही की परन्तु प्रधान पुजारी के सङ्ग हो कर नगर में फिरा, औ मन्दिर में जाकर अनेक बलिदान ईश्वरार्पण किये, इस चरित्र से उस के सेनापतियों को अत्यन्त आश्चर्य हुआ। उस मंदिर में बैठ कर प्रधान पुजारी ने सिकन्दर की जय होने की भविष्यित वाणी जो धर्म पुस्तक में पूर्व ही कही गई थी उस के अगाड़ी प्रकाश की, इस कारण से

तरुण राजा अर्थात् श्रीयुत सिकन्दर के चित्त में अत्यन्त उत्साह उपजा।

सिकन्दर के मरणानन्तर औ उस के महाराज्य लुप्त होने के पीछे, यहूदा सामान्यता से फिनिशिआ की गणना में हुआ, औ मिसर औ सिरिआ के राजा में जो विवाद उठे उन के बीच यहूदा देश भी लुप्त हुआ। ईसवी शक के पूर्व ३१२ वें वर्ष में प्रथम टालेमी ने योरुशलीम को जय किया, औ वहां से अनेक यहूदियों को लेजाकर अलैकजैंड्रिआ में बसाया, सब प्रकार करके इस नगर का विस्तार करने में उस की बड़ी अभिलाषा रहती थी। यहूदियों के वहां वास करने से बाइबेल का उलथा यूनानी भाषा में हुआ, पर यह अनुमान होता है कि यह कर्म उस के टालेमी फिलेडेल्फस नाम पुत्र के राज्य में परिपूर्ण हुआ, यह उलथा यूनानी भाषा में सत्तर मनुष्यों का कर्म है इसीलिये यूनानी भाषा में उसे सेपचुएजिंट अर्थात् सत्तर मनुष्यों का कर्म बोलते हैं। यहूदी लोग सौ बरस तोड़ी मिसर देश के पहले तीन टालेमी नाम राजाओं के कोमल राज्य शासन में निर्द्वन्द्व शांति पूर्वक रहे; परंतु ईसवी शक के पूर्व २०३ के वर्ष में मिसर का राज्य शासन बहुत बिगड़गया, तब सिरिआ का अंटिओकस नाम महाराज जो उस काल में अपना पराक्रम बढ़ाता था सब यहूदी लोग मिलके इच्छा पूर्वक उस की आज्ञा के आधीन हुए, और इसीलिये उस ने सब अधिकार उन के जों के त्यों बने रक्खे। उस के शेष राज्य में, औ उस के अति शांति स्वभाव उत्तराधिकारी चौथे सैल्यूकस के समय में, यहूदियों ने अति शांति औ सुस्थिरता पूर्वक अपना काल वितीत किया। परंतु ईसवी शक के पूर्व १७६ के वर्ष में अंटिओकस इपी-

फनीज़ ने सिंहासन पर बैठ यूनानिओं की देवपूजा की रीत बलात्कार से अपनी सब प्रजा में चलाने की इच्छा की। यहूदी लोग इस बात में अवरोधी हुए, तब ईपीफेनीज ने योर्शलीम पर धावाकर ईसवी शक के पूर्व १७० वें वर्ष में उसे ले लिया और वहां के अभागे नगर निवासिओं पर अपना कोप प्रगट किया। परंतु उन के दण्ड प्राप्त होने का काल अति शीघ्र उपस्थित हुआ। इसीलिये एक मेकेबीज नाम एक महत वीर पुरुषों के वंश का उदय हुआ; उन्होंने क्षुद्र यहूदा देश के लोगों को औ स्वदेशीय मत की बात पर सत्य प्रतिज्ञ रावत पुरुषों को संग लेकर मत की बात पर अैंटिओकस से युद्ध कर, बारंबार उस की सेना को हराकर भगा दिया। मैटेथि अस ने पर्वत से ना ना प्रकार के दल संग्रह करके युद्ध का प्रारंभ रक्खा, औ सिरिआवालों पर टूटा; तदनन्तर उस के जूड़ास मैकेबीज़ नाम पुत्र ने सैन्य की अध्यक्षता प्राप्त करके कईबेर विजयी हो पीछे जयधुनि कर कर योर्शलीम में प्रवेश किया, औ स्वदेश को स्वाधीन। तिस पीछे उस के दो भाई जोनेथन, औ सैमन औ सैमन के जान हरकेनस नाम पुत्र, इन तीनों ने साठ बरस तोड़ी युद्ध का वैसाही चमत्कार रक्खा, और उस देश में जो जो राजसमूह निज निज अधिकार बढ़ाने के अर्थ युद्ध करते थे, उन सबों से यहूदिओं का सन्मान करवाया। इस वीर पुरुषों के वंश में जान हरकेनस अंत का राजा था, उस के समय में यहूदियों के राज्य की सीमा का ऐसा विस्तार हुआ जैसा दाऊद औ सुलइमान के काल से अबतक न भया था। जान हरकेनस के मरने से यहूदियों का ऐश्वर्य रूपी सूर्य अस्त होगया। उस के मरण काल पीछे निर्बल औ निर्दई उस का अैरिसटोबलस नाम पुत्र राजा हुआ, और

वहां अनेक मत विषयक झगड़ों में देश खण्ड विखण्ड रहा पीछे पांपी और रूमवालों को बुलाया, तिन्हों ने आकर पीछे देश की व्यवस्था सदा निज हाथ रक्खी। ६४ वें वर्ष में पांपी ऐरिसटोवलस औ उस के पुत्र को बंदुआ कर रूम में लेगया यद्यपि उस ने सिंहासन औ प्रधान याजकता का कर्म हरकेनस को सौंपा, तथापि रूमवालों ने देश का अधिकार अपने ही कर में रक्खा।

ईसवी शक के पूर्व ३९ वें वर्ष में ईद्यूमिआ देश का हेराड नाम जन वर्द्धनशील रूमवालों की आज्ञा से यहूदा देश का राजा हुआ, औ उस ने निज पराक्रम दृढ़ करने के लिये मैकेबीज़ नाम राजवंश की मैरीऐंने नाम कन्या से विवाह किया। उस ने रूमवालों की कृपा से अपना राज क्रम क्रम से संपुर्ण पैलेष्टइन औ इद्यूमिआ में कर लिया। इस राजकुमार की यद्यपि कर्म कुशलता औ धर्मापन के कारण बड़ी नाम्ना थी परंतु महा निर्दई पने करके और भी विशेष विख्यात हुई।

उस के राज के अन्त के वर्ष में यहूदा देश के बीच वेथले-हेम नगर में मनुष्यों के पाप का प्रायश्चित्त करने के अर्थ औ संपूर्ण पृथ्वी में धर्म विशयक राज्य स्थापन करने के लिये ईसामसीह अर्थात् ईश्वर का अवतार हुआ। हिराड के मरण काल पीछे संपूर्ण राज्य उस के तीन पुत्रों ने अपने पिता के दान पत्र के अनुसार आपस में विभक्त करलिया।

॥ रूम ॥

रूम की उत्पत्ति—राम्यूलस औरीमस—राज्य का यथा विधि स्थापन—राम्यूलस की मृत्यु—न्यूमा—उस की धर्म विषयक व्यवस्था—टलस हास्टिलिअस—ऐंकस मारश्यअस टारकिन—सरविअस टलिअस—देश की व्यवस्था का सुधार—दूसरा टारकिन—ल्यूक्रेशिआ—ब्रूटस—राज पद का लोप इनसबों का वर्णन अब करेंगे।

पूर्व्व हम वर्णन करचुके हैं, कि एशिआ में जब राज्यों का परिवर्त्तन भया, तब पश्चिम में एक राज्य का उदय होता था, जिस की प्रारब्ध में यह था कि पृथ्वी भरके सब सभ्य राज्य उस में लीन होजांय, और पूर्वकाल के राज्यों की अपेक्षा यह नूतन राज्य बहुत विस्तृत औ चिरकाल स्थाई हुआ। यह रूम का राज्य है जो प्राचीन औ वर्त्तमान काल में संधि स्वरूप है। लैकर्गस के समैं से इस राज्य का उदय है, और पन्द्रह वें शतक में जब इस्तंबोल नगर की जय हुई तब से यह राज्य अस्त-भया।

इस चक्रवर्त्ती रूम नगर की कथा तब तक नहीं लिखी गई थी जब तक पृथ्वी भर के मनुष्यों का अधिकार पराजित होकर उस के आधीन नहीं भया था। इतिहासवेत्ताओं ने इस नगर

की उत्पत्ति अतिस्तुति पूर्व्वक कही है। कि प्रारंभ में देवताओं ने इस नगर को सुशोभित किया, राम्यूलस औ रीमस दो जोडिया भाई इस नगर की नीम रखनेवाले मार्स देवता की सन्तान थे। ये बात उन इतिहासों के समान हैं, जिन में लिखा है कि फलाना देश या राज्य देवताओं ने बनाया है इत्यादि वर्णन मिथ्या से दृष्ट पडते हैं। कितने लोग रूम के पहले सात राजाओं की कथा के वर्णन का विश्वास नही करते औ उन के राज्य का वर्णन संपूर्ण रूप से नही मानते; परन्तु उस वर्णन के स्थान में किस का वक्तृत सत्य जाने सो हमें निश्चय नहीं होता इसलिये रूमी इतिहासवेत्ताओं के अनुसार ऐसा हैं कि इस के बीचोंबीच लैटिन देश के मध्य में टइबरनदी के तटपर जो समुद्र से छ:कोश के अन्तर में है ऐसे स्थान में राम्यूलस ने रूम नगर को बसया। प्रथम आलबालांगा नगर जो उस के अति निकटवर्त्ती है वहां के लोग आकर उस में बसे। राम्यूलस ने इस अपने नूतन नगर के मनुष्यों की संख्या बढ़ाने के अर्थ ऋणी, दुष्ट, लुचे, चोर, उचक्के लोगों को बसने केलिये आश्रय दिया; और पीछे अति विज्ञ व्यवस्था और महा कठिन शासन करके उन को सुशील औ शूर बनाया। जब नगर में कुछेक योग्यता हुई, तब उस ने अत्यन्त धनाढ्य और महा प्रतिष्ठित नगर निवासियों को छांट कर उन में पैटक कुलीनता स्थापन की औ उन ही से राजसभा के लिये लोग चुनलिए। कुलीन लोगों को पैट्रिशन अर्थात् पिटबोलते थे, औ इतर मनुष्यों को प्लिबिअन, अर्थात् सामन्य लोग; फिर इन प्लिबिअन लोगों का कई जाति में विभाग किया। सब भारी भारी कामों के निबेडने का अधिक बोझ प्रजागण औ राजसभा के ऊपर रक्खा, औ राजा केवल सामान्य लोगों की इच्छा का निर्व्वाह करने को रहा।

राम्यूलस ने प्रजागन को आज्ञा करके नियुक्त करने की, संधि औ युद्ध का निश्चय करने की, औ व्यवस्था प्रमाण करने की सामर्थ दी। पुरोहितपने का कर्म राजसभा के मनुष्यों को अर्पण किया गया था, औ प्रजा वर्ग कोई कर्म, विना मङ्गल दायक शकुन औ सुमूहूर्त के न करने सकते थे, औ इन शकुनों औ मुहूर्तों के बताने की सामर्थ केवल कुलीन पुरोहितों में थी, इसलिये उन का महा अधिकार राज्य में था। राम्यूलस ने जैसें तैसें देव पूजा का भी प्रकार स्थापन किया, औ उस के उत्तराधिकारी जो हुए उन्हों ने उसे सुधारा।

रूम नगर में पुरुष अधिक थे औ स्त्री बहुत न्यून थीं; जो राम्यूलस सैबइन नाम निकटवर्त्ती लोगों में से उपाय करकै अपने सहकारी लोगों के लिये बहुत सी स्त्रियां न लाता तो यह नवीन स्थापित नगर लुप्त हो जाता। ये स्त्रियां छलकर कै वा कोई वचन से आईं, यह कुछ जाना नही गया है; औ इस विषय का निश्चय करना भी कठिन है। सैबइन लोगों के संग मेल होने से नगर की लोक संख्या बहुधा द्विगणित होगई। इस प्रकार से प्रजागण करकै जब नगर पुष्ट हुआ, तब राम्यूलस ने अपने चारोंओर के छोटे छोटे राज्यों से युद्ध का प्रारंभ किया; इन क्षुद्र राज्यों में साधारण रूप से एक अथवा दो दो नगर थे, औ उन के चारों ओर खेत थे, जिन से उन का परिपालन होता था; इन सबों को ले लिया। राम्यूलस ने सदा जैसे जैसे जय प्राप्त करी वहां से पराजित लोगों को लाकर अपने नगर में बसाया। इस प्रकार से काल क्रम करकै रूम नगर पृथ्वीभर में प्रभूभया जो नगर आदि में लुटेरे, पिंडारे, डकैत, आदि का रचा स्थान था। राम्यूलस की निश्चय रूप से महा पुरुषों के मध्य गणना भई, इसलिये कि उस ने निर्जन

कठिनता दूर करकै नगर वसाया, औ सुव्यवस्था औ शासन करकै अपने निर्ब्बल राज्य को ऐसा गुणोपेत किया, कि जिन के कारण अगाड़ी को उस स्थान की महाप्रतिष्ठा होने की बड़ी नीम जमी। इतिहासवेत्तओं ने कहा है कि साठ वरस की अवस्था में राम्यूलस अति अभिमानी भया और एक ऊजड़ में मारागया; परन्तु यह अधिक संभव है कि राजसभा के लोग उस का बढ़ता ऊआ पराक्रम देख ईर्षा करने लगे, औ एक आंधी में जब वादल गरजताथा, औ चपला चमकती थी, ऐसे समय उन्हों ने उस का वध किया, औ लोगों में ऐसा प्रसिद्ध किया, कि ईश्वर ने उसे इस आंधी के वीच इस संसार से उठा आकाश में लेजा देवताओं में मिला दिया। और यही रीत रूमवालों में चलीआई है कि जिस मनुष्य का वे पृथ्वी पर सहन न कर सके उसे मार अपने देवता ओं के वीच आकाश में स्थान दिया, परंतु उन सवों में राम्यूलस की यह वात प्रथम ऊई थी,। राम्यूलस ने ३७ वरस राज्य किया इस नगर के वसने से किंचित काल पीछे ३३०० मनुष्य शस्त्र धारी थे औ उस के मरते समय सैंतालीस सहस्र ४७००० ऊए।

इस प्रकार से राम्यूलस मारागया, रूमवाले कोई एक प्रभु को छांटने के लिये मता न करसके, इसलिये राज्य शासन, राजसभावालों के हस्तगत रहा। एकही वरस में प्रजागण उन की अस्थिर व्यवस्था से थककर कोई नृप को ठहराने के लिये उद्युक्त हुआ; परन्तु सैवइन लोगों ने अपने वंश से राजा स्थापन करने की इच्छा की, और रूमवालों ने अपने में से; निदान यह मता भया कि रूमवाले सैवइन वंश में से छांट लें। उन्हों ने न्यूमा नाम जन को छांट लिया, जो नगर से

दूर एकान्त स्थल में रहता था औ धर्माचार में उस का मन संलग्न था। जैसा राम्यूलस के समय युद्ध व्यवहार रहता था, ऐसाही इस के राज्य में प्रजागण शान्ति पूर्ब्बक रहा। उस ने प्रजागण को सुशिक्षित किया, औ नगर निवासियों की प्रत्येक संप्रदाय में अलग अलग कर्म्म करदिये। उस ने व्यवस्था स्थापने की, औ नगर में दृढ रूप से धर्म की रीति चलाई, इस हेतु से लोगों ने जाना कि जैसा राम्यूलस नगर स्थापन करने वाला हुआ, ऐसाही न्यूना धर्म विषयक रीत स्थापन करने वाला भया। ये उस की संपूर्ण व्यवस्था भ्रमात्मक देवपूजादि मूलक थीं उन के द्वारा रूम के मूर्ख निवासी सभ्य हुए, इस में कुछ संदेह नही। इस धर्म विषयक विधि का लोगों के मध्य में बड़ा मान्य हुआ, इसलिये उस ने छल करकै ख्यात किया कि ये विधि ईजिरिआ नाम अप्सरा के द्वारा हमने स्वर्ग से प्राप्त करी हैं। वह तेतालीस ४३ वर्ष राज करकै मरा; उस की समाधि क्रिया रूम के औ अन्य चारोंओर के लोगों ने महा शोकाकुल हो रोते पीटते की, क्योंकि वह उन के बीच सदा मध्यस्थ औ पितावत् कार्य्य करता रहा था।

रूम नगर का तीसरा राजा टलस हास्टिलिअस हुआ, जिस को वहां के लोगों ने छांटा, औ उस ने इकतीस वर्ष राज्य किया। वह स्वभाव ही से युद्ध शील था, और इसलिये उस ने फिर चारों ओर के निकटवर्त्ती देशों में रूम का नाम भयानक किया। उस के राज्य का मुख्य वृत्तान्त एल्बा नगर का विनाश है, जो नगर रूमवालों का जन्मस्थान था, वहां के लोगों को उठाकर रूम में वसाया जिस के कारण वहां की लोक संख्या औ युद्ध विषयक उपाय अतिशय करकै अधिक हुए, औ रूमवाले लैटिन नाम वंश में प्रधान भए। तिस पीछै

एल्बा औा रूमवाले एक होगये, काल क्रम करकै जब रूम का अधिकार सर्व्वत्र होगया तब वहां के उन अत्यन्त प्रसिद्ध घरानों ने एल्बा को अपना आदि नगर जाना जो टलस के समय में वहां से उठकर रूम में आ बसे थे। ऐसा कहते हैं कि उस के उत्तराधिकारी ने जिस स्थान में टलस वास करता था, उस में आग लगा, उसे जलादिया औा यह बात प्रसिद्ध की कि कोई देवता ने उस का अपराध जान उस का वध किया। सिंहासन के शून्य होतेही न्यूमा का ऐंकस मार्टिअस नाम पौत्र राजा हुआ, उस ने इच्छा की कि मैं अपने पितामह की भांति शान्ति पूर्व्वक राजकार्य्य करूं; परन्तु रूम के अति कठोर शत्रु उपस्थित हुए, इस कारण से भूपति को उन के सङ्ग चिरकाल तक युद्ध करना पड़ा। उस ने क्रम क्रम से मिलाहुआ व्यवहार रक्खा, राम्यूलस के सदृश युद्ध शीलरहा, और न्यूमा के समान प्रजागण को शान्ति कारक। उस ने निरन्तर रूम के शत्रुओं को पराजय किया; टइबर नाम नदी को पार करने के लिये एक सेतु बांधा, औा नगर की सीमा अधिक की। परन्तु बहुधा उस का राज्य प्रसिद्ध इस कारण से है कि उस ने रूम औा समुद्र के बीच की भूमि को जय किया, औा आस्थिआ नाम बन्दरस्थान बनाया, जिस के कारण रूमी समुद्र में आवागमन करने लगे, पर यह निश्चय नही है कि व्योपार के वा डकेती के लिये, इस बात का निश्चय कोई कथा से नही होता। कोई तो यह कहते हैं कि वह भूपति तेईस बरस राज्य करके स्वाभाविक मृत्यु से मरा, औा अन्य कहते हैं कि वह किसी के हाथ से मारागया। मरते समय उस ने परदेशी टारक्विन नाम जन की रक्षा में अपने दो पुत्र रक्खे इस मनुष्य का उस ने बहुत भरण पोषण किया था।

टारक्विन एक कारिंथ निवासी का पुत्र था, यह नगर यूनान के बीच वाणिज्य का बड़ा बन्दरस्थान था, और रूम की बाल्यावस्था की अपेक्षा यह नगर सभ्यता में विशेष था। उस के बाप ने कारिंथ से कोई कारण पा हिट्रूरिआ में वास किया था; परन्तु पुत्र वहां कुछेक अपमान के कारण देख अतिशय द्रव्य सहित रूम में आ बसा, औ उस ने अपने धन को अति उदारता पूर्वक लोगों में फैलाया, इस कारण करके औ अपनी शूरता से वह लोगों का प्रियपात्र हुआ। जब अँक-समार्टिअस मरा तो उस ने प्रजा की कृपा से विना कष्ट अनायास ही शून्य सिंहासन को प्राप्त किया। उस के सिंहासन पर बैठते ही आस पास के देशवाले शस्त्र बांध कर उस से युद्ध करने को उपस्थित हुए, परन्तु वे संपूर्ण रूप से हारगए। इसी काल में रूम के राज्य से दस गुणा बड़ा औ केवल टाईबर नदी इन दोनों के बीच ऐसे हिट्रूरिआ देश के राजाओं ने एक मत होकर एकही उद्योग में रूम के राज्य को उलट देने का विचार किया, परंतु टारक्विन फिर भी जयवन्त हुआ। उस ने अपने राज्य में शान्ति देख औ अवकाश जान रूम नगर को दुर्गद्वारा दृढ़ औ सुशोभित करने का उद्योग किया, इन बातों में वह यूनान के बीच रहकर महा कुशल भया था। उस के गुण से बनेहुए कोई कोई गृह मन्दिर आदि अबतंकभी स्थिर हैं, औ इस काल में भी लोगों के चित्त में आश्चर्य उत्पन्न करते हैं। रूम के चारों ओर देशों में फिर कलह उठा, जिस के कारण उसे रण भूमि में जाना पड़ा, औ वहां वह पूर्ब्बवत् जयवन्त हुआ। निदान वह सैंतीस वर्ष राज्य करके अपनी आयु के अस्सीवें वर्ष में कोई के हाथ से मारागया; औ एक क्षुद्र कुल का सरविअस टलिअस नाम जन परंत अति गुणवान राजा हुआ।

इस से पूर्व्व टलस अनेक युद्धों में जयशील हुआ था; औ उस की आश्चर्य पूर्व्वक वाक्पटुता थी इन गुणों के कारण वह प्रजा का प्रियपात्र था। प्रजागण ने राजसभा के लोगों की इच्छा से प्रतिकूल होकर उसे राज्य पर स्थापन किया। उस का राज्य दो प्रधान वृतान्त करके प्रसिद्ध है; एक तो यह कि उस ने राज्य की मूल व्यवस्था फिर सुधारी; औ दूसरा यह कि लैटिन देश की नाना जाति औ रूमवालों को एक करदिया; उस ने देश के राजनियमों का संपूर्ण रूप से परिवर्त्तन किया उस के राज्य से पूर्व्व बड़े बड़े राजसंबंधी विषय का निर्णय सामान्य जन करते थे, औ वे जाति जाति मिलकर अपना अपना मत कहते, प्रत्येक नगर निवासी का अधिकार समान था, इसलिये देश में एक एक मनुष्य से राजकर समान लिया जाता था चाहै दरिद्री हो वा धनाढ्य। टलस ने प्रजागण में नवीन विभाग किया, जिस के कारण कर का भारी भार धनाढ्य लोगों के सिर पड़ा, औ मुख्य सामर्थ भी उन्ही के हाथ रही। उस ने प्रजागण में और भी विधान स्थापन किया, कि पांचवें वरस के अन्त में उन के धन की संख्या देखी जाय; इसलिये कि यह नवीन विधान उन की संपत्ति के अनुसार निर्विघ्न चला जाय। इस के पूर्व्व राजा के हाथ में जो वक़त सामर्थ थी उस का अधिकांश राजसभा के लोगों को अर्पण किया।

तिस पीछै राजा ने देखा कि लैटिनवालों के संग रूमियों का दृढ संयोग करना आवश्यक है क्योंकि रूम नगर की बाल्यावस्था में अनेक युद्धों के कारण से उस के नष्ट होने की शंका थी सो युद्ध लैटिन के लोगों ही के संग थे। इसलिये उस ने लैटिन लोगों की सभा को बुलाकर रूमवालों के साथ दृढ

वचन करा दिया, औ उन दोनों का अचल मिलाप रखने के लिये रूम की एक पहाडी पर बरसवेंदिन धर्म विषयक त्योहार का मेला स्थापन किया। इस रीत से उस ने रूम का आंतरिक विषय सुस्थिर किया, औ विदेशियों के सङ्ग शान्ति स्थापन कीं; इन वातों से ऐसा योग्य था कि यह राजा शांति पूर्व्वक अपनी स्वाभाविक मृत्यु पावता, परंतु वह चवालीस बरस राज्य करके अपमान पूर्व्वक निज जमाई के हाथ से मारागया, औ उसी की पुत्री ने अपनी गाडी उस के विदीर्ण शरीर पर चलाई। यह जमाई पहले टारक्विन का पौत्र था, इसलिये जो उस के पितामह का नाम था सोई उस का भया। इतिहासवेत्ताओं ने अनेक दोष उसै लगाये हैं, परंतु यह वात स्मर्ण करने योग्य है कि उस के समय में राज्याधिकार नष्ट भया, औ उस के स्थान में साधारण प्रभुत्व का स्थापन भया; इस कारण से इस अंत के राजा का ऐसा अनादर भया, जो कभी किसी राजा का रूम में न भया था। वह युद्ध में वड़ा कुशल था, औ नगर को सुशोभित करने में अपने पितामह के समान सब उपाय करता रहा। परंतु युद्ध औ साधारण गृह अट्टालिकादि निर्माण करने में अत्यन्त द्रव्य का व्यय हुआ। इसलिये उसे प्रजागन पर कर डालना आवश्यक हुआ इस वात करकै सबों का चित्त राजा से फिरगया, कुलीन लोग मन से झगड़ा चमकाने लगे, जिस को राजा ने जैसे तैसे रोका। इतिहासवेत्ताओं नें कहा है कि जव रूम के लोग जले वले से होरहे थे, तभी टारक्विन के एक पुत्र ने कामातुर हो कर ऐसी एक वात करी कि जिस के कारण से राज्य पद धूल में मिल गया। स्यूशिअस टारक्विन ने कुलीन जन की ल्यूक्रेशिआ नाम स्त्री से आसक्त होकर उस का शील

नष्ट किया, इस कारण से उस अबला ने कटार अपने हृदे म मारा औ मरगई। उस समय राजा टारक्विन रूम से दश कोस के अन्तर में एक नगर को घेरेहुए था, तहां ल्यूक्रेशिआ के आत्मघात करके मरने के विस्तार पूर्वक समाचार पहुंचे, जिस के कारण से राजा टारक्विन के विपक्ष गण को इष्ट साधन करने में बड़ा सुयोग हुआ। ल्यूक्रेशिआ के आत्मघात करके मरने के महाशोक जनक समाचार शीघ्रता पूर्वक नगर में फैलगये, यह स्त्री बिना आत्मघात करे अपनी पत नहीं बचा सकती थी; इस संवाद के सुनते ही लोग अत्यंत उद्वेगी होगये; कुलीनों ने राज सभावालों से मिलके प्रजा वर्ग के कोप को प्रज्वलित किया, औ एका एकी राजा टारक्विन औ उस के संबंधियों को अपमान पूर्वक सदा के लिये देश निकाला दिया, औ कहा जो कोई इन्हें फिर बुलाने के अर्थ उद्योग करेगा उस का बलिदान नर्क के देवताओं को होयगा।

जब प्रजा के लोगों ने राजकर्मों की विवेचना करने क लिये पंचायत करी, तब इस राज उपप्लव के मूल ब्रूटस नाम जन ने उन्हों से कहा कि चिरकाल पर्यन्त राजपद का तो नाम मात्र भी मत रक्खो, औ बरसवेंदिन दो अध्यक्ष छांट कर उन्हें कांसल कहा करो, उन में राजाओं की सब सामर्थ रहैगी, पर वे नृपों के आभूषण, मुकट आदि, धारण न करेंगे। इसप्रकार से अति सूक्ष्म काल अडतालीस घंटे के बीच रूम की मूलव्यवस्था का परिवर्तन होगया। प्रथमही ब्रूटस औ ल्यूक्रेशिआ का कालेटिइनस नाम पति दोनों कांसल पद में नियुक्त हुए।

॥ प्रजा प्रभुत्व की स्थापना से ले रूम नगर ॥
॥ को फिर निर्माण करने तक का विषय ॥

रूमियों की पराजय पोरसेना से—डिक
टेटर नाम जन की सभा की उत्पत्ति—
रेजिलस स्थान की लड़ाई—प्रजा का शोक
—उन का मांसेसर पर टिकना—प्रजा
औ कुलीनों का फिर मिलाप—प्रजा के
द्रब्यून्—कोरिइओलेनस—स्पूरिअस कैशि
अस—बारह पत्थरों पर लिखी भई व्यवस्था
—डीसंविराई—वैपिअस क्लाडिअस औ
वरजिनिआ—सेना के द्रब्यून—स्पूरिअस
मीलिअस—वीआई का विनाश—गाल
वालों की चढ़ाई—रूम नगर की लूट—
कैमिलस इन सबों का वर्णन अब करेंगे।

रूम नगर की नीम धरने से २४३ बरस पीछे राज प्रभुत्व नष्ट हुआ। यद्यपि रूम नगर इस काल में अपने निकटवर्ती चौओर के लोगों से सदैव युद्ध करने में प्रवृत्त हुआ, और जो हम इतिहासवेत्ताओं का प्रमाण करें तो दृष्ट पड़ता है कि वह बहुधा जयशील हुआ, तदपि कानसलशिप पद स्थापन करने के काल में केवल नगर के प्राकार के अगाड़ी

थोड़े कोस तक अधिकार बढा। रूमवालों का पराक्रम उन की भूमि के अधिकार के अनुरूप न था, परंतु बीरता औ लोक संख्या करकै अधिक था, जो मनुष्य संख्या प्रत्येक युद्ध से विशेष विशेष होतीगई।

इस काल में टस्कनीवालों का पराक्रम ऐसा बढा था, कि जिस का पारावार दृष्ट में नही आता था। इस कारण से पद भ्रष्ट टारक्विन नाम राजा ने अपनी सहायता के लिये उन की प्रार्थना की, तब टस्कनी के वीच वीआई नाम नगर निवासी जो रूम के अति निकट थे टारक्विन के अर्थ शस्त्र बांधकर चढ़े; परंतु वे एक अति घोर युद्ध के वीच हारगए, जिस में रूमवालों का ब्रूटस नाम अधिपति औ टारक्विन का अरंज नाम पुत्र परस्पर युद्ध करकै मारेगए। थोड़े ही काल पीछै टस्कनी के बीच क्लुसिअम नगर के पोरसेना नाम राजा ने अति पराक्रमी सेना ले रूमवालों पर धावा किया। यद्यपि रूमियों की सेना की वीरता थी, औ कोक्लीज़ औ म्यूसिअस का सूरमापन प्रगट हुआ, तथापि रूमी पराजित हुए, उन के अधिकार का कुछेक अंश लेलिया, औ कृषीकर्मों का छोडकर और कार्य में लोहे की वस्तु रखने का निषेध किया। पोरसेना निज विजयी सेना को टइबर नदी के दक्षिण में लैशिअम देश के वीच ले गया, और यह संभव है कि क्यूमा का अधिपति जो उसे न हराता तो वह रूमियों का नाम तक नष्ट करदेता। रूमवाले उस का पराभव देख प्रसन्न हुए, औ जो उन का देश छिन गया था उसे फिर प्राप्त किया।

जब टारक्विन टस्कनीवालों की सहायता से निरास हुआ, तब लैटिनवालों से सहायता के लिये प्रार्थना करी; यद्यपि उन दोनों की एक ही ज्ञाति औ मत था, तथापि रूमियों की

प्रतिष्ठा औ पराक्रम का उदय देख जले। परंतु जब रूमियों की राजसभा लैटिनवालों का दल संग्रह करने को उद्युक्त हुई, तब प्रजागण ने भरती होने का निषेध किया। निश्चय है कि टारक्विन के पदच्युत होने के समय से धनी औ कुलीन लोगों ने अधिकार अपने हस्तगत किया था, औ दरिद्री लोगों को अत्यन्त क्लेश दिया था। बहुधा सब दीन लोग उन के ऋणी थे, धनी कुलीन लोगों को रूम की व्यवस्था के अनुसार छुट्टी थी, कि वे चाहैं तो अधमर्णों को निज घरों में बंद करैं औ जैसा चाहैं तैसा दण्ड करैं। इस दुरवस्था में नगर के लोग अवाध्य हुए, औ एक पराक्रमी शत्रु ने बाहर से नगर को धमकाने का उद्योग किया, इस बात को देखकर राजसभा के लोगों ने डिकटेटर नाम एक अध्यक्ष छह मास तक स्थापित किया, जिस ने और सब विचार कर्त्ताओं को नियत काल में अपने बस रक्खा, और उस की आज्ञा का कोई उल्लंघन नहीं करसकता था। इस नवीन अध्यक्ष को संपूर्ण सामर्थ दी थी, इसलिये उस ने प्रजागण के चित्त में ऐसा भय उत्पन्न किया, कि वे शीघ्रता पूर्व्वक सेना में भरती होनेलगे। इसी बीच लैटिन देशवालों ने जो उपद्रव मचाया था, सो भी जातारहा; इसलिये डिकटेटर ने अपने पद का त्याग किया,। परन्तु कई वर्ष पीछे लैटिनवालों ने अपना पराक्रम रूमियों को दिखाने का विचार करकै निज सकल सेना इकट्ठी की, और रिजिलस ह्रद के तीरपर इन दोनों देशवालों में चिरकाल तक भारी युद्ध रहा, जिस के बीच रूमी संपूर्ण रूप से जयवन्त हुए; यह लड़ाई राजाओं के देश निकाले से पंद्रह बरस पीछे हुई थी। तेतीस सहस्र लैटिनवाले रण भूमि में खेतरहे; लैटिनवालों का एकही बेर में सब पराक्रम नष्ट होगया, औ टारक्विन अगाडी को निराश हो गया।

इन वृत्तान्तों से कुलीनों के चित्त का भय जाता रहा औ अपने दीन ऋणी लोगों को ऐसा कष्ट देनेलगे जैसा कभी न दिया था, इस कारण करके नगर उन से प्रतिकूल होने के लिये उपस्थित हुआ। ऐसे समय में कोप रूपी अग्नि से प्रजागण के चित्त को जलाने के अर्थ केवल एक चिनगारी की ढील थी। इसी बीच एक वृद्ध मनुष्य चिथड़े ओढ़े हुए बेडियों के बोझ से काया झुकाये हुए वंदी गृह से भागकर अपने बचा ने के अर्थ लोगों से प्रार्थना करी। जितनी लड़ाइयां वह लड़ा था सब गिनवाईं; औ अपने कुलीन उत्तमर्ण के निर्दई पने के रक्त युक्त चिन्ह दिखाये। इस कारण से लोगों के मन में दया औ कोप उत्पन्न हुआ, संपूर्ण नगर में उस की सहा यता करने के लिये धूमधाम मचगई। राजसभावालों ने अपने सदैव के नियम के अनुसार वालसाई लोगों के संग युद्ध कर ने को कहा, इस आशय से कि प्रजागण का चित्त प्रसन्न होगा, परन्तु उन्हों ने सेना में भरती होने का निषेध किया। निदान सरविलिअस नाम मुख्य जनने यह नियम स्थापन करके कहा, कि जो कोई युद्ध के अर्थ जबतक शस्त्र बांधेगा, तबतक उसे कोई ऋण के अर्थ वंदी गृह में न रक्खैगा। इस नियम से लोग प्रसन्न होकर सेना में भरती हुए; औ शत्रु पर चढ संपूर्ण रूप से विजयी हो लूट का द्रव्य लादकर घर को फिरे। परंतु कुलीन लोगों को जब फिर शान्ति हुई तो प्रजा के ऊपर फिर वैसाही अन्याय करने लगे, तब उन्हों ने भी नवीन बखेड़ा उठाया; पर वह कुछकाल रुका रहा, एकतो इस बात से कि राजसभावालों ने नवीन युद्ध का प्रारंभ किया था, औ डिक टेटर नाम अध्यक्ष के भय से, जिस को उन्हों ने बनाया था। कटक शत्रु पर चढगया, औ विजयी भया; डिकटेटर का दल

तो विदा होगया; परन्तु सरविलिअस की सेना ने जो अब तक रणभूम में थी, बखेडा मचाया, औ निज सेनापतियों को त्यागकर रूम नगर से डेढ कोस मांसेसर नाम पर्व्वत को गमन किया, इस आशय से कि इस नगर में हमारी कुछ रक्षा नही होती। सामान्य लोगों ने नगर के बीच उस की सीमा में जो दो पहाडियां थीं सो लेलीं; तब कुलीनों ने अपने अनुयायियों सहित और पहाडियों का अधिकार किया।

इस प्रकार से रूमवालों में फिर आन्तरिक विवाद हुआ, जो विनाश का मूल था; परन्तु राजसभावालों की धैर्य्यता ने इस दशा से बचालिया। प्रथम तो उन्हों ने निश्चय किया कि जो प्रजागण कहैगा सो करैंगे, पीछै पवित्र पर्व्वत पर नगर त्यागियों के निकट उन्हें फिर ग्राम में लाने के लिये प्रतिनिधि भेजे। रूम के इतिहासवेत्ताओं ने वर्णन किया है, कि इन प्रतिनिधियों में जो प्रधान था उस ने शरीर के सब जुदे जुदे अंगो पर एक हितोपदेश की कथा कही, औ संपूर्ण रूप से उपाधियों के चित्त को नम्र किया, उन्हों ने फिरना औ बीते हुए कर्म को भूलना अङ्गीकार किया, इस नियम पर कि बरसवें दिन हम में से छह जन राजकर्म में नियुक्त हुआ करैं, जिन के कारण करकै हम कुलीनों औ धनी लोगों के अन्याय से बचे रहैं। इन अध्यक्षों को प्रजा के ट्रिब्यून कहते थे, और ये राजसभा के द्वार पर बैठते थे, इन्हों ने अपना दृढ़ पराक्रम उस सभा पर रक्खा जो प्रजा का उपकार करने में विपरीत थी। ये छहों जन भंजन करने योग्य न थे, इसलिये प्रति वर्ष छंटते रहे। राजाओं को निकालदेने से ठीक सोलह वर्ष पीछै, यह विषय प्रथम प्रजा ने प्राप्त कियं।

इस वृत्तांत से पांच वरस तक रूमियों का ध्यान कारिओलेनस के कर्मों में लगा, यह मनुष्य युवा, अति साहसी, अभिमानी, औ कुलीन था, जिस ने प्रजागण को अत्यंत तुच्छ कर डाला। वह अपनी अविवेचना करकै नाना प्रकार के कर्मों से दूषित था, प्रजागण के द्रइयूनों ने अपना अधिकार वढ़ाने के लिये यह अच्छा अवसर जान, प्रजा के अगाडी कोरिओलेनस जो यद्यपि राजसभा में का था, तो भी उस की कुचाल चलने का उत्तर करने के लिये बुलाया। इस बात से रूम नगर में वडाभारी हुल्लड मचा; परन्तु राजसभावाले ऐसा चाहते थे कि रक्त पात न हो, इसलिये उन्हों ने प्रजा के अध्यक्षों का कहना अङ्गीकार किया; तव लोगों ने कोरिओलेनस को महा अपराधी औ अति कुकर्मी ठहरा कर नगर से निकाल दिया। वह झट इस अपमान का पलटा लेने के लिये वालशिअन भूपति के राजद्वार में गया, जो रूमियों का अति प्राचीन शत्रु था, औ उस ने वालशिअन को फुसला फुसलू कर उस में औ रूमवालों में जो उसकाल के वीच संधि थी सो तुडवाई, यह कहकर कि मैं तुम्हारी सेना लेकर अपने देशवालों से लडूंगा। तिस पीछै वह वालशिअन की सेना का अधिपति बनकर सामान्य लोगों की भूमि को लूट खसोट करता हुआ औ नगरों को लेता हुआ चला। रूमियों में कोई ऐसा निपुण सेनापति न था जो उस का साम्हना करै; इसलिये वहां ही के देशनिकाला किये हुए नगर निवासी से रूम का नाम नष्ट होने का काल प्राप्त हुआ, ऐसा कि जिस का कोई निवारण न करसकै, परन्तु तभी कोरिओलेनस की माता औ स्त्री, नगर के कुलीन जनों की पत्नियों सहित उस के कटक में गईं; औ उन्हों ने उस के चरणों पर गिर विनती

कर कहा, कि अपने जन्मस्थान नगर का विनाश मत करो। इस बात के सुनने से बहुत बेर तोडी कभी तो कोरिओलेनस के मन में कुटंब का प्यार उपजाता था, कभी रूम के सत्यानाश करने का विचार प्रबल होता था, निदान उस के चित्त में दया रूपी सूर्य ने प्रकाश किया, तो कोप रूपी तिमर नष्ट हुआ, तब उसने निज माता से नम्रता पूर्वक कहा, कि तूने रूम नगर को बचाया, पर अपने पुत्र का विनाश किया। तिस पीछे उस ने शीघ्र ही कुछ छल करके अपनी सेना को वहां से उठा ली; ऐसा कहते हैं कि जब वालसिअन का कटक रूम को लूटने से निराश हुआ, तो उन्हों ने कोरीओलेनस को मार डाला, यह वृत्तान्त ईसवी शक के पूर्व ४८७ वें वर्ष में हुआ था।

रूम के इतिहास में इस से अगला एक भारी वृत्तान्त रूम के कुलीन सप्यूरीअस कैशिअस नाम जन के बध का है, जो सेना पति होकर दो बेर विजयी भया था, उस ने प्रजा के दुख को देख अति दयालु हो एग्रीशिअन नाम अति प्रसिद्ध व्यवस्था चलाई, जिस के कारण से रूम के प्रजा प्रभुत्व में कई सौ बरस तोडी झगडा पडा रहा, औ अब के इतिहासवेत्ताओं में इस व्यवस्था के विषय पर बडा शास्त्रार्थ रहा। थोड़े इतिहासवेत्ता तो उस व्यवस्था का विषय यह कहते हैं, कि रूम के धनाढ्य भूस्वामियों से उन की भूमि छीन कर दीन जनों में उस का विभाग किया जावै; औ शेष इतिहासवेत्ता ऐसा वर्णन करते हैं कि उस व्यवस्था का आशय यह है कि कुलीनों से वे पराजित भू भाग लियेजावें, जिन के अर्थ उन्हों ने वचन किया था कि इन में जो उत्पन्न होगा उस का दशांश हम राजद्वार में दिया करेंगे, पीछे जब वे देश में प्रबल हुए, तब उस करके देने का

निषेध किया; श्री इन भू भागों का थोड़े थोड़े कर का पट्टा करके उन दीन लोगों को दियाजावै, जिन के साह स से आदि में जय प्राप्त भई थी। हम इन दोनों अर्थों में से कोईसा अर्थ लें, परन्तु सिद्धान्त यह है कि जैसी यह व्यवस्था धनी लोगों को दुख दाई थी; ऐसी ही दरिद्रियों को आनन्द जनक। इसलिये राजसभा के लोगों ने कैशिअस को मारडालने का निश्चय किया। कोई कोई इतिहासवेत्ता तो यह कहते है कि जब राजसभावालों ने उसे विचारस्थान में बुलाया श्री उस के सिर झूठा लांछन लगाया कि यह राज पदवी को चाहता है, तब उन्हीं ने टार्पीअन नाम पर्व्वत श्रेणी से उस का सिर नीचे पांव ऊपर को कर पटक वा दिया, रूम में यही दण्ड उन लोगों को होता है जो उच्चपदाभिलाषी हैं; परन्तु दूसरे ऐसा निश्चय करते हैं कि कोरिओलेनस की मृत्यु से तीन वर्ष पीछे ईसवी शक के पूर्व्व ४८४ के वर्ष में उस के शत्रुओं ने छिप कर उसे मारडाला।

कैशिअस की मृत्यु से लेकर तीस वर्ष तोडी रूम की कथा म कोई बडा भारी आवश्यक वृत्तान्त नहीं है। रूमवाले अपने आस पास के छोटे छोटे राजाओं से निर्विघ्न युद्ध करते रहे, जिन में वे बहुधा जयवन्त रहे। परन्तु रूम नगर आंतरिक विबाद करकै शून्य न था। प्रजा ने अपनी जाति के स्वामियों को प्राप्त करके निज पराक्रम वढाने का उद्योग किया; इस-लिये कुलीन वर्ग के संग उन का निरन्तर विवाद वना रहा, परंतु बहुधा कुलीन लोग चिरकाल झगडा रख, निदान हार मान उस विषय को छोडदेते जिस पर विवाद होता। जब जब प्रजा की श्रोर के ट्रिब्यून लोग जैसे तैसे अग्रेरिअन व्यवस्था को चलाते, तभी राजसभावाले कोई निकटवर्त्ती देश से युद्ध

करने को चले जाते, इस आशय से कि लोगों का ध्यान इस कर्म में वट जाय। प्रजागण की बर्द्धित होती भई सामर्थ से यह वात आवश्यक दृष्ट पडी कि कोई लिखित व्यवस्था होय कि जिस में सव जातों के स्वत्व का निरूपण अच्छे प्रकार से भया होय। एक टेरेंटिलस नाम प्रजा के ट्रइव्यून ने ऐसी ही व्यवस्था वनाने का विचार किया, परन्तु राजसभावाले उस व्यवस्था के अत्यंत विरोधी हुए, इस कारण से कि उस के चलने से उन के पराक्रम की हलचल होजाती।

नाना प्रकार के कलह औ झगड़ों के पीछे राजसभावालों ने वह बात अङ्गीकार की, औ तीन अत्यन्त नामी नगर निवासियों को सोलन नाम पंडित की व्यवस्था लाने के लिये यूनान में औ विशेष करकै एथेंस नगर में भेजा, जो नगर उस काल में अत्यन्त प्रतापी औ पेरीक्लीज़ नाम जन के आधीन था। दूसरे वर्ष के अंत में ये तीनों जन फिर के आये, औ दश कुलीन लोग छंटे जो नगर में अत्यन्त निपुण थे, औ वे राजनीति की पुस्तक का संग्रह करने के लिये स्थापित भये। ये दसों अध्यक्ष अटल सामर्थ प्राप्त करकै केवल एक वरस के लिये स्थापित भये, तव और राजगामियों के कर्म उन से छूट गये। इस कारण से उन के पास दूना काम होगया, एक तो नवीन राजनीति की पुस्तक वनाने का, औ दूसरा राज के सव कर्मों को निमटाने का। प्रथम ही उन का परिश्रम औ परिमिताचार ऐसा उपमा योग्य था, कि प्रजा ने अपने पक्षी ट्रइव्यून लोगों के नष्ट होने का पश्चात्ताप करना छोड दिया, औ चाहा कि यही मंगल दायक राज्य शासन सदा वनारहै। वर्ष के अन्त में इन दसों अध्यक्षों ने अपनी वनाई हुई राजनीति प्रजा औ कुलीनों को दिखाई, जव दोनों ने इस

पुस्तक को अङ्गीकार किया, तिसी काल से यह ग्रंथ रूम की मूल व्यवस्था का एक विभाग हुआ। परंतु कितनेक मनुष्यों का ऐसा विचार था, कि इस पुस्तक में कुछ और भी आवश्यक व्यवस्था मिलाई जावें, इसलिये इन अध्यक्षों को अगले वरस तक रहने की आज्ञा दी। इस सभा में ऐपीअस क्लाडिअस नाम एक जन साहसी औ दुष्ट था, उस ने अपनी ढिठाई से कहा कि मैं ही इस पद के योग्य हूं जब उस का यह यत्न सिद्ध भया तब उस ने और अपने अनुयायी नो मनुष्यों को मिलाकर सभा की संख्या पूरी करी। उन्हों ने राज्य में अचल होते ही परिमिताचार छोड दिया, औ ऐसा निर्दयता पूर्व्वक राज्य शासन किया, जैसा वह पूर्व्व काल में उपकारी था, ऐसा ही अब दुखदाई हुआ। उन के अन्याय के आचरण से प्रजा औ कुलीन लोग दोनों समान रूप से महा दुखी भये, औ जिस वर्ष के लिये यह सभा स्थिर रही थी, उस के अन्त विना उन दोनों को उन के अन्याय के विनाश होने की कुछ आस्था न दृष्ट पडी, औ वे इस छल से निज अधिकार बढाते रहे कि अभी वह व्यवस्था बन नहीं चुकी है, जिस के लिये हम नियुक्त हैं। इस कारण से बहुत से राजसभावाले राज्य की संपूर्ण चिन्ता छोड गांमों में इधर उधर चलेगये; तभी प्रजागण का बडा समूह निरुद्योगी औ निरास रहा। परन्तु जब राजसंबंधी व्यापार अतिशय रूप से विगड़गये, तभी ऐपिअस की लंपट युक्त चाल से दसों अध्यक्षों का अन्यायपना एका एकी धूल में मिलगया, औ पुराने मंत्रियों का अधिकार फिर स्थापित भया। एक दिन ऐपिअस ने दैवगत करके पाठ शाला से आती हुई एक महासुन्दरी कंन्या को देख उस के सुरूप से मोहित हो मदन की अगन से जल एक निज अनु

यायी को सिखाया कि तुम कहो यह मेरी दासी है, इस कारण से उसे विचार स्थान में आवना पड़ा, तब ऐपिअस ने व्यवस्था दी कि यह कंन्या फिर उस के झूटे स्वामी को मिलैगी। इस बात से वर्जिनिअस नाम उस के पिता ने जाना कि अब मेरी कंन्या की पत किसी उपाय से नही बचती, तब एक निकटतौँ हट्टा में से लपककर छुरी ला नंगी करकै निज कंन्या के उदर में घुसेड़ दी। औ उसी रक्त युक्त शस्त्र को हाथ में लिये हुए कहा कि ऐपिअस मुझै इस रक्त की सोगंध है कि तेरे सीस का नैवेद्य नर्क के देवताओं को चढाऊंगा। तिस पीछै सब नगर में फिरकर उस ने लोगों को चिताया कि इन अध्यक्षों के दुराचार का त्याग करो। इस बात से हुलड मचगया; लोगों ने इकट्ठे हो सेना से मिल उन अध्यक्षों का दुराचार युक्त शासन उलटा दिया, ऐार हट करकै राज्य का प्राचीन प्रकार फिर स्थापन करने की इच्छा की। इस प्रकार से रूम नगर ने दूसरी बेर एक पतिव्रता स्त्री की हत्या से रक्षा पाई। जब इन अध्यक्षों को उन के अपराध करने का कारण पूछने के लिये बुलाया; तब थोड़े से तो उन में से भाग गये, औ शेष जो रहे उन्हें देश निकाला हुआ, औ दो जो महा अपराधी थे, वे बन्दीगृह में जाकर मरे परन्तु व्यवस्था जो उन्हों ने बनाई थी, सो प्रमाण भई, औ इन के अन्त के दो भाग उन दस अंशों के साथ मिलाये, जो अध्यक्षों के स्थापन होने के पहले वर्ष में परि समाप्त भये थे, औ इन व्यवस्थाओं का नाम द्वादश अंश कहते थे, जिन का केवल थोडा सा भाग अबतक बनारहा, इन अध्यक्षों की सामर्थ तीनेक बरस से कुछ अधिक रही औ ईसवी शक के ४४७ वर्ष पूर्ब्ब वह नष्ट होगई।

इस वृत्तान्त के चार वरस पीछे प्रजा के अध्यक्षों ने अड करी कि सव से उच्चपद अर्थात् कांसलशिप सामान्य लोगों को भी मिलाकरै, यह पद उस दिनतक केवल कुलीनों ही को मिला था। इस नवीन वात पर सदैव की रीत से वडा दुःसह वादानुवाद भया, औ राजसभावाले अत्यन्त अनिच्छा पूर्व्वक कहते रहे कि ऐसा महापद अकूलीनों के हाथ में देकर तुच्छ नही करना चाहिये; परन्तु प्रजावर्ग निरन्तर होड़ा करता रहा, तव कुलीनों ने एक मध्य का मार्ग निकाला कि कांसल पद के पलटे छह सेनासंबंधी अध्यक्ष वरसवेंदिन नियुक्त ऊआ करैं, जिन में आधे कुलीन औ आधे सामान्य जन। इस अनुग्रह की वात से प्रजालोग ऐसे प्रसन्न भये, कि वहुत वरस तक छह कुलीनों को छांट कर नियुक्त करते रहे; इस से ऐसा अनुमान होता है कि सामान्य लोगों की यह आकांक्षा थी, कि हम में से यह कलंक जाता रहै कि कांसलशिपपद के योग्य नही हैं। परंतु जव कभी राजसभावाले प्रजा को धमकाने के अर्थ अपने में सामर्थ पूर्ण जानते, तभी सेना संवंधी अध्यक्षों के पलटे कांसल नियुक्त करते। परंतु उस काल में आन्तरिक शांत भई, औ द्वादस अंग नाम ग्रंथ में जो निंद्य व्यवस्था लिखी थी कि कुलीनों औ सामान्य लोगों में विवाह संबंध नहो उस के मिटादेने से और भी आन्तरिक शान्ति विशेष रूप से भई। इस कारण से नगर निवासी परस्पर मिलकर एक महा कुटुंब सा होगये।

ईसवी शक के पूर्व्व ४४० वें वर्ष में महाघोर अकाल पड़ा, जिस कारण वऊधा नगर ऊजड होगया; तिस काल प्रजावर्ग में प्रतिष्ठित औ धनाढ्य स्पूरिअस मीलिअस नाम जन ने हिट्रूरिआ देश का संपूर्ण अन्न क्रय करकै कुछ

लिये विना नगर निवासियों को बांटदिया। इस कर्म से जैसा वह प्रजा समूह का अत्यन्त प्रियपात्र हुआ, ऐसा ही राजसभावालों को महानिंद्य। इसलिये उन्हों ने उसपर एक मिथ्या अभियोग किया, कि यह राजपद की आकांक्षा करता है, इसलिये संपूर्ण पराक्रम सहित डिकटेटर नाम पदवी देकर एक जन को नियुक्त किया, जिस के होने से तुरंत प्रजा प्रभुत्व में भय उत्पन्न भया। अभागा स्पूरिअस जब विचार स्थान में बुलाया गया, तब उस ने डिकटेटर का वकृत थोड़ा विश्वास जान, प्रजा की शरण ली; इस बात से एहाला नाम जन जो डिकटेटर के नीचे अधिकारी था, उस ने झपट कर एक ही चोट में स्पूरिअस को मारकर धरती में गिरादिया। यद्यपि सिंसिनेटस नाम वृद्ध डिकटेटर अत्यन्त श्रेष्ठ औ दयालु था, तथापि उस ने पक्षपात करके अंधासा हो कहा, कि हे पुत्र एहाला तैंने विलक्षण कर्म करके राज्य की रक्षा करी।

अब हम और २४ वर्ष अर्थात् ईसवी शक के पूर्व ४२८ से ले ४०४ तक का प्रसङ्ग नहीं कहेंगे; इसकाल में रूमी अपने निकटवर्ती राजाओं से निरन्तर युद्ध करते रहे, औ कभी जयवन्त औ कभी पराजित भये; परंतु उन का पराक्रम स्पष्ट रूप से वर्द्धित होतारहा। इन लगातार युद्धों ने नगर निवासियों के मन में शस्त्र धारण करने का अनुराग औ उन का अभ्यास सिखाया, जिस कारण से क्रम क्रम रूमी पृथ्वीभर के स्वामी होने को उपस्थित भये। ईसवी शक के पूर्व ४०४ वें वर्ष में रूमियों ने वीआई नाम नगर को घेरा, यह पत्तन हिट्रूरिआ देश के बीच रूम से कछ कोस था, इस के साथ रूमी बहुधा लड़ते रहे थे। वीआई नगर धनाढ्य औ व्योपार स्थान था, वहां के

निवासियों का केवल यही अभिप्राय था कि यहां शान्ति रहै, औा लाभ योग विशेष वढै। रूमियों का आशय था कि हम इसे जय करके अपना अधिकार स्थापन करैं। इटली के दक्षिण में इसी काल के बीच सैमनइट लोग ऐसे पराक्रमी ऊए थे कि उस दिशा में राज्य प्राप्त करने का भरोसा रूमियों का बऊत थोड़ा दृष्ट पडा, तब उत्तरस्थ हिद्रूरिआ देश का लेने की आकांक्षा करी; परन्तु रूमियों ने विचारा कि इस विस्तृत देश का द्वार वीआई नगर जबलग स्वाधीन रहैगा, तब लग हमारी वृद्धि न हेंागी। इस कारण से राजसभावालों ने दृढ विचार करकै संपूर्ण निज पराक्रम सहित वीआई नगर को घेरा। आस पास के निकटवर्त्ती अनेक लोगों ने इस नगर की सहायता करी, क्योंकि वे जानते थे जो यह नगर रूमियों के हस्तगत भया तो वे फिर हमैं भी अपने आधीन कर लेंयगे। इस के पूर्व्व रूमियों की सेवा के मनुष्यों में यह रीत थी कि अपने अपने घर से खरच करकै युद्ध करने को जाया करते थे, इस कारण उन्हें खेत बोवने के समय घर को जाना आवश्यक ऊआ। परन्तु राजसभावालों की शीत काल में इस नगर को घेरे रखने की इच्छा थी, इसलिये उन्हें सैन्य के अर्थ बेतन देना पडा। इसी एक कर्म से रूम के राज्य औा सेना की मूलव्यवस्था संपूर्ण रूप से पलटगई, औा राजसभावालों ने देश का ऐश्वर्य्य बढ़ाने के लिये जो उपाय विचारे थे उन की अबाध्य सहायता प्राप्त भई। इस हेतु से नगर निवासी निश्चित बेतन पावने के हेतु से औा लूट करने की आसपर अपने अध्यक्षों का कुछ कहना सुन्ना न मान सेना में भरती होगये, और पूर्व्व की न्याईं अब ट्रइब्यून राजसभावालों को न रोक सके। ईसवी शक के ३९५ बरष पूर्व्व, घेरे करने से दसेक

वर्ष पीछे यह वीआई नगर कैमिलस नाम सेनापति के हस्त गत भया। परंतु इस अति विज्ञ सेना धीश ने लूटे ऊए द्रव्य को कोई कुमार्ग में लगाया, औ विशेष करके अध्यक्षों की इच्छा का विरोधी भया, जब वे रूम को उठाकर वीआई को बसाया चाहते थे, इसलिये उन्हों ने ईसवी शक के पूर्व ३९० के वर्ष में उसे देस निकाला दिया।

इस से अगले वर्ष में फ्रांस के लोगों ने रूम को लूटा; वे लोग ब्रिटन, फ्रांस, औ स्पेन से आये थे। उन्हों ने समा चार सुने थे कि इटली की बडी उर्वरा भूमि है, इसलिये आस की थी, कि उसे जय कर वहां बसेंगे। उन में से एक महा दल आल्पस नाम पर्वत् की सीमा पर हो इटली के मंडल में आया, औ पो नदी पार करके हिट्रूरिआ देश की लूट पाट करी। जब वे क्लूसिअम नगर को घेरते थे, तब टस्कनीवालों ने अपनी सहायता के अर्थ रूमियों से प्रार्थना करी, तब उन्हों ने नगर का घेरा छुडवाने के लिये अपने प्रतिनिधि तीन जन कुलीन परंतु कच्चे, असभ्य फ्रांस वालों के निकट भेजे। इन तीनों युवा पुरुषों ने अभि मान पूर्वक उन से कहा कि इस नगर का घेरा छोड़-दो; फ्रांसवालों ने अपमान पूर्वक इस बात का निषेध किया; इस बात से प्रतिनिधियों ने अपना उत्तम अधिकार भूलके, क्लूसिअम नगरवालों से मिल फ्रांसवालों पर चढाई कर दी। ब्रेन्नस नाम फांसवालों के अध्यक्ष ने रूमियों के प्रतिनिधियों के विश्वास घात पने के कर्म देखकर अपने दूत रूमियों के निकट भेजे, परंतु उन्हों ने अपने अपराधी प्रतिनिधियों को दंड न किया, औ उन की और प्रतिष्ठा बढाई। इस बात से फांसवाले अति क्रुद्ध भये, औ उन्हों ने झट क्लूसिअम नगर का घेरा छोड,

निज संपूर्ण सेना सहित सीधे रूम पर धावा किया। इस बात से रूमियों का सदा का साहस औ बुद्धि एका एकी खोई गई। इस हेतु से उन्हों ने डिक्टेटर को तो नियुक्त किया नही; परंतु एक मूरख युवा पुरुष को सेनाधीश करकै उन का साम्हना करने के लिये भेजा। रूम नगर से साडे पांच कोस ऐलिआ स्थान पर लडाई भई, जिस में रूमियों की सेना संपूर्ण रूपसे पराजित भई। तिस पीछै फ्रांसवालों ने नगर पर धावा किया, औ नगर के वचने का कोई भी उपाय न था।

जोंही शत्रु निकट आया, सामान्य लोग औ पुरोहित नगर तज इधर उधर निकटवर्ती गामों में भागगये; तब राज सभास्थ औ प्रजा के अध्यक्षों ने न्यूनाधिक सहस्र सेना सहित दुर्ग का आश्रय ले उसे दृढ किया; नगर में केवल थोडे से कुलीन औ सामान्य जन रहगये, जिन्हों ने मन में दृढ किया था कि अपने जीवते जीव निज अति प्रिय नगर का विनाश न देखेंगे। फ्रांसवालों ने आवतेही झट पठ इन दृड्ढ मनुष्यों का संहार किया, औ नगर को लूट खसोट कर उसे धूल में मिला, दुर्ग को घेर लिया। एक समय वे एक अरक्षित मार्ग होकर उस पर्वत की चोटी पर जा पहुंचे, जिस पर वह दुर्ग स्थित था, परंतु इसी बीच वहां के पवित्र राजहंस उच्चस्वर से चोंचा उठे, औ इस प्रकार से रूम नगर बचा। मैनलिअस जो इस से पूर्व कांसल अर्थात् सेनाधीश था, वह राजहंसो का शब्द सुनते ही जाग पडा, औ झट भय स्थल में पहुंच गया, जाते ही सब से अगले आक्रमण कारी को नीचे पटक, शेष शत्रुओं को तव तोडी दबाये रहा जब लग उस के मित्र सहायता करने को न आसके। दुर्ग को घेरने से सात महीने पीछे इस स्थान के शरद काल के रोग से शत्रु की सेना क्षय होने लगी, औ

दुर्भिक्ष ने दुर्ग के रक्षकों का साहस न्यून किया; इसलिये परस्पर कुछ बचन ठहरा, जिस के अनुसार ब्रेनस न्यूनाधिक साडे चार लाख रुपये से अपना कटक वहां से उठा रूम के राज्य से बाहर लेगया। यह जो कथा है कि कैमिल्लस ने ब्रेन्नस को हराया इस का वर्णन यद्यपि काव्य में भया है, तथापि मिथ्या सा दृष्ट पडता है।

ईसवी शक के पूर्व ३८९ के बर्ष में रूम नगर की लूट भई। फ्रांसीयलोगों के जाते ही राजसभावाले दुर्ग से उतर आये, औ प्रजा लोग जो जहां तहां जा छिपे थे सोभी फिर कर आये, परंतु जब उन्हों ने देखा कि रूम नगर बिगड बिगडा कर खंडैर हो गया, इसलिये उन्हों ने बहुत सी हो हा कर चाहा कि रूम को तज वी आई नगर में बसेंगे जिस के बीच उन्हों के रहने के लिये सुंदर सुखदाई यहादि उपस्थित थे। राजसभावालों ने इस बात पर देश निकाला किये हुए कैमिल्लस नाम जन को फिर बुलाया और उस की सहायता से जैसे तैसे इस सत्या-नाशी लोगों की कल्पना को रोका; औ उसी दिन से कैमिल्लस रूम की नीम रखनेवाला दुसरा कहाया रूमी वीआई नगर के जाने का बिचार तज पराक्रम औ परिश्रम पूर्बक फिर नगर बनाने लगे।

॥ नगर के पुनर्वार बनावने से ॥
॥ प्रथम प्यूनिक नाम युद्ध पर्यन्त ॥

मैनलिअस को दंड—लिसिनिअन की विनय—राजसंबंधी बड़े बड़े कामों में सामान्य लोगों का अधिकार—करटिअस—सैमनइट नाम युद्ध—विसूविअस पर्वत की लड़ाई—काडइन के कांटे—हिट्रूरिआ देशवालों के संग युद्ध—रूमवालों की वर्द्धित दशा—पिरस से युद्ध—रूमवालों ने देशान्तर में जिन रीतों से बस्तियां बसाईं उन का प्रकार, इन सबों का वर्णन करेंगे।

रूमी अपने नगर को पुनर्वार नही बना चुके थे कि इसी बीच निकटवर्त्ती देशों के वे लोग प्रतिकूल होगये जिन के सङ्ग रूम के राज्य की स्थापना से बिरोध रहा था; परन्तु उस काल के बीच सबों से मुख्य कैमिलस नाम सेनापति ने उन्हें संपूर्ण रूप से हरादिया। फ्रांसवालों की बिदा से चार बरस पीछे दुर्ग को बचानेवाला मैनलिअस नाम जन अति दयाल होकर निज द्रव्य खरच करकै उन दीन लोगों की सहायता करने लगा जिन्हें पुनर्वार घर बनाने के लिये नवीन ऋण लेनापड़ा था, और जो धनाढ्य कुलीन लोगों करकै दुखी भये थे। पर इस

बात से धनी लोग महा क्रुद्ध भये; श्री उन्हों ने एक जन को डिकटेटर पदवी देकर उस के अगाडी मैनलिअस को इस अभियोग का उत्तर करने के लिये बुलाया, कि यह राजा हुआ चाहता है, श्री इसीहेतु से प्रजा को द्रव्य देकर पालता है। जब मैनलिअस को गल लगने की आज्ञा होती थी, तभी उस ने अपने पक्षी लोगों को जताया कि दुर्ग की श्रोर देखो जिस को मैंने अभी बचाया था। श्रोर ऐसा कहते हैं, कि राजसभावालों ने बिचारा कि जबलग दुर्ग प्रजा की दृष्ट में है तब लग हम उसे दबाकर मैनलिअस को प्राण दण्ड नहीं कर सकते इसलिये उन्हों ने निजकार्य साधने के लिये व्यवहार स्थान को पलट दिया। तिस पीछे मैनलिअस को प्राणान्त दण्ड का दोषी ठहरा औंधा कर उसी पर्व्वत से नीचे फिंकवाया जहां से उस ने रूमवालों के शत्रुओं को गिरादिया था।

मैनलिअस को ऐसा प्राण दण्ड करने से प्रजागण का हृदय टूट गया। वे उस दिनतोडी कैशिअस श्री मीलिअस नाम दोनों पुरुषों का दुख नहीं भूले थे जो प्रजा के पक्षी होने के कारण कुलीन लोगों के हाथ से मारे गये थे। ऐसे उन्हों ने देखा कि जो कोई हमारा अनुयायी हुआ, सोई एकादि क्रम करके बलात्कार से मारागया; श्री इसलिये उन्हों को अपने कष्ट के निवारण होने की कुछ आस भी न रही। फ्रांसवालों की चढाई, श्री रूम की लूट के कारण उन के सिर ऋण चढ़त होगया था; श्री उत्तमर्ण लोगों ने उन्हें ऐसा कष्ट दिया, जैसा कभी न दिया था। परन्तु जब ठीक दृष्ट पडा कि कुलीन लोगों ने अपना ही अधिकार सदा राज्य में स्थिर रक्खा श्री जब प्रजागण सब बातों से निरास होकर दास पदवी में पडने को था, तिसी काल दो पुरुषों के साहस श्री सत्

प्रतिज्ञपने ने प्रजा के मुर्झाये हुए चित्त को हरा किया, औ सब प्रकार के राजसंबंधी पद उन को भी प्राप्त हुआ करैं, ऐसा उपाय बना दिया। यहां कुछ विषय अतिस्पष्ट रूप से वर्णन करना आवश्यक है, कि रूमियों ने एक जात बनाई थी, जो इतर लोगों की अपेक्षा महा प्रतिष्ठित थी, जैसें हिंदुस्थान में क्षत्री, वैश्य, शूद्र की अपेक्षा ब्राह्मण वर्ण है। कुलीन लोग महात्मा औ धनाढ्य थे; वेही केवल राजसभा में बैठकर प्रजा प्रभुत्व के कर्मों को सुनते थे; वेही सेनापति होकर लडाई को जाते, नगर पर आज्ञा रखते औ बुरे भले सब कर्मों का न्याय करते; औ वेही केवल यज्ञ, बलिदानादि कराने में पुरोहित औ आचार्य बनते थे। बहुधा सामान्य लोग दरिद्री औ परिश्रमी थे, औ युद्ध के अर्थ उन्ही में से सेना में भरती होते थे। पूर्व्व काल के बीच इन दोनों जातों में परस्पर बिवाह संबंध नही होता था, परन्तु यह निन्दित व्यवस्था कुछ काल तक दूरकरी थी। यद्यपि सामान्य लोगों पर ऐसे कष्ट थे तोभी उन में कुछेक लोग धनाढ्य औ प्रतिष्ठित थे इस कारण से उन के बिवाह कुलीन घरानों में हुए, इस कर्म से उन को चाट लगी, कि हमारी राज्य में भी प्रतिष्ठा होय तो भला। दोनों ओर के लोगों की जब ऐसी दशा थी तब प्रजा के लिसिनिअस औ सेक्सटस नाम अध्यक्षों ने लिसिनिअन नाम प्रसिद्ध व्यवस्था का सूचन करवाया, जिस में तीन नियम थे प्रथम तो यह कि, सेना संबंधी अध्यक्षों के पलटे दो पुरुषों को कांसलपद मिलाकरै, जिन में एक जन सदा प्रजा वर्ग में से छांटा जाय; द्वितीय नियम कि जो कुछ द्रव्य ब्याज के अर्थ दिया जाय, सो मूल ही में गणना करैं, औ

वर्ष दिन में तीनबेर करकी सब चरण को चुकावें; तृतीय कि किसी रूम नगर निवासी को पन्द्रह सौ १५०० बीघे से अधिक भूमि न मिले, औ कुलीनों के पास जो पृथ्वी है उस का नियत भाडा राज भण्डार में वे दिया करें। सहज ही अनुमान हो सकता है कि ऐसी भारी औ आवश्यक व्यवस्था महा घोर झगड़े विना नही चलसकती, जिस के कारण उन मनुष्यों को भी द्रव्य औ प्रतिष्टा प्राप्त होय जो हिंदुस्थानी दरिद्री शूद्रों के समान तुच्छ थे। राजसभावालों ने इस व्यवस्था का प्रचार न होने देने में दस वरस तोडी निज संपूर्ण पराक्रम सहित बल किया, औ नगर का शासन संपूर्ण रूप से बिगड गया। परंतु लिसिनिअस ने इस व्यवस्था के चलाने का उद्योग कोई कारण से भी न तजा निदान अपनी आश्चर्य युक्त सत्य प्रतिज्ञता के कारण बलात्कार से उस ने राजसभावालों से वह विषय अंगीकार करवालिया। इसवी शक के पूर्व्व ३६६ के वर्ष में सामान्य लोगों ने कांसल नाम पद को प्राप्त किया, तिस पिछे क्रम क्रम से तीस वर्ष के अन्तर में संपूर्ण राजसंबंधी कर्मों के वीच अधिकारी होगये; कहां तक कहैं कि ईसवी शक के पूर्व्व ३०० के वरस में आचार्य होने का भी अधिकार उन को प्राप्त भया। इस कारण से जब कुलीन औ सामान्य लोगों का राजकर्म में समान अधिकार भया, तो दोनों ज्ञातों में परस्पर जो ईर्षा रहती थी सो नष्ट भई, औ ऐसा कहते हैं कि उसी दिन से रूम के ऐश्वर्य का प्रारंभ भया। तिस पीछे राज्य में जो लोग सबों की अपेक्षा महा गुणी थे, वे राजसभा वालों की बुद्धि द्वारा अन्य देशों को जय करने औ स्वराज्य का विस्तार करने में लगे। इस कार्य से एक और कर्म करना

पडा कि बिचार संबंधी कर्म कांसल पद से जुदे किये; इसलिये एक प्रीटर नाम नवीन अध्यक्ष सकल अभियोगों का निर्णय करने के लिये नियुक्त भया।

सामन्य लोगों का कांसल पद में अधिकार प्राप्त होने से ले कर, सैमनिअन नाम युद्ध के प्रारंभ तक चौबीस बरस बितीत हुए। इसी काल में कोई कारण पाकर दैवगत से रूम नगर के बीच पृथ्वी फट के एक जलाशय आपही आप बन गया, तब वहां के पुरोहित लोगों ने जताया कि रूमवालों के अति उत्तम उत्तम पदार्थ जब लग उस में नहीं पड़ेंगे तब तक वह बन्द नहीं होगा; इस बात के सुनते ही अति साहसी नगर निवासी कर्टिअस नाम जन सजसजाकर घोड़े पर चढ जलाशय के निकट आ कहने लगा कि रूमवालों में शस्त्र, औ बीरता को छोड और क्या बहुमूल्य पदार्थ हैं, औ उस में कूद पडा; ऐसा प्रसिद्ध करते हैं कि कर्टिअस के गिरते ही वह झट बन्द हो गया। तिस पीछे फ्रांसवालों ने फिर रूमियों पर चढाई करी परन्तु उन्हों ने निज बीरता से फ्रांसीय लोगों को पराजय किया, औ उन्ही के अति अद्भुत साहसी मैनलिअस ने शत्रु की ओर के एकजन अतिकाय महा योद्धा को एक ही युद्ध में लडकर मार गिराया। इस चौबीस वर्ष के अन्तर में यद्यपि राजसभावाले लिसिनिअन नाम व्यवस्था के प्रचार होने का निसेध औ दो कुलीनों को कांसल पद में नियुक्त करने की इच्छा अत्यन्त रूप से करते रहे; तथापि सामान्य लोगों का गौरव क्रम क्रम से बढता गया। रूमियों के युद्ध इस कालतक रूम नगर के चारों ओर पन्द्रह पन्द्रह कोस के मध्य में थे, परन्तु जब उन के इस चक्र के सब शत्रु पराजित होगये, तब उन का साहस अधिक भया, औ

अन्य दूर के देशों को जय करने का उत्साह उपजा औा इटली के संपूर्ण राज्य में अधिकार करने का विचार उन के मन में दृढ भया।

रूम नगर की स्थापना से पीछे ४१० वें वर्ष में अर्थात् ईसवी शक के पूर्व ३४२ वें वर्ष में प्रथम रूमी औा सैमनइटलोगों के बीच युद्ध रूपी अग्नि सुलगी। जब रूमी अपने निकटवर्ती आस पास के मनुष्यों से युद्ध करने में निरत थे, तब वे इटली के दक्षिण में क्रम क्रम से निज अधिकार बढाते थे। सैमनइट लोगों ने कंपैनिआ देश पर चढाई करी थी; कंपैनिआ वालों ने देखा कि उन का साम्हना करने की हम में सामर्थ नही तब सहायता करने के लिये रूमियों से प्रार्थना करी, जब रूमियों ने कई बात का वचन करने के लिये सहायता के अर्थ ढील करी, तब कंपैनिआ के दूतों ने अपने देशवालों की शिक्षा के अनुसार निजदेश औा सब सामग्री रूमियों को सम र्पण की। रूमियों ने भाट सैमनइट लोगों के पास समाचार भेजे कि कंपैनिआवाले अब से हमारे आधीन होगये हैं इसलिये आज से इन को क्लेशदेना छोड दो। उन्होंने अभिमान पूर्व्वक इस बात का निषेध किया, जिस के कारण एक लडाई उठी, जो ६० बरस से अधिक रही, और जब रूमवालों का अधि- कार इटली के दक्षिण में संपूर्ण रूप से भया, तब परिसमाप्त हुई।

पहले ही बरस के युद्ध में रूमियों ने सैमनइट लोगों को दो बेर पराजय किया। रूम की सेना का एक बडा विभाग सौख्य जनक कंपैनिआ देश में रहने से चाल करके भ्रष्ट भया दूसरा वर्ष उन का बखेडा सुधारने में लगा। औा युद्ध के तीसरे वर्ष में रूमियों ने सैमनइट लोगों के खेतों की लूट

करी, जिस कारण से उन्हों ने निराश होकर, संधि करने के लिये प्रार्थना की, तब रूमियों ने ३४० वें वर्ष में इस को अंगी कार किया। ज्योंही यह लडाई परि समाप्त हुई थी कि और एक अधिक भयंकर शत्रु रणभूम में उपस्थित हुआ। डेड़सौ वर्ष से अधिक भये थे कि लैटिन के लोग रेजिलस हृद के निकट रूमियों करकै संपूर्ण रूप से पराजित भये थे, औ तिस दिन से इस भारी काल के वीच रूमियों के दृढ सहायक रहे थे औ रूमियों की सेना का अधिक भाग उन्ही से परिपूर्ण था अववे रूमियों से प्रतिकूल होकर, कंपैनिआवालों से जामिले, तव कंपैनिआ निवासियों ने विचारा कि हमारे सैमनइट नाम शत्रु तो पराजित हो ही गये हैं, इसलिये वेभी प्रसन्न होकर रूमि यों के अधिकार को त्याग करने में लगे। तव रूम के राज सभावालों ने आट लैटिन देश के दस मुख्य पुरुषों को वुलाकै पूछा कि तुम क्यों लडाई खडी करते हो। उन्हों ने उत्तरदिया कि रूम का राज्य हमारी सहायता से वर्द्धित भया है, इस-लिये हमारा भी अधिकार सव कर्मों में रूमियों के तुल्य हो अर्थात् राजसभा में आधेलोग हमारे आधे रूमी नियुक्तहोंय, औ कांसल पद में जो दो जन नियुक्त होते हैं उन में भी एक हमारी ओर का स्थापित भयाकरै।

राजसभावालों ने अति निन्दा पूर्वक इस वात की नहीं करी औ एक लडाई खडी की, जिस में महा रक्त पात होना दृष्ट पड़ा। अव रूमियों को उन के सङ्ग युद्ध करना पडा, जो उन के पक्षी होकर उन की श्रेणी में स्थित हो चिरकाल तक संग्राम करते रहे थे, जिन की भाषा औ शस्त्र धारण करने की रीति रूमियों के समान थी, इसलिये उन्हें सेनापर अति कठिन शासन करना आवश्यक हुआ, औ सव सैन्य औ प्रत्येक

अध्यक्ष को आज्ञा हुई, कि अपनी श्रेणी से बाहर निकल कर कदाचित् संग्राम न करैं। युद्ध होने से कुछ दिन पहले कांसल मैनलिअस का पुत्र किंचित सेना ले भ्रमण करने को गया, तहां अरि दल का एक थोड़ा सा बिभाग मिला, उस के सेनापति ने उस से कहा कि आवो हम तुम दोनें परस्पर युद्ध करैं। तब युवा मैन्लिअस ने तरुणाई के तेहे में आ, पिता की आज्ञा को विस्मर्ण कर, ललकारके प्रति पक्षी के सन्मुख हो उसेझट मारगिराया, औ उस की लूट पाट कर मगन होताहुआ पिता के तंबूमें आया। परन्तु उस के पिता ने आज्ञा दी, कि इस का सिर काट गेरो; क्यौंकि इस ने हमारी आज्ञा भङ्ग करी हैं; यद्यपि इस अतिकठोर अनावश्यक दण्ड से अनेक झगडे उठे तथापि सेना अत्यन्त रूप से आज्ञाधीन हुई, औ इसी हेतु से अगाडी को युद्ध में बडी फलसिद्ध भई। ये दोनों ओर की सेना जो मिलकर युद्ध को जाया करती थीं, अब विसूविअस पर्वत के नीचे उन्ही में परस्पर अतिघोर युद्ध का आरंभ भया। प्रथम तो दोनों ओर के कटक ने डट डट के लडाई की; परंतु अन्त में रूमियों की बांई ओर की सेना कुछेक सरकी, तब डेसिअस मस नाम सेनापति अपने कटक को विजयी करना विचार निज मरणठान, अरिदल की सब से भारी भीड में जा कूदा औ वहां हीं ढेड रहा। इस बात को देखते ही उस की सेना ने झट फिरधावा किया, औ जय प्राप्तकरी। यद्यपि इस महा भारथ में लैटिनवालों का पराभव हुआ, तथापि जबलग अगला युद्ध न भया तबतक वे वशी भूत न हुए। लैटिन देश के प्रधान प्रधान नगरों ने पूर्व रूमियों से प्रतिकूल होकर जैसा थोडा बहुत बिरुद्धाचरण किया था उसी के अनुसार रूमियों ने उन्हें कठिन वा कोमल दंड किया; ये लोग इस युद्ध के पूर्व

प्रतिष्ठा में रूमियों के संगी थे, अब इन्हीं ने उन्हें घटाकर अपनी प्रजा तुल्य बनाया। कंपैनिआ के नगर जो लैटिन वालों की ओर हो गये थे उन पर रूमियों ने और भी विशेष दंड किया, कि वहां की सकल भूमि लेकर निजवस्तीवालों को देदी। उसकाल में जैसे रूम के राजसभावाले प्रतापवान् स्थिर बुद्धि औ राजनीति विषयक कर्मों में दक्ष थे, ऐसे पृथ्वीभर में कोई और न थे। लैटिनवालों की हार से कई बरस पीछे उन्हों ने प्रति वर्ष नवीन सेना भर्ती करने की निज प्राचीन रीति का परित्याग किया, औ आज्ञा की कि वही काटक रणभूमि में उपस्थित रहा करै, पर सेनापतियों का परिवर्तन होता रहै। किंचित काल पीछे उन्हों ने एक और नवीन सुंदर नियम स्थापन किया, कि सेनापति भी एक बरसदिन की सेवा के अनंतर प्रोकांसल नाम पद्वी पाकर काटक के अध्यक्ष बने रहाकरैं।

सैम्नइट लोगों की संधि से बारह बरस पीछे, रूमियों ने उन के अत्यन्त निकट स्थान में एक वस्ती बसाई, जिस कारण उन्हें महाक्रोध उपजा, ईसवी शक के पूर्व ३२७ वें वर्ष में फिर लड़ाई की आग सुलगी। युद्ध के प्रारंभ से सात वर्ष लग कोई स्मर्ण करने योग्य वृतांत न भया, औ रूमी सदा जयवंत रहे। उस काल में रूम के बीच यह व्यवस्था स्थापित हुई थी, कि अधमर्ण को कोई मारै बांधै नही, परंतु ऋण के अनुसार उस की संपति लेलेय। यह बड़ा आश्चर्य है कि इंग्लैंड औ आमेरिका इस काल में पृथ्वी भर के बीच सभ्यता में मुख्य गिने जाते हैं, तथापि वहां अबतक इस सुन्दर औ यथार्थ व्यवस्था का प्रचार नही भया। युद्ध के सातवें वर्ष में सैम्नइट की सेना के पांटिअस नाम अति निपुन सेनापति ने युक्ति से रूमियों के काटक को पर्वत की घाटियों में खैंच कर संपूर्ण रूप से घेर

लिया, तिस पीछे सैम्नइट लोगों ने उस संपूर्ण दल को बंदुआ बना कै अपनी आज्ञा से दो भालों के बीच में को निकाला इस प्रकार से यह महा कलंक रूम की सेना को हुआ। इस अपमान को काडइन फोर्क कहते थे, यह अप्रतिष्ठा चिरकाल तक रूमियों के मन से न मिटी। इस पराभव होने का कारण यह था कि वे पर्व्वत पर युद्ध करने का प्रकार नही जानते थे, परन्तु पराजित होने के थोड़े ही काल पीछे सीख कर इस कर्म में कुसल ऊए। सैमनइट लोगों ने जो रूमियों को हरा दिया था, इस का पलटा उन्हों ने शीघ्र ही लिया। पैपिरिअस कर्सर नाम उन के प्रधान सेनापति ने सैमनइट लोगों को अनेक बार हरा दिया; रूम के इतिहासवेत्ताओं ने कहा है कि यह सेना के कर्मों में श्रीयुत सिकन्दर के समान था।

थोड़े ही काल पीछे रूमियों के प्राचीन शत्रु हिट्रूरिआवालों ने लडने के लिये शस्त्र धारण किये, तब फेबिअस नाम रूमी सेनापति ने साहस पूर्व्वक सिमिनिअन नाम महा घोर वन को पार कर, टस्कनी अर्थात् हिट्रूरिआ देश को जा लूटा, यह देश फ्रांसवालों के अधिकार की सीमापर था। रूमियों ने इटली के दक्षिण में हिट्रूरिआ, सैमनइट आदि देशवालों के संग जो युद्ध किये उन सभों का विस्तार पूर्व्वक बर्णन करना केवल विद्यार्थियों को श्रम जनक है। इतना ही कहना विशेष है, कि सतावन वर्ष तक युद्ध होने के पीछे रूमियों में आन्तरिक सुस्थिरता औ शांति भई औ बाहर के देश जो उन के आधीन थे वेभी सुखी भये। हिट्रूरिआ देश का अधिक भाग पराजित होगया; सैम्निअम देशवालों को धमका दिया; अम्ब्रिआ देश जो ईशान कोण में है, औ ल्यूकेनिआ

जो अग्निकोण में है, ये दोनों रूमियों के आधीन होगये। रूम का अधिकार अतिशय रूप से फैलगया औ उस की बस्तियां इटली में बस गईं, और जो वहां बखेडा रहाकरता था, सोभी उन बस्तियों के कारण रुकगया। परंतु यह शांति बज़्त काल तक न रही; इटलीवालों ने निश्चय किया कि रूमियों को पराया अधिकार छीन लेने में अपरिमित अभिलाषा है, उन के वर्द्धित पराक्रम से हम को प्रतिदिन खेद होता है, इसलिये उन सबों ने मता करकै अपनी स्वाधीनता बचाने के लिये शस्त्र धारण कर अन्त का उद्योग करना विचारा, औ विशेष करकै इटली के बीच महा रसिक औ अति निंदित टारेंटीन लोगों की सिखाया भलाई से यह कर्म किया। यह बात इसवी शक के पूर्व २८१ वें वर्ष में भई। यद्यपि रूमवाले एक संग औ एक ही काल में अपने उत्तर, दक्षिण, औ पूर्व के शत्रुओं से लड़े, तथापि संपूर्ण रूप से विजयी भये। टारेंटीन लोग इस युद्ध के मते में छुपे ज़ए थे, निदान उन्हों ने भी, रूमियों के जहाज़ समूह जो उन के बंदर स्थान में आकर टिके थे, उन पर छापा मार अपना बैर भाव प्रगट किया; औ रूमवाले जितने उन के हाथ पड़े, उन में से थोड़ों को तो मार गिराया, और शेष जो बचे उन को दास बनाकर बेच गेरा। तब रूमवालों ने तुरंत कुछ उपाय पूछने के लिये दूत उन के पास भेजा, परंतु उन मूर्खों ने अद्वितीय रूप से उन का अपमान करकै बिदा किया। परंतु जब टारेंटीन लोगों ने विचार कर देखा कि हम निर्बल औ थोड़े हैं, हमने यह क्या कर्म किया जो इटली के जय करनेवाले महाबली रूमियों को क्रोधित किया, इस भय से उन्हों ने निज रक्षा के लिये इधर

उधर दृष्ट करके देखा, निदान इपाइरस के पिरस नाम राजा को अपनी सहायता के लिये बुलाया, जिस का वर्णन अभी कुछेक हो चुका है।

यूनान के बीच इपाइरस का पिरस नाम भूपति युद्ध विषयक कर्मों में महानिपुण था, परंतु अत्यंत चंचल; उस ने झट पट टारेंटीन लोगों का कहना अंगीकार किया, इस आशय से कि जो मैं यह कर्म करूंगा तो मेरा इटली के बीच अमित प्रताप बढैगा। वह अच्छी सुशिक्षित सेना औ गज ले जहाजों में चढ कुशल पूर्वक इटली में आ पहुंचा। रूमियों ने उस से युद्ध करने के लिये झट कटक भेजा, परंतु कांसल अर्थात् उन का सेनापति संपूर्ण रूप से पिरस के संग हारगया, और विशेष करकै हाथियों के संग; क्योंकि गजों के संग युद्ध करने का अभ्यास न रूमियों के घोडों को था, न मनुष्यों को। पिरस की यह पहली जय ईसवी शक के पूर्व २८० वें वर्ष में पांडोशिआ स्थान पर भई। तिस पीछे उस ने अनेक बातें लगाकर चाहा कि प्रतिष्टा पूर्वक रूमियों से संधि करूं, पर उन्हों ने उत्तर दिया कि जब लग तुम इटली में रहोगे तब तक हम किसी रीति से तुम्हारे संग मेल न करैंगे। इस लिये अगले वर्ष में फिर रूमियों ने और कटक उस से संग्राम करने के लिये भेजा, सोभी अस्कुलम् स्थानपर सकल रूप से पराजित ऊआ; परंतु जब पिरस ने देखा कि इन दोनों युद्धों के बीच मेरे सब से अच्छे अनेक सेनाधीश औ जन खेत रहे, औ जो ऐसा ही एक और संग्राम हुआ तो मैं नष्ट हो जाऊंगा; इसलिये उस ने इटली का त्याग करना विचारा। जब वह ऐसे सोच विचार में था, तभी सिसली निवासियों ने उसे निज सहा

थता के लिये बुलाया, इस बात को उस ने प्रसन्न होकर मान लिया, इस आशय से कि चलो अच्छा हुआ, अब प्रतिष्ठा पूर्व्वक इटली का त्याग हो जायगा। अपने आने से तीन बरस पीछे उस ने इटली को छोडा, जब पिरस वहां से विदा ऊआ, तब रूमी इटली के दक्षिण में, अति कठोरता से उन लोगों को दण्ड करने लगे जो पिरस के सहायक भये थे, इसलिये उन्हों ने मन से चाहा कि पिरस फिर यहां आवै इसी बीच उस के कर्म सिसली में कुछ वर्द्धित होते नही दीख पडते थे, इसलिये वह प्रसन्न ऊआ कि इसी छलसे प्रतिष्ठा पूर्व्वक इस उपद्वीप का त्याग भया। और फिर इटली को प्रस्थान किया चलते समैं उस ने इस उपद्वीप पर दृष्ट करी औ उदास हो कर कहा कि क्या युद्ध का उत्तम स्थान हमने रूमी और कार्थेजवालों के लिये छोडा। औ जैसा उस ने कहा वैसा ही पीछे भया उस ने इटली में पऊंते ही अपने सब सहायकों का कटक जोडा, तब उस की सब सेना ८०००० सहस्र पैदल औ ६००० सहस्र अश्व गणना में आये। बिनिवेंटम स्थान पर उस के औ रूमियों के बीच एक महा घोर युद्ध ऊआ, जिस में उस की ओर के २५००० सहस्र मनुष्य खेतरहे; औ उस के डेरे तंबू रूमियों के हस्तगत ऊए जब उन्हों ने सिविर में प्रवेश किया, तो देखते ही चकित हो गये; औ उसी दिन से अपने डेरे भी उसी रीत के बनवाये। पिरस ने झट इटली को छोडा, और जब आर्गस नगर में प्रवेश करता था तभी मारा गया, जिस का वर्णन अभी अगाडी हो चुका है।

पिरस की हार से लेकर कार्थेजवालों के प्रथम युद्ध तक ग्यारह वर्ष बितीत ऊये। इस ग्यारह बरस के काल में रूमी उन लोगों को दंड करने लगे जो उन के मिलापी औ प्रजा होकर

प्रभु भाव करने लगे थें, औ इटली के दक्षिण में निज पराक्रम अचल करने; यहांतक कि थ्यूनिक नाम युद्ध के पूर्व रूमी संपूर्ण इटली के प्रभू होगये, जिस की उत्तर सीमा ह्द्रिरिआ, दक्षिण में अइओनिअन समुद्र से ले पश्चिम के सागरतक थी। गाल वालों को छोड कर और कोई जाति इटली में स्वाधीन न रही थी, इन गालवालों को सिसाल पइन भी कहते थे। इस कारण से कि वे आल्प नाम पर्वत के दक्षिण में वसते थे, इसकाल के बीच रूमियों ने जो देश पराजित किये थे उन पर अपनी आज्ञा करने की रीति औ वहां अपनी अडिग सामर्थ रखने की व्यवस्था स्थापन कीं; सो ये थीं जो जो देश रूमियों के आधीन हो गये थे, तहां सर्वत्र उन्हों ने निज नगर निवासियों की अनेक वस्तियां वसा दीं; औ जो जो भूम जय की थी सो इन वस्तीवालों को समर्पण की। इन वस्तियों के वसने से दो बातें अच्छी भईं; एक तो यह कि रूम के लुचे, बखेड़िये, और क्लेश जनक लोग अतिशय करकै न्यून हो गये, औ दूसरी यह कि जिन जिन देशों में वे जहां तहां जाकर वसे, तहां तहां रूमियों का अचल पराक्रम भया। इटली के नगरों औ देशों की संधि जो रूमियों के साथ ऊई थी सो सब ना ना भांति की थी; औ रूमी राज सभावाले उन सभों से संधि के अनुसार व्यवहार रखते रहे। कई जाति औ नगरों का तो ऐसा ही अधिकार रहा जैसा रूम के नगर निवासियों का था; कोई कोई अपना राज्य आपही करते रहे, पर रूमियों का प्रभुत्व उनपर रहा; थोड़े से *मिलापी* होगये औ कोई कोई *प्रजावत्* ऊए, उन पर राज सभावालों ने स्वाधीन अध्यक्ष नियुक्त किये। उस समय में रूमका राज्य सब से अच्छी दशा में था, कुलीन औ सामान्य लोगों में नाम मात्र अंतर रह गया था, सब जात के मनुष्यों

ने एक चित्त होकर निज देश का प्रताप बढ़ाने में पराक्रम किया; यद्यपि राज सभावाले क्रम क्रम से प्रबल होते जाते थे तथापि राज कार्य औ देश व्यवहार परिमिताचार रूप से चलते रहे, परन्तु जब रूमियों ने लूट खसोट कर पृथ्वी के सब देशों को अपने आधीन किया, तब झट रूम की साधारण चाल भी दूर होगई।

॥ प्यूनिक नाम प्रथम युद्ध के प्रारंभ से लेकर ॥
॥ अन्त के प्यूनिक नाम युद्ध तक का विषय ॥

प्यूनिक नाम प्रथम युद्ध—डूइलिअस की नौका संबंधी जय—जेंटिपस ने रूमियों को हरा दिया—रेग्यूलस—सिसिली, सार्डिनिआ और कार्सिका को जीतलेना—जेनस के मन्दिर के पट बन्द किये—इलिरिआ की प्रथम लड़ाई—गालवालों के सङ्ग लडाई—इलिरिआवालों की दूसरी लडाई—प्यूनिक नाम दूसरा युद्ध—हैनी बलने आलप्स पर्व्वत को पार किया—टिसाइ नस की लडाईयां—ट्रेबिआ—थ्रेसीमनी—कैन्नी—रूम के कांसल लोगों की सामर्थ—सइरैक्यूज़ की लूट—आर्किमीडीज़—हैसड्रूबल की हार—आफ्रिका पर सिपिओ की चढाई—जामा की लडाई—लज्जाकारी कार्थेजवालों की संधि,—मैसीडन निवासी फिलप नाम जन

के सङ्ग युद्ध—सिनोसैफली की लडाई—
फिलिप के सङ्ग संधि—कार्थेज औ मैसीडन
के जय करने का कारण—अँटायोकस के
सङ्ग युद्ध—उस ने परवस होकर संधि की
—मैसीडोनिआ की दूसरी लडाई—पर्सि
अस नाम जन की हारि—मैसीडन रूम का
एक प्रदेश होगया—प्यूनिक नाम तृतीय युद्ध
—कार्थेजवालों की शक्ति नष्ट ऊई—अब इन
सबों का वर्णन करैंगे।

रूमी औ कार्थेजवाले दोनों दिगविजय करा चाहते थे, औ क्रम क्रम से बढते बढते दोनों निकट आ पहुंचे। कार्थेज वालों ने सिसिली उपद्वीप को जय किया, तभी रूमियों ने इटली के दक्षिण को जीत लिया, निदान होते होते रूमियों का रेजिअम नगर औ कार्थेजवालों का मेस्सीना नगर आमने साम्हने आ लगे, इन दोनों के मध्य में केवल एक क्षुद्र समुद्र था। उस काल में इन दोनों ओर के राजाओं ने पश्चिम देशों में निज निज राज्य स्थापन करने के लिये परस्पर युद्ध करना ठहराया। ऐसा अनुमान में आता है कि प्रथम तो दोनों का पराक्रम औ युद्ध विषयक साधन समान था। कार्थेज वालों के अति लाभ जनक बाणिज्य था, औ भंडार द्रव्य से परि पूर्ण, इस कारण से ठेके की सेना जितनी उन के मन में आई तितनी रक्खी; औ उन का समुद्र में भी अधिकार था। रूमी स्वाभाविक प्रबल, उन की सब प्रजा योद्धा, सबों की उच्च अभिलाषा औ कोई कठिन से कठिन कार्य होय उस के करने को समर्थ।

रूमियों ने प्रण करके कार्थेजवालों से लगातार तीन संग्राम किये, जिन को बऊधा प्यूनिक नाम तीन युद्ध कहते हैं। इस

यी शक के पूर्व २६४ वें वर्ष में रूमियों ने इटली से सिसिली में सेना भेजी, उस ने आते ही मेसीना नगर का अधिकार किया। कार्थेजवालों ने सिरैकूज़ के हइरो नाम राजा से योग करके उसी नगर को घेरलिया, परन्तु रूम के कांसल ने उन्हें हरादिया। दूसरे वर्ष में रूमियों ने बहुत सी घूंस देकर हइरो को अपनी ओर करलिया, इस कारण से संपूर्ण उप द्वीप का जय करना दृष्ट में आया। उस की सहायता से उन्हों ने संपूर्ण उपद्वीप को पारकर ऐग्रिजेंटम नगर को वशी भूत किया, यह नगर सिसिली के बीच सब से धनाढ्य औ प्रतिष्ठित नगरों की गिनती में था। यद्यपि कार्थेजवालों का राज्य रूमियों की अपेक्षा थल में न्यून था, पर समुद्र में उन का अधिकार अधिक था; इस कारण उन का ऐसा अत्यन्त उपकार होता था कि रूमियों को भी युद्ध विषयक नौका समू- ह बनाना आवश्यक ऊआ। यह निसन्देह है कि कईसौ वरस से रूमी समुद्र संबंधी कर्मों का अभ्यास करते थे परन्तु उन के युद्ध विषयक जहाज न थे जिन के कारण वे शत्रु के सन्मुख होने को असामर्थ थे। इसीबीच दैवगत से कार्थेजवालों का एक जहाज इटली के तट पर पऊंचा, तब रूमियों ने उसे ले लिया, औ शीघ्रता पूर्वक उसी प्रकार का अपना एक बडा जहाज समूह बनाया औ डूइलिअस नाम जन को उस का अधिपति किया, इस आशय से कि अब एका एकी कार्थेजवालों के सङ्ग युद्ध करैंगे। यह बडा आश्चर्य है कि डूइलिअस ने नवीन कलों की सहायता से संपूर्ण रूप करकै कार्थेजवालों को पराजित किया। अगले वर्ष में रूम के कांसल ने सार्डिनिआ औ कार्सिका नाम दोनों उपद्वीपों पर चढाई करी, औ थोड़े ही काल पीछै उन को जीत रूम के महाराज्य में मिलादिया। आठवें वर्ष के युद्ध

में रूमियों के जहाज समूह ने कार्थेजवालों से पुनर्वार जय प्राप्त करी जिस कारण से रूम के राजसभावालों को सूझपडा कि अपने जहाज समूह की सहायता से आफ्रिका में जाकर रिपुके देश में ही उस से लडें। उसीकाल से रूमियों ने युद्ध विषयक एक शिक्षा निज मन में ठहराई कि जहांतक बने तहां तक सदा रिपु के देश में जाकर उस से संग्राम करना।

इसवी शक के पूर्व २५६ वें वर्ष में रूमियों ने दोनों कांसलों को ३३० जहाज औ एक लाख चालीस सहस्र १४०००० सेना सहित संग्राम करने के लिये आफ्रिका में भेजा, इस काल के पूर्व रूमवाले इतना कटक कभी नही संग्रह करसके थे। उन्हों ने जाते ही संपूर्ण रूप से कार्थेजवालों के जहाज समूह को जय किया, औ सेना ने उतरते ही इधर उधर देश की बहुत लूट खसोट की; जिस कारण कार्थेजीय ऐसे पीडित भये कि जब रूमी रेग्यूलस नाम सेनापति ने संधि करने के लिये उन के पास एकदूत भेजा, तो उन्हों ने प्रसन्न होकर उस का बडा आदरमान किया। परन्तु अति अभिमानी कांसल लोगों ने ऐसे नियम से अपमान जनक संधि करनी विचारी, कि कार्थेजवालों ने यथार्थ रूप से बिचारा कि यद्यपि हम सब रीत से पराजित भये हैं, तथापि इस से अधिक हमारा अपमान नही होगा; इसबिचार से उन्हों ने पुनर्वार युद्ध करना ठहराया। जब कार्थेजवाले अत्यन्त कुदशा में थे, तभी भाग्य बस से ज़ैंटिपस नाम जन थोडी सी ठेके की सेना सहित कार्थेज में आ पहुंचा, यह सेनापति रणकर्म में अतिनिपुण था। कार्थेज वालों ने झट पट अपनी सेना भी उसे सोंपी, उस ने अति शीघ्रता पूर्वक धावा कर रेग्यूलस को हरा उसे पकड लिया, औ रूमियों की सेना का ऐसा सत्यानाश किया, कि केवल २०००

सहस्र मनुष्य जैसे तैसे बचे। अगले वर्ष अर्थात् युद्ध के प्रारंभ से नोवें वर्ष में रूमियों ने नवीन जहाज समूह बनाकर शेष कटक भेजा, यद्यपि उस ने कार्थेजवालों से जय प्राप्तकरी परन्तु पीछै ऐसी आंधी चली कि जिस में रूमियों का संपूर्ण जहाज समूह नष्ट होगया। तिस पीछै रूमियों का जहाज समूह फिर वैसी ही दुर्दशा में ग्रस्त हुआ, इसलिये उन्हों ने हारकर कुछेक काल तक नौका संबंधी कर्म तज दिया। परंतु युद्ध से चोदवें वर्ष में रूमियों ने थल पथ औ जल पथ होकर ऐसे पराक्रम सहित युद्ध विषयक उद्योग किये कि कार्थेजवाले निज अनेक हानि देख अत्यन्त घबराये, तब उन्हों ने संधि करने के लिये रेग्यूलस सहित कुछेक अपने दूत रूम को भेजे, यह रूमियों का सेनापति छह बरस से उन के बन्दी गृह में था; परन्तु उस ने आकर सबरीत से राजसभावालों को यही मता दिया कि तुम किसी रीत से इन के सङ्ग मिलाप मत करो औ इसलिये फिर युद्ध का प्रारंभ हुआ। युद्ध से अठारवें वर्ष में कार्थेजवालों ने हैमिल्कर बार्का नाम जन को निज जहाज औ कटक का सेनापति बनाकर सिसिली में भेजा। उस ने अपने अद्वितीय गुण से तीन वर्ष लग रूमियों का संपूर्ण परा-क्रम व्यर्थकर दिया, औ उन्हें जताया कि देखो क्या अत्यंत युद्ध विषयक निपुणता है कि जिस के कारण उस महा कठिनता में भी हम अपने सब कार्य करते हैं। तब रूमियों ने जाना कि जहाज समूह बिना सिसिली को जय करना असंभव है, इसलिये उन्हों ने निश्चित किया कि अबकै और भी जहाज बनावैं परन्तु उन के भंडार में एक कपर्दिका भी नथी, तोभी उन्हों ने अपने परायों से द्रव्य ले जैसे तैसे दो सौ २०० जहाज निर्माण किये; उन की सहायता से रूमियों ने कार्थेज औ

सिसिली के बीच जो कार्थैजीय लोगों के आवा गमन का पथ था उस का अवरोध किया। अब इस चोबीस २४ वरस के युद्ध तक दोनों ओर के लोग खुक्ख हो गये, इस लिये दोनों में संधि ठहरी, परंतु कार्थजवालों को यह अत्यंत दुखदाई थी; क्योंकि सिसिली औ उस के निकट वर्ती उपद्वीप उन्हें छोड़ने पड़े; और युद्ध का व्यय अर्थात् चालीस लक्ष ४०००००० रुपये दस वरस के बीच में चुका देने, औ सिरैक्यूज़ के हइरो नाम राजा पर कभी चढाई न करनी। इसवी शक के पूर्व्व २४० के वरस में रूमियों ने सिसिली, सार्डिनिआ, औ कार्सिका नाम अति आवश्यक तीनों उपद्वीपों का अधिकार किया; पराक्रमी जहाज समूह औ समुद्र पर आज्ञा प्राप्त करी; तिस पीछे और नवीन देशों को जय करने के लिये उत्सुक ऊए।

कार्थैजवालों से संधि बाईस २२ वरस रही, इसकाल में रूमी दो युद्धों के बीच प्रवृत्त ऊए, एकतो इलिरिआ में हुआ, यह देश यूनान की उत्तर सीमा है, औ दूसरा सिसालपइन गाल में। परन्तु इन युद्धों का वर्णन करने के पूर्व्व इतना विषय कहदेना योग्य है, कि इसवी शक के पूर्व्व २३४ वें वर्ष में जब रूमियों ने देखा कि अब हमारे सङ्ग किसी का युद्ध नहीं है, तो उन्हों ने जेनस के मन्दिर के पट भेड दिये। इस मन्दिर को न्यूमा राजा ने बनवा कर यह ठहराया था कि युद्ध में तो यह खुलारहै, औ संधि काल में मुंदा। न्यूमा के समय से उसदिन तक ४५० वरस बितीत ऊए थे, इस ४५० वरस के काल में रूमियों का एक भी वरस विना युद्ध किये न बीता था। यह मन्दिर जब बना था, केवल तभी मुंदारहा इसलिये रूम की कथा में यह वृत्तान्त स्मर्ण करने योग्य है।

जिस कारण से इल्लिरिआ देश में युद्ध ऊआ सो कहते हैं। ट्यूटा नाम उसीदेश की राणी ने अपने प्रजा वर्ग को ढाडस बंधाकर सनकार दिया था कि ऐड्रिएटिक समुद्रके तट पर डकैती किया करो, इस कर्म से इटली के व्योपारियों को महा क्लेश होने लगा। रूम के राजसभावालों ने इस दुष्ट कार्य्य को मिटाने के लिये, उस राणी के पास अपने दूत भेजे; जब वे दूत आये, तो उस ने महा गर्व किया, औ चलती बेर उन्हें युक्ति से मरवा गेरा। इस विश्वासघातपने का पलटा लेने के लिये, दोनों कांसल पराक्रमी सेना औ जहाजों सहित उसपर चढ़गये। रूमियों का कटक यूनान अर्थात् इटली की पूर्व्व सीमा में युद्धार्थ पऊंचा था, यह पहली ही बिरियां थी। रूमियों की यह युद्ध यात्रा सफल भई; दोही बरस के बीच में सब डाका डालनेवालों को उच्छिन्न करके समुद्र तट को शुद्ध किया; औ उस रानी को ऐसा दबाया कि उस ने हार मान अपना बऊधा सब राज्य रूमियों को समर्पण किया, और जो कुछ उस पर रहा उस का बरसवेंदिन करदेना पड़ा। यह युद्ध ईसवी शक के पूर्व २२७ वें वर्ष में परिसमाप्त ऊआ; इस का वर्णन करना अत्यंत लघु है, परंतु उस से एक यह महाफल उपजा कि रूमी और यूनानवालों का एक जोड़ बंध गया।

इल्लिरिआवालों से जोंही युद्ध हो चुका था, कि इसी बीच गालवालों ने जो पो नदी के दोनों ओर उर्वरा तट पर बसते थे, औ लिग्यूरिआ नाम पर्वत निवासियों ने आल्पस पर्वत के उस ओर रोन नदी के तट पर जो उन के भाई बसते थे उन्हें साथी बनाकर रूमियों से बैर कर एक महा घोर युद्ध का प्रारंभ किया, जो ईसवी शक के पूर्व २२६ से ले २२० तक

अर्थात् ६ वरस रहा। ऐसा कहते हैं कि इन शत्रुओं ने इटली के सब देशों में से सातलाख ७००००० सेना से अधिक अधिक इकट्ठी करी, तबकहो रूमियों को कैसाडर भया होगा। गालवाले झट पट हिट्रूरिआ देश पर टूटे, औ क्लुसिअम नगर तक आन पहुंचे जो रूम नगर से तीन दिन की वाट है। तथापि रूमी कांसल लोग गालवालों का ऐसा महा साहस देखकर भी न घवराये औ उन्हें सब रीत से हरा दिया; गालवालों के चालीस सहस्र ४०००० मनुष्य खेतरहे, और दश सहस्र १०००० वंदुवे भये। रूमियों ने सिसालपइन गाल वालों को संपूर्ण रूप से वस में करने का निश्चय किया, इसलिये दोनों कांसल लोगों को सेना सहित पो नदी के पार देश में भेजा। गालवालों ने रूमियों की ऐसी पक्की प्रतिज्ञा जानकर अपना सब कटक जहां तक वना तहां तक अंत के युद्ध के लिये इकट्ठा किया: अब भी वे रूमियों से गिनती में विशेष थे, तथापि वे फिर जयवन्त भये। अगले वरस अर्थात् ईसवी शक के पूर्व १२२ के वरस में गालवालों ने और भी विशेष सेना इकट्ठी की, जो संख्या में नव्वे सहस्र ९०००० थी, गालवालों ने रूमियों की अति सूक्ष्म सेना का साम्हना किया, जिस का अधिपति मारसेलस नाम जन था। जब दोनों ओर के कटक युद्ध करने ही को थे, तब गालवालों के सेनापति ने रूमी सेना धीश को धम का के कहा कि आओ हम तुम दोनों आपस में युद्ध करें। यह वात प्रसन्नता से अङ्गीकार हुई; गालवाला सूरमा मारसेलस से हारा; तब उस की सेना निरास हो भागी, और रूमी फिर भी जयवंत भये। स्वाधीनपने में सिसा लपइन गाल औ रूमियों के बीच यह अंत की लड़ाई थी। गालवालों के प्रदेश पराजित होकर रूमियों के आधीन भये,

और जयवंत रूमियों का अधिकार आल्स पर्वत से लेकर दक्खन में अड्रिओनिअन समुद्र तक फैला।

अगले वरस में और एक युद्ध इलिरिआवालों से भया; परंतु उस का वर्णन करना इस कथासार में कुछ आवश्यक नहीं। इस से और एक भारी वृत्तांत यह है कि रूमियों ने पो नदी के पार अपने पराजित देश गालवालों के अधिकार में प्लेसेंशिआ, औ क्रिमोना नाम वस्ती वसाईं। इस छेड़ छाड़ से यह भया कि गालवालों ने हेनीबल को इटली में बुलाया अब इस भारी वृत्तांत का वर्णन करैंगे।

कार्थेजवालों की संधि जो रूमियों के संग हुई थी, सो वाईस वरस रही, इसी संधि के होने से उन का अति उत्तम सिसली नाम उपद्वीप छिन गया था। इस उपद्वीप के छिन जाने की महा हानि औ वरसवें दिन रूमियों को जो भारी कर देना पड़ता था, इन दोनों बातों को मिटाने के लिये, कार्थेजवालों ने स्पेन को जय करना ठहराया, यह देश उन के इर्षा करनेवाले प्रतिपच्छी रूमियों की दृष्ट से दूर था। उन्हों ने अपनी सेना ऐसद्रूबल नाम जन की आज्ञा में रक्खी, यह मनुष्य वहां के संपूर्ण सेनापतियों के बीच मुख्य था, उस ने ईब्रो नदी के दक्षिण में स्पेन का अधिक भाग अपने आधीन किया। थोड़े दिन पीछे हैमिल्कर के पुत्र हैनीबल की आज्ञा में वही कटक हुआ, वह उस समैं पचीसेक वरस का था, औ उसकाल सेना के कर्मों में सब से निपुण था, ऐसा कि ईसा के जन्म से पूर्व श्रीयुत सिकंदर औ कैसर को छोड़कर बहुत थोड़े सेनापति हैं कि जिनको उस के समान कहें। जैसा वह औरों की अपेक्षा युद्ध में वीर औ गुणी था, ऐसा ही उस ने रूमियों के संग बैर भी विशेष किया, क्योंकि उन्हों ने

उस के अति प्रिय कार्थेज नगर को घटा के तुच्छ कर डाला था।

यह युद्ध साधारण से दूसरा प्यूनिक नाम युद्ध ख्यात है, ईसवी शक के पूर्व २१८ के वर्ष में इस लड़ाई का प्रारंभ भया, औ वह २०१ के वरस तक रही, इस के होने का कारण यह कि ईब्रो नदी के दक्षिण में सेगंटम नगर जो रूमियों का साथी था उसे घेरलिया। जब नगर निवासियों को हैनीबल ने घेरलिया, तो उन्हों ने सहायता के लिये रूमियों से प्रार्थना करी, इसलिये उन्हों ने नगर का घेरा छुड़ाने के अर्थ तरुण बीर के पास राजदूत भेजे उस ने इस बात की उन से अभिमान पूर्व नहीं करी, इसबात से वे कार्थेज को गये, औ वहां जाकर कहा कि अपराधी हैनीबल से उस नगर का घेरा छुड़वा दो। कार्थेजवालों ने निन्दा पूर्वक इस बात का निषेध किया। इसी बीच हैनीवल ने नगर निवासियों को और भी दवाया तब उन्हों ने देखा अब कोई नही हमारी सहायता को आवता है तो उन्हों ने घेरे से आठवें महीने के अंत में नगर उस को समर्पण किया। इस नगर के विगड़ने से रूमियों का पराक्रम स्पेन में से जाता रहा। राजसभावालों ने इस आनेवाले युद्ध के लिये पराक्रम पूर्वक सामग्री जोड़ी, परंतु उन्हों ने उस दिन तक कभी कोई ऐसे भारीगुणी शत्रु के सन्मुख नहीं ऊए थे जैसा हैनीवल था। उस ने एक यह अभिलाषा की थी, कि आल्पस पर्वत् को पार करके एका एकी इटली के मध्य में जाकर लड़ाई करें, सब कोई यह बात मानते हैं कि पूर्वकाल के सेनापतियों में यह कल्पना सब से वड़ी वीरता का कर्म था, अब के दिनों में ऐसाही कर्म नैपोलिअन बोनापार्त ने किया,

जिस की कीर्त्ति स्मर्ण करने योग्य है। जब रूमवाले झूठा अनु मान करके मन में जानते थे कि हैनीबल अभी तक स्पेन में है, तब उस ने शीघ्रता कर इब्रो नदी के उत्तर देश में पहुंच पिरे-नीज़ पर्व्वत को पार कर, गाल अर्थात् फ्रांस के दक्षिण में प्रवेश किया, औ रोणनदी को पारकर आल्पस पर्व्वत की ओर धावा मारा। तब रूमी कांसल जो पिसा स्थान से गया था उस ने मार्सेलीज़ नगर में पहुंचते ही अचंभे की बात सुनी कि हैनीबल स्पेन से बहुत दूर चला गया। इसलिये वह झट पट इटली की ओर फिरा, औ जब जोतों कर वहां आ पहुंचा था, तब उस ने जाना कि हमारा बैरी आल्पस पर्वत की सीमा पार कर चुका और इटली के मण्डल में उत्तर आया।

हैनीबल ने रोन नदी से फ्रांस के दक्षिण पूर्व कोने में होकर यात्रा की, औ किसी शत्रु ने इस बीच साम्हना न किया, परंतु मारग में आल्पस पर्वत पर ऐसा हिम जमा हुआ था कि उस के कारण अनेक मनुष्य औ हाथी ठोड़ रहे। निदान वह उस स्थान में पहुंचा जहां से उर्वरा सिसाल पइन गाल अर्थात् लंबार्डी दिखाई दिया; उस ने अपनी सेना को जताया, कि यही देश तुम्हारे परिश्रम की बडी दक्षिणा देगा। उस पहाड़ से उतरते ही टिसाईनस नदी के तीरपर रूमी सेना का साम्हना कर उसे संपूर्ण रूप से हरादिया। उसी बरस में वह फिर दोनों कांसलों की मिली हुई सेना से ट्रिबिआ स्थान पर लड़ा औ सब रीत से जयवन्त भया। इस बात के सुनते ही रूमी राजसभावाले बड़े डरे। सौ बरस से कभी रूमियों की सेना को ऐसी लज्जा न भई थी। इन दोनों बेर की जय होने से हैनीबल की बडी सहायता हुई, पो नदी के दोनों ओर जो गालवाले बसते थे, औ धीरज रहित होकर रूमियों के

आधीन थे, वे उस की ओर हो गये। अगले बरस में उस ने एक दहदल को पार किया, जिस के महा कठिन मार्ग में उस की एक आंख फूट गई, औ उस ने हिट्रूरिआ में प्रवेश करते ही चारों ओर के देशों में लूट पाट करी। तब राज सभावालों ने और एक भारी सेना इकट्ठी करके कार्थेजवालों का साम्हना करने को भेजी; परन्तु हैनीबल थ्रैसीमीनी नाम हृद पर रूमियों के सन्मुख हुआ, औ फिर उन्हें हरादिया। इस तीसरे युद्ध में रूमियों की ऐसी भारी हानि भई कि जैसी पिछले बरस के दोनों संग्रामों में न हुई थी।

जब राजसभावालों पै हैनीबल का साम्हना करने के लिये सेना न रही, तब उस ने इटली के दक्षिण में ऐपूलिआ स्थान तक बिना रोक टोक गमन किया, और मार्ग में जहां तहां से दण्ड लेता गया। युद्ध के तीसरे बरस में और भी विशेष सेना इकट्ठी करके रूम के कांसल ने ऐड्रिएटिक समुद्र के तट पर कैनी नाम स्थान में उस के संग युद्ध किया, परन्तु हैनीबल चौथीबेर भी जयवन्त हुआ। पुराने इतिहासों के बीच में यह लड़ाई अत्यन्त रूप से स्मरण करने योग्य है। परन्तु ऐसी अपूर्व आपत्ति के समय में राजसभावालों की धीरता औ बुद्धि की बड़ाई और विशेष करके स्मरण करने योग्य है। क्योंकि एक छिन भर भी कभी उन के चित्त का उत्साह भंग न भया, औ सुपने में भी हैनीबल के संग संधि करने की इच्छा न की। यद्यपि इस कैनी की लड़ाई में रूमियों के अच्छे अच्छे कुलीन लोग, योद्धा, औ एक कांसल मारा गया था, तोभी राजसभावालों ने ऐसे जतन किये कि लड़ाई से बारह महीने नही बितीत हुए थे कि उन्हों ने अस्सी सहस्र ८०००० सेना फिर रणभूमि में इकट्ठी की। इस कटक का सेना

पति फेबिअस नाम जन हुआ, उस ने कभी हैनीबल के संङ्ग प्रत्यक्ष लड़ाई न की, परंतु अपने गुणों से उसे रोके रहा, तोभी उस ने इटली के दक्षिण का अधिक भाग अपने में मिला लिया। इस कैनी नाम प्रसिद्ध लड़ाई के अनन्तर आठ बरसतक हैनीबल अनेक युद्धों में जयवन्त हुआ; पर कोई कैनी के संग्राम की तुल्य न था और यद्यपि उस ने इटली के दक्षिण में अपना अचल राज्य किया, परंतु नवीन सेना की भरती न भई थी, इस कारण से वह और नवीन राज्य भी न ले सका।

इसी बीच सइरैक्यूज़ नगर कार्थेजवालों की ओर था, तब रूमियों के एक मार्सैलस नाम सेनापति ने उसे दृढ़ रूप से घेर लिया, परंतु पूर्व काल में न्यूटन के समान आर्कैमिडीज़ नाम जन के अद्भुत गुणों से दो बरस तक उस के सब जतन निरर्थक हुए। निदान नगर रूमियों के हस्तगत हुआ, और आर्कैमिडीज़ एक पदाती के हाथ से मारा गया जो उस का गुण जानता था न नाम। रूमियों ने अपने दो सिपियो नाम सेनापतियों के द्वारा स्पेन में भी बहुतसा राज्य प्राप्त किया, और उस देश के सब कर्म उन ही को सौंप दिये थे। ईसवी शक के पूर्व २१६ औ २१५ के वर्ष में उन्हों ने कार्थेज वालों से दो बड़ी भारी जय प्राप्त करीं, परंतु तिस पीछे उन्हें किसी ने विश्वासघात करके मार डाला। तिस पीछे युवा पबलिअस सिपिओ सेनापति भया, उस ने सब कार्य रूसंपूर्ण प से पलट दिये, औ रूमियों के मन में फिर साहस उपजा दिया।

कार्थेजवालों ने हैनीबल की सहाय के लिये इटली में सेना भेजी, परन्तु उन की सब मन कामना बिफल भईं। निदान युद्ध के बारवें बरस में ऐसड्रुबल ने बड़ी सेना सहित स्पेन को

छोडा औ पहले जिस मारग होकर उस का भाई हैनीबल गया था, उसी पथ होकर पहाडियों की छाया से आल्पस् पर्वत को पार कर इटली में पहुंचा, औ झट अपने आने के समाचार हैनीबल के निकट भेजे। परंतु रूमी कांसल लोगों ने उस के दूत को पकड़ा औ उन्हों ने बिचार कर निश्चय किया कि जबलग ऐसड्रुबल अपने भाई से मिले इस के पहले ही उस पर चढ़ाई करें। मिटारस नाम नदी के तीर पर दोनों ओर की सेना का आमना साम्हना हुआ, और रूमी सब रीत से जयवन्त भये। ऐसड्रुबल सेनापतियों के संपूर्ण काम करके, औ निज सेना को पराजित देख, अपना जीवना योग्य न जान रूमियों की सेना में कूदपडा औ मारा गया। जब इटली में ऐसड्रुबल के पहुंचने के समाचार फैल गये, तब रूम में ऐसा घबराहट हुआ कि लेन देन आदि सब व्यवहार बंद होगये। पर इस जय से नगर की पहली बात पलट गई, औ लेने देने का फिर प्रारंभ भया। रूम के कांसल ने प्रथमतो ऐसड्रुबल को हराया, पीछे उस का सिर काट लिया, तिस पीछे शीघ्रता से हैनीबल पर धावा कर, दो बंदुवे जिन्हें पकड कर लाये थे, उन के हाथ अपनी जय के समाचार उसके पास भेजे, और पीछे से उस के भाई का सिर उसी के तंबू में फिंकवा दिया। श्रीयुत हैनीबल ने जब यह महा शोक जनक समाचार सुने जो महा दुखदाई उस के देश औ कुनबे को थे, उन ने कहा कि यह दुर्भाग्य कार्थेज का है। उस ने तुरन्त अपने डेरे तंबू वहां से उखाड़े, औ वे उसे छोडने पड़े, औ उस देश के दक्षिण कोणे में जो ब्रूटिअम नाम स्थान था, उस में गमन किया; वहां वह सहायता रहित होकर चार बरस तोडी रूमियों की सब चढाईयां रोकता रहा।

ऐस्डुबल जब स्पेन से चलागया, तब युवा सिपिओ वहां का स्वामी भया, और जैसे हैनीबल इटली पर चढ़ाई करता था, ऐसे उस ने आफ्रिका पर धावा मारने का जतन किया, औ आफ्रिका के बीच न्युमिडिआ देश के सफैक्स नाम राजा के सङ्ग संधि की, परंतु यह राजा पीछे अति सुन्दरि सोफा-निस्बा नाम स्त्री के कारण कार्थेजवालों के सङ्ग मिल गया। परन्तु सिपिओ ने युद्ध से पन्द्रवें बरस में मेस्सिनिस्सा नाम एक और राजा से मिलाप करके आफ्रिका में गमन किया, औ वहां उस ने कार्थेजवालों को दो बेर हरा दिया, औ उस नगर के घेरने को उपस्थित भया। इसलिये कार्थेज के राज सभावालों को अपने देश की रक्षा के लिये हैनीबल को बुला-ना पडा। हैनीबल ने रोते हुए इटली को छोडा, और जैसे जैसे समुद्र तट से उस की नौका सरकी, तैसे तैसे उस ने बडी टक टकी लगा कर तीर को देखा, औ अत्यंत रूप से हाय हाय कर पछताता रहा। जब रूमियों के इस अपूर्व शत्रु की इटली से बिदा होने का संवाद रूम में पहुंचा, तो वहां के निवासी सुनते ही अत्यन्त मगन भये, औ राजसभावालों ने प्रजा को आज्ञा की, कि इसी अनुग्रह के लिये पांच दिन तक देवताओं की स्तुति करो। हैनीबल ने आफिका में पहुंचते ही निज जन्म भूमि के अर्थ युद्ध करने का जतन किया। सिपिओ और हैनीबल दोनों उस काल में महा निपुण सेनापति थे, उन्हों ने अपनी अपनी सेना सहित ज़ामा नाम स्थान पर सामना साम्हना किया, औ एक महा भारथ मचा, जिस के बीच हैनीबल प्रथम ही हारा था, उस काल में वह पैंतालीस बरस का था। सब से अच्छे युद्ध करनेवाले लोगों ने न्याय से बिचार कर कहा है कि उस ने सब काम युक्ति पूर्वक

इस युद्व के लिये किये, जो अति निपुण सेनापति करते हैं, परंतु वे सब निष्फल भये। इस कुदशा में जब कार्थेज के राज सभावालों ने अपने देश की रक्षा के लिये उसे बुलाकर पूछा तब हैनीबल ने मता बताया कि अब संधि करलेना अच्छा है क्योंकि संधि करने को छोड़कर कोई युद्व करने का उपाय नहीं है युद्वशील हैनीबल की यह बात सबोंने मानली। इसवी शक के पूर्व २०१ के बरस में यह संधि भई, सो कार्थेज वालों हीं को महा अपमान जनक थी। कार्थेजवालों ने जो कुछ आफ्रिका में जय किया था, सो सब उन को छोड देना पडा, श्री दश जहाजों को छोड कर, सब उन के युद्व के जहाज, श्री सकल हाथी, श्री दो करोड रुपये देने पड़े; श्री रूमियों की अनुमति बिना किसी से युद्व का प्रारंभ न करना; श्री मैसेनिसा के बापदादों ने जो राज्य प्राप्त किया था सो सब छोड़ देना पड़ा।

रूमियों ने अपने महाशत्रु कार्थेजवालों को अपने आधीन करके पृथ्वीभर को जय करने की मन में इच्छा की। रूम का राज्य इटली में, आस पास के उपद्वीप, श्री स्पेन के अधिक भाग में हुआ। उन की समुद्र पर अचल आज्ञा भई, श्रीर सब पृथ्वी में उन के नाम से भय उत्पन्न होने लगा। रूमियों की ऐसी ऊंची अभिलाषा थी कि सब पृथ्वीभर में राज्य करैं, इस का कारण यह था, कि उन के राज्य का प्रकार ऐसा था, उस राज्य में बड़े जयवन्त सेनापति, श्री राजनीति जान नेवाले अत्यंत निपुण लोग थे। जिन उपायों से यह राज्य प्राप्त भया सो येहैं, एक तो यह कि वहां की सेना श्री सेनापति साहसी श्री निपुण थे, श्री दूसरा यह कि वहां की राजनीति, एकसी श्री कठोर थी, जिस के कारण जो लोग रूम से प्रति

कूल होकर कुमता करते थे सो बीच ही में नष्ट होजाते थे; परन्तु जो रूमवाले ओर ओर देशों की संपूर्ण नीति, सकल सेना संबंधी निपुणाई, ओ साहस न बिगाड़ते तो वे कारण ओ उपाय जो उन्हों ने किये थे कुछ भी सफल न होते।

रूमवालों ने बहुत काल से मैसीडन के फिलिप नाम भूपति के सङ्ग युद्ध करने का निश्चय किया था, कुछेक तो यह कारण था कि उस ने हैनीबल की सहायता की थी, परन्तु मुख्य कारण यह था कि उन्हों ने पूरब में अपना अधिकार स्थापन करना ठहराया था। जब वे कार्थेजवालों के संग युद्ध करते थे, तब तिन्हों ने बुद्धवानी से अपना बैरभाव नही प्रगट किया था; परंतु इस युद्ध के समाप्त होने से एक बरस पीछे उन्हों ने फिलिप का मिलाप तोड़ने के लिये, कुछ मिस ढूंढा, ओ सहज ही पालिया। यूनान में एक बडी पराक्रमी ईटोलिअन नाम सभा थी सो रूमियों की ओर होगई, ओ उस ने इस युद्ध में बडी सहायता की; परंतु यह युद्ध बहुत थोड़े काल रहा। वह संग्राम तीन बरस रहा, ओ ईसवी शक के पूर्व्व १९६ के बरस में सिनासेफैली की लडाई से समाप्त भया; इस लडाई में फिलिप सब रीत से हारगया, ओ संधि करनी पडी। रूमियों ने उस से यह ठहरा लिया, कि यूनान को छोडदेना, जहाज समूह दे देना, सेना घटादेनी, ओ बीस लाख २०००००० रुपये देने। फिलिप ने हारकर इन सब कठिन बचनों को अंगीकार किया। इस समय रूमियों का यह अभिप्राय था कि हमारी आज्ञा सब समुद्र पर हो जाय, परंतु जहाज समूह न बढाया, क्योंकि उस के बढाने से खरच विशेष बढै था, इसलिये अपने सब शत्रुओं के जहाज छीन उन्हों ने नष्ट किये, इस बिचार से कार्थेज ओ मैसीडन के जहाजों

का सत्यानास किया। रूमियों ने यूनान को फिलिप की आज्ञा में से छुड़ाकर, उसे स्वाधीन कर दिया, यूनानियों ने उस स्वाधीनता का ऐसा भोग किया, जैसा कोई निर्बल राजा पराक्रमी औ प्रचण्ड भूपति के दबैल बसने से, भोगकरै। रूमियों की ओर के रेज़ीडंट अर्थात् पहरुवे सब यूनान देश में फैलगये, औ उन्हों ने वहां के राज्यों में झगडा करवा दिया, ऐसा कि वे परस्पर महा ईर्षा करने लगे, तब उन रूमियों ने वहां के धर्म की रीतों को बिगाडा औ इस रीत से रूम का पराक्रम बढाया।

कार्थेज औ मैसीडन के बिगडने से शेष पृथ्वी के लोगों को रूमियों की वही बात दृष्ट पडी, जो पहले से अनुमान करते थे; इसलिये सबों की इच्छा भई कि जहां तक बने तहां तक रूमियों की बढ़ती ऊई सामर्थ को रोकें। रूमियों के सदा के शत्रु हैनीबल के हाथ में कार्थेज के राजकर्म सौंपे, तब उस ने केवल निजदेश ही को सबल करने के लिये उपकारी उपाय न किये, परंतु कार्थेज, सिरिआ, मैसीडन औ मिसर के सङ्ग दृढमेल करके रूमियों से बैर करादिया। परंतु रूमियों ने अनेक बातें लगा लगूकर हैनीबल को कार्थेज से देशनिकाला करवाया, औ मैसीडन के फिलिप नाम राजा पर कुछेक अनुग्रह करके उसे प्रसन्न किया, औ छोटे २ राज्यों में अपना पराक्रम अचल किया। इन उपायों से उन्हों ने उन चारों देशों का मेल तुडवा दिया, जो अति बुद्धवान हैनीबलने करके उन्हें भयभीत किया था; औ उसे सिरिआ के ऐंटइओकस नाम राजा की शरणलेनी पडी; इस भूपति की यही इच्छा थी कि रूमियों से संग्राम करके अपना पराक्रम दिखावें। रूमी औ ऐंटइओकस में झगड़े होने का प्रथम कारण तो यह है, कि रूमियों

की यह इच्छा थी कि यूनानियें को औ यूनानियें के जो नगर एशिआ मइनर में हैं उन को स्वाधीन कर दें, परंतु ये नगर अैंटइओकस के राज्य में थे; इसलिये उस ने बिचारा कि रूमियें का पैर एशिआ में न जमने देना। दूसरा कारण यह था कि अैंटाइओकस यूरप में थ्रेस के बीच अपना अधिकार किया चाहता था, तब रूमियें ने भी वैसा ही उद्योग करके ठहराया कि इसे यूरप में न घुसने देना; परंतु सब से ठीक कारण इस युद्ध का रूमवालों की तृष्णा थी।

अैंटइओकस युद्ध का बिचार मन में ठान पूरब के राजाओं की भांति बडी झलाझली औ धूमधाम की चारलाख ४००००० सेना ले यूनान पर चढ गया, औ उस ने आलस्य पने के आनंद में शीतकाल बितीत किया, औ उसी बीच रूमी परिश्रम पूर्वक युद्ध के लिये सामग्री जोडते रहे। बसन्तकाल के आते ही रूमियें के कांसल अर्थात् सेनापति रणभूमि में आए, औ दोनें ओर का कटक प्रसिद्ध थरमापिले के घाटे में आमने साम्हने हुआ। अैंटइओकस सबरीत से हारा, औ उस के संपूर्ण कटक का सत्यानाश हुआ केवल पांचसौ ५०० घोड़े बचे, जिन की सहायता से वह जीव लेकर एशिआ में आया। यह लडाई इसवी शक के पूर्व १९० के वर्ष में हुई। उसी दिन नौका संबंधी लडाई भई, जिस में भी रूमीही जयवंत भये, औ जहाजें की सहायता भी उस के हाथ से जातीरही। अगले बरस में रूमियें ने अपने युद्ध रूपीनियम के अनुसार कार्थेज के जय करने वाले सिपिओ औ उस के भाई को सेनासहित एशिआ में अैंटइओकस के अधिकार के बीच युद्ध करने के लिये भेजा। दोनें कटक मैगनेशिआ स्थान पर परस्पर सन्मुख भये; फिर भी अैंटइओकस हारा, औ उस की सेना के चतुर्थांश तीन मारेगये,

तब उसे रूमियों के कहने के अनुसार संधि करनी पड़ी, जिस में ये नियम ठहरे कि यूरप में जो कुछ उस के जय करने का छल था उसे छोड़दो, औ एशिआ मइनर को छमैंदो, टारस नाम पर्वत को निज महा राज्य की सीमाकरो, औ इस युद्ध में जो अपरिमित द्रव्य उठा है अर्थात् तीन करोड़ रुपये दो, औ हैनीबल को हमारे हस्तगत करो, क्योंकि उन्हों ने ठीक न्याय से बिचार कर देखा कि जब लग हैनीबल खाधीन रहैगा तब तक हम कभी नहीं निर्भय होसकते। रूमियों ने एशिआ मइनर के प्रदेशों का बिभाग अपने दो मिलापियों के बीच में करदिया, एक तो परगेमस का यूमिनीज नाम राजा था, औ दूसरे रोड उपद्वीप निवासी; रूमियों का यह आशय था कि इन से जब चाहैंगे तब फिर छीन ले सकते हैं। कार्थेजवालों को तुच्छ करगेरने से थोड़ेही काल पीछे अर्थात् १० बरस के अंतर में रूमियों ने सभ्य देशों के संपूर्ण कार्य उलट पुलट कर दिये, औ पूरब में अपनी प्रतिष्ठा जमादी। उस काल में आट लांटिक समुद्र से ले उफरात नदी के बीच जो संपूर्ण देश हैं उन में रूम प्रधान था; औ उन्हों ने तीन मुख्य देश अर्थात् कार्थेज, सिरिआ, औ मैसीडन की ऐसी सामर्थ घटागेरी थी, कि नवीन युद्ध करने के लिये न उन पर कोई जहाज रहा था, न कुछ द्रव्य, औ उन से संधिपत्र पर भी यह लिखवालिया था, कि तुम्हारी आज्ञा बिना हम किसीदेश से युद्ध करने न जांयगे; औ चौथे मिसर देश के बीच घर घर में ऐसे झगड़े ऊए कि जिन के कारण वहांवालों ने आप ही आप इसवी शक के पूर्व २०९ के बरस में उन की शरण ली। छोटे छोटे देशवालों को रूमियों ने यह प्रतिष्ठा की पदवी दी कि तुम हमारे साथी हो, इस मोहित करनेवाली पदवी से उन्हें भुलाकर निरु

योगी रक्खा, औ जब उन्हों ने अपना उपयुक्त समय देखा तभी उन सब देशों को लेकर निज महा राज्य के प्रदेश बना लिये। उस काल से लेकर छहसौ ६०० बरस तक रूम की कथा सब पृथ्वी भर की कथाथी।

अैंटइओकस के हारने से पीछे बीस बरस के अन्तर में रूम की कथा के बीच कोई बडा भारी कर्म नही भया, परंतु इस कथासार में भी यह बात लिखनी योग्य है, कि दोनें महा-योद्धा बिपची सिपिओ आफ्रिकेनस औ हैनीबल, जिन्हों ने राजनीति के ज्ञान करके औ सेना संबंधी नाम्ना से अपनी अपनी जन्मभूमि को प्रसिद्ध किया था, उन्हें देशनिकाला हुआ औ ईसवी शक के पूर्व १८३ के वर्ष में मरगये।

ईसवी शक के पूर्व १७९ के वर्ष में मैसीडन का फिलिप नाम भूपति मरगया, तब उस का परसिअस नाम पुत्र राजा हुआ, जिस ने सिंहासन पर बैठते ही रूमियों के संग युद्ध करने का उपाय किया। राजसभावालों ने भेद भाव लेने के लिये तीन दूत मैसीडन को भेजे, वे यद्यपि राजा से तो नमिले, पर विन्हों ने सब रीत से निश्चय किया, कि परसिअस की इच्छा निश्चय कर के लडने की है। परगेमस के यूमिनीज़ नाम राजा ने परसिअस के ऊपर रूमी राजसभावालों के अगाडी अभियोग किया कि यह भी आप से बैर किया चाहता है, यूमिनीज़ ने इस आस पर यह कर्म किया था कि कदाचित इस के राज्य का भी बिभाग मुझे मिलजाय जैसा अभी अैंटइओकस के राज्य का मिला था।

ईसवी शक के पूर्व्व १७१ के वरस में रूमियों ने परसिअस से लडने का निश्चय किया, इस आशय से कि मैसीडन की स्वाधीनता सब रीत से बिनाश कर गेरें, प्रारंभ से पहले ही दो वर्ष में तो युद्ध शिथल रहा; परंतु तीसरे वर्ष में रूमियों ने

पालस ईमीलिअस नाम अति निपुण जन को अपनी सेना का अधिपति किया, वह परसिअस पर चढा औ पिडना नाम स्थान में आया, जहां एक बडीघोर पुरी लडाई झई, जिस में परसिअस संपूर्ण रीत से हारा। पहले तो बह भागा, पीछे आप ही अपने तईं रूमियों को समर्पण किया, उन्हों ने अपनी जय का चिन्ह दिखाने के लिये उसे रूम में ला, गलियों के बीच में घसिटवाकर बंदी ग्रह में पटकवादिया, औ वह वहां ही मरगया। यद्यपि प्रथम तो मैसीडन को स्वाधीन किया, पर अन्त में घटा घटू कर रूम का एक प्रदेश बनालिया। इस लड़ाई में रूमियों के हाथ ऐसी भारी लूटलगी कि एकसौ वीस १२० बरस तक का खरच उन के राज्य का अच्छे प्रकार से चला। मैसीडन को जय करने से रूम का राज्य प्रतापी औ अचल भया। एक अति उत्तम अंगरेज़ी इतिहास वेत्ता ने उस काल में रूम के राज्य का बड़ा सैभाग्य, औ तिस पीछे उन का क्षय औ निपात ऐसा बर्णन किया है कि, उसीकाल में रूमियों का प्रताप अत्यन्त ऊंची कक्षा पर था। हम देखते हैं कि रूम का प्रताप रूपी वृक्ष क्षेत्र के बीच में बढताजाता है औ पूर्ब्ब जिन वृक्षों से छिप कर पृथ्वी में प्रसिद्ध न था, अब उन सबों को अपनी छाया में ढकलेगा। परंतु थोड़े काल पीछे उस की सुन्दरता घटने लगेगी; तृष्णा रूपी आंधियां चलैंगी जिन में उस की सब बडी बडी डालियां आपस में रगड खाकर टूटैंगी, उस के पत्ते झडने अङ्ग कुमल्हाने, निदान असभ्य बन्यलोगों की भीड उस क्षेत्र में प्रवेश कर औ उस वृक्ष को काट गिरावैंगी।

मैसीडन को जय करने से अन्त के प्यूनिक नाम युद्ध पर्यन्त २० बरस बितीत भये। इसी काल में रूमियों का पोपिलि

अस नाम दूत जब अलेक्जंडर को जय करने के लिये जाता था, तब मारग में सिरिआ के राजा से मिला, औ उसे राजसभा वालें की आज्ञा सुनाई, कि तुम इस युद्ध में हाथ मत लगाओ। इस बात को सुनते ही उस राजा ने बिचार करने के लिये कुछकाल मांगा, तब अभिमानी रूम के सेनापति ने तरवार से राजा के चारें ओर एक चक्कर खैंच कहा कि तुम यहां से हलने नही पाओगे जबलग मेरी उस बात का उत्तर नदोगे। तब उस दीन राजा ने हारमान कहा कि हम राज सभावालें की आज्ञा मानेंगे, अपनी सेना को यहां से उठालेंगे, औ फिरजांयगे। उसी काल के बीच में यह भी हुआ, कि अति प्रतिष्ठित एक सहस्र यूनानी पकड़े हुए रूम को आये, औ बहुत से उन में से १७ वर्ष बन्दीगृह में रहे। उसी काल में और भी एक कर्म भया कि रूमियें ने इपाइरस देश के सत्तर नगर एक दिन में लूटे, औ उन के डेढ लक्ष १५०००० निवासियें को पकड़ दासबनाकर बेच गेरा। रूमियें ने बिचार कर निश्चय किया कि पृथ्वी भर में कोई राज्य का उदय न होने देना, औ सब देशवालें को घटाकर अपनी प्रजा तुल्य करना।

जब उन्हें ने ऐसी प्रतिज्ञा की; तब पहले ही कार्थेज नगर का सत्यानाश करना निश्चय किया। तब रूमियें ने उस राज्य के कुछ झगड़े निमटाने के लिये केटो नाम दूत को उस नगर में भेजा, उस ने वहां से आकर रूमियें को समाचार दिये कि कार्थेज अब फिर बढता जाता है; इसलिये उस ने राज सभावालें को मता बताया कि उस नगर का सत्यानाश करो। उस की बात सबें के मन में दृढ रूप से आई; औ लड़ाई करने के लिये शीघ्र ही एक मिस किया, सो यह है कि रूमियें ने कार्थेजवालें पर लांछन लगाया, कि उन्हें ने जहाज समूह

बनाकर हमारे साथी न्यूमिडा नाम राजा पर चढ़ाई करी; परन्तु पीछे से यह निश्चय भया कि उन्हों ने अपने बचाने के लिये धावा किया था। रूमियों ने एक बडा जहाज समूह औ अतिभारी सेना आफ्रिका को भेजी। कार्थेजवालों ने रूमियों से बडी भारी बिनती की, क्योंकि वे जानते थे कि हम अत्यंत निर्बल हैं, औ रूमियों के साथ युद्ध करने में कुछ जय की आस भी न थी। इस बात पर रूम के कांसल ने उन को आज्ञा की कि तुम अपने सब जहाज हमें दे डालो; उन्हों ने वह बात अंगी कार की तब रूम के सेनापति ने उन की आंखों के अगाडी उन के सब जहाज जलवागेरे। तिस पीछे उस ने और आज्ञा की कि तुम अपने सब शस्त्र हमें दे डालो यह भी उन्हों ने मान ली। अन्त में उस ने यह आज्ञा की कि तुम कार्थेज नगर का त्यागकरो, औ समुद्र से दूर कोई देश में जाकर नवीन नगर बसाओ। इस अभिमान भरी हुई आज्ञा के सुनते ही, नगर निवासी एक बेर तो निरास होगये, फिर कार्थेज के राजसभावालों ने सोगंध खाई कि अपनी जन्मभूमि कार्थेज नगर का त्यागनही करेंगे। फिर जहाज समूह बनाने के लिये अनेक जतन किये; जहां तहां से जितना काष्ठ वे इकट्ठा करसके, उतना जहाज बनाने के स्थान में लाये, औ बनाने का प्रारंभ किया; औ नगर भर की सब धातु बहुतमोल की, वा थोड़े मोल की, पवित्र वा अपवित्र, सब अस्त्र शस्त्र बनाने के लिये गला गेरीं; स्त्रियों ने धनुषों की ज्या औ जहाजों के रस्से बनाने के लिये अपने लंबे लंबे बाल कतर के दे दिये, इस युद्ध में सब छोटे, बड़े, बालक, वृद्ध, स्त्री पुरुष लडने में उपस्थित थे, औ तीन बरस तोडी नगर निवासियों ने अत्यन्त परिश्रम करकै रूमी सेनापति के संपूर्ण उद्योग व्यर्थ करदिये। जब नगर

के दो कोट रूमी सेनापति ने ले लिये, तब नगर निवासियों ने चारोंओर एक और दिवाल बनाली; जब उन का एक बन्दर स्थान भी ले लिया, तब और एक दूसरा झट पट खोदलिया; औ सिपिओ ने इस नवीन बंदर स्थान को भी छल करके लिया, तब नगर खुला, औ रक्षा हीन होगया, तो भी नगर निवासियों ने दृढ प्रतिज्ञा करके छह दिन औ छह रात महा भारी युद्ध किया। परन्तु जब उन्हों ने देखा कि नगर की अब और बिशेष रक्षा करनी व्यर्थ है, तब उन्हों ने आप ही नगर के चारोंओर आगलगा दी औ सब लोग कोई अपने मा बापों की समाधि पर, कोई दुर्ग में, कोई देवालयों में अपघात कर कर मर रहे। अग्नि सत्तर दिन तक जलती रही, इस अभिमानी नगर में एक समैं सात लक्ष ७००००० बसनेवाले थे, औ एक सहस्र बरस तक इस की अच्छी दशा रही, सो यह नगर एक ही दिन में नष्ट हो गया। कार्थेजवालों ने अपना देश बचाने के अर्थ जैसा महा उद्योग किया इस के समान तो उत्तम बात, औ रूमियों ने जो निर्दयता पूर्व्वक इस नगर के साथ दुष्ट आचरण किया इस के तुल्य कोई निंद्यकर्म कथा सार में नही है।

॥ कार्थेज नगर के नष्ट होने से ईसा के जन्म पर्यन्त ॥

—

स्पेन औा पोर्तुगाल में युद्ध—विरिएथस—औट लस ने रूमियों को अपना उत्तराधिकारी किया—रूम के महा राज्य का बिस्तार—देश संबंधी झगड़े रूम म—ग्रैकाई के उद्योग औा उस की शोक जनक मृत्यु—रूम में फूट—जुगार्था—केअसमारिअस—सिम्ब्राई की हार—देश की लड़ाई—मिथ्रिडेटीज के संग जो युद्ध हुआ उस की वृद्धि—सिला औा मेरीअस का युद्ध—मेरीअस की मृत्यु—सिलाकात्याग—सरटोरिअस—ग्लैडिएटर्ज़ की लड़ाई—डकैतों के सङ्ग लड़ाई—पांपी—आरमीनिआका राजाटइग्रेनीज़—ल्यूकलस—मिथ्रिडेटीज़ की मृत्यु—कैटेलइन का कुमता—रूम के प्रधान लोग—सीज़र ने गालवालों के सङ्ग युद्ध किया—प्रथम तीन अध्यक्षों का राज्य—सीज़र ने रूम पर धावा किया—फारसेलिआ की लड़ाई—सीज़र को किसी ने छिप के मार गेरा—ब्रूटस औा कैशिअस—मार्क ऐंटनी—सिसिरो—दूसरे तीन अध्यक्षों का राज्य—ऐक्टिअम की लड़ाई—आगस्टस सीज़र ने राजसंबंधी सामर्थ स्थापन की—ईसामसीह का जन्म—इन सबों का वर्णन अब करेंगे *

पिछला काल जो था सो रूमियों के प्रताप का था, वहां के निवासियों ने परिमिताचार, न्याय, साहस श्रो देश का भला करने के अनेक बड़े बड़े कर्म किये, परंतु इस से अगले काल में जिस का अब हम वर्णन करते हैं उन की वे बातें ढूंढ़ी भी नही मिलती, इसीलिये उस समैं को रूम के कुकर्म का काल कहते हैं। पृथ्वी भर के अच्छे अच्छे देशों की लूट-खसोट के कारण रूमी महा रसिक हो अत्यन्त रूप से सुख भोग करने लगे, श्रो संपूर्ण धर्म का आचार श्रो नीति छोड दी। मैसीडन को जय करने से क्रम क्रम यह धर्म की हीनता फैली, श्रो कार्थेज के भय से वह कुचाल कुछ रुकी ऊई थी; परंतु जब इस द्वेषी नगर को ढाकर धरती के समान कर दिया, एक रूम ही के इतिहास वेत्ता ने कहा है कि उस नगर को बिगाडतेही झट पट रूमी राजसभावाले, सेनापति श्रो राजदूत निर्लज्ज, प्रतिष्ठा हीन, बिश्वासघाती, श्रो निर्दई ऊए।

जिस बरस में कार्थेज का सत्यानाश किया था उसी बरस अर्थात् ईसवी शक के पूर्व १४५ के संवत् में रूमियों ने एकेईआ श्रो लैसीडीमोनिआवालों में झगड़ा जान एकोईआवालों की संधि को तोड़ दिया, कारिंथ, काल्किस, श्रो थीब्ज इन तीनों नगरों को जलादिया, श्रो यूनान की अत्यन्त कुदशा कर रूम का एक प्रदेश बनालिया। रूमियों ने स्पेन में ६० बरस से विशेष बिशेष युद्व रक्खा, जब लग वह देश सब रीत से पराजित न भया। रूमियों ने जितने देश जय किये, उन सबों के बीच, जैसी स्पेनवालों ने बल करके अपनी स्वाधीनता की रक्षा की ऐसी कोई नेभी न की। इस लड़ाई का प्रारंभ ईसवी शक के पूर्व २०० के बर्ष में भया, श्रो लगातार बिना रोक ठोक के ईसवी शक के पूर्व १३३ बर्ष लग रहा। ईसवी शक के

पूर्व १४६ के वर्ष में रूमी अधिपतियों ने पोर्तुगाल के लोगों पर ऐसा दबाव डाला कि जिस का वे सहन न कर सके, तब उन्हों ने विरीएथसनाम जन को छांट कर अपना सेनापति किया यह मनुष्य निष्कलंक था, औ जो जो अत्यंत धर्मात्मा रूमवाले थे उन की गणना में यह भी था। उस ने अद्भुत साहस औ सत्यप्रतिज्ञा पूर्व्वक छह वर्ष तक युद्ध किया, औ इस बीच रूमियों की जो जो सेना उस से लडने को आई उसे बारंबार हरादिया। निदान उस ने रूमी कांसल को अत्यंत दबा कर संधि करने का सुसमय जान उसे सूचनका करवाई, पीछे उस ने राजसभावालों से मताकर उस को अङ्गीकार किया। परन्तु जोंही उस के शस्त्रों से उन का भय मिटा तोंही उन्हों ने बिना चिताये संधि तोड़ने का निश्चय किया; औ सिपिओ नाम सेनापति अचानक विरीएथस पर चढआया औ उसे हरादिया, औ नीचपने से उस के तीन मित्रों को घूंसदेकर कहा कि इसे जैसें बने तैसें मारडालो, इस कर्म्म से रूम के नाम पर अक्षय कलंक लगा। विरीएथस के मरने से पीछे भी स्पेनवालों ने छह बरस युद्ध किया औ फिर रूमियों की सेना को हरादिया; परंतु अन्त में न्यूमेंशिआ को छोडकर स्पेन के बीच उन के पास कुछ नरहा, औ उस नगर में भी केवल चार सहस्र रक्षक थे, तब रूमी कांसल ने साठ सहस्र सेना लेकर उसे घेरा। यह नगर घेरे रखने से उस के हाथ में आवना असंभव था, परंतु जब उस नगर में अकाल पड़ा औ सब मरण तुल्य होगये, तब आपही अपने घरों में आगलगा, ज्वाला में जलमरे, औ रूमवालों के अर्थ कुछ नछोडा केवल न्यूमेंशिआ नगर का नाम। ईसवी शक के पूर्व १३३ के वर्ष में इस प्रकार से यह नगर

रूमियों के हाथ में आया, औा उन्हों ने सुपेन के दो भागकर के रूम के प्रदेशों में मिला लिया। दो बरस पीछे परगेमस के मन्द बुद्धि अैटेलस नाम राजा ने मरते समय अपना राज्य रूमियों को लिखदिया; पहले रूमियों ने इस राजा के बाप को एशिआ मइनर का अधिक अंश दान में दिया था। इस प्रकार करके किंचित लिखदेने से एशिआ के बीच रूमी अत्यंत श्रेष्ट राज्य के स्वामी हो गये; परंतु इस राज्य के हाथ लगने से रूमी अति रसिक औा भोग बिलास में लगगये, जिस के कारण यह दान उन को उपकारी न भया पर अपकारी।

रूमियों को यह दान इसवी शक के पूर्ब १३० के बरस में मिला था। इसकाल के एकसौ वत्तीस बरस आगे इटली की सीमा के बाहर रूमियों की एक चरण भरभी पृथ्वी कहीं न थी; परंतु इसकाल के बीच पश्चिम में उस महाराज्य में ये देश थे, स्पेन के दो प्रदेश, आफ्रिका में कार्थेज का राज्य, सिसिली, सार्डिनिआ, कार्सिका, लईग्यूरिआ, औा सिसालप इन गाल; औा पूरब में मैसीडोनिआ, एकेईआ, औा एशिआ मईनर। इन सब देशों के निवासी संपूर्ण रूप से रूमियों के आधीन थे, औा रूम के वे लोग उनपर शासन करते थे, जो कांसल औा प्रीटर पदवी का भोग कर चुकते थे, उनही के हाथ में सेना संबंधी औा देश की सामर्थ थी, इसलिये वे महा अनाचारी हुए। उनसब प्रदेशों में रूमी सेनारक्षा करती थी, औा सकल प्रदेशों में लैटिन भाषा थी, केवल उनदेशों में नहीं जहां यूनानी भाषा का प्रचार था।

रूमियों ने जो दिग बिजय की औा अच्छे अच्छे धनाढ्य अनेक प्रदेश उन के अधिकार में होगये, इन कारणों से अति शीघ्र महा दुखदाई फल उपजे। रूम नगर के बसने के समय जिन

जिन झगड़ों के कारण नगर दुखी भया था, सोई अब फिर होने लगे। क्रम क्रम से रूमवालों ने अतिशय भूमि प्राप्तकरी, और धनवान मनुष्यों ने उसे आपस में बांट ली, और दीनलोगों को कुछ भी भाग न दिया। ये दरिद्री उपाय करके रहित थे; क्योंकि वे और देशवालों की भांति ब्योपार औ वाणिज्य नहीं करसकते थे, इस कारण से कि वे काम दास लोगों के थे जो वे करते तो उन में उन की बडी भारी निन्दा होती थी। ईसवी शक के पूर्व १३३ के वर्ष में जब न्यूमेंशिआ नगर को घेररक्खा था, तब रूम नगर के बीच धनीलोगों के अन्याय से एक प्रचण्ड झलड़ मचा, जिस में प्रथम ही प्रथम नगर निवासियों का रुधिर बहा, लोग अस्त्र शस्त्र धारण कर मंडलियों में जाने लगे औ शीघ्रही महा बखेड़ा भया, निदान रूम की स्वाधीनता संपूर्ण रूप से नष्ट होगई।

टइबीरिअस ग्रैकस वंश आदि में सामान्य था, परन्तु अत्यंत परोपकारी औ साहसी; उस के बाप ने कुलीन औ कार्थेज के जय करनेवाले प्रथम सिपिओ की कन्या से बिवाह किया था। टइबीरिअस ग्रैकस ने प्रजागण का दुःख दूर करने के लिये इच्छा की, औ लिसिनिअन नाम व्यवस्था का प्रचार फिर करने को छोड कर और कोई शुभ फलदायक उपाय न देखा। इस व्यवस्था में लिखा था कि कोई रूम नगर निवासी १५०० बीघे से अधिक भूमि अपने अधिकार में न रक्खे, परन्तु क्रम क्रम से इस व्यवस्था का व्यवहार छोड दिया औ अनेक प्रतिष्ठित लोगों ने बहुत बहुत धरती हथिया ली। इस कारण से बहु लोगों को तो बडा प्रिय हुआ, परन्तु राजसभावालों को अत्यन्त भय दायक। जब वह प्रजा की ओर से ट्रईब्यून हुआ, तब उस ने लिसिनिअन नाम व्यवस्था

को चलाने के लिये कहा जिस में लिखा था कि कोई १५०० बीघे से अधिक भूमि अपने हाथ में न रक्खे; यद्यपि उस के सङ्गी और द्रईव्यून इस व्यवस्था के चलने का निषेध करते रहे पर तोभी उस ने चलाई, औ। एक पंचायत को भूमि का बिभाग करने के लिये स्थापन किया। इसी काल में परगेमस के राजा ने जिस का अभी बर्णन हो चुका है अपना धन संकल्प कर रूमियों को दिया था, तब टईबीरिअस ग्रैकस ने कहा कि इस धनका भी बिभाग दरिद्री लोगों में करदो, इस बात से धनीलोगों के मन में और भी महा क्रोध उपजा। जब उस की पदवी का बर्ष पूरा हुआ, तो उस ने अगले बरस के निमित्तभी इस पदवी के लेने का उद्योग किया परंन्तु जिसदिन यह उसे मिलने को थी, उसीदिन कुलीन सिपिओ नैसिका जिस के पास राजसंबंधी भूमि बहुत थी, वह अपने बहुत से अनुयायी औ दासों को अस्त्र शस्त्र बंधवा, औ कई राजसभावालों को संग ले उस के ऊपर चढ आया, औ उसे औ उस के तीनसौ मित्रों को मारगिराया। जिस दिन से कि रूम की नीम रक्खी गई उस दिन से छहसौ बीस ६२० बरस तक जो जो झगड़े उठे, तब कभी कोई कभी कोई दबजाता, इस कारण से वे मिटजाते, प्रजा के लोग तो कुलीनों की प्रतिष्ठा रखते, रहे, औ कुलीन प्रजागण से डरते रहे; परंतु इस समय राजसभावालों ने म्त्यु जनक प्रतिज्ञा करकै लोगोंको मार कर अपने कारज पूरे करे; औ उसदिन से रूम के बीच दोनों ओर के लोगों का परिमिताचार संपूर्ण रूप से जातारहा औ आपसमें मार पीठ लडाई झगडा होने लगा।

टईबीरिअस की म्त्यु से दस बरस पीछे उस का कायस नाम छोठा भाई जो बुद्धवानी औ गुण में अपने बड़े

भाई से भी अधिक था उस ने निज भ्राता की चाल पर चलने का दृढ बिचार कर रूम के राज संबंधी दुखदाई कर्मों में प्रवेश किया। उस ने प्रजा की ओर से ट्रइब्यून पदवी पाते ही लिसिनिअन नाम व्यवस्था का ऐसे पराक्रम से प्रचार किया कि धनी औ कुलीन लोगों ने मिलकर उस के बध करने का बिचार किया। वह अपनी तीक्षण बुद्धि के कारण बड़े बड़े औ चिरस्थाई उपकारों के करने का विचार किया करता था; परन्तु उस की ट्रईब्यून पदवी के समय में दो कार्य बिशेष करके प्रसिद्ध हैं। एकतो यह कि उस ने राजसभावालों से न्याय करने का अधिकार छीन कर नइट नाम पदवीवालों को दे दिया, जो उन से प्रतिष्ठा में न्यून थे; यह काम सदा से राजसभावालों ही के हाथ रहा था, उस ने इस आशय से लेलिया कि उन की अधिक सामर्थ घटा कर सबों के समान करैं। औ दूसरा यह कि उस ने इटली वाले अपने सहायकों को इतना अधिकार देने की इच्छा की जितना रूम नगर निवासियों का था। कायस के ऐसे ऐसे उपायों से कुलीनों को सूझपडा कि हम इसके भयसे कभी नहीं छूटेंगे; इसलिये उन्हों ने खुलाखुली नगर के बीच उस पर चढाई कर उसे औ उस के तीन सहस्र मित्रों को मारगिराया। उस के मरन के पीछे राजसभा वालों ने ऐग्रेरिअन नाम व्यवस्था को निकालगेरी ऐसा कि उस का फिर कभी प्रचार न होने दिया। इटलीवाले उस के मिलापियों को रूम नगर के औ रूम संबंधी राज्य सासन के अधिकार पानेकी जो आस भई थी सो उस के मरने से जातीरही, परन्तु झगड़े का बीज उनके मन में बोवा गया, अगाडी जाकर जिन के फल अत्यन्त कड़ुवे उत्पन्न भये।

राजसभावाले यैकाई जाति के दो सहोदर भाइयों को मार कर प्रजावर्ग के ऊपर जयवन्त ऊए, औ उसी जय के कारण, घूंस पत्तर आदि बुरे कर्म करके उन्हें अपनी संपत्ति बढाने की सामर्थ ऊई। वे अमित सुखभोग के कर्मों में लगे, औ पुरानी सीधे सच्चे प्रकार की रीतें छोड महा अन्याय औ दुष्ट पने के कर्म करने लगे। देश देश के अधिपतों ने इच्छा पूर्व्वक लोगों को लूटने का प्रारंभ किया, उसीसमें अनेक राजा जो रूमियों के भिलाषी थे, उन्हों ने जतन से बड़ी बड़ी घूंस दे-कर राजसभावालों में अपने अपने पची बनालिये, और यह महा सभा इस घूंस के कारण बड़े बड़े छल औ लंपट के काम करने लगी।

रूम के प्रधान प्रधान लोगों ने जो घूंस ली थी, उस का प्रकाश बिशेष करके उस समय ऊआ जब रूमी जुगर्था के सङ्ग युद्व करने में लगे; इस लडाई का प्रारंभ ईसवी शक के पूर्व्व ११८ के बर्ष में भया। मैस्सिनिसा ने कार्थैज की लडाई में रूमियों की सहायता जो की थी,* उस के फल में उन्हों ने उसे आफ्रिका के बीच न्यूमिडा देश का राज्य दिया। उस के मरने से उस का मिसिप्सा नाम पुत्र सिंहासन पर बैठा; उस के दो बेटे एका का नाम ह्यम्पसल, औ दूसरे का ऐडहर्बल, औ एक जुगर्था नाम भतीजा, यह उद्योगी, ज्ञानी, औ दुराचारी था। मिसिप्सा अपने मन में डरा कि कदाचित जुगर्था मेरे पीछे मेरे पुत्रों को राजगद्दी पर न बैठने दे, इसलिये उस ने इसे थोडीसी सेनादे रूमियों की सहयता के लिये भेजा जहां वे न्यूमैंशिआ नगर को घेरे ऊए थे। वहां जुगर्था ने आपही आप युद्व के कर्मों में निपुणहो रूमी सेना-पतियों से प्रशंसा प्राप्तकरी, रूमी कटक में बऊत से लोगों ने

ऐसी बातें कहकर और भी उस की तृष्णा बढ़ाई, कि अपने चचा के मरने से तुमही न्युमिडिया के सिंहासन पर बैठोगे औ रूमियों का किंचित भय भी तुम्हें नहीं होगा, क्योंकि रूम की सब बातें द्रव्य के आधीन हैं। जुगर्था जब उस युद्ध में से फिरकर आया, तब वृद्ध भूप उस के चचा ने उसे गोदी का पुत्र करके रक्खा औ अधिकार में निज औरस पुत्रों के समान किया। परंतु जुगर्था ने अपने पितृव्य के मरते ही हयम्पसल को मार ऐडहर्बल को देश निकाला कर आप न्यूमिडा के सिंहासन पर हो बैठा। ऐडहर्बल तुरन्त जुगर्था के ऊपर राजसभावालों के अगाडी अभियोग करने के लिये रूम को गया, जुगर्था ने उसी समैं बङत धनसहित अपने दूत राजसभावालों को घूंस पत्तर देने के लिये भेजे। उस का धन प्रबल हुआ, राजसभा वालों ने दोनों बादी औ प्रतिबादी का उन के देश में समान विभाग करदेने के लिये दशजन आफ्रिका में भेजे, जुगर्था ने अपने बांट में अच्छे से अच्छे प्रदेश रखवाने के लिये उन दसों को भी घूंसदी; जब देखा कि धन प्रबल हुआ, तो उस ने निर्लज्ज हो निजचाचा के बेटे के अंश के देश पर चढाई की, तब उसे सिटरा नगर में जाकर छिपना पडा। जुगर्था ने झट पट उस नगर को घेरलिया, तब ऐडहर्बल ने अपने संकट के समाचार रूम में राजसभावालों के पास भेजे। प्रथम तो बिचार ठहरा कि आफ्रिका में सेना भेज जुगर्था को यथा योग्य दण्ड करवा यहां पकडवा मंगवावें; परंतु जिन्हों ने उस का धनलिया था, उन्हों ने इसबात का निषेध किया, और इनदोनों राजाओं का झगडा निमटाने के हेतु तीन पुरुष नियुक्त किये, इनतीनों में एक स्कारस नाम राजसभावाला मुख्यथा। उन्हों ने आफ्रिका में पऊंचतेही जुगर्था को अपने बिचा

स्थान में बुलाया। यद्यपि जुगर्था कुछेक सेना ले उन के सन्मुख आया तथापि उस के सेनापति पराक्रम पूर्ब्बक सिटरा का घेराकरे रहे, तब इनतीनों राजदूतों ने क्यातो अपनी दुर्बलता के कारण कै घूंस पत्तर के हेतु जुगर्था पर जो अभियोग था उस का उत्तर उस से सुन, बिना कुछबात का निर्णय किये इटली को फिर चले गये। इन राजदूतों के बिदा होने से थोड़े ही काल पीछे सिटरा नगर जुगर्था के हाथ आया, तब उस ने ऐडहर्बल को बुरी गत से मरवाया औ नगर में जो शस्त्र धारी पाये उन को काटा करवाई। इस वृत्तान्त के समाचार जब रूम में पहुंचे, तब वहां का प्रजागण बडा क्रुद्ध हुआ, तो राजसभा वालों ने निज अपराध जान औ प्रजा का भयमान मन भावता कटक आफ्रिका को भेजा; परंतु जुगर्था ने बुद्धवानी से उस के सेनापतियों को घूंस दे ऐसीबातों पर लगाया कि वे बिना एक तुपक चलाये उस से अपमान जनक संधि कर चले आये। जब ये भी कर्म रूम में जाने गये तबतो प्रजाका क्रोध अमित रूप से बढा; औ मेम्मिअस नाम एक उन के ट्रिब्यून ने सेनापतियों औ राजदूतों को प्रगट रूप से घूंस खाने का दोष लगाया औ जुगर्था को रूमी राजसभावालों के बचन की सच्चाईपर रूम नगर में लाने के अर्थ एक दूत आफ्रिका में भेजने के लिये राजसभावालों को दबाया इस कारण से कि वह उन के सन्मुख होगा जिन को उस ने घूंस दी है। इस प्रकार से जुगर्था ने राजाओं की सी धूम धाम छोड दीन लोगों कासा भेष धारण कर रूम में आतेही झट पट अपने पुराने काम घूंस पत्तर देने को ऐसी निपुणाई से चमकाया, कि प्रजागण ने जब उस के दुष्ट कर्मों का बर्णन कर उन का उत्तर देनेके लिये उसे बुलाया, तभी बीबिअस नाम एक ट्रिब्यून जिस ने उस से

बड़त सा द्रव्यलिया था सब अभियोगों के उत्तर देने का निषेध किया। संभव है कि जुगर्था दंड से बचजाता जो वह मैस्सिवा को रूम ही के बीच मरवाकर अपना काम न बिगाडता; यह मैस्सिवा नाम जन मैस्सिनिसा का पोता औ सिंहासनका अधि कारी था। इस कर्म से उस के और भी सब दुष्ट आचरण अच्छे रूप से जाने गये; इसलिये उसे आज्ञाऊई, कि अभी रूम नगर को तज इटली से निकल जा औ उस का राज्य छीनलेने के लिये सेना आफ्रिका में भेजी। इस युद्ध का अधिकार आल्बइनस नाम रूम के कांसल को मिला था, पर उस ने कुछ भी उद्योग न किया; इसलिये बड़त से ऐसा अनुमान करते हैं कि जुगर्था ने उसे भी घूंस देकर बिगाडा था। इसी बीच ट्रइब्यूनों में से एक ने कहा कि जिन्हों ने जुगर्था राजा से घूंस ली है उन के अपराध का निर्णय बिचार स्थान में होगा; प्रजागण तो कुलीनों से द्रोह रखाता ही था, सो इसबात पर प्रसन्न हो अत्यन्त रूप से जाज्वल्यमान ऊआ, इसलिये राजसभावालों को हारकर प्रजा का कहना अङ्गीकार करना पडा; तब चार मनुष्य जो देशभर में अत्यंत प्रतिष्ठित थे सो दोषी ऊए। औ उसी समैं सत्यबादी मेटेलस नाम जन आफ्रिका में सेनापति नियुक्त ऊआ। उस ने परा क्रम पूर्वक युद्ध कर, क्रम क्रम से नगर नगर गाम गाम ले, जुगर्था के देश ही में जाकर उस को दंड किया। वह जब ही युद्ध परिसमाप्त करने में था कि तभी कायस मेरिअस उस के स्थान में सेनाधीश नियुक्त भया।

कायस मेरिअस आर्पइनम स्थान के बीच दरिद्री औ नीच कुल में उत्पन्न ऊआ था, परन्तु उस ने अपने अद्वितीय साहस औ बड़े बड़े गुणों के कारण सेना औ देश में अनेक

पद्वी प्राप्तकरी थीं। उस ने प्रजा की ओर से ट्रिब्यून पद्वी पातेही उन का पक्ष कर कुलीनों को पराक्रम पूर्वक ऐसा दबाया, कि छोटे कुलवालों के प्रेम का पात्र होगया, औ उन्हों ने थोड़ा जान उसपर भरोसा रक्खा कि यह हमारे सब अधिकारों की रक्षा करैगा। उस समय वह मेटेलस के नीचे होकर आफ्रिका में सेना संबंधी कार्य्य करता था। उस ने कांसल पद्वी पाने के लिये रूम में जाने के अर्थ प्रार्थना की, नगर में जाकर उस ने प्रजा की कृपा से वह पद्वी पाई, इस बात से कुलीन लोगों ने महा दुख पाकर कहा कि नीच बंश के मनुष्य को कभी आजतक ऐसी महा पद्वी नही मिली थी। उस समय मेरिअस की ४८ बरस की अवस्था थी। यद्यपि राजसभावालों ने बहुतसा अवरोध किया, तथापि जुगर्था के संग युद्ध करने का अधिकार मेरिअस को मिला, औ मेटेलस को भी उस के हाथ में सेना सौंपनी पडी। मेरिअस सेना संबंधी गुणों में अत्यंत निपुण था, उस ने जुगर्था को महा-क्लेश दिया, पर उसे पकड न सका औ उस के सुसरे मारेटेनिआ देश के बाकस नाम राजा को छल से पकड रूमियों के हस्तगत किया। यद्यपि बाकस आफ्रिका निवासी था, औ रूमी उसे बन्य समझते थे, उस ने रूमियों के बिश्वासघात पने के कर्मों में अनेक संदेह किये; परंतु अन्त में मेरिअस के नीचे जो सिला नाम जन था उस ने अपनी बातों की चतुराई से उस के सब संशय निवारण किये। बाकस ने मित्र भाव की बातों से जुगर्था को नोतबुलाया, औ रूमियों के हाथ में पकड़वा दिया; ईसवी शक के पूर्व्व १०६ के बरस में इस रीत से जुगर्था के संग की लडाई परिसमाप्त भई; इस कर्म से मेरिअस, सिला औ रूम के नाम पर महा कलंक लगा।

रूम की कथा में इस से अगला बड़ा भारी वृत्तान्त यूरप के उत्तर के निवासियों की चढ़ाइयों का है, जिन्हों ने कुछ काल के अंतर में रूम के संपूर्ण महाराज्य को जड़ से उखाड़ गेरा। ईसवी शक के पूर्व एकसौ नोएक के बरस में सिंब्राई, ख्यूटेनीज़, औ और २ जातों ने यूरप के उत्तर भाग से आकर ट्रैंसालपाइन गाल के नवीन नवीन प्रदेसों का सत्या नाश किया। इस के चार बरस पीछे उन्हों ने सइलेनस नाम रूमी सेनापति को हराया, औ फिर थोड़ेदिन पीछे स्कारस औ सिपिश्रो को, औ इटली फिर वैसी ही कंपायमान हुई जैसी हैनीबल के दिनों में भई थी। उस समय सबों की दृष्ट मेरिश्रस पर गई, औ बिचारा कि केवल मेरिश्रस ही निपुण सेनापति है जो निजदेश की रक्षा कर सकता है। उस काल में रूमियों को ऐसा महाभय हुआ कि उन्हों ने अपनी व्यवस्था कोभी छोड दिया जिस में लिखा था कि जो कोई मनुष्य रूम में नहोय तो उसे कांसल पदवी नमिलैगी, और जो यह पदवी पाचुका है वह फिर दश बरस के बीच में न पावैगा। यद्यपि मेरिश्रस केवल तीन बरस पहले, कांसल की गद्दी पर था, तोभी फिर कांसल पदवी के लिये वही छंटा, औ उसकाल में वह इटली के बीच भी न था। ईसवी शक के पूर्व एकसौ तीन के वर्ष में वह सुशिक्षित सेना ले गाल देश पर चढ़ चला, जहां उस ने पहुंचते ही सुना कि बन्य लोग रोननदी से लेकर पिरैनीज़ पर्वत तक के देशों की लूट खसोट करते हुए स्पेन के दक्षिण भाग में चलेगये हैं। मेरिश्रस वहां उन के फिरकर आने की बाट देखता रहा औ अपना काल सेनाको युद्ध संबंधी शिक्षा करने में बितीत करता रहा; जब वह इस युद्ध में लगा हुआ था तब

उस ने तीसरी या चैाथी बेर कांसल पद्वी पाई थी। तीसरे बरस में बन्य लोगों ने स्पेन से आवती बिरियां निज कटक के दो बिभाग किये, एक में तो ऐम्ब्रोनीज़ औ ट्यूटोनीज़ लोग थे, इन्हों ने प्रोवेंस में होकर इटली के बीच प्रवेस करने का निश्चय किया; औ दूसरा जिस में सिम्ब्राई लोग थे, उन्हों ने बडा फेर खाकर टइरोल के बीच हो इटली में गमन करने का बिचार ठहराया। जिस समैं मेरिअस ऐम्ब्रोनीज़ लोगों के आवने की बाट देखरहा था, उसकाल सिम्ब्राई लोगों ने तो अपने लक्षित स्थान की यात्रा की। निदान मेरिअस आइ नगर के निकट उन के ऊपर टूटा औ संपूर्ण रूप से हरा कर उन के एक लक्ष १०००० कटक से अधिक अधिक का सत्यानास किया औ पकड लिया। थोड़े ही काल पीछे सिम्ब्राई आल्पस पर्वत से उतर आए; परन्तु रूमियों ने उन का साम्हना करने के लिये कैटलस नाम जन को सेनापति बनाकर कटक भेजा सो उन से डरकर भाग गया। इसी बीच मेरिअस फिर रूम में आया, तब लोगों ने इस कटक का सेनापति होने के लिये उस की बिनती की। उस ने इस बात को अंगीकार करते ही उत्तर ओर यात्रा कर पो नदी के तट पर बन्य लोगों को आ ललकारा; औ महा भारथ मचाया, जिस में सकल रीतसे सिम्ब्राइयों को हराया; एक लक्ष चालीस सहस्र १४०००० मनुष्य रण भूमि में खेतरहे औ इस रीत से इटली का भय गया।

इसी काल के लग भग सिसिली उपद्वीप के बीच दास लोगों से लडाई हुई। कारण यह था कि स्वामी कठोरता से उन्हें ताडना करते थे, इसलिये उन्हों ने दासपने से छूटी पाने के अर्थ अस्त्र धारण कर सेनापति क्रांठ रूम की सेना को

बारंबार हरादिया; परन्तु इन अभागे दासों में से जबलग दस लच्च१००००० मनुष्य न मारे गये तब तक इस उपद्वीप में शान्ति न भई।

ईसवी शक के पूर्व ९८ के वर्ष से ले ९१ तक अर्थात इन सात बरस के मध्य में केवल मेटेलस के देशनिकाले का वर्णन छोड करके और कोई वृत्तांत स्मरण करने योग्य नहुआ सो मेटेलस कुलीनों में मुख्य था। मेरिअस ने घूंस देदिया छटी-बेर कांसल पदवी पाकर कई दुराचारी लोगों से मेल मिलाप किया, जिन्हों ने अन्याय से नगर को ऐसा संताया कि अच्छे अच्छे नगर निवासियों ने उन का अन्याय पना दूर करने के लिये उपाय किया, औ उन दुष्टों का त्याग करने के लिये उन्हों ने मेरिअस को दबाया। तब उन में से दो प्रधान जन सेटर्निअस औ ग्लाश्चिअस गढ में घिरे और जब दबाव पडा तब लोगों के हस्तगत हुए औ मारे गये। इन लोगों के अंधेर से मेरिअस औ उस के बिरोधी सिला ने महा अंधेर किया जिस का बर्णन हम शीघ्र ही करेंगे।

सिला औ मेरिअस के समय में रूम के बीच जो लोहू की नदियां बहीं उन भयंकर वृत्तांतों का विषय कहने के पहले हमें कुछ और बर्णन करना योग्य है। आदि में रूम नगर के बीच थोड़े से चोर डकैत बसते थे, औ वे कईसौ बरस तक महा बन्य रहे, यहां तक कि मनुष्याचार औ शिष्टाचारी की विद्या का नाम मात्र भी उन में न था। परंतु जब रूम का राज्य इटली की सीमा पर्यन्त फैलगया औ पूरब देश के सभ्य राज्यों के समान हुआ, तब कुलीन रूमियों के चित्त में विद्या पढने का कुछ अनुराग उपजा वहां लोगों ने यूनानी भाषा बड़ी सावधानी से पढ़ी; औ लैटिन बोली मंज मजा

कार एसे चमत्कार पर आई कि निदान शुद्दता औ गंभी-
रता में बज्जधा यूनानी भाषा के समान हो गई। तिस पीछे
रूमियों ने शस्त्रों के बल से यूनान को जीतलिया, परंतु यूना-
नियों ने अपनी काव्य बिद्या, नीति शास्त्र, औ सभ्यता में
रूमियों को हरादिया। रूम के राज्य का बडा बिस्तार होने
से वहां के कार्य भी अधिक होगये इस से महा प्रतिष्ठित
नगर निवासियों की बुद्धि औ गुणों की पुष्टता ज्जई, औ
बाक्‌पटुता के कारण उन को महा धन औ अति प्रतिष्टा भई;
इस से सब लोग महा उद्योगी ज्जए, और ऐसें ही प्रतिष्ठित
कुलों में बिद्या पढने औ सभ्य होनेका बडा प्रेम उपजा।

इसी समय में नइट पद्वीवालों की सामर्थ्य घटाई गई थी।
कायस ग्रैकस की व्यवस्था के अनुसार नइट पद्वीवालों को
न्याय करने की सामर्थ मिली; औ देश में करका रुपया भी
वेही इकट्ठा करते थे इसलिये रोक टोक बिना, लोगों के साथ
बडा अंधेर करने लगे, क्योंकि जो कोई वे बुरा काम करते उस
का अभियोग उन्ही की सभा में उन के ऊपर होता। जब
कर इकट्ठा करने औ न्याय करने का काम एक ही मनुष्य
को मिला, तो उस राज्य में अनेक प्रदेशों की महा दुर्दशा
होगई। इन तीन सहस्र नोसौ ३९०० मनुष्यों की महा
सभा की जैसें जैसें सामर्थ बढी तिसी क्रमसे उन का अभिमान
भी अधिक भया, निदान इतना ज्जआ कि वह उन का दुरा
चार कोई से न सहाजा सका; तब प्रजा के द्रइब्यूनों में से एक
ड्रूसस नाम जन था उस ने उन से आधी सामर्थ छीन ली;
परंतु वह रूम की गलियों में मारागया।

उसी समें ड्रूसस ने एक और बिचार किया था कि इटली
निवासी जितने रूम के साथी, उनसब का ऐसा अधिकार

होजाय जैसा रूम नगर निवासियों का है; जो यह कल्पना सिद्ध होती तो वेभी रूम के राज्य में भाट भागी होजाते। परंतु उस काल में यह बिचार व्यर्थ हुआ, क्यौंकि राजसभावालों औा प्रजाबर्ग ने एकसा इस का निषेध किया। ड्रूसस के बचनों से इटलीवालों ने इस काम के लिये बड़ी आस करी थी, सो इस प्रकार से व्यर्थ होगई, तब वे बिचार करने लगे कि देखैं शस्त्र बल से कैसें हम इन अधिकारों को पा सकते हैं। जब उन का मन बढा हुआ था, तभी उन्हों ने सुना कि ड्रूसस मारागया, तब उन के चित्त में दृढ बिचार आया, कि केवल अपने ही साहस से हम इन अधिकारों को प्राप्त कर सकैंगे। पृथ्वी जय करने के लिये रूमियों ने जित ने युद्ध किये उन सबों में इटलीवालों की सेना दो तिहाई रही थी; विन का एक अलग ही कटक था, औा कभी नही रूमी दल में मिले थे। ये राज्य जो निरास हुए थे सब सिसालपइन गाल के दक्षिण में थे, इन में से चार राज्य लेटिन, सेबइन, हिब्रूरिया, औा अंब्रिया केवल रूमियों ही की ओर रहे। इन सब मिले हुए इटली वालों ने युद्ध का प्रकाश करने से पहले रूमियों के पास एक दूत यह बिनती करने के लिये भेजा कि हम सदा तुम्हारे साथ युद्धों में रहे, औा बरसवें दिन दूनीसेना देतेरहे औा नगर की जो अब बडी प्रतिष्ठा है सोभी हम ही से भई, इस लिये हम तुम से प्रार्थना करते हैं कि जैसा नगर निवासियों का अधिकार है वैसाही हमारा होजाय। राजसभावालों ने अति क्रोध करके इस बात का निषेध किया, तब दोनों ओर के लोग युद्ध करनेको उपस्थित भये। इटलीवालों ने रूम से बीसेक कोश दूर पूरब में कार्फिनिअम नाम स्थान को अपना राजधानी बनाने के लिये छांटा, और यह भी आस की

कि इसे इटली भर में मुख्य करेंगे; उन्हों ने अच्छे २ पांचसौ ५०० मनुष्यों की अपनी राजसभा बनाई, औ रूम नगर के समान कांसल, सेनापति, औ और और कर्मकारक लोग छांटे। यह युद्ध ईसवी शक के पूर्व ९० सेले ८८ तक अर्थात् तीनेक बरस रहा। इटली निवासियों ने रूमियों को बारंबार हरादिया, परंतु अन्त में सिला की युद्ध रूपी निपुणाई से रूमी ही जयवन्त भये, यह सिला मेरिअस के नीचे था जब आफ्रिका में जुगर्था से संग्राम होता था। कई बार हार जीत होने के पीछे राजसभावालों ने एक एक करके इटली के सब राज्यों को वेही अधिकार दिये जो रूम नगर निवासियों के थे, जो ये अधिकार युद्ध के आदि में दियेजाते तो तीन लक्ष ३००००० मनुष्यों के प्राण बचते जो इन युद्धों में मारे गये। इस प्रकार करकै इटलीवालों को अधिकार मिलने से रूम की मूल व्यवस्था की समानता संपूर्ण रूप से नष्ट हो गई औ उस समय से रूम में फिर शान्ति न भई। क्योंकि जो कोई प्रजा में मुख्य हुआ सोई गांवों से अपनी बात के पक्षी लोगों से रूम नगर को भर कर अन्याय करके अपनी व्यवस्था को चलासका।

इस से अगली लडाई जिस में रूमी लगे हुए थे सो मिथ्रिडेटीज़ के संग थी। वह राजवंश में उत्पन्न भया था, उस के कुल वालों ने बहुत काल से पांटस देश का राज्य किया था, जो एशिआ मइनर के ईशान कोण में है। वह अति बुद्धवान औ युद्ध बिषय में महा निपुण था, परंतु उस के अच्छे गुण बिश्वास घात पने से छिपगये थे। उस ने यूरप औ एशिआ में उत्तर ओर अधिक भाग लेलिया था, औ उस की अभिलाषा सब एशिआ को जय करने की थी। वह एशिआ मइनर में रूमियों के राज्य की सीमाएर कैपेडोशिआ देश के कामों में

लगा, इसी कारण प्रथम रूमवालों के संग उस का बैर भया तब उन्हों ने निश्चय किया कि उस के ऊंचे बिचार झट पट पराक्रम पूर्बक रोकने चाहियें। ईसवी शक के पूर्ब ८९ के संवत में उस के संग युद्ध का प्रारंभ भया, औा बहुत काल तक रहा अर्थात् उस के मरने से ईसवी शक के पूर्व ६३ के वर्ष में समाप्त हुआ; हैनीबल के समय से उस काल तक उस से अधिक भयंकर शत्रु रूमियों को कोई नहीं मिला था। जब उस ने बिथिनिआ औा कैपेडोशिआ को अपने आधीन करलिया, तब वहां के दोनों राजा जिन का राज्य छिन गया था, उस पर अभियोग करने के लिये रूम को गये। राजसभावालों ने यह आज्ञा दे कर कई बड़े मनुष्य एशिआ में भेजे, कि तुम उन दोनों को फिर सिंहासन पर बैठा दो, और मिथ्रिडेटीज़ ने इस कर्म में उन का कुछ साम्हना न किया, क्योंकि वह जानता था कि मेरे उपाय अभी पक्के नहीं हैं। परंतु थोड़े ही काल पीछे उस ने अपने पुत्र को कैपेडोशिआ में भेजा, औा उस ने यह कहकर उस राज्य को ले लिया, कि ये जो रूमी बड़े लोग आये हैं उन के अन्यायपने से यह कर्म हमें करना पड़ा। तब इन रूमवालों ने राजसभावालों की आज्ञा आने की कुछ बाट न देख, एक बडी भारी सेना इकट्ठी कर मिथिडेटीज़ के संग बैरभाव प्रगट किया। परंतु उस ने संपूर्ण रूप से उन के कटक का सत्यानाश किया, औा तुरन्त रोड्ज़ उपद्वीप को छोड कर एशिआ मइनर के सब प्रदेशों, नगरों, औा उपद्वीपों में से रूमियों को निकाल दिया। यह वृत्तांत ईसवी शक के पूर्ब ८७ वें वर्ष में हुआ।

जब इन आपदाओं के समाचार रूम में पहुंचे, तब राजसभावालों ने पराक्रम पूर्ब्बक युद्ध करने के लिये इस नवीन औा

भयंकर बैरी के सन्मुख एक बडीसेना भेजने का निश्चय किया। इस युद्व का कार्य चलाने के लिये योद्धाओं में मेरिअस औ सिला ये दो मनुष्य अत्यन्त निपुण दृष्ट पड़े। प्रजा की ओर का योद्धा औ सिम्ब्राई लोगों को जय करनेवाला मेरिअस, यद्यपि उसकाल में सत्तरेक बरस का था तथापि यश प्राप्त करने की उस की बडी इच्छा थी, इसलिये उस ने इस लड़ाई में जाने का उद्योग किया, क्योंकि उस ने देखा कि इस युद्ध में मेरी उमङ्ग औ धन की लालसा पूरी होजांय गीं। राजसभा-वालों औ कुलीनों की ओर का सिला नाम जन योद्धा था, जो अभी इटलीवालों को जीतकर नामी भया था, सोभी इस युद्व का अधिकार पाने के लिये मेरिअस के समान भावित था, और यह अधिकार उस को मिला, परंतु यह नहीं जानते राजसभावालों के कहने से या पाना डालने से। मेरिअस इस युद्व का अधिकार पाने के लिये अनेक निन्दित काम करने लगा, औ नगर में जो महा दुराचारी थे उन से मेल कर, राजसभा में गया, औ कई लोगों को उन में से पकड़ मार गेरा; औ सिला भी उस समय उस सभा में था सो बचने के लिये भागा औ अपनी सेना में आया, जो नोला नगर को घेरे हुए पडी थी। तब राजसभावालों ने मेरिअस के इस अन्याय पने से डर कर मिथ्रिडेटीज़ के सङ्ग युद्व करने की उसे आज्ञा दी। मेरिअस इस अधिकार को पाते ही नगर का स्वामी हुआ, तो सिला के बहुत से मित्रों को मारा, औ उन का धन घरबार छीन लिया। ये समाचार सुनते ही सिला पैंतीस सहस्र ३५००० सेना ले रूम पर चढ़ा; यही पहली बिरियां थी जिस में रूम की सेना रूमही पर लडने को आई। सिला ने सहजही रूम नगर को ले लिया,

औ कई ऐसी व्यवस्था स्थापन कीं जिन से प्रजा की सामर्थ घटी, औ बहुत से मेरिअस के पच्छियों को मरवा गेरा, और मेरिअस आप ही देश छोड भाग गया, तब सिला ने यह कहा जो कोई इस का सिर काट के लावैगा उसे धन मिलेगा। तिस पीछे उस ने निज कटक के लोगों की प्रभुताई नगर में स्थापन की, औ सिन्ना, औ आक्टेविअस को कांसल पदवी दी, औ लोगों को जो कांसल पदवी में किसी को छांट कर भरती करने का अधिकार था सो नष्ट किया, और आप कटक ले पूरब की ओर मिथ्रिडेटीज़ के संग युद्ध करने को गया।

मेरिअस रूम से बच कर इटली के दच्छिण में भाग गया, और जब उस के बैरी बड़े क्रोध से उस के पीछे पीछे आये, तब दहदल में छिप रहा। वहां जब वह पा गया तो कीचड़भरे हुए को बाहर खैंचलिया, औ लाकर बन्दी ग्रह में पटक दिया; परंतु वहां से भी वह निकल आया; औ आफ्रिका में आकर आश्रय लिया; उस खण्ड का अधिपति सिला की ओर का था, उस ने मेरिअस को कहला भेजा कि तुम अभी इस प्रदेश को छोड कर चलेजाओ। मेरिअस ने दूत से कहा कि तुम जाकर अधिपति को उत्तर दो कि मेरिअस को मैंने देखा है कि वह निज देश से निकाला गया है, औ अब कार्थेज नगर के ढुंढों में बैठा हुआ मिला है; ऐसे कहने का आशय यह था कि अधिपति को शिक्षा हो कि संसार की सब बातें स्थिर नहीं हैं, देखो कार्थेज नगर की बुरी दशा जो कोई समैं रूम के समान था; ऐसे ही मैंभी पहले महा प्रतापी था सो अब समय के फेर फार से घटघटा कर महा दरिद्री होगया। वहां से वह जहाज पर चढ़ा औ बड़े जाड़े के बीच समुद्रों को पार किया। इसी बीच रूम में सिन्ना नाम जन कांसल पदवी पर था,

सो निपुण परन्तु दुरात्मा था, उस ने मन से मेरिअस के पच्छियों से मिलाप किया, तिस पीछे एक घोर युद्ध हुआ जिस में उस को नगर से भागना पडा उस ने फिर सेना इकट्ठी कर, अपने बचे खुचे लोगों को मिला, मेरिअस को साथ ले, रूम पर धावा कर उसे बड़त पास से घेर लिया। आक्टेविअस कांसल श्री मेटेलस जिस का अभी जुगर्था की लडाई में वर्णन हो चुका है, इन दोनों ने यद्यपि नगर की रच्छा की, तथापि नगर निवासी ऐसे घबराये कि राजसभावालों को नगर मेरिअस के हाथ देना पड़ा। केवल एक बात उन से माङ्गी कि कोई नगर निवासी न मारा जाय, यह बचन तुरन्त मेरिअस ने अङ्गीकार किया, परन्तु फिर निर्लज्ज होकर तोड़ गेरा। श्री मेरिअस ने कहा कि जब तक लोग हमारे देश निकाला करने की व्यवस्था को बिपरीत नही करैंगे, तब तक हम नगर में प्रवेस नही करैंगे; परंतु जब राजगामी नगर निवासियों का मता लेते थे, तभी मेरिअस निज क्रोध को न रोक सका, श्रीर चार सहस्र ४००० दाश साथ ले नगर पर झपटा, श्री निज शत्रुश्रों को बध करने लगा। तिस पीछे उस ने धीरज से अपना पलटा लिया, श्री जिन मनुष्यें में उस ने शत्रुभाव का कुछ संदेह भी जाना, उन की कटा करवाई; इन में कई अत्यन्त नामी नगर निवासी मारेगये। जब वह ऐसे महा अनर्थ के काम करता था, तभी ईसवी शक के पूर्व्व ८७ के बरस में जब उस की अवस्था ७९ बरस की थी, तप चढ़ी श्री मर गया।

अब हम सिला के कर्म्मों का बर्णन करैंगे। अभी लिखचुके हैं किरोड्ज़ उपद्वीप को छोड कर एशिश्रा मइनर में रूमियों का जितना अधिकार था, एकही बरस के युद्ध में

मिथ्रिडेटीज़ ने सब ले लिया औा रोड्ज़ को भी घेर लिया। थोड़े ही काल पीछे उस ने आज्ञा की कि जो जो रूमी एशिआ मइनर में बसते हैं उन का संहार करो; तब अस्सी सहस्र ८०००० मनुष्य एक दिन में मारे गये; उन का धन लूट लिया, औा जो कागज, पत्र, सनद, उन के घरों में मिले उन्हें जला दिया। इस सर्व नाश करनेवाली आज्ञा से स्पष्ट बोध होता है, कि रूमी महा अन्याय करते थे, जिस के कारण उन की एशिआ संबंधी प्रजा के मन में बडा बैर उपजा था। सब लेख, कागज, पत्रों के जलने से रूम में एक बडा भारी घबराहट फैलगया। परंतु सिला इस महा हत्या का पलटा लेने के लिये गया। तिस पीछे मिथ्रिडेटीज़ ने एशिआ की लूट पाट कर, निज अत्यंत निपुण आर्कैलेअस नाम सेनापति की आज्ञा में यूनान को कटक भेजा; वहां रूमी एथेंसवालों को बडा दुख करा करते थे, इस कारण से, वे अपने और राज्यों करकै सहित उस सेनापति के पक्षी होगये। ईसवी शक के पूर्व ८७ के बरस में यूनान के बीच सिला उतरा, औा ऐथेंस का घेरा करके युद्ध का प्रारंभ किया, दो बरस पर्यन्त इस नगर ने उस के सब उद्योग व्यर्थ कर दिये, परंतु अंत में सिला के हाथ आया, तब उस ने आज्ञा की कि सब नगर भर के लोगों को कटा कर गेरो। इस के पहले यूनान में कभी ऐसा संहार नहीं भया था; रुधिर गलियों में फैलगया, औा नगरद्वारों के बाहर वह निकला। परंतु जब प्रथम क्रोध उस की सेना का ठंडा पडा तब सिला ने अपने मित्रों की बडी भारी बिनती से उन लोगों का जीव बचाया जो शेष रहे थे। एथेंस के छुटने से मिथ्रिडेटीज़ का आर्कैलेअस सेनापति बिओशिआ के निकट किरोनिआ स्थान में गया, जहां

सिला ने उस के संग युद्ध किया, यद्यपि रूमी सेना थोड़ी थी, तोभी उस ने आर्केलेअस को हरा दिया, केवल दश सहस्र १०००० मनुष्य बैरी की ओर के रण भूमि में बचे। तिस के थोड़े ही पीछे पांटस के राजा के डारीलेअस नाम सेनापति ने नवीन कटक लेकर उत्तर दिसा से आ यूनान में प्रवेश किया, सो भी आर्कोमिनस स्थान पर संपूर्ण रीत से पराजित भया। मिथ्रिडेटीज़ ने इस दोबेर की हार के समाचार सुनते ही आर्के-लेअस को लिखा कि जिस नियम से बने उसी नियम से सिला के संग संधि करलो। औा सिला को भी संधि करने की इच्छा थी इसकारण से कि रूमियों ने कटक देकर मेरिअस के एक सेना पति को उस की पदवी छीनलेने के लिये भेजा था। औा मिथ्रि-डेटीज़ को भी संधि करने की बड़ी चाहना थी, क्योंकि फिंब्रिआ नाम सेनापति ने एशिआ में आते ही उस राजा के एक पुत्र को हरा दिया था, औा पइटेनीज़ स्थान में राजा को घेरलिया था। इस जय के पीछे फिंब्रिआ ट्राय नगर के निकटवर्ती देश की लूट पाट करने गया, इस कारण से शीघ्रता पूर्वक सिला को एशिआ में आवना पड़ा। जोंही उस ने हेलेस्पांट मुहाने को पार किया, तो मिथ्रिडेटीज़ उसे मिला, तब उस ने सिला के कहे हुए नियमों के अनुसार संधि की; सो बचन ये थे कि तुम एशिआ मइनर औा पैफ्लेगोनिआ रूमियों को फिर दे गेरो, बिथिनिआ, औा कैपेडोशिआ उन के राजाओं को समर्पण करो, औा सत्तर युद्ध के जहाज सहित चालीस लाख ४०००००० रुपये हमें दो। सिला इस रीत से बचन ले कर फिंब्रिआ के ऊपर चढ़ा, जो अपनी अधिक सेना को भागती ऊई देख आपही तरवार से अपना अपघात कर मररहा। सिला ने जब देखा कि एशिआ में अब ईको शत्रु हमारा

साम्हना करनेवाला नही तब अपने दल कोउस देश के लूटने की आज्ञा दी, सो अद्वितीय रूप से महाधनी भया। और सिलाने उन प्रदेशों के लोगों को छोड कर जो दृढ रूप से रूमियों की ओर रहे थे, सबों को बडा भारी दण्ड दिया, औा आप इस प्रकार से चार करोड़ ४०००००००० रुपये ले ईसवी शक के पूर्व निज बैरियों से पलटा लेने के लिये इटली को फिरा।

इस बीच रूम अर्थात् सब इटली मेरिअस के पक्षियों के अधिकार में थी। कांसल लोगों ने सुना कि जयवन्त सेना, बडा जहाज समूह, औा अतिशय भण्डार सहित सिला निकट आ पडुंचा, तब तो वेभी नवीन युद्व के लिये कटक जोड़ने लगे, औा जहाज बनाने। उस समय उन्हों ने इटली के नाना बिभागों में से दल इकट्ठा किया, सो गिनती में दो लाख था; औा दो बरस के बीच इस देश संबंधी महाभारथ में कई भारी युद्व भये, पर सब में सिलाही जयवन्त भया। इस प्रकार से इटली निज नगर निवासी के हाथ से रुधिर करकै प्लावित हो गई। निदान सिला इटली को लेकर, अपने बैरियों को दण्ड देने के लिये उपस्थित हुआ। रूम नगर जो पृथ्वी भरका प्रभू था, सो अपने ही नगर निवासी के हाथ नष्ट भया। उस ने राजसभा को इकट्ठा किया, औा जब उन से बात चीत करता था, तब उस ने आठ सहस्र मनुष्यों को बांधा, औा मरवागेरा। उन के हाहाकार से राजसभावाले डरे; परन्तु सिला ने अमलीन मुख होकर उन से कहा कि ध्यान धरो जो मैं वखान करता हूं, ये दंगई मनुष्य जिन को मैंने दण्ड किया है, औा रोते झींखते हैं, सो थोड़े हैं। तिस पीछे उस ने रूम की कटाकी, औा जिसपर

संदेह भी था कि यह मेरिअस की ओर का है, उन में से एक को भी न छोड़ा; यहां तक कि उस के मित्रों ने भी उस की छुट्टी से अपने अपने बैरियों को मरवाया। द्वेष पाप रूप होगया, औ सिला के साथियों ने जिस किसी को अपने आश्रय से मरवाने की ईच्छा की सो न बचसका। जब उस के मित्र मेटेलस ने राजसभा के बीच उस से पूछा कि इन आपदाओं का कब अन्त आवैगा, तो सिला ने केवल यह उत्तर दिया कि मैं भी अभी तक नहीं जानता किस किस को जीता छोड़ूंगा। ऐसी वार्त्ता से अगले दिन, जिन मनुष्यों को उस ने मारने की व्यवस्था दी थी, उन का नाम एकपत्र पै लिखकर चोराहे में लटका दिया, औ कहा जो कोई इन का सिर काट कर लावैगा, सो अतिशय धन पावैगा; दास लोगों को अपने अपने स्वामियों के मारने की छुट्टी दी, औ पुत्रों को पिताओं का बध कराने के लिये साहस बंधाया। जिन लोगों के बध करने की व्यवस्था दी थी उन की संपत्ति लूटी, औ इस दुरात्मा सिला के अनुयायियों को मिली। दिन दिन नये नये नाम इस मृत्युजनक पत्र में लिखे गये, यहां तक कि अन्त में संख्या के बीच चार सहस्र सात-सौ भये। जो लोग मारेगये थे उन की संख्या लिखे हुयों की अपेक्षा बहुत अधिक थी, औ रूमही के एक इति-हास वेत्ता ने कहा है, कि मिथ्रिडेटिज़ जिस का अभी वर्णन हो चुका है, उस की बध कारी आज्ञा की अपेक्षा, सिला के हाथ से रूमी लोग अधिक मारेगये। औ इस बर्णन में विश्वास भी हो सकता है; क्योंकि सिला की ओर के भेदी लोग इटली में फैलगये, औ उन लोगों का बध करने लगे, जिन पर संदेह भी था, कि इन्हों ने मेरिअस के पक्षियों की सहायता

की है। मेरिअस के पच से जो लोग मरे उन की अपेक्षा धन के कारण अधिक बध भये, क्योंकि सिला लोगों की हत्या ही करता रहा जब लग उस के अनुयायी महाधनी न भये। इटली में पांच नगरों को ढवा कर धरती के समान करवा दिया; औ सब नगर निवासियों का संहार करवा, उन की संपत्ति बिकवा गेरी।

इन हत्याओं के पीछे सिलाने सदा के लिये डिक्टेटर पदवी ली औ एक व्यवस्था चलाई जिस के कारण सब नगर निवासियों के जीव, औ धनपर उस की अटल सामर्थ्य ऊई। इस प्रकार से रूम की खाधीनता लुप्त भई; इस कारण से कि यद्यपि सिला के मरने के पीछे, खाधीन पने का कुछ आभास प्रधान कर्म कारकों के छांटने में रहा, तो भी नगर की सभा एक या दो पराक्रमी नगर निवासियों के आधीन रही। सिलाने डिक्टेटर पदवी का दो बरस भोग किया, इस काल में उस ने रूम की मूल व्यवस्था संपूर्ण रूप से पलट गेरी। उस की संपूर्ण व्यवस्थाओं में प्रजावर्ग के अधिकार छीन लेने के आशय थे, औ राजसभावालों के अधिक करने के। राज सभा के लोगों की संख्या उस की औ मेरिअस की आज्ञा से बध होने के कारण न्यून हो गई थी सो नइट पदबीवालों में से लेकर पूरी करी। उस ने प्रजा के ट्रिब्यूनों से व्यवस्था बनाने की सामर्थ्य ले लई, औ उन की प्रतिष्ठा घटाने के अर्थ यह आज्ञा दी कि जो कोई ट्रिब्यून पदवी में था, सो और उच्च पदवी नही पावेगा। उस ने नइट लोगों से न्याय करने की सामर्थ्य छीन फिर राजसभावालों को समर्पण की। यद्यपि राजसभावालों को पूर्व्ववत् प्रतापवान् करने की उस में सामर्थ्य नथी, तथापि इत्यादि नियमों से उस ने फिर राजसभा-

वालों को उन के पहले अधिकार दे दिये। इसी समैं में उस ने नगर निवासियों, ग्रै अन्य अन्य लोगों की भूमि छीन कर अपने एक लच पदातियों को दे गेरी, इस कारण से उन मनुष्यों ने उस की अत्यन्त सहायता की।

इस प्रकार से सिला ने अपनी अत्यंत उच्च अभिलाषा पूरी करीं; जब वह अटल सामर्थ सहित रूम के महा राज्य का निष्कंटक भोग करता था; एकदिन अकस्मात् ऐसी अडिग सामर्थ ग्रै महापद को छोड निर्मोही हो, इकेला क्यूमा नाम स्थान में वास करने के लिये जा रहा; बड़ा अचंभा है कि सहस्रों मनुष्यों की कटा उस ने की थी, पर उन के कोई संबंधी ने भी उस के मारने का बिचार न किया, ग्रेर वह वहां अपने मन से सहायता रहित होकर इकेला रहता था। जिस समय वह क्यूमा में था उस ने अपनी आयु का वर्णन लिखा ग्रै लंपटपने के कर्मों में रहा; तब उस को एक महा निंद्य रोग हुआ; ग्रै मरने के पहले शरीर में कीड़े पड़ गये। उस ने मरते समय निज समाधि के पत्थर पर लिखवाया कि जैसा हम ने अपने मित्रों पर अनुग्रह किया, ग्रै शत्रुओं को दण्ड दिया, ऐसा कभी किसी ने नहीं किया, उस की चाल का यह अत्यंत ठीक वर्णन है। मेरिअस ग्रै सिला के बीच जो युद्ध हुआ, उस में २०० तो राजसभावाले मारेगये, जिन में ३३ कांसल हुए थे, ग्रै डेढ़ लाख नगर निवासियों का संहार भया। सिला ईसवी शक के पूर्व्व ७७ वें बरस में मरा।

यह स्पष्ट है कि रूम नगर बिना एक स्वामी के नहीं रह सकता था, इसलिये कांसल लपिडस ने सिला की मृत्यु के समाचार पाते ही रूमी महा राज्य का अधिकार करने के

लिये इच्छा की; परंतु उस का उद्योग बिफल भया, क्योंकि उस के संगी दूसरे कांसल पदवीवाले ने उसे दो बेर हरा कर ऐसा दबाया कि उसे सार्डिनिश्रा को भागना पड़ा, और वहां ही मारा गया। रूमी सेनापति जिन की बडी बडी अभिलाषा थीं, इन अनेक प्रकार की लड़ाइयों में उन सबों के गुण जान पड़े विशेष करके पांपी श्री कैसर के; रूमी मूल व्यवस्था की समता जाती रही; यद्यपि यह बात संभव नहीं दिखाई देती कि रूम का महा राज्य एक स्वाधीन स्वामी बिना बहुत काल रह सके, तो भी सिला के राज्य छोडने से, श्री आगष्टस कैसर के सिंहासन पर बैटने तक ४७ बरस बीते, कैसर को राज्य मिलने से रूम की स्वाधीनता संपूर्ण रूप से जाती रही।

सिला के मरने के पीछे रूमियों ने प्रथम भारी युद्ध स्पेन के बीच सर्टोरिश्रस से किया, जो मेरिश्रस की ओर के लोगों में अत्यन्त गुणी सेनापति था। वह सिला के संग युद्ध करने के समय अपने संगियों की निपुणाई न देख, घिण करके ईसवी शक के पूर्व ८२ के वर्ष में स्पेन को चलागया, श्री वहां स्वाधीन होकर १० बरस तक रहा। रूम की संपूर्ण कथा में सर्टो-रिश्रस से अधिक प्रेम करने योग्य श्री गुणी नहीहै। वह पिरेनीज़ पर्वत को पार कर, स्पेन में पांव रखते ही सेना इकट्ठी करने लगा, तभी पोर्तुगाल के लोगों ने रूमियों के सङ्ग युद्ध करने के हेतु, अपने कटक का अधिकार देने के लिये उसे बुलाया; यह बात उस ने बडी प्रसन्नता से मान ली। श्री शीघ्रता से पोर्तुगालवालों के मन में अपना अत्यंत बिश्वास उपजा दिया, श्री स्पेनवालों ने भी उस का भरोसा जान उसे दूसरा हैनीबल समझा। वह युद्ध के सब गुणों में

पूरा था, केवल थोडीसी ८००० सेना ले रूमी चार सेना पतियों के साम्हने अडारहा, जिन का मिला ऊआ कटक गिनती में एक लाख वीस सहस्र से घट न था। उस के संग जो रूमी प्रधान लोग औा राजसभावाले गये थे, उन की एक सभा बनाई, औा कहा कि यही ठीक रूमी राज सभा है, औा उस काल में जो रूम के बीच राजसभा थी, कहा कि उस में सिल्ला के दास हैं। उस ने बड़े लोगों के लिये स्पेन के बीच विद्या पढ़ने के अर्थ स्थान स्थान में पाट शाला बनाने का उद्योग किया, औा प्रजा को सुधारने के हेतु एक उपाय भी न छोडा। परन्तु उस ने रूम की आज्ञा-माननी छोड दी, इसलिये कि उस समय वह नगर उस के शत्रुओं के आधीन हुआ, तब रूमियों को उस का जय करना आवश्यक हुआ। तिस पीछे रूम से जितने सेनापति उस से लडने को आये, सब हारकर लज्जित हो फिर गये, सब के पीछे प्रजा का प्यारा औा नामी पांपी सेनापति उसे जीत ने को आया, परंतु सर्टोरिअस ने उस के सब उपाय बिफल करके बारंबार उस की सेना को हरादिया। निदान दस बरस के महा युद्ध के अनन्तर उसी के पर्पेन्ना नाम सेनापति ने उसे छिप के मार गेरा; पर्पेन्ना के इस बिश्वासघात पने का एक तो यह कारण था, कि वह सर्टोरिअस से ईर्षा रखता था, औा दूसरा कारण उसे धन मिलने की आस थी, कि पांपी के सङ्गी ल्यूकल्लस ने कहदिया था कि जो कोई सर्टोरिअस को मार डालैगा उसे हम वडा फलदेंगे।

जिस बरस में सर्टोरिअस मारागया, उसी बरस में मल्ल-योद्धाओं के संग इटली में लडाई भई। ये मनुष्य बंदुवे थे जो युद्ध में पकड़े हुए आये थे, तिस पीछे उन्हें दास बनाकर

आपस की काटा करना सिखाया, इस काम से रूमी व्योहार के दिन अपना चित्त प्रसन्न करा करते थे। युद्ध के होने से वे दास पदवी में पड़े, तिस के पूर्व्व वे रूमियों के समान स्वाधीन औा कुलीन थे। कैपुआ स्थान में उन की एक मण्डली थी, उस ने अपनी इस दासपने की दसा से घिनकर, स्वाधीन होने के लिये, अपने ही में से एक दुखी स्पार्टकस को सेनापति ठहरा, अपने स्वामियों से युद्ध करने का निश्चय किया। यह स्पार्टकस सर्टोरिअस के समान था, औा परिणाम दर्सी परिमिताचारी, औा युद्ध के गुणों में पूरा; कहां तक कहैं कि उस का केवल दास पने का भेष था, पर मन से बीर पुरुष। इन मल्ल योद्धाओं की संख्या ऐसी बढी, कि उन्हों ने तीन बरस तक रूमियों के सब उद्योग बिफल करदिये। स्पार्टकस ने चार रूमी सेनापतियों को हरा दिया, तिस पीछे उस के पास चालीस सहस्र सेना थी। परन्तु उस ने अपने मन में निश्चय जान लिया कि ये मल्ल योद्धा अन्त में रूमियों के अद्भुत पराक्रम करकै मारे जांयगे, इसलिये उस ने उन्हें इटली की संपूर्ण लंबाई में हो, आल्पस पर्बत को पारकर अपनी अपनी जनम भूमि में जाने का बोध कराया, कि वहां स्वाधीन होकर प्रसन्नता से रहैंगे। परंतु उन्हों के मन में आया, कि इटली को औा विशेष करके रूम को लूटैंगे, इसलिये स्पार्टकस के अति उत्तम बिचार का निसेध किया। तिस पीछे रूमियों ने अतिपराक्रमी दल सहित क्रासस सेनापति को उन से युद्ध करने के लिये भेजा; उस ने इन मल्ल योद्धाओं को हराकर उन की सबकी सब चालीस सहस्र सेना की रणभूमि में काटाकर गेरी, औा राजद्रोह पना मिटाया। औा स्पार्टकस बीरता के अद्भुत काम कर के घायल

हो रण भूमि के बीच खेत रहा; यह दृत्तांत ईसवी शक के पूर्व ७० वें बरस में भया।

सिला की व्यवस्था के द्वारा राजसभावालों को फिर न्याय करने की सामर्थ मिली थी, लोगों ने कुछ काल तक उस की बहुत परीक्षा की, औ निश्चय किया, कि इस से केवल बुरेही कामों की अधिकाई भई। उस काल में रूम के राज्य का काम बडी भारी घूंस पत्तर से चलता था। बड़े बड़े मनुष्यों ने प्रदेशों में नियुक्त होके प्रजा को लूट धन इकट्ठा किया इस आस पर कि रूम में जाकर नये नये काम मोललेंगे। औ उन अभागे लोगों पर जो अन्याय होता था, उस का अभियोग रूम में करने से, उन्हों ने कुछ सहायता न देखी, इस बिचार से कि जो लोग हमारे संग अन्याय करनेवाले हैं, वेही वहां हमारे अभियोग का निर्णय करने हारे हैं। रूम में ऐसी नीत बिगड़ गई थी कि कोई में यह सामर्थ न भई कि बड़े मनुष्यों या धनी लोगों पर उन के अन्याय का दोष लगावें। यद्यपि न्याय करने की सामर्थ नइट पदवीवालों को मिली, यह बहुत बुरा भया क्योंकि कर का रुपया भी वेही इकट्ठा करते थे, औ जब फिर यह सामर्थ नइट पदवीवालों से छिन कर धन की लालची राजसभा को मिली तो और भी अत्यंत बुरा भया क्योंकि उस में अति पापी मनुष्य थे जो और २ राज्यों को लूट खसोट कर आये थे। इस लिये पांपी ने एक अच्छी व्यवस्था चलाई, जिस से न्याय करने का काम राजसभावालों, नइट पदवीवालों औ द्रिब्यूनों को मिला।

अब हम समुद्र के डकैतों के संग जो प्रसिद्ध युद्ध भया तिस का वर्णन करेंगे। वे सिलिसिआ के निवासी थे, जो देश भूमध्यस्थ समुद्र के उत्तर तट पर एशिआ मइनर में है। एशिआ

मइनर के खेद से औ रूमी अधिपतियों के अन्याय से वे डकैती करने लगे। जो लोग उन के हाथ पड़ते उन्हें पकड़ कर डीलास उपद्वीप में ले जाते, वहां इटली निवासी धनी लोगों के हाथ उन्हें बेच गेरते, औ वे उन्हें खेती के काम में लगाते; यह उपद्वीप इस कारण से एक बडा दास लोगों का बेोपार स्थान हो गया। प्रथम वे केवल एशिआ मइनर के तट पर लूट करते थे, परंतु जब रूमी अपने देशही के झगडों में लगे, तब उन्हें दूर दूर तक लूट करने का साहस भया, निदान उन्हों ने बड़े बड़े युद्ध के जहाज बनाये, औ अचानक उन नगरों की लूट की जो रक्षा करके हीन थे। जो जो रूमी सेनापति होकर उन से लड़ने को आये उन्हें हरादिया, तब उन्हों ने सिलिसिआ में एक प्रकार का राज्य स्थापन किया, इस देश के तट पर आवना कठिन पड़ै था, इस कारण से कि वहां समुद्र में बड़ी बड़ी सिला थीं, औ उन्हों ने दूर तक समुद्र के तट पर लूट की वस्तु रखने के लिये भण्डार बनाया औ टूटे फूटे जहाजों को सुधारने के लिये औ शस्त्रों का स्थान बनाया। उन की सामर्थ ऐसी बढ़गई थी, कि उन के एक सहस्र जहाज हो गये, जिन पर बहुत अच्छे अच्छे खेवट थे, औ उन जहाजों के अधिपति अनेक प्रकार का भोग करने लगे। उन्हों ने चारसौ नगर ले लिये औ तेरह मन्दिर लूटे जो पृथ्वी भर में धनाढ्य थे। परंतु जितने उत्पात उन्हों ने किये उन सबों में खाने की वस्तुओं के थोड़े होने से रूम को बड़ा खेद उपजा। क्योंकि रूम में इधर उधर के देशों से समुद्र के पथ हो कर अन्न आवता था तब वहां का काम चलता था; इन डकैतों ने वहां अनाज जाने के सब मारग रोक दिये, इस कारण से पृथ्वी

भर का प्रभू रूम नगर डकैतों के हाथ से भूखा मरने लगा। इसलिये शीघ्रता से इन डकैतों को दबाने के हेतु बड़े पक्के उपाय करने पड़े। ऐसे कामों में ईसवी शक के पूर्व ६६ के बर्ष में पांपी के एक अनुचर गैबिनिअस नाम जनने लोगों से कहा कि जो पांपी को पूरी सामर्थ मिले तो वे सब डकैतों को जड़ से उखाड़ गेरैं। तब राजसभावालों औ नगर के मुख्य मुख्य लोगों ने वे दुख स्मरण करे जो सिलाने पूरा पराक्रम पाकर इटली को दिये थे, इसलिये उस बात की अत्यंत करके नाही करी; परंतु पांपी प्रजा को बड़ा प्यारा था, इसलिये प्रजा के लोगों ने राजसभा वालों का कहना न माना। और उन्होंहीने पांपी को आज्ञा दी कि तुम इस चढाई के लिये सवा लाख सेना, पांचसौ जहाज, औ एक करोड़ से अधिक अधिक रुपये भण्डार में से लो। पांपी ने आपही पराक्रम सहित औ बुद्धवानी से इस युद्ध में ऐसे काम किये कि इटली से बिदाहोने के पीछे चालीस दिन के बीच में सब डाकुओं को रूम के राज्य से निकाल बाहर किया। इस काम को झट पट औ जस सहित पूरा करने से औ रूमियों का अकाल का भय दूर करने के कारण पांपी का बडा भारी मान ऊआ औ उस के मन में मिथ्रिडेटीज़ के सङ्ग युद्ध करने का अधिकार लेने का बड़ा आशय था सोभी होता दिखाई दिया; सर्टोरिअस, स्पार्टकस, औ डाकुओं को हराने के पीछे केवल मिथ्रिडेटीज़ शत्रु हराने के लिये रहा था।

ईसवी शक के पूर्व ८५ के बर्ष में सिला औ मिथ्रिडेटीज़ में जो संधि भई वहां से लेकर और थोड़े बरसों का पिछला बर्णन एशिआ के वृत्तान्तो का करैंगे। अभाग था कि यह संधि केवल कहने ही पर भई थी, कुछ लिखा पढ़ी नही ऊई

थी, इस छल से रूमी म्यूरेना सेनापतिने सिला की गद्दी पर बैठने से बरस दिन या दो बरस पीछे मिथिडेटीज़ पर चढाई कर दी। इस बात पर उस राजाने अभियोग किया तब म्यूरेना को सिला की आज्ञा से यह उद्योग तजना पड़ा क्योंकि वह उसकाल में रूम के बीच सब से बली था। इस चढाई को मिथ्रिडेटिज़ का दूसरा युद्ध कहते हैं। ईसवी शक के पूर्व ७५ के बरस में बिथिनिआ के निकोमिडीज़ नाम राजा ने मरते समय निज राज्य का संकल्प कर रूमियों को दे दिया, इस बिथिनिआ देश की एक सीमा पर रूमियों का राज्य था, औ दूसरी ओर मिथ्रिडेटीज़ का अधिकार। मिथ्रिडेटीज़ के मन में इस राज्य को लेने की बहुत काल से लालसा थी, इसलिये उस ने उस राजा की बात न मानी औ जहाज समूह औ सेना सजा कर, थल की बाट होकर औ समुद्र पथ से भी उस पर धावा करदिया; इस रीत से तीसरी मिथ्रिडेटिज़ लड़ाई भई, जो दस बरस तक रही। ल्यूकलस जो उस बरस में कांसल पदवी पर था, वह एक उत्तम सेनापति पर बड़ा उड़ाऊ खरचू, उस ने बुरे बुरे कामों से इस युद्ध का अधिकार पाया, जिस में उस ने जाना कि मैं बहुत धन लाऊंगा। यद्यपि उस का कटक मिथ्रिडेटीज़ की सेना से बहुत थोडा था, तो भी वह बहुत काल तक जयवन्त रहा। मिथ्रिडेटीज़ ने सिज़िकम को घेर लिया था, जो एशिआ मइनर में मुख्य स्थान था। ल्यूकलस ने उस स्थान का घेराछुडा ने के लिये उसे दबाया, जिस में उस राजा के तीनेक लाख मनुष्य ठोड रहे। थोड़े ही काल पीछे ल्यूकलस ने राजा के जहाज समूह को हराकर उस राजा को बिथिनिआ से निकलवा दिया। तिस पीछे जयवन्त होकर उस ने मिथ्रिडे-

टीज़ को उसी के उत्तराधिकारी अधिकार में भगाया औा यद्यपि उस राजा ने बड़ाभारी कटक टार्टरी देश से इकट्ठा किया था, तोभी उस ने उस भूप को ऐसा दबाया कि जिस के कारण ईसवी शक के पूर्व ७९ के बरस में उसे अपने जमाई टइग्रेनीज की शरण लेनी पड़ी, जो आर्मीनिआ का राजा था।

टइग्रेनीज़ में गुण का नाम भी न था, तिस पर भी वह उस काल में एशिआ के बीच सब से बली राजा कहावता था। जब उसे उत्तराधिकार से आर्मीनिआ का सिंहासन मिला, जो देश लंबाई चोड़ाई में बहुत छोटा था, तब उस ने अपना राज्य बढ़ाने का बिचार किया। उस ने झट मेसोपोटेमिआ को जीत लिया, अरब को अपने आधीन किया, औा सिरिआवालों की रक्षा की। ये देश टइग्रेनीज़ के साहस से इतने नही पराजित भये जितने अपने डरपोकने पन से; औा पढनेवालों को आपही इन देशों की दुर्बलता का ठीक ज्ञान हो जायगा जब वे जानेंगे कि ये देश टइग्रेनीज़ ही के आधीन हो गये थे। वह इन देशों को जीतने से फूल कर महा अभिमानी हो गया, औा अपना नाम राजाओं का राजा रखवाया। इसलिये जब उसी रूमी सेनापति ने टइग्रेनीज़ से कहला भेजा कि मिथ्रिडेटीज़ को अभी हमारे हाथ में पकड़ा दो, उस राजा ने पचीस बरस से कभी ऐसी अभिमान की बात नही सुनी थी, परंतु उस ने धीरज रखकर उत्तर दिया कि हम अपने सुसरे को कभी नही छोडेंगे, औा झट पट युद्ध करने के लिये उपस्थित भया। रूमियों की सेना, औा आर्मीनिआ का कटक दोनों टइग्रेनासर्टा के निकट आमने साम्हने हुए, उस नगर को टइग्रेनीज़ ने बसाकर अपनी नई राज

धानी बनाया था, औा उस के बढ़ाने औा सजाने में बड़ा दुख उठाया था। ल्यूकलस की सेना केवल तेरह सहस्र थी; औा बैरी दल दो लाख साठ सहस्र। ल्यूकलस थोड़ा सा कटक ले कर ऐसी भारी सेना के साथ लड़ने से बड़ा दोषी ऊआ था; परंतु वह अपने शत्रु की दुर्बलता औा कायरपना अच्छी रीतसे जानता था, औा निज पुरानी औा बली सेना पर बडा भरोसा रखता था। निदान रूमियों की जय भई; बैरी की ओर के एक लाख मनुष्य औा सब घोडों की सेना मारी गई। आर्मीनिआवाले ऐसे सहज ही में हार गये, कि रूमियों को ऐसे तुच्छ शत्रुओं के साम्हने तरवार खैंचने से भी बडी लज्जा भई। इस से अगले वर्ष में अर्थात् ईसवी शक के पूर्व ६८ वें में आर्टैक्साटा स्थान पर ल्यूकलस ने फिर टइग्रेनीज़ को जीत लिया, जिस के कारण वह झूठा प्रतापी राजा संपूर्ण रूप से दीन हो गया।

परंतु इस काल के थोड़े ही पीछे रूमियों की हार होने लगी। ल्यूकलस इस से पहले सब चड़ाइयों में बड़ा भागवान रहा, औार अब भी रण में तो कभी नहीं हारा, पर औार २ कामों में उसे अशुभ होने लगा। उस का कटक आपही आप शोक मय होकर वारंवार बखेड़ा करने लगा। मिथ्रिडेटीज़ जो सदा उद्योगी औा सावधान था उस ने यह अच्छा अवसर जान बऊधा निज सब राज्य फिर लेलिया, जिस को ल्यूकलस ने उस से छीन लिया था, औा यह रूमी सेना-पति उसे रोकने के लिये कुछ भी उद्योग न करसका। इसी बीच ल्यूकलस का बिरोधी रूम नगर में प्रबल ऊआ, औा प्रजा के लोगों ने मिथ्रिडेटीज़ के सङ्ग युद्ध करने का अधि-कार पांपी को दिया, सो इस प्रकार से ईसवी शक के पूर्व ६७

के बरस में सेनाधीश भया। एक ही बरस पीछे उस ने उफ-रात नदी के तीर पर रात समैं मिथ्रिडेटीज़ को हराकर ऐसा दबाया कि वह केवल आठसौ मनुष्य लेकर भागगया। इस आपत में उस ने फिर सहायता के लिये टइग्रेनीज़ से प्रार्थना करी, तब इस निर्लज्ज, औ कायर राजा ने रूमियों के भय से केवल उस राजा को बचावने ही के लिये नाहीं न की, पर यह भी डौंडी फिरवादी कि जो कोई मिथ्रिडेटीज़ का सिर काटकर लावैगा सो बड़ा धन पावैगा। यद्यपि यह पांटस का राजा सत्तर बरस से अधिक औ महा आपदा में था तो भी उस का साहस कुछ भी न घटा, औ उस ने टारस से ले आल्पस पर्वत के बीच जो पहाडी थे उन में से सेना इकट्ठी करने का बिचार करकै हैनीबल के समान एका एकी इटली पर झपट रूम तक की काटा करना ठहराया। परंतु उस का फ्रेएटिज़ नाम पुत्र उसे त्याग कर चलागया, इस से उस की सब कामना एका एकी बिफल होगईं औ अत्यन्त रूप से निरास भया इस कुदशा में उस ने बिचारा कि रूमियों के हाथ पकड़ाई खाना अच्छा नहीं इसलिये आप ही बिष पान किया, जो सदा अपने संग रक्खा करता था, औ ईसवी शक के पूर्व ६३ के बरस में इस रीत से मरगया। इस प्रकार से बिलाप करानेवाली मौत मिथ्रिडेटीज़ की भई, उस के समान अत्यन्त भयंकर बैरी रूमियों को डेढ़सो बरस से कोई नहीं मिला था। वह अपने महा साहस औ अनेक गुणों के कारण निस्सन्देह अद्भुत मनुष्य था, औ उस के अद्भुत पने का यह एक स्पष्ट प्रमाण है कि उस ने अपनी सुदशा में बाईस देशों का राज्य किया, जिन बाईसों की भाषा वह अच्छे प्रकार से जानता था;

परंतु उस का संपूर्ण प्रताप उस के निर्दईपने के कलंक से छिप गया था।

पांपी इस प्रकार से मिथ्रिडेटीज़ को जीतकर पूरव देश के राज्यों को सुधारने लगा। टइग्रेनीज़ को आर्मीनिआ मेजर दे दिया; ऐरिओबारजे़नीज़ को कैपेडोशिआ देश मिला; फारनेसीज़ को वासफोरस समर्पण किया; यहूदी देश को जय करके हरकेनस को सौंपा; उसी समै सिरिआ, फिनिशिआ देशों को मिलाकर एक प्रदेश बनालिया; पांटस औ पैफ्लेगोनिआ का एक दूसरा प्रदेश; सिलिशिआ, औ पैंफिलिआ का एक तीसरा प्रदेश बनाया औ इन तीनों को रूम के राज्य में मिलालिया। उस समय रूम के अमित पराक्रम को देखकर कोन नही अचंभा करैगा? उस काल के सातसौ बरस पहले राम्यूलस ने टइबर नदी के तीर कई गंवारू झोंपड़ीबनाकर उन में जैसें तैसें थोड़े से पिंडारे इकट्ठे कर बसाये औ उस स्थान का नाम रूम गाम रक्खा। वह गाम एक महा पराक्रमी नगर भया, औ मनुष्य जाति को अपने आधीन किया, उसी नगर के पांपी सेनापति ने एक ही बरस के बीच इटली की अपेक्षा कई बड़े बड़े देशों के राज्य बांट दिये।

पांपी ने ये काम पूरे करके इटली को फिर आने का उपाय किया। तब राजसभावाले वह कष्ट नही भूल गये थे, कि सिलाने मिथ्रिडेज़ की पहली लडाई में जयवंत हो इटली में आते ही रूम को अत्यंत खेद दिया था। इसलिये वे डरते थे कि पांपी भी उसी के समान जीतकर उसी की भांति कुकर्म करैगा, परंतु उस ने इटली में पांव देतेही निज कटक को बिदा करके उन का भय दूर किया। जय के कारण लोगों ने उस की बडी

भारी प्रतिष्टा की, औ उस ने चार करोड़ रुपये से अधिक अधिक भण्डार में लाकर दिये।

जब पांपी पूरब के देशों में युद्ध करता था, तभी कैटेलइन का कुमता रूम में फैला। वह कुलीन था, परंतु द्रव्य उड़ाऊ औ बड़ा भारी छिनला, उस ने बिचारा कि जैसें सिला ने अपना काम पूरा किया था, मैंभी उसी भांति बल से रूम नगर का खामी हो जाऊं। तब सिसरो जो रूम के बीच सब से अच्छा सुबक्ता औ उस बरस में कांसल पदवी पर था, उस ने, कैटेलइन औ उस के संगियों के कुमते प्रगट करदिये, जिस के कारण वे निरास भये, तब उन्हों ने सिसरो के मारने औ नगर के जलाने का जतन किया। सिसरो ने अपनी निपुणाई करके कैटेलइन को नगर से निकलवाया तब वह अपनी सेना में जाकर मिला जो नगर के निकट ही जुड़रही थी। तिस पीछे उस के कुसंगियों को नगर ही में पकड़ा औ मरवा गेरा, औ उस के साम्हने लड़ाई करने को कटक भेजा, जिस से वह भी मारा गया।

उस काल में अर्थात् ईसवी शकके पूर्ब ६२ के बरस में, केवल रूम की राजनीति का आकार रहगया था परंतु उस का एकत भाव जाता रहा था, औ रूम की सामर्थ, इसलिये सब पृथ्वी का पराक्रम कई वहां के प्रधान नगर निवासियों में बंटा हुआ था। उस समय में उन लोगों के बीच पांच जन सबसे मुख्य थे; पहला पांपी जिसे भाग्य का पुत्र कहते थे, उसकी सदा जय रही, औ प्रजा को प्रसन्न किया, इन बातों के कारण वह राज्य में सब से मान्य हुआ। दूसरा कैसर जो कुलीन घराने का था, औ उस काल के बीच युद्ध बिद्या में प्रथम गिना जाता था, औ अपने चमत्कारी गुणों औ अति बुद्धवानी के कारण

प्रसिद्ध था; उसकी उच्च अभिलाषा असीम थीं, जिस के कारण उस ने बारंवार कहा कि रूम के बीच में प्रधान लोगों की गिनती में सब से पिछला मनुष्य होने की अपेक्षा गामें में ठाकुर होऊं तो भला। तीसरा क्रौसस सो कई बार लड़ाइयों में जय पाने के हेतु प्रसिद्ध था, परंतु उस काल में वह अत्यंत धनी औ लोभी था, इसलिये और भी नामी भया; औ उस ने केवल उन्ही लोगों को कहा जो अपने घर से रुपया लगाकर सेना रख सके। चाेथा केटो जिस का सुभाव कठोर था, उस ने इच्छा की कि रूम नगर की फिर पुरानी चाल होजाय जिस में यह था कि प्रजा के लोग औ राजसभावाले राज्य के काम करैं औ अब जैसे एक या दो पराक्रमी मनुष्य अपनी इच्छा से राज काज करते हैं सो न किया करैं, पर यह उस का बिचार बिफल भया। पांचवांसिसरो जो बड़ा मनुष्य था, वह उस काल में अत्यंत सुवक्ता औ नीति विद्या में सब से अच्छा जानता था, परंतु उस के सुभाव में कुछ धीरता नही थी। ये पांच प्रधान जन थे जिन के ऊपर रूमी राज्य के सब मनुष्यों की दृष्ट थी, औ उस राज में बुरा भला करना उन्हीके आधीन था।

इन पांचों के बीच कैसर सब से गुणी था, सो ल्यूसिटेनिआ अर्थात् स्पेन देश का अधिपति भया, तहां उस ने फिर धन प्राप्त किया; रूम से चलने के समय वह बड़ा ऋणी था, उस ने तिस काल कहा कि बीस लाख से थोड़े रुपये हमारा कुछ काम नहीं करसकते। उस ने फिर रूम में आतेही कांसल पदवी पाई, औ पांपी औ क्रौसस से परस्पर के स्वारथ के लिये छुपे २ मेल करकै अपना पराक्रम दृढ करने लगा। इसमेल को प्रथम तीन मनुष्यों का योग कहते हैं। जब उन का ऐसे मेल मिलाप हो

गया, तब कैसर पांच बरस के लिये गाल का अधिपति नियुक्त भया, इस काल में स्विटजर्लैण्ड औ फ्रांस उसी देश में गिने जाते हैं, उस काल के बीच इन देशों के अधिक भाग में रूमियों का अधिकार नही भया था। परंतु कैसर ने गाल में जाने से पहले, निज दोनों मित्रों सहित क्लाडिअस नाम एक जन से मिलाप करके केटो औ सिसिरो को रूम से बाहर निकलवाया; यह क्लाडिअस राज्य भर में बड़ा धनी था, परंतु दुराचारी। केटोको सइप्रस उपद्वीप का अधिकार करने के लिये भिजवा दिया था, औ सिसिरो को देश निकाला दिलवा दिया था। परंतु क्लाडिअस ने अन्याय करके नगर में हुल्लड़ मचा दिया, इस कारण से सिसिरो को बुलाने के लिये पांपी को आज्ञा देनी पड़ी, वह एक बरस दिन देश त्यागी रह कर ईसवी शक के पूर्व ५७ के बरस में रूम के बीच फिर आया।

कैसर ने ईसवी शक के पूर्व ५८ से ले ५० तक अर्थात् आठ बरस गाल देश में युद्ध रक्खा, औ जब तक संपूर्ण रीत से उसे जय न कर सका, तब तक रूम में फिर कर न आया। उस ने अपने युद्धों का बर्णन आपही बडी सूधी औ कथा की रीत से लिखा है इसलिये वह हमें बड़ा मनोहर है। उस का पहला युद्ध हेल्वीशिये अर्थात् स्विटजर्लैण्ड निवासियों के साथ भया, जिन को उस ने संपूर्ण रूप से जीत लिया; तिस पीछे वह गाल को जय करने के लिये अपना कटक पश्चिमी समुद्र के तट पर ले गया, उस दिन से पहले कोई रूमी सेनापति ने उस समुद्र तीर को नही देखा था। उस ने सत्तावनवें बरस में बेल्जी लोगों को सकल रीत से जीत लिया, औ तिस से अगले में औक्विटेनिआ के

लोगों के; औा ईसवी शक के पूर्व ५५ वें बरस में उस ने सुना कि यहां से थोडीसी दूर समुद्र में एक द्वीप है। वह समुद्र पार कर वहां गया और देखा कि वहां के निवासी बड़े वन्य औा खेती करना भी नहीं जानते, औा लिखने पढ़ने की कुछ रीत नहीं परंतु अत्यंत साहसी। यह द्वीप ब्रिटन था, कैसर की चढ़ाई के पहले कोई उस का नाम भी नहीं जानता था कि वह कहां है। पहले बरस में तो उस ने थोडी सी चढाई करी; परंतु अगले बरस में अर्थात् ईसवी शक के पूर्व ५४ के बरस में अधिक सेना लेकर उस में गया, औा लंडन नगर तक जय करता ज्ञआ पज्ञंचा। परंतु फिर गाल को चला आया, औा इंग्लैंड के बीच जितना अधिकार किया था, उस की रखवाली के लिये वहां कुछ सेना न छोड़ी। वह ५४ वें औा ५३ वें बरस में अपनी जयकारी सेना जर्मनी में ले गया, संभव है कि वह इस देश को जीत लेता जो गालवाले बारंबार प्रतिकूल न हो जाते; उस की चढाई से जर्मनी के लोगों को जो भय उपजा तिस को छोड़ कर और कोई चिन्ह उस के वहां जाने का नही है। बिद्यार्थी आपही जानजांयगे कि वह कैसरही था, जो पहलेही पहल रूमी सेना उन देशों में ले गया था, जो अब सकल बिद्याओं के स्थान औा सब पृथ्वी पर आज्ञा करते हैं। देखो बज्ञत काल बितीत होने से क्या क्या उलट पलट हो जाती हैं। कैसर के समय में इटली बिद्या औा सभ्यता के बीच सबों से अच्छी थी, औा सब मनुष्य जाति पर उस की आज्ञा थी, कोई उस का साम्हना करनेवाला नही था। उस काल में गाल, जर्मनी औा ब्रिटन बड़े असभ्य थे, उन में गुण का नाम न था, औा लिखना पढना कुछ नही जानते थे। परंतु अठारहसै बरस के बीच में ये देश सभ्य

हो गये औ पृथ्वी के और और खंडों में यूरप की प्रभुताई कर दी, औ उन्हों ने विद्या औ गुण ऐसे सुधारे कि कैसर के काल में जैसे रूमी ब्रिटन औ गाल की अपेक्षा विद्या में अधिक थे ऐसेंही इस समय में वे रूमियों से विशेष हैं। रूम की पहली उच्चदसा अभी सब जाती रही, औ इटली यूरप के छोटे छोटे राज्यों की गिनती में हो गई।

जब वह गाल में युद्ध करता था, तब उस ने निज पराक्रम अपने मित्रों की सहायता करके रूम में भी रक्खा; औ उस ने जो अनेक जय पाई इस से नगर निवासियों की दृष्ट उस पर रही औ उस का पराक्रम बड़ा पक्का हुआ। इसलिये क्रैसस औ पांपी उस से कुछेक ईर्षा रखने लगे, परंतु वे तीनों इटली के बीच लका स्थान पर इकट्ठे भये, जिस से वह ईर्षा कुछेक काल तक रुकी रही पर जड़ से न उखड गई, कैसर इसी काम के लिये लका स्थान पर आपस के मिलने ही के लिये चला गया था। वहां उन्हों ने नये नये नियम किये कि कैसर और पांच बरस अपना अधिकार गाल में रक्खै। पांपी औ क्रैसस कांसल पदवी में नियुक्त रहै; स्पेन औ आफ्रिका का काम पांपी के हाथ रहै, औ सिरिआ अर्थात् एशिआ का अधिकार क्रैसस को मिलै, इसपिछले को यह आस थी कि मैं पार्थिआ के लोगों पर चढ़कै जाऊंगा औ तहां से बहुतसा धन लाऊंगा। पांपी औ क्रैसस को कांसल पदवी के मिलने में केटो ने बहुतसा विरोध रक्खा क्योंकि वह यह चाहता था कि पराक्रमी एक या दो नगर निवासियों के हाथ में राज्य का अधिकार न रहै। क्रैसस ने थोड़ेही दिन पीछे अपने घरका ही रुपया लगा कर पार्थिआवालों पर चढाई करदी; परंतु जब वह उफरात नदी

को पार कर चुका था, तब ही पार्थिआवालों की ओर के सुरेना नाम सेनापति ने कारे स्थान पर आ उसे संपूर्ण रूप से हरा कर उस का सिर काट लिया, औ उस के अति लोभ की निंदा करने के लिये, सीसा गलवा कर उस के मस्तक में भरवाया, यह कर्म ईसवी शक के पूर्व ५३ वें बरस में भया।

पांपी जो रूम में रहा था उस ने अपनी ओर के कई सेनापति भेज भेज कर अपने प्रदेशों का काम चलाया। क्रौसस के मरने से उस का एक बिरोधी मिटा, औ उस की इच्छा थी कि मैं राजसभावालों औ रूम के राज्य में मुख्य हो जाऊं सो होती दिखाई दी। इसलिये उस ने इकेलेही कांसल पदवी लेने के लिये उद्योग किया, औ आठ महीने तक बड़े भारी झगड़े रहे, तिस पीछे निदान वह पदवी उस इकेलेही को मिली। इस महा पदवी को पाने से उस का झट कैसर के साथ बखेड़ा ऊआ। पांपी कोई अपने बिपक्षी को न देख सका, औ न कैसर अपने से बड़े का सहन कर सका; इसलिये यह बात मन में भी नही आवती कि कैसर जो गाल देश को जीत चुका था, औ अच्छी प्राचीन सुशिक्षित सेना जिस के आधीन, सो बिना लड़ाई किये पांपी को रूम के राज्य भर में गिनती के बीच पहला होने दे। इसलिये इन दोनों के बीच उस काल में ऐसा युद्ध होता दिखाई दिया कि जिस का कोई निवारण न कर सका। बऊत राजसभावाले, औ बऊधा सब बड़े बड़े नगर निवासी पांपी की ओर थे, इसलिये उस ने अपने मन में भरोसा रक्खा कि मेराही काम पूरा होगा, औ उसे प्रथमही यह बिचार करना उचित था कि कैसर मेरा बैरी है, मुझै सावधानी से उपाय करने

योग्य ह, परंतु उस ने कुछ न किये। कैसर ने राजसभा वालों से कांसल पद्वी के लिये बिनती करी, जिस काल में वह रूम नगर से बाहर था, औा यह बात व्यवस्था से उलटी थी कि जो कोई नगर में न होय, उसे कांसल पद्वी मिलजाय, तो भी उसे मिलजाती जो राजसभावाले उस के बध करने का निश्चय न करते। उन्हों ने उस के मन की बात तो कुछ न की औा आज्ञा कर भेजी कि तुम अपनी सेना को त्तितर बित्तर करके सामान्य नगर निवासी की भांति रूम में चले आवो। इस बात से कैसर ने बिचारा कि जो मैं ऐसा किया तो मुझै पांपी के बस होना पड़ैगा, इसलिये उस ने वह आज्ञा न मानी औा कहला भेजा कि जो पांपी भी अपना कटक त्तितर बित्तर करैगा तो मैं वह आज्ञा मानूंगा। कई बेर उन के आपस का मेल मिलाप होने की बात ठहरी पर कुछ ठीक न पड़ी। इसी बीच कैसर अपने दल को आर्मीनिअम स्थान पर ले आया, जो प्रहृत इटली की सीमा पर था, और जिस को राजसभा-वालों की आज्ञा बिना, कटक सहित कोई रूमी सेनापति नहीं पार करता। निदान पांपी ने राजसभावालों को फुसला कर उन से आज्ञा भिजवाई कि हम जिस दिन आज्ञा दें उस दिन जो कैसर अपनी सेना को तित्तर बित्तर नहीं करैगा तो राज्य का शत्रु गिना जायगा। इस बात से, मेल मिलाप होने का सब भरोसा जाता रहा। इस आज्ञा के पहुंच ते ही कैसर ने रूबीकन नाम छोटीसी नदी को पार कर देश संबंधी लड़ाई का प्रारंभ किया।

कटक सहित कैसर के आवने के समाचार रूम में पहुंचेते ही, पांपी औा अधिक राजसभावाले ऐसी झपटी से इटली के दक्षिण भाग में जाकर छिपे, कि राज भंडार का सब द्रव्य भी

छोड़ गये, जो पीछे से कैसर के हाथ लगा, जिस से उस के बड़े भारी भारी काम पूरे भये। पांपी पहले बड़ाई मारा करता था कि जो मैं धरती में ठोकर मारूंगा तो मेरी सहायता के लिये इटली के बीच सेना निकल पड़ैगी; परंतु जब समें आकर पड़ा तब कुछ भी न ऊआ, औ कैसर अति सूक्ष्म काल में अर्थात् ६० दिन के बीच संपूर्ण इटली का खामी हो गया, तब पांपी को केटो औ सिसरो सहित स्थान स्थान में भागना पड़ा, निदान जहाज पर चढ कर यूनान को गये। कैसर अच्छे प्रकार से जानता था कि पांपी का प्रकृत पराक्रम उस की सेना से है जो स्पेन में टिकी भई थी और उस ने बिचारा कि पांपी का पीछा करने से उस कटक का जीतना बड़ा भारी काम है। इसलिये उस ने तुरंत स्पेन का पंथ लिया, औ उस देश में पर्बतों के कारण जाना बड़ा कठिन था, सो कुछ मन में न लाया, औ पऊंच ते ही पांपी के सेनापतियों को ऐसा दबाया कि उन्हों ने बिना लड़े भिड़े सब सेना उसे सोंप दी। वहां से वह अद्भुत बेग सहित गाल में पऊंच आल्पस पर्बत को उतर, संपूर्ण इटली को पार कर, ब्रंडूसिअम बंदर स्थान में पऊंच ते ही जहाज पर चढ यूनान को गया जहां पांपी ने पूरब के सब देशों में से बड़ा भारी कटक इकट्ठा कर रक्खा था। यद्यपि पांपी की सेना निज बैरी के कटक से बऊत अधिक थी, तोभी उस की सभा घबरागई, और इस अति आपत्ति के बीच उस की वह बुद्धि औ तेज जाता रहा जिस से वह आगे अनेक युद्धों में बिजयी भया था। पांपी के कटक की अपेक्षा कैसर का दल थोड़ा था परंतु बऊत साहसी, औ वह आपही उन में मुख्य था। ईसवी शक के पूर्ब ४८ के बरस में असाड़ अर्थात् जोलाई महीने की बीसवीं को, थेसली

के मंडल में, फार्सैलिआ स्थान के बीच, अनेक भांति के युद्ध संबंधी चरित्र करके दोनों ओर के कटक संग्राम करने लगे, जिस के बीच पांपी संपूर्ण रूप से हारा औ भागा। तब उस ने अपने एक या दो दास साथ ले मिसर देश में जाने का निश्चय किया, तहां उसे बचने की आस थी, क्योंकि अपनी सुदसा में वहां के राजवंश के साथ उस ने बहुत उपकार किये थे; परंतु वहां के राजमंत्री ने नीच पना करके उसे मरवा गेरा, इस आसपर कि जयवंत कैसर हमारे ऊपर प्रसन्न होगा। पांपी का मृतक शरीर नंगा करके समुद्र के तट में फिंकवा दिया, तहां एक रूमी बूढ़े योद्धा ने उस की मरण क्रिया की। कैसर अपनी सदा की शीघ्रता की भांति उस के पीछे पीछे चला आया, परंतु पांपी की हत्या होने के तीन दिन पीछे मिसर में आन पहुंचा। जब उस के बड़े बिपची का सिर उस के सन्मुख आया, देखते ही सुशील जयवंत कैसर रोने लगा। यद्यपि फार्सैलिआ की लड़ाई पर पांपी का सब कटक नहीं कट गया था, तो भी उस युद्ध से रूम की साधारण स्वाधीनता जाती रही औ फिर उस दिन से कभी न भई।

कैसर मिसर में छह महीने तक रहा, एक तो यह कारण था, कि वह अति सुंदरी क्लिओपेट्रा नाम राणी से मोहित हो गया, औ दूसरा हेतु यह था कि उसी स्त्री के भाई के संग लड़ाई करनी पड़ी, जिस में वह झट पट मारा गया, तिस पीछे वहां का सब राज्य कैसर ने क्लिओपेट्रा को दे डाला। और फिर वह मिसर से एशिआ मइनर में मिथ्रिडेटीज़ के पुत्र पर चढ़ गया, जो उस से प्रतिकूल हो रहा था, परंतु वह हारा और मारा गया। यह जय ऐसी सहज में भई कि कैसर ने जब इस युद्ध का बर्णन राजसभा के पास भेजा तो केवल तीन

शब्द लिखे वीनाई, वाईडाई, वाईसाई अर्थात् आया, देखा, जीता। तिस पीछे वह रूम में आया; परंतु जब उस ने सुना कि पांपी की ओर के बचे खुचे प्रधान लोग अपना सब कटक आफ्रिका में इकट्ठा करते हैं, इसलिये उन से युद्ध करने के हेतु उसे वहां जाना पड़ा। उस की यह चढ़ाई भी सुफल भई जैसी और बेर भई थीं; केटो जो सेना का अधिपति था, सो अपने कटक से निरास होकर, यूटिका स्थान पर अपघात कर मर रहा; औ सिपिओ, जूबा, औ पिट्रायस ये तीनों भी उसी की भांति आत्मघात कर मररहे। कैसर जयवंत होकर फिर रूम में आया, परंतु केवल चार महीने बिश्राम करने पाया। पांपी के दो पुत्रों ने स्पेन के बीच उन लोगों में से कटक इकट्ठा किया था, जो पहले लड़ाई में हारकर भागगये थे, और वे दोनों बड़े भयंकर दिखाई दिये। इसलिये कैसर वहां झट पट गया, औ मंडास्थान पर एक बड़ी धुंवाधार लड़ाई की, जिस के बीच उन दोनों भाइयों में से एक मारा गया, औ उन का सब कटक पराजित भया। कैसर ईसवी शक के पूर्व ४५ के बरस में पृथ्वी भरके संपूर्ण राज्यों का प्रभू होकर रूम में आ जनम भरके लिये डिक्टेटर पदवी ली। वह उस काल में महा राज्य के बीच, पृथ्वात पराक्रम का मूल था, और जो उस का भी वैसाही दुष्ट सुभाव होता जैसा सिलाका था, तो उसे अपने शत्रुओं से पलटा लेने का अच्छा अवसर मिला था; परंतु कैसर बड़ा कोमल चित्त, औ दयावान था, इसलिये किसी अपने वैरीको दंड न किया, औ जनम भर ऐसे ऐसे काम करता रहा कि जिन से वह महात्मा जान पड़ा। इटली के बीच बहुत काल तक लडाई रहने के कारण जो लोगों को अनेक प्रकार

के खेद भये थे, उस ने उन के दूर करने में अपना पराक्रम लगाया। उस ने अपनी तीक्ष्ण बुद्धि के कारण, सब लोगों का उपकार करने के लिये बड़े बड़े अनेक संकल्प किये, परंतु अवकाश थोड़ा होने के कारण उन में से केवल एक पूराभया, सो पत्रे को फिर सुधार कर बनाने का था। उस काल में रूम की दसा बक्रत बुरी होगई थी, क्योंकि उस नगर के प्रजा प्रभुताई के सब नियम ऐसे बिगड़ गये थे कि धरम का नाम भी न रहा था, इस कारण वहां के लोगों का यही बड़ा भाग था कि वे सब एक महा गुणी मनुष्य अर्थात् कैसर के आधीन हो गये थे। परंतु उसे रूम में रहते क्रए पूरे बारह महीने नही होने पाये थे, कि उन लोगों ने उस के मारने का कुमता किया, जिन पर दया करके आपही उस ने उन का जीव बचाया था, औ अनुग्रह करके उन की लक्ष्मी बढ़ाई थी; औ ईसवी शक के पूर्व ४४ के बरस में राजसभा के बीच उन्हों ने अपने कटारों से उसे मार गेरा। इस कुमते में प्रधान ब्रूटस औ कैशिअस थे; यद्यपि इन दोनों मनुष्यों के आशय बुरे न थे, तो भी हम उन के कुकर्म पर बिलाप करते हैं, क्योंकि उन के दुष्ट बिचार से वह मनुष्य मारा गया, जो इकेला ही सब लोगों के बीच पृथ्वी भर के कार्य चलाने को सामर्थवान् था।

कैसर के मरते ही सब काम अत्यंत रूप से बिगड़ गये। उस का मार्क ऐंटनी नाम मित्र जो यद्यपि उस के समान सुव्रती औ गुणवान् न था, तो भी उस ने अवसर जान राज्य का प्रधान अधिकार लेने के अर्थ उद्योग किया; परंतु उस के अति बैरी सिसिरो ने राजसभावालों से मेल करके कैसर के भतीजे आक्टेविअस को राजगद्दी पर बैठाने का बिचार किया, जो उस समय बाईस बरस का

था। तब ऐंटनी को भागना पड़ा, औ उस ने आल्पस पर्वत को पार किया, परंतु थोड़े ही दिन पीछे उस ने उपाय करके आक्टेविअस को राजसभावालों से जुदा कराके अपने में मिला लिया, औ लपिडस के संग मेल करके वैसाही तीन मनुष्यों का योग किया, जैसा पहले कैसर, पांपी औ क्रैसस ने किया था। बोलोना नगर के नीचे एक नदी बहती थी जिस की धाराओं के कारण एक उपद्वीप बन गया था, तहां वे तीनों इकट्ठे भये, औ उन्हों ने अपने शत्रुओं का बध करने के लिये, औ निज पराक्रम दृढ़ करने के हेतु मेल किया। उन्हों ने राजसभावालों औ रूमी नगर निवासियों से कुछ न पूछा, औ आपही पांच बरस के लिये रूमी राज्य के अधिपति बन बैठे, औ महा राज्य के नाना प्रदेशों का बिभाग आपस में कर लिया। औ उन्हों ने यह भी आज्ञा की कि ब्रूटस, कैशि-अस, और और लोग जो कैसर के मारने औ राज्य की पुरानी व्यवस्था फिर चलाने में थे उन का बिनाश करो। निदान उन्हों ने संहार करने के लिये निज शत्रुओं का नाम लिखा, औ दोसौ राजसभावालों के, दोसहस्र नइटपदवीवालों के, औ बहुतसे अत्यंत नामी नगर निवासियों के बध करने की आज्ञा दी। सिसरो जो बाक्पटुता, औ राजनीत जानने के कारण बड़ा नामी औ आक्टेविअस का मित्र था, उस आक्-टेविअस ने ऐंटनी का बैरलिवाने के लिये सिसरो को नीचपने से उस के हाथ में पकड़वा दिया; औ यह बिद्यारूपी अलंकार उन चंडालों के हाथ से मारा गया जो उस की अहेर करने के लिये भेजे गये थे। तिस पीछे वे उस का सिर काट कर ऐंटनी की बिभचारणी फल्विआ नाम स्त्री के साम्हने लाये, उस ने वह मस्तक देखते ही अपनी आंखें ठंडी कर सूइयों से

सिसरो की जीभ का छेदन किया, जिस से उस ने उस स्त्री के बिभचार का बड़ा बर्णन किया था, और आज्ञा करी कि इस सिर को शिक्षा स्थान में जाकर लटका दे। उस स्थान को सिसरो ने अपनी बाक्पटुता के कारण अमर बनाया था। फिर सिला के से दिन होगये; औ इटली में पुनि वहां के अति उत्तम उत्तम लोगों के रुधिर की नदी बहने लगी।

इस प्रकार से उन तीनों मित्रों ने जितने निज बैरियों को पकड़ा, तिन सबों का बध किया, औ तिस पीछे ब्रूटस, कैशिअस औ उन के साथियों का पीछा किया। उस समय ब्रूटस आदि पूरब देश का अधिकार किये हुए थे, तहां उन्हों ने उपाय कर करा कर बड़ा कटक जोड़ा। पांपी का पुत्र जो मण्डा स्थान की लड़ाई में बचगया था, सो स्पेन, सिसिली, औ सार्डिनिआ का स्वामी होगया, वह भी उन का पक्षी हुआ इस कारण से ब्रूटस आदि की सेना जल औ थल पथ के द्वारा, औ अपने सेनापतियों की निपुणता के कारण, आक्टेविअस औ उस के मिलापियों के दल से अधिक पराक्रमी थी। आक्टेविअस औ उस के मित्र जहाजों पर चढ़-कर सेना सहित यूनान को गये, औ मैसीडोनिआ के बीच फिलिपाई स्थानपर एक पूरी लड़ाई भई। यद्यपि आक्टेविअस आदि का कटक थोड़ा भी था, तोभी संपूर्ण रूप से उन्ही की जय भई। तब ब्रूटस औ कैशिअस रूम के राज्य से निरास होकर आपही मररहे; औ बहुत से और और रूम के कुलीन, औ बड़े नामी लोग अपने अधिपतियों का जीवना असंभव जान आपही अपघात कर मरगये। ईसवी शक के पूर्व ४२ के बरस में फिलिपाई की लड़ाई भई; रूम में प्रजा प्रभु-त्व स्थापन करने के लिये यह सब से पिछला युद्ध था।

फिलिपाई की लडाई सेले आक्शिअम् के युद्व पर्यन्त ग्यारह बरस बितीत भये, तिस काल में उन लोगों के बीच युद्व रहा जो संपूर्ण रूमी राज्य के प्रभु थे उन सबों में सब से जुगती आक्टेविअस था, जिस ने अन्त में अेंटनी को जीत लिया। उस ग्यारह वर्ष के काल का बहुत बर्णन करना कुछ बड़ा मनोहर नही है। केवल ब्रूटस का मिलापी सेक्टस पांपिअस तीन मनुष्यां के योग का साम्हना करनेवाला रहा था। उस का अधिकार समुद्र पर था; उस ने उन समुद्र के डकैतों की भांति काम किया जिन को उस के पिता ने पहले जीत लिया था, कि रूम में अनाज के जाने के जो जो मारग थे सब रोक लिये, औा समुद्र के सब तट घेरलिये, इस कारण से रूम नगर फिर भूखा मरने लगा; तब निज संगियों सहित आक्टेविअस ने प्रसन्नता पूर्वक उस के सङ्ग संधि करनी बिचारी। परंतु थोड़े ही काल पीछे पांपी ने बिचारा कि इन तीनों पक्के मिलापियों के सङ्ग संधि केवल मेराही बिनाश करनेवाली है, इसलिये उस ने आक्टेविअस के संङ्ग युद्व का प्रारंभ किया। तब अेंटनी औा लपिडस ने अपने सङ्गी आक्टेविअस की सहायता के लिये युद्व के जहाज भेजे। इन तीनों मिली हुई सेनाओं ने एक ही बेर चारों ओार से उस पर चढ़ाई की, तब वह पराजित होकर एशिआ को भाग गया औा तहां ही मरा।

पांपी के मरने से सिसिली का कोई खामी न रहा, इसलिये लपिडस ने वहां का अधिकार पाने की इच्छा की; परंतु आक्टेविअस ने उस की सेना को अपने में मिला कर उसे तुच्छ कर गेरा। इस कारण उन तीनों मित्रों में से एक घट गया, सब अधिकार अेंटनी औा आक्टेविअस ने आपस में

बांट लिया; परंतु लोग पहले ही से कहते थे कि ये आपस में बिना युद्ध किये नहीं रहेंगे। ऐंटनी ने अपने संगी की पतिव्रता आक्टेविआ नाम बहन से बिवाह किया था, परंतु जब वह एशिआ से फिरा, तब मिसर देश में गया, तहां परम सुंदरी क्लिओपेट्रा नाम राणी से मोहित हो रात दिन उसी के पास रहने लगा। औा उसी काल में उस ने आक्टेविआ से बहुत बियोग रक्खा, इस कारण उस के साले आक्टेविअस ने क्रोध कर उस के संग युद्ध किया। सच तो योंहै कि आक्टेविअस केवल अपने ही स्वारथ के लिये युद्ध करता था, परंतु भुलाकर रूमियों को ऐसा बोध कराया कि रूम के चक्रवर्ती राज्य का अधिकार मिसर की राणी के हाथ न होजाय, तिस को रोकने के लिये मैं राजसभावालों औा प्रजा की ओार से युद्ध करता हूं। उस का औा ऐंटनी का जहाज समूह लड़ाई करने के हेतु यूनान के बीच ऐक्शिअम् स्थान पर आया। ऐंटनी का जहाज समूह अत्यंत बड़ा था, औा संभव जान पड़ता था कि उसी की जय होगी, परंतु संग्राम होते समय क्लिओपेट्रा युद्ध के निज जहाज लेकर भागी। ऐंटनी ने भी क्लिओपेट्रा ही की भांति किया, निदान सब भागे। ऐंटनी झपट कर मिसर में आया, तब आ-क्टेविअस ने उस का पीछा किया, पीछे ऐंटनी ने क्लिओपेट्रा के मरने के झूटे समाचार सुने तो आप ही अपने तरवार मार कर मररहा। उस मिसर देश की राणी ने जैसे आक्टे-विअस के चचा कैसर को औा उस के संगी ऐंटनी को मोहित कर लिया था, उसी आस पर आक्टेविअस के अगाडी अनेक हाव भाव कटाक्ष उस को बस में करने के लिये किये; परंतु उस को निज सुंदरताई से निर्पेक्ष देख औा जय के उत्सव काल में रूम नगर के बीच मुझै सबों को दिखावैगा ऐसी उस की

इच्छा जान, औ यह बिचार कर कि टालेमी के राज कुल में केवल एक मैं शेष रही हूं, सो मेरा ऐसा अपमान न होय, इसलिये अपघात कर मर रही; और श्रीयुत सिकंदर की मृत्यु से २९५ बरस पीछे इस रीत से मिसर देश रूम के राज्य का एक प्रदेश हो गया।

उसी बर्ष में अर्थात् ईसवी शक के पूर्व २९ वें औ रूम नगर की स्थापना से ७२४ वें में आक्टेविअस को वह संपूर्ण सामर्थ मिली जो उस काल से पहले कांसल औ ट्रइब्यून पदवीवालों में थी, तब से उस ने अपना नाम आगष्टस कैसर रखवाया। उस बरस से ले रूम के राज्य का नाश होने तक यह सकल सामर्थ एकही एक मनुष्य में रहती आई सो राजाधिराज कहावता रहा। रूम में आगष्टस ने ४४ बर्ष राज्य किया।

आगष्टस कैसर के राज्य के २९ वें बरस में जेनस के मंदर के पट दूसरी बेर मुंदे, औ जिन देशों में हम युद्धों का बर्णन कर चुके हैं, उन सबों में शांति होगई थी; औ जब ज्ञात पृथ्वी का अधिक भाग रूम के राज्य में गिना जाता था तब अपने निश्चित काल में यहूदा देश के बीच प्रभु ईषु खीष्ट ने निज मृत्यु से मनुष्यों के पाप का प्रायश्चित्त करने के अर्थ औ पृथ्वी भर में धर्म का राज्य स्थापन करने के लिये अवतार लिया।

* यहां प्राचीन कथा सार समाप्त हुआ *

॥ अशुद्ध पत्र ॥

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
श्रुत	वेद	२	१६
इस वरस	सइरस	६	१६
बेलस	बीलस	७	१९
ठहराव	बास	८	३
सीक्रास	सीक्राप्स	८	५
हिंदूलड़ेजैसे देवता	उस समय जो हिंदू लड़े थे उन्हें अब के लोग देवता कहते हैं	११	२६
वेथे बलवान् राक्षस जिन्हों ने	उन्हें बलवान् राक्षस सकहते हैं क्योंकि उन्हों ने	१२	१
सार्डैनेपोलस	सार्डैनेपैलस	१२	६
आसिरिस	ओसइरिस	१२	२३
पेद्यूसिम	पेथ्रूसिम	१२	२५
थियाथ	थयथ	१२	२६
देवताओंने	हिंदूकहते हैं देवता ओं ने	१३	२२
इसबात	बैबीलन के स्थानही	१४	१७
साकार औ निराकारब्रह्म	एकही परमेश्वर	१५	४
धर्मचला	धर्म बिगड़ता चला	१५	१३
थे	थे ऐसा दीखपड़ताहै कि	१५	१५
जाति	बंश	१६	१५

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
समद्र	समुद्र	१६	२२
है	औा दूसरा कारण यह है कि	१७	२६
जो वहां के लोगों को शिक्षा करती रहती है	जो वहां के देशवासियों में मुख्य बनक रमारग दिखाते थे	१८	६
वहां के बासियों ने उन्हें दबाया	औार वहां के बासियों को दबाया था	२०	३
इस राजा के राज्य में यहां के लोग अत्यंत अभिमानी थे	इस राजा का राज्य अत्यंत उत्तम था	२०	११
जब	उन	२०	१७
तौ उन के	जिन के अन्याय से	२०	१८
बोश्चिआ	बौआशिआ	२१	१०
यूनानियों	जूपीटर जो उन	२२	९
ऊआ था	ऊआया निदान एक राजवंशी जेसन नाम जनने किसी कारण से जिस का कुछ बर्णन कथा में नही है ऐसा बडा जहाज बनाया कि जैसा कभी आगे न बना था औा अत्यंत साहसी लोगों को साथले यूक्सीन समुद्र में गया	२३	२०

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
कालकिन	कालकिस	२३	२२
चड़ाई	चढ़ाई	२३	२५
वृहस्पति	जूपीटर	२५	१०
यूनान के एकृत लोगों	श्री यूनान में एक ही कुल	२७	७
अगला	पिछला	३०	२५
बेओशिआ	बीओशिआ	३०	२५
और यह मिलिटस नगर बड़ी दूर दूर तक महा बाणिज्य का स्थान ज़ुआ सब दक्षिण रूसिया इसी में गिनाजाता था औ पूरव में बड़े बुखारे तक था	औ वे ऐसी मंडियां ज़ुई कि जिन की बाणिज्य की वस्तु दक्षिण रूसिआ तक औ पूरव में बड़े बुखारे तक पज़ंची	२८	४
मैसीडन	मैसीडन की सीमा में	३८	९
पिथेगोरस	पइथेगोरस	३८	१९
मिलाप	युद्ध	३९	७
सींधासा	सींधास	४०	५
अफरात	उफरात	४०	२५
आगे	तक	४१	१४
अब उनही से युद्ध करने की इच्छा की	विशेष	४१	१६
उस देश की केवल उस के मरने ही तक रही	उस की मृत्यु का चिन्ह था	४१	२४
युद्ध	कुछ कुछ झगड़ा	४१	२५

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
यूनानी लोगों का नाम नौका संबंधी कर्म में बड़ा था	यूनानियों के आगे ये फिनिशिआ वाले नौका संबंधी कर्म में बड़े थे	४२	२४
सो फिनिआ वालों के हस्ताधीन हुआ	विशेष	४३	१
देबलोक को	मर	४४	२०
स्वर्ग लोक जाने	मरने	४५	१९
बिशय	विषय	४७	१२
तपुंसकता	नपुंसकता	४८	१६
यभेद्य	अभेद्य	४८	२६
३३०	२३०	५५	११
कमतवालों	कुमतेवालों	५८	७
डारा	द्वारा	५८	२०
खाधीनता	स्वाधीनता	५९	१८
नगरवाला	नगरवालों	५९	२५
तठ	तट	६३	२४
७ अध्याय	६ अध्याय	१०६	१
स्पेन	पोर्तुगाल	२६४	२०